बयानात

मौलाना तारिक़ जमील साहब

तर्तीब

मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर मेमन

बयानात

मौलाना

तारिक़ जमील साहब

तर्तीब

मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर मेमन

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

बयानात मौलाना तारिक़ जमील साहब

(पाँचवा हिस्सा)

तर्तीबः मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर मेमन

प्रथम संस्करणः 2008

पृष्ठः 476

प्रस्तुत-कर्ताः
जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशकः

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street,
Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002
Tel.: 011-23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in www.faridexport.com, faridbook.com

Bayanat Maulana Tariq Jameel Sahab (5)

Muhammad Arslan bin Akhtar Maman

Ist Edition: 2014

Pages: 476

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Delhi-13 Ph. 65851762, 9990438635

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

विषय सूची

(फ़हरिस्त मज़ामीन)

मज़मून	पेज न०

अल्लाह तआला की बड़ाई

○ ○ ○

अल्लाह तआला के अस्माए हुस्ना का बयान

○ ○ ○

अल्लाह की बादशाहत

○ ○ ○

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की सिफ़ात

○ ○ ○

अल्लाह की क़ुदरत की निशानियाँ और शाने रिसालत

○ ○ ○

बेहतरीन उम्मत

○ ○ ○

अल्लाह की क़ुदरत और रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

○ ○ ○

यूरोप की तहज़ीब को आग लगा दो

○ ○ ○

मिसाली शादी

○ ○ ○

पॉप सिंगरों से ख़िताब

○ ○ ○

पत्थर दिल इन्सान

O O O

अल्लाह तआला की बड़ाई

खुत्बे के बाद फ़रमायाः

मेरे भाईयो और दोस्तो, बुज़ुर्गो! हम सबका ख़ालिक़ अल्लाह तआला है। हर चीज़ का मालिक अल्लाह तआला है और वह सबसे बड़ा बादशाह है, कोई उसका शरीक नहीं, कोई उसकी तरह नहीं, इतना ऊँचा है, कोई उसके बराबर नहीं, ऐसा ग़नी है कोई मददगार नहीं। कोई रब नहीं उसके साथ जिससे उम्मीद बांधी जाए, कोई दर्मियान में वास्ता नहीं जिसको रिश्वत देकर उस तक पहुँचा जाए और कोई उसका वज़ीर नहीं जिससे मशवरा किया जाए, अकेला सब पर हावी। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,“मेरी कुर्सी ज़मीन व आसमान पर छाई हुई है।” आसमानों पर मेरी हुकूमत, ज़मीन पर मेरी हुकूमत, तहतुस्सरा तक हुकूमत ज़मीन पर किया हो रहा है, उसे पूरा पता है, क्या निकला ज़मीन से सब पता है। क्या उतरा आसमान से उसे पता है। क्या चढ़ा आसमान पर सब पता है। ज़मीन व आसमान को अल्लाह तआला फ़रमाते हैं मैंने थामा हुआ है, इस निज़ाम को चलाते हुए थकता नहीं, इस निज़ाम को चलाते हुए सोता नहीं, ऊंघता नहीं, ख़ज़ाने ख़त्म नहीं

होते, जितना चाहो मांगो अल्लाह तआला की दो सिफ़तों का ज़हूर, सुनने वाला कैसा कि सब बोलें, अंग्रेज़ी, फ़ारसी, हिन्दी, उर्दू, संस्कृत सारी दुनिया की ज़ुबानों में बोलें, हज़ारों लोग अपनी अपनी ज़बानों में बोलें, अल्लाह तआला के बारे में आता है कि वह सबकी पुकार सुनता है, अलग-अलग ज़बानों में समझता है, सब बोलें उसे ग़ल्ती नहीं लगती, कौन क्या कह रहा है, सबकी पुकार सुनता है, अलग-अलग ज़बानों में समझता है, कौन क्या कह रहा है, सब की सुनी और फिर सबको चाहा तो दे दिया।

सबकी चाहत पूरी कर दी, कहा मेरे ख़ज़ानों में इतनी भी कमी नहीं आती जितना सूई को समंदर में डुबो दिया जाता है और उसके नाके में पानी आता है, अल्लाह तआला बहुत बड़ा है। "अकबर" हम कहें अकबर तो अकबर, हम न कहें अकबर तो अकबर, वह इतना अकबर है कि उसकी किबराई की हद नहीं, वह इतना अज़ीम है कि उसकी अज़मत की हद नहीं और हम इतने हक़ीर हैं कि हमारी हिक़ारत की हद नहीं। उसका इतना इल्म, वह इतना क़ादिर कि उसकी क़ुदरत की हद नहीं, हम इतने कमज़ोर कि हमारी कमज़ोरियों की हद नहीं। सिर्फ़ वही था जब कुछ न था, वही होगा जब कुछ न होगा, वह सबसे ऊपर उसके ऊपर कुछ नहीं, उसके सामने ज़बानें बंद, उसके सामने चेहरे झुक गए, उसके सामने कोई नहीं बोल सकता। अकेला बादशाह है ज़मीन व आसमान को तोड़ देगा जैसे बनाया है कि ऐसे तोड़ा फिर उन्हें अपनी मुट्ठी में पकड़ेगा, फिर तीन झटके देगा। पहला झटका देकर कहेगा मैं बादशाह हूँ, दूसरा झटका देगा मैं हूँ ﴿قـــدوس الـــسلام ﴾ الـــمـؤمـن﴾। तीसरा झटका देकर कहेगा मैं ग़ालिब, मैं जाबिर, मैं

मुतकब्बिर, जाबिर (लोग) कहाँ हैं? मुतकब्बिर (लोग) कहाँ हैं? बादशाह कहाँ हैं? कौन बादशाह? आज मेरी बादशाही है, हमारा दिल अल्लाह तआला की अज़्मत से भर जाए, सारी काएनात जैसे उसने कहा मच्छर का पर नहीं ऐसे मच्छर का पर नज़र आएगा।

मवत्ता की लड़ाई में एक लाख का लश्कर आया। तीन हज़ार मुसलमान। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की पहली लड़ाई। उनके चेहरे का रंग बदल गया। साबित बिन इक्रिमा अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु पड़ौस में खड़े थे। बोले अबू हुरैरह मालूम होता है बड़े बड़े लश्कर देखकर कुछ असर हो रहा है। कहने लगे हाँ असर हो रहा है। फ़रमाने लगे तू बदर में होता तो तुझे कभी यह ख़्याल न आता कि यह ज़्यादा हैं और हम थोड़े, हम कसरत से नहीं जीता करते, अरे अल्लाह तआला हमारे साथ हैं। जब अल्लाह तआला साथ हो जाए, तो फिर किसकी मोहताजी, किस की ज़रूरत? जिसकी सलतनत आसमानों और ज़मीन को घेरे हुए है। सूरज भी इसके हुक्म से, चाँद भी उसके हुक्म से, सितारे भी उसके हुक्म से, हुकूमत उसकी, अल्लाह तआला ही का हुक्म चलता है, कोई उसके सामने दम नहीं मार सकता, सारी दुनिया का माल मिल जाने से काम नहीं बनता, अल्लाह तआला के साथ होने से काम बनता है। हुकूमतों से साथ होने से काम नहीं बनता, अल्लाह तआला के साथ होने से काम बनता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जो कहते हैं कि माल से काम बनते हैं उसका माल कम पड़ेगा, जो कहेगा सलतनत में इज़्ज़त मिलती है, अल्लाह तआला ज़लील करेगा, जो कहेगा मेरा इल्म, मेरा इल्म... अल्लाह तआला उसको गुमराह करेगा, जो कहेगा मैं बड़ा पढ़ा

लिखा, बड़ा अक़्लमंद, अल्लाह तआला उसकी अक़्ल ख़राब कर देगा, जो कहेगा मैं तुझ पर भरोसा करता हूँ न उसका माल कम पड़ेगा, न वह ज़लील होगा, न वह गुमराह होगा, न उसकी अक़्ल मारी जाएगी। अल्लाह तआला काफ़ी है, मैं काफ़ी नहीं, मेरा बन्दा मेरी तलाश में मुझे पालेगा तो सब कुछ पालेगा, मुझ गुम कर दिया तो सब कुछ गुम कर दिया। रहम ऐसा कि इन्तिहा नहीं, ग़ुस्सा ऐसा कि इन्तिहा नहीं। सिफ़ात दोनों जमा हो जाती हैं। ग़ज़ब व रहम पूरी सिफ़तों के अल्लाह तआला के निन्नानवे नाम तो हदीस में हैं, उसके नामों की कोई हद नहीं, इन सबको जमा किया जाए तो दो बनते हैं रहीम व क़ाहिर। फिर इन दो को जमा किया जाए तो अल्लाह तआला ने ख़ुद फ़ैसला कर दिया कि अल्लाह तआला और अर्श के सिवा कोई मख़लूक़ नहीं।

अल्लाह तआला को बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार रहता हैः

अर्श के ऊपर एक बहुत बड़ी तख़्ती है जिसकी लम्बाई को अल्लाह तआला के अलावा कोई नहीं जानता। अल्लाह तआला ने ख़ुद लिखवाया है, "मेरी रहमत मेरे ग़ुस्से से आगे चली गई।" (अल्लाह तआला फ़रमाते हैं) ऐ मेरे बन्दे मैं तुझे याद रखता हूँ, तू मुझे भूल जाता है, मैं तेरे गुनाहों पर पर्दा डालता हूँ तू फिर भी मुझसे नहीं डरता, मैं तुझे याद रखता हूँ, तू मुझे भूल जाता है, मैं फिर भी तुझे याद रखता हूँ, तू नाराज़ होकर मुँह फेर जाता है मैं मुँह नहीं फेरता, मैं तेरे इन्तिज़ार में रहता हूँ, समंद्र कहता है

इजाज़त दे अल्लाह तआला ग़र्क़ कर दूँ? ज़मीन कहती है कि अल्लाह तआला इजाज़त दे निगल जाऊँ? आसमान कहते हैं ऐ अल्लाह तआला! इजाज़त दे तेरे नाफ़रमानों को हलाक कर दें और उसकी रहमत को देखो। मेरे भाईयो वह यूँ कहता है तुम्हारा बन्दा है तो पकड़ लो, मेरे बन्दा है तो बीच में दख़ल न दो। मैं अपने बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार कर रहा हूँ, कभी तो रात में तौबा करेगा, कभी तो दिन में तौबा करेगा और जब भी तौबा करेगा क़ुबूल करूँगा। मेरे भाईयो! अल्लाह तआला की रहमत का मतलब यह थोड़ा ही है कि अल्लाह तआला बड़ा मेहरबान है तो उसकी नाफ़रमानी करो। अल्लाह तआला ने सूरत आदियात में कैसी शिकायत की है? अल्लाह तआला ने घोड़े की क़सम क्यों खाई? ऐ मेरे बन्दे! न तूने घोड़ा बनाया न तूने उसे पाला, मैंने तेरी मिलकियत में दिया, कुछ दिन तूने दाना खिलाया, पानी पिलाया, अब तू उस पर ज़ीन रखता है, उसको ऐड़ लगाता है और वह तेरी मानकर चलता है, दुश्मन पर हमला करता है, सीने पर तीर खाता है, थका हारा आता है, फिर तू सुबह को उठकर उसकी कमर पर ज़ीन रखता है, फिर उसको ऐड़ लगाता है, वह यह नहीं कहता मैं थका हुआ हूँ, छोड़ दो, मुझे आराम करने दो, नहीं तेरी लगाम के इशारे को समझता है, थाप मारता है, चिंगारी उड़ाता है, दौड़ जाता है, दुश्मन के बीच में घुसता है।

ऐ मेरे बन्दे! घोड़े ने तेरा कहना माना पर तो मेरा नाफ़रमान निकला, मेरा नाशुक्रा निकला। कैसा गिला अल्लाह तआला ने किया है, तुझे किसने धोके में डाल दिया मुझसे जिसकी रहमत की इन्तिहा नहीं, पूरी दुनिया मिल जाए तो इतने गुनाह नहीं कर

सकती कि ज़मीन भर जाए, आसमान और ख़िला भर जाए, पूरी दुनिया मिल जाए तो इतने संगीन गुनाह नहीं कर सकती लेकिन उसकी रहमत पर क़ुर्बान जाएं।

वह आसमानों का भी बादशाह, ज़मीनों का भी बादशाह, आसमान उसका, जो कुछ आसमान में वह भी उसका, ज़मीन उसकी, जो कुछ ज़मीन में है वह भी उसका और जो कुछ इसके बीच में है, हम आहिस्ता बोलें या ज़ोर से, ऊँची बात को भी सुनता है, नीची बात को भी सुनता है, वह अकेला अल्लाह बादशाह है, शरीक उसका कोई नहीं, ज़मीन पर उसका क़ब्ज़ा, आसमान पर उसका क़ब्ज़ा, आसमान को ऊँचा किया इरादे से, ज़मीन पस्त की इरादे से, उसको बिछाया अपने इरादे से, ज़मीन अपने क़ब्ज़े में रखी, आसमान अपनी मुठ्ठी में है, सूरज चाँद सितारे अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में, सूरज अपने इरादे से नहीं अल्लाह के इरादे से चलता है, यह तेरे रब का बनाया हुआ अन्दाज़ा है, चाँद की मंज़िलें मैंने तय की हैं, वह एक टेढ़ी शाख़ बन जाता है, दिन को लम्बा कर देता है, सूरज की गर्मी पर अल्लाह तआला का क़ब्ज़ा, चाँद में ठंडक रख दी और सूरज में गर्मी रख दी, ज़मीन को मैंने पंघवड़ा बनाया।

ऐ इन्सानों! पहाड़ मैंने लगाए। हमें मर्द व औरत अल्लाह तआला ने बनाया तुम तो मनी का एक टपकता हुआ क़तरा थे, तुम तो एक उछलता हुआ पानी थे, तुम मर्द व औरत के पानी से बने, तुम सढ़ी हुई काली मिट्टी से बने, मैं तुम्हें पेट में जिस तरह चाहता हूँ बनाता हूँ। मेरे बन्दे! माँ के पेट में ठिकाना देता हूँ, फिर एक अन्दाज़े से तुम्हें माँ के पेट में रखता हूँ, फिर मैं तुझे माँ के

पेट में पर्दों में बन्द करता हूँ ताकि तुम्हें अन्धेरों से डर न लगे, फिर पानी में रखता हूँ, दुनिया में इन्सान पानी से मर जाए तो मरे और माँ के पेट में पानी में ज़िन्दा है, वह पानी अल्लाह तआला पैदा करता है फिर जिल्द पर एक पतली सी परत चढ़ा देते हैं जिससे बच्चे का जिस्म वाटरपुरुफ हो जाता है, सुब्हानअल्लाह!

हर एक को रिज़्क़ पहुँचाने वाला सिर्फ़ अल्लाह तआला है

फिर अल्लाह तआला का अगला निज़ाम है, मेरे बन्दे माँ के पेट में कौन था जो तेरे लिए रोज़ी लाया करता था? मेरे अलावा और भी है जो वहाँ अन्धेरों में तुझे देखता हो, इन्सान माँ के पेट में क्या है? बच्चा मच्छली के अंडे में क्या है? कुत्ते, बिल्ली, गधे के पेट में क्या है? कव्वे, चिड़िया और मुर्ग़ी के अंडे में क्या है? अल्लाह तआला कहता है मुझे पता है फिर उसे वहाँ पर अन्दाज़े के मुताबिक़ रोज़ी देता है, कौन तुझे रोज़ी पहुँचाता है? आज तू रोज़ी के लिए मेरा नाफ़रमान हो गया कि कहाँ से पहुँचाऊँ? तू मेरा नाफ़रमान बन गया, कहाँ से खिलाऊँगा? अच्छा माँ के पेट में किसने खिलाया? वह तू भूल गया जब तू तीन पर्दों में था, न तेरी माँ को पता था कि बच्चे को कैसे खिलाऊँ? जब मैंने तुझे वहाँ खिलाया, अब तू मेरा मानने वाला बन गया तो मैं तुझे कैसे भूल जाऊँ? मेरे बन्दे मैंने सात आसमान बनाए, सात ज़मीनें बनाईं, उन्हें बनाकर तो मैं नहीं थका तो तुझे दो वक़्त की रोटी खिलाकर मैं थक जाऊँगा? परिन्दों का रज़्ज़ाक़ अल्लाह तआला, दरिन्दों का

राज़िक अल्लाह तआला, चूहों का रज़्ज़ाक अल्लाह तआला, कीड़े को देने वाला अल्लाह तआला, पतंगों को देने वाला अल्लाह तआला, कव्वे का रज़्ज़ाक अल्लाह तआला, हाथी का रज़्ज़ाक अल्लाह तआला। वह अल्लाह जिसका कोई मददगार नहीं, उसका कोई मशवरा देने वाला कोई नहीं।

चीज़ों के ख़ज़ाने उसके क़ब्ज़े-ए-क़ुदरत में हैं

गुज़रा हुआ भी जानता है, मौजूद भी जानता है, जो होने वाला है उसको भी जानता है। कल क्या होगा? कल क्या होने वाला है? सारा कुछ जानता है। सब कुछ ज़मीन व आसमान उसकी मुठ्ठी में, हमारे ऊपर उसका क़ब्ज़ा, तुम्हारे कान बन्द कर दूं (कानों पर अल्लाह की हुकूमत) ज़िन्दा करता हूँ, मौत मैं देता हूँ, इज़्ज़तें अल्लाह के हाथ में हैं, ज़िल्लतें अल्लाह तआला के हाथ में। जिसे चाहे बादशाह बनाए, हुकूमत अल्लाह के हाथ में, जिसको चाहे तख़्त से उतार दे, ज़लील करना अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में, दौलत के ख़ज़ाने अल्लाह तआला के पास, ज़िन्दगी के ख़ज़ाने अल्लाह तआला के पास, मौत के ख़ज़ाने अल्लाह तआला के पास, हवाएं उसकी पाबन्द, बादल उसके पाबन्द, बारिश उसकी पाबन्द, ज़मीन उसके पाबन्द, फिर गुठली और दाना उसका पाबन्द, पौदा अल्लाह का पाबन्द फिर उस पर आने वाले फल और फूल उसके पाबन्द। अपने इल्म से बारिश बरसाता है, सूरज को दहकाता है, उसें समंदर की सतह पर डालता है, बख़ार को बादल बना दिया, बादल को ठंडा किया, पहाड़ पर ले जाकर बर्फ़ बनाई, मैदानों में लाकर बरसाई, पानी के एक क़तरे के साथ

हज़ारों ज़िन्दगियों को वजूद बख़्शा, सीप के मुँह में डालकर मोती बनाया, इन्सान के मुँह में डालकर पियास के दूर होने का सबब बनाया, बकरी में डालकर उसका दूध बनाया, गाय के मुँह में डाला तो उसका गोश्त बना, हिरन के मुँह में गया तो मुश्क बना, बिच्छू के मुँह में गया तो ज़हर बना, ज़मीन के अन्दर गया तो सैराबी का ज़रिया बना, हरियाली का ज़रिया बना, पेड़ों के फलने और फूलने का ज़रिया बना। शकल नज़र आ रही है हुक्म नज़र नहीं आ रहा है। हुक्म अल्लाह तआला का शकल पानी की।

मेरे भाईयो! अल्लाह तआला हम से चाहता है कि सारे बड़ों की बड़ाई निकाल कर अल्लाह तआला की बड़ाई हमारे दिलों में आ जाए, सब से पहले वही, सबसे आख़िर वही, उसके बाद कुछ नहीं, वही अव्वल, वही आख़िर। अव्वल तो है मगर उसका मकान नहीं, वह आख़िर तो है मगर उसका ज़मान नहीं, वह अबदी तो है मगर इन्तिहा से पाक, आसमानों पर भी उसकी हुकूमत, हवाओं पर भी उसकी हुकूमत, परिन्दों पर भी उसकी हुकूमत, फ़रिश्तों पर भी उसकी हुकूमत, जिब्राईल, इसराफ़ील उसके ताबे हैं, जन्नत उसकी रहमत का अदना करिश्मा, दोज़ख़ उसके अज़ाब का अदना करिश्मा। वह अगर चाहे तो ऐसी करोड़ों जन्नतें ऐसी करोड़ों दोज़ख़ें और बना दे। करोड़ों आसमान बना दे, करोड़ों ज़मीनें बना दे। न ख़ज़ाने में कमी न ताक़त में कमी। न कोई चीज़ उसके हुक्म के बग़ैर फिर सके, न लड़ सके न टक्कर ले सके। आँख उसको देख नहीं सकती, बड़े से बड़ा ख़्याल उसको नहीं पहुँच सकता, हादसात से असर नहीं लेता। इन्कलाबात-ए-ज़माने से वह डरता नहीं।

अल्लाह तआला के इल्म की कोई हद व इन्तिहा नहीं

समंद्र में कितना पानी है? उसे एक एक बूंद का पता है, एक एक बूंद और सारे वज़न का पता है, समंद्र में चलने वाली मछलियों का पता है, उस मच्छली का पता है, इस मछली को कौन सी मछली खाएगी, इसका पता है इसको कौन सा शिकारी शिकार करेगा, वह भी पता है फिर उसके कितने टुकड़े होंगे वह भी पता है, इसके कांटे को कौन सी बिल्ली उठाएगी, दूसरे कांटे को कौनसा कव्वा उठाएगा, वह पता है यह इन्सान जिसने मछली को खाया है कौन सी दुनिया में मरेगा? एक मच्छली को दस आदमियों ने खाया वे दस आदमी कब्र में गए और ज़मीन का पेवन्द बने। एक मछली का निशान मिटा। ऐसी करोड़ों मछलियां रोज़ाना खाई जा रही हैं। अल्लाह तआला क़यामत के दिन कहेगा ज़िन्दा हो जाओ, क़यामत के दिन एक एक अलग-अलग ज़िन्दा हो जाएगी। उस अल्लाह का भेजा हुआ इस्लाम है, यह अल्लाह तआला का भेजा हुआ दीन है। अर्श पर तख़्त बिछाया, ज़मीन पर सलतनत बनाई, समंद मे रास्ते बनाए, जन्नत में रहमत बनाई और दोज़ख़ को अज़ाब से भरा।

मेरे मोहतरम भाईयो! अल्लाह हमारे दिलों में उतर जाए, हम अल्लाह तआला को ख़ालिक़ और मालिक जानकर उसके सामने झुक जाएं, जो वह चाहता है वह होता है, जो वह नहीं चाहता वह नहीं हो सकता। सारी मख़्लूक़ बे हैसियत नज़र आने लगे और अल्लाह तआला में सब कुछ नज़र आने लगे, पहाड़, ज़मीन बड़े

नज़र आते हैं तो अल्लाह तआला कहता है कि मैंने आसमान को रोका हुआ है, चाँद और सूरज की गर्दिश नज़र आती है तो अल्लह तआला फ़रमाते हैं कि सारे मेरे हुक्म के ताबे हैं, समंद्र की तूफ़ानी मौजें नज़र आती हैं तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि दुनिया की ताक़तवर तरीन मख़्लूक़ हवा है तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मैं हूँ हवाओं को भेजने वाला।

ज़मीन के नीचे तमाम ख़ज़ाने उसके क़ब्ज़े में हैं

फिर हमें लोहा सख़्त नज़र आता है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि हमने ज़मीन में तमाम दफ़ीने रखे हैं तारकोल का दफ़ीना समंद्र में बनता है। बनने में दस लाख साल लगते हैं, अपनी जगह में टिक नहीं सकता। पिछली सदी में इन्सानों को इसकी ज़रूरत थी तो अल्लाह तआला ने इस निज़ाम को हिलाया। लाखों करोड़ों साल में अल्लाह तआला ने उसे बनाया कोई फ़ैक्ट्री नहीं लगाई एक निज़ाम को बनाया, समंद्र के नीचे तेल बनता है फिर चलता है आगे अल्लाह तआला ने उनके लिए मुशकीज़े बनाए फिर उनको भर दिया जिनके ऊपर कवर है जैसे फलों के ऊपर छिलका। सौ दो सौ मील, तीन सौ मील लम्बा चौड़ा पहाड़ हैं, अल्लाह तआला ने यह इसके ऊपर छिलका बना दिया है। अल्लाह तआला इसके अन्दर डालकर उसे बन्द कर देता है, अन्दर मेवा भर देता है, गैस के नाम से भर दिया जाता है अगर अल्लाह तआला एक ज़लज़ला ले आए तो वह सारा फट जाए, उसके ऊपर का छिलका फट जाए तो सारा तेल निकल जाए, सारे काम रुक जाएं। यह अल्लाह तआला ने अपने पास रखा है। वह कहता

है मैंने इसमें रखा था, मैंने ख़ज़ाने भरे हैं। न हम ने भरे हैं न हमने बनाए हैं। पानी में हमें ज़िन्दगी नज़र आती है, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं मेरे कब्ज़े में हैं। मुझे बताओ अगर मैं तुम्हारे पानी को वैसे ही ख़त्म कर दूँ तो कौन है जो तुम्हारे लिए पानी बरसाए। जिसके सामने जिब्राईल अलैहिस्सलाम जैसा फ़रिश्ता भी दम-ब-खुद है। ऐसा फ़रिश्ता कि अगर सात समंद्र का पानी उस फ़रिश्ते के अंगूठे पर डाल दिया जाए तो एक क़तरा भी ज़मीन पर नहीं गिरेगा वह अल्लाह तआला अपनी ज़ात में कितना अज़ीम होगा जिसकी न कोई इब्तिदा हो न कोई इन्तिहा हो। अल्लाह तआला क़ादिर-ए-मुतलक़ है। मौत दे दे तो हम बच नहीं सकते। जब मैं तुम्हारी रूह को हलक़ में उठाता हूँ तो लाओ न किसी को, लाओ तुम्हारी जान बचा दे, लाओ न किसी को तुम्हारी ज़िन्दगी बचाकर तुम्हें दिखलाए, हमारे ऊपर भी वही बादशाह है अगर चाहे तो ऊँचा कर दे तो उसकी मर्ज़ी नीचा कर दे तो उसकी मर्ज़ी, रिज़्क़ तंग कर दे तो उसकी मर्ज़ी, रिज़्क़ खोल दे तो उसकी मर्ज़ी।

हर चीज़ का मालिक अकेला वही है

मेरे भाईयो! वह बादशाह है जो ज़मीन व आसमान व चाँद, सूरज, सितारे, फ़िज़ा हवाएँ सबका अकेला मालिक है। यह दीन उस बादशाह का है, यह हुक्म उस बादशाह का है कि मेरे बन्दे मेरी मानकर चल, ऐ मेरे बन्दे मैं तुझ से मुहब्बत करता हूँ, मेरे हक़ का वास्ता तू भी मुझ से मुहब्बत कर, माँ दूध का वास्ता देती है। अल्लाह तआला अपने हक़ का वास्ता देता है और कहता है

कि मेरा वह हक् जो तुझ पर बनता है उसकी क़सम देकर तुझ से कहता हूँ यह मेरे लिए है। इसमें तमाम कारोबार करो, हुकूमत करो, चाकरी करो, सियासत करो, मज़दूरी करो मगर तेरा दिल मेरे लिए है, इसमें मेरे अलावा कोई न आए, अपने दिल को साफ़ रख, तू अपने लिए साफ़ कपड़ा पसन्द करता है, लेकिन अपने दिल को तमाम गंदगियों से भर लेता है, कुछ तो मेरा ख़्याल कर मैंने अपने लिए पसन्द किया है। अपने लिए कोई भी चीज़ मैली हो जाए तो धो लो और वह इतनी सिफ़ात का मालिक है उसके लिए अपने दिल को गंदा कर दिया। जिस दिल में अल्लाह को उतारना था, जो दिल अल्लाह की मुहब्बत का अर्श था, जो दिल अल्लाह की मुहब्बत का मसकन था, उसी दिल में सारे गुनाहों की गंदगी भर दी, आँखों से ग़लत देखा, कानों से ग़लत सुना, मुँह से ग़लत पिया, ग़लत खाया, शहवत को ग़लत जगह इस्तेमाल किया, अपने दिल की सारी तख़्ती ख़ाली कर दी, यह दिल अल्लाह तआला का ठिकाना नहीं बन सकता। यह दीन अल्लाह तआला का है, इतने बड़े बादशाह का है लेकिन इस्लाम की अज़मत ही दिलों से निकल गई है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब मेरी उम्मत दुनिया को बड़ी चीज़ समझने लगेगी तो इस्लाम की हैबत से महरूम हो जाएगी, जब मैं कहता हूँ कि मैं मुसलमान हूँ तो लरज़ जाता हूँ कि तमाम समंद्र, तमाम ख़ला अगर इस सारे निज़ाम में एक अरब साल तक जहाज़ बिजली की रफ़्तार से चलता रहे तो यह निज़ाम सत्रह कहकशाओं का मजमूआ है ऐसी पाँच अरब कहकशाएं हैं। हमारा सूरज का निज़ाम साढ़े सात अरब मील में फैला हुआ है, यह सिर्फ़ तीन

फ़ीसद है सत्तानवें फ़ीसद तमाम फ़रिश्ते भी यह सारा एक पलड़े में रखा जाए और ला इलाहा इल्लल्लाह एक पलड़े में रखा जाए तो दूसरा पलड़ा भारी हो जाएगा। जिस दीन का पहला बोल इतना वज़नी हो, जिस दीन का पहला बोल ला इलाहा इल्लल्लाह हो वह पूरा दीन कितना ताक़तवर होगा हम ऐटम की ताकत से डर गए, ला इलाहा इल्लल्लाह की ताक़त को समझते तो सारा ऐटम मच्छर का पर नज़र आता, ऐटम से डरना ऐसा जैसे लात व मनात से डरते हैं, बुत बनाकर कहते हैं उनसे हमारे काम बनते हैं, आज के ऐटम से डरना ऐसा है जैसे बुतों से डरना, ऐटम पर अल्लाह का क़ब्ज़ा, उनके दिमाग़ों पर अल्लाह का क़ब्ज़ा, उनकी तदबीर पर अल्लाह का क़ब्ज़ा, उनके दिलों पर अल्लाह का क़ब्ज़ा है। यही बात समझाने के लिए सहाबा इक्राम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने जान, माल, वक्त की क़ुर्बानी दी।

हमारे भेजे जाने का एक ख़ास मक़सद है

इसलिए जब रबी बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रुस्तम ने पूछा, क्यों आए हो? क्या तुम्हें भूख ने निकाला या तुम्हारे मुल्क ने निकाला है? किस चीज़ के लिए हमारे पास आऐ हो? पैसा चाहते हो तो हम देते हैं, मुल्क चाहते हो तो जितना फ़तेह कर चुके हो यही ले लो, वापस चले जाओ, तुम्हारे अमीर को दोगुना दे देंगे, तुम्हें भी उतना देंगे, कपड़े भी दे देंगे तुम वापस चले जाओ और इसी पर बस कर लो। रबी बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, "सुनो रुस्तम! न मुल्क ने हमें निकाला है, न माल ने

﴿ان اللّٰہ ابتعثنا﴾ (बैसत का लफ़्ज़ अल्लाह तआला ने नबियों के लिए इस्तेमाल करता है।) ﴿ھو الذی بعث فی الامیین رسولا. (سورة جمعه)﴾ बैसत का लफ़्ज़ नबियों के लिए आया है और रबी बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। इस उम्मत के लिए बैसत का लफ़्ज़ सहाबी इस्तेमाल कर रहा है ﴿ان اللّٰہ ابتعثنا﴾ हमें हमारे रब ने मबउस किया है, भेजा है, क्यों? ﴿ان نخرج العباد من عبادة عبادة الی عبادة رب العباد﴾ कि लोगों को लोगों की बन्दगी से निकाल कर रब की बन्दगी पर डाल दें।

अल्लाह तआला सब तदबीरों पर हावी है

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरी तदबीर सारी तदबीरों पर हावी है, मैं तुम्हारी तदबीरें जानता हूँ, तुम मेरी तदबीरें नहीं जानते, अल्लाह तआला ताक़तवर को बे ताक़त कर दे, अगर हम *"ला इलाहा इल्लल्लाह"* की ताक़त को समझते तो हमें ये सब खिलौने नज़र आते। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को जब पता चला कि साठ हज़ार अरब इसाई और चौबीस हज़ार कुफ़्फ़ार जंगे यरमूक में उनके सामने हैं और मुसलमान छत्तीस हज़ार थे और रोमियों के सरदार बाहान ने कहा तुम अरब हो तो जाओ उनका मुक़ाबला करो। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को जब यह पता चला कि अरबियत की बुनियाद पर ये कह रहे हैं तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा तीन हज़ार साठ हज़ार के मुक़ाबले में? पूछा कि हक़ीक़त कह रहे हो या मज़ाक़ कर रहे हो? तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु

अन्हु बोले कि कुफ़्र के ज़माने में बड़ा दिलेर था, इस्लाम लाकर बुज़दिल बन गया, कहने लगे मैं बुज़दिली की नहीं इन्साफ़ की बात करता हूँ, फ़रमाने लगे अगर तुम्हें जाना ही है तो साठ आदमी लेकर जाओ, किसके मुक़ाबले में साठ हज़ार के मुक़ाबले में। यह अबूसुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु का मशवरा था। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु अमीर थे। उन्होंने फ़रमाया अबू सुफ़ियान ठीक कहते हैं, तो अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा साठ आदमी ले लो। तो कहने लगे कि मैं ऐसे आदमियों को चुनूंगा कि वे अगर अल्लाह के सामने हाथ उठाएंगे तो अल्लाह तआला उनके हाथ ख़ाली नहीं लौटाएगा, उन्हें बताऊँगा कि हम अरब होने की वजह से नहीं जीत रहे हैं अल्लाह तआला के साथ होने की वजह से जीत रहे हैं।

(जंगे बदर में आयतें उतरीं। तुमने कहा कहाँ मदद है मदद तो आ गई मदद, अब भी बाज़ आ जाओ तो अच्छी बात है और अगर तुमने दोबारा हमला किया तो अल्लाह तआला कहता है मैं हमला करूंगा फिर तुम्हारी कोई ताक़त तुम्हें नफ़ा नहीं दे सकती। मैं ईमान वालों के साथ हूँ।) हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आवाज़ लगाई अब्बास, ज़ुबैर, उबैदुल्लाह, आमिर अब्दुर्रहमान, ज़रार बिन अज़्वर रज़ियल्लाहु अन्हुम कहाँ हैं? कहने लगे होश में हो? कहने लगे होश में हूँ। एक हमला हुआ, दूसरा हमला हुआ, तीसरा हमला हुआ, तीसरे पर दरार पड़ गई, सफ़ में नौ दस टोलियां बना दीं। फ़रमाते हैं कि कोई माँ इन जैसा नहीं जनेगी। कहते हैं कि मैंने देखा बीस बार कुफ़्फ़ार ने क़त्ल करने के लिए हमला किया हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु आगे बढ़ते और

ऐलान करते थे, "अब्बास का बेटा कहता था ऐ कुत्तों की जमात! मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों से दूर हो जाओ।" तो उन्होंने बीस हमलों को तोड़ दिया वह अकेले नहीं तोड़ा। (अल्लाह तआला फ़रमाता है) तुम नहीं तीर मार रहे हो, कहा मैं मार रहा हूँ, तुम क़त्ल नहीं कर रहे हो मैं क़त्ल कर रहा हूँ, तुमने नहीं मारा मैंने मारा। मेरे भाईयो! अल्लाह तआला जब साथ होता है तो सारी दुनिया सिमटती चली जाती है, जिस दीन का ला इलाहा इल्लल्लाह इतना ताक़तवर हो वह पूरा दीन कितना ज़बर्दस्त होगा?

इस्लामी रौब और दबदबे के वाक़ियात

ऐ भाईयो! अकेले अल्लाह तआला ही काफी है जो सब कुछ करते हैं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़तेह मक्का के दिन मक्का में दाख़िल हो रहे हैं, दस हज़ार का लश्कर साथ है, दस हज़ार का लश्कर अबू सुफ़ियान ऊपर खड़ा देख रहा है, लश्करों पर लश्कर गुज़र रहे हैं, ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु गुज़रते हैं, मुसलमानों का लश्कर लेकर तकबीर पढ़ते हुए निकलते हैं, ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु आते और लश्कर को लेकर निकलते हैं, अबू ज़र गिफ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु आते हैं और लश्कर लेकर निकलते हैं और बरीदा बिन हसीब रज़ियल्लाहु अन्हु आते हैं और लश्कर लेकर निकलते हैं और काब बिन जसासी रज़ियल्लाहु अन्हु आते हैं और लश्कर लेकर निकलते हैं और बनू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आते हैं और लश्कर लेकर निकल

रहे हैं और मज़ीद क़बीला आता है नौमान बिन मुकर्रम रज़ियल्लाहु अन्हु की मातहती में लश्कर को लेकर निकल रहे हैं , लश्करों पर लश्कर चल रहे हैं और अबू सुफ़ियान हैरान होकर देख रहे हैं इनते में आवाज़ आती है और सारी गर्द ग़ुब्बार उठती है और कहने लगा ﴿ما هذا﴾ यह क्या है? हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमतो हैं ﴿هذا رسول الله بين المهاجرين والانصار﴾ यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं मुहाजिरीन और अन्सार रज़ियल्लाहु अन्हुम में आ रहे हैं। जब वह उठा हुआ लश्कर सामने आता है तो एक आदमी की आवाज़ है ﴿ولـــــه زعـــل﴾ इस में कड़कदार आवाज़ है, अबू सुफ़ियान कहता है यह किसकी कड़कदार आवाज़ है? हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह ख़त्ताब का बेटा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु है जिसकी कड़कदार आवाज़ तुम सुन रहे हो, उन्होंने कहा ﴿واه واه والله لقد امر امر بنى كعب ابن عدى بعد والله﴾ अरे अल्लाह की क़सम ये बनू अदी ज़िल्लत और कमी के बाद आज इ़ज़्ज़त वाले हो गए तो अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे अबू सुफ़ियान! इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत यहाँ क़बीलों पर नहीं, इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत यहाँ इस्लाम पर है और इस्लाम ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ऊँचा किया है, उमर ऊँचा नहीं था इस्लमा ने उमर को ऊँचा किया है और फिर कहने लगे अरे अब्बास ﴿كبــر مـلك ابـن عـمك﴾ तेरे भतीजे का मुल्क तो बहुत बड़ा हो गया, हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा नहीं नहीं यह मुल्क नहीं है ﴿انـمـا هـذا لـنبـوة﴾ यह शाने नबुव्वत है, बादशाह ऐसे नहीं हुआ करते। दस हज़ार का लश्कर है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का माथा ऊँटनी के पालान के साथ टिका हुआ है

सिर ऊँचा नहीं झुका हुआ पालान पर टिका हुआ और ज़बान पर ﴿لا الـه الا اللّـه وحده﴾ का विर्द और अल्लाह अकेला तन्हे तन्हा है, किसी दस हज़ार पर नज़र नहीं, अल्लाह तआला की ज़ाते आली पर नज़र हे क्योंकि यह सब कुछ अल्लाह तआला की मदद से ही मुमकिन हुआ।

अल्लाह तआला ने हिफ़ाज़त अपने ज़िम्मे ली

﴿والـلّـه يعـصـمك من الـناس﴾ यह आयत बड़ी ज़बर्दस्त है इसमें इशारा है कि अगर यह उम्मत क़ुरआन की तबलीग़ का काम शुरू कर दे, इस्लाम को फैलाना शुरू कर दे तो अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त का निज़ाम उनकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाएगा ﴿والـلّـه يعـصـمك من الناس﴾ मैं तुम्हारी हिफ़ाज़त करूँगा, हिफ़ाज़त का वायदा इसके काम के साथ अल्लाह तआला ने जोड़ा है इस आयत में इर्शाद हो रहा है कि तुम तबलीग़ की हिफ़ाज़त करो तुम्हारी हिफ़ाज़त मैं करूँगा। अभी अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त का निज़ाम हरकत में नहीं आया जब वह हरकत में आता है तो अल्लाह तआला क्या क्या नमूने दिखाता है, आग के ढेर पर हिफ़ाज़त करके दिखाई, मछली के पेट में हिफ़ाज़त करके दिखाई, छुरी के नीचे हिफ़ाज़त करके दिखाई, समंद्र में डालकर हिफ़ाज़त करके दिखाई, फ़िरऔन की गोद में बिठाकर उसके मुँह से कहलवाकर ﴿انـمـا هـو قاتلى﴾ यही मेरा क़ातिल है फिर भी हिफ़ाज़त करके दिखाया। यह अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त का निज़ाम है। अभी वह निज़ाम मुतवज्जह नहीं है जब अल्लाह तआला की

हिफ़ाज़त का निज़ाम मुतवज्जह होगा तो अल्लाह तआला खुद फ़रमाते हैं

قد مكروا مكرهم وعند الله مكرهم وان كان مكرهم لتزول منه
الجبال فلا تحسبن الله مخلف وعده رسله ان الله عزيز
ذوانتقام. (سورة ابراهيم پ ۱۳)

इनकी तदबीरों से न डरो अगरचे उनकी तदबीर पहाड़ों को तोड़ दें मैं उनकी तदबीरों की काट मैं हूँ ﴿مكروا مكرا و مكرنا مكرا وهم لا يشعرون﴾ उनके मंसूबे मैं देख रहा हूँ मेरे मन्सूबे ये नहीं देख रहे हैं (سورة النمل پ۱۹) ﴿فانظر كيف كان عاقبة مكرهم﴾ देख उनकी तदबीरों का अन्जाम क्या हुआ?

﴿ولا يحيق لامكرو السيء الا باهله. (سورة فاطر)﴾

उनकी सारी तदबीरें उनके गले में डाल दूंगा कब जब अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त का निज़ाम मुतवज्जह होगा और अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त का निज़ाम इस दावत के साथ जुड़ा हुआ कि ﴿بلغوا﴾ तुम तबलीग़ का काम करो, हिफ़ाज़त अल्लाह तआला करेगा और हदीस पाक में है कि एक आदमी अल्लाह तआला के रास्ते में निकलता है ﴿جعل ذنوبه جسراع لى﴾ उसके गुनाह उसके सिर के ऊपर ऐसे खड़े हो जाते हैं और जब घर से क़दम निकालता है ﴿لا يبقى عليه مثل جناح بعوضة﴾ सारे गुनाह झड़कर इसके जिस्म पर मच्छर के पर के बराबर भी गुनाह नहीं रहता है ऐसे साफ़ होकर निकलता है गुनाहों से ﴿وتكفل الله باربع﴾ और अल्लाह तआला चार चीज़ों में इसकी ज़मानत ले लेता है अल्लाह तआला फ़रमाते हैं मैं हूँ ज़ामिन चार चीज़ों में, सबसे पहले ﴿يخلفه فى اهله وماله﴾ मैं तेरे घर का, तेरे अहल का, तेरे अयाल का, तेरी दुनिया

का मैं ख़लीफ़ा हूँ मैं ज़ामिन हूँ यह सबसे पहला वायदा है

﴿والله يعصمك من الناس يخلفه فى اهله وماله﴾

देखो क़ुरआन और हदीस कैसे जुड़ता चला आ रहा है। अब मैं एक किस्सा सुनाता हूँ।

एक ईमान वाली सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा का वाक़िया

हयातुस्सहाबा में है कि एक औरत अल्लाह तआला के रास्ते में गई। उसकी बारह बकरियाँ थीं। एक कपड़ा बुनने का ब्रुश था। जब वापस आई तो एक बकरी खो गई, ब्रश गुम था, धागा सीधा करने वाला। कहने लगी ﴿يا رب ضمنت لمن خرج فى سبيلك﴾ अल्लाह तआला ज़ामिन है जो तेरे रास्ते में निकले उसके माल का, उसकी जान का भी, ऐ अल्लाह! ﴿وعنذتى وصيصتى﴾ मेरी बकरियाँ गुम हो गयीं, मेरा ब्रश गुम हो गया फिर उसने कहा ﴿وعنذتى وصيصتى﴾ मेरी बकरियाँ गुम हो गयीं, मेरा ब्रश गुम हो गया। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुन रहे थे, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अरे अल्लाह की बन्दी! अल्लाह पर ऐसे दावे नहीं किए जाते, अल्लाह तआला के ज़िम्मे तो कोई नहीं वह तो एहसानन अपने ज़िम्मे ले लिया, अल्लाह तआला के ज़िम्मे नहीं है कि हमें रोटी दे, अल्लाह तआला ने तो एहसानन अपने ज़िम्मे ले लिया है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की बन्दी ऐसे दावे न कर। उस अल्लाह की बन्दी ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी न सुनी

बस यही कहती रही ﴿وعنذتی وصیصتی﴾ मेरी बकरी मेरा ब्रश, मेरी बकरी मेरा ब्रश। अल्लाह तआला ने दो बकरियाँ और दो ब्रश, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खड़े खड़े वापस भेज दिए कि ﴿یخلفه فی اهله وماله﴾ तुम मेरा पैग़ाम फैलाओ, नमाज़ पर अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त का वायदा नहीं, रोज़े पर अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त का वायदा नहीं, रोज़े पर तक़्वे का वायदा है, नमाज़ पर बुराई से बचाने का वायदा है, हज पर ग़नी होने का वायदा है, सिर्फ़ तबलीग़ के काम पर हिफ़ाज़त का वायदा है।

ज़मीन व आसमान का निज़ाम अल्लाह के अम्र के ताबे है

आप ग़ौर फ़रमाएं! दुनिया की हर चीज़ को अल्लाह तआला ने अपने हुक्म में इस तरह जकड़ा हुआ है कि ज़र्रा बराबर भी इधर से उधर नहीं हो सकती, सारा जहाँ सारी काएनात जो हम देख रहे हैं और जो हमारी नज़रों से ओझल है उन सब पर अल्लाह तआला का क़ब्ज़ा है

﴿والارض جمیعا قبضته یوم القیامة والسموٰت مطویٰت بیمینه﴾

(سورۃ الزمر، پ ۲٤، رکوع ٤، آیت ٦٧)

फिर दूसरी आयतः

﴿یمسك السموٰت والارض ان تزولا﴾

आसमान को ज़मीन को अल्लाह तआला थामे हुए है। फिर आसमान कितनी बड़ी मख़्लूक़ है, अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿ءانتم اشد خلقا ام السماء﴾ (سورۃ النازعات، پ ۳۰، رکوع ٤)

तुम ज़्यादा मुश्किल और सख़्त मख़्लूक़ हो या आसमान, आसमान सीधा किया हुआ है तो हमें भी सीधा कर सकता है, आसमान में झोल कोई नहीं ﴿هل ترىٰ من فطور﴾ क्या इसमें तुम्हें कमी नज़र आती है ﴿ومالها من فروج﴾ कोई इसमें शग़ाफ़ नज़र आता है, सारे जहान को ﴿رفع السموٰت﴾ आसमान बुलन्द किए ﴿والارض بعد ذٰلك دحٰها﴾ ज़मीन को बिछाया ﴿والجبال ارسٰها﴾ पहाड़ों को गाड़ा ﴿هو الذى سخر البحر﴾ वह जिसने समंद्र को क़ाबू किया ﴿سخر لكم النهر﴾ दरियाओं का निज़ाम चलाया ﴿يرسل الريح مبشرات﴾ फिर हवाओं का फिराया कभी ﴿عصفت﴾ कभी ﴿مرسلات﴾ कभी ﴿عقيم﴾ और कभी ﴿رياح﴾ और कभी ﴿ريح﴾ कभी अज़ाब की हवाएं चलाई और कभी रहमत की हवा ﴿عصفا فاصفا﴾ यह अज़ाब की हवा हैं और ﴿مرسلات مبشرات﴾ यह रहमत की हवाएं हैं तो हवाओं के निज़ाम पर क़ब्ज़ा, फिर सारी काएनात में होने वाले पेड़ उनके पत्ते, उनकी छाल, उनकी खाल और उनके अन्दर सारे निज़ाम पर अल्लाह की क़ुदरत है कि अंगूर पर आम लटका हुआ नज़र आए तो लोग कहें क्या क़ुदरत है? आम के दरख़्त पर आम का लगना भी अल्लाह तआला की बहुत बड़ी क़ुदरत है हमें एक छोटी सी बेल पर करेला नज़र आता है तो हमें चूँकि आदत हो गई है हम कहते हैं ठीक है यह कितनी बड़ी क़ुदरत है कि एक ज़मीन है कोई ज़ाएक़ा नहीं एक पानी है कोई रंग नहीं और एक ही खाद है जो वैसे ही ये तो गोबर होती है, मसनवी खाद होती है, ज़मीन का रंग कोई नहीं है, खाद का ज़ाएक़ा कोई नहीं, पानी का ज़ाएक़ा नहीं, हम सिर्फ़ बीज डालते हैं वह आसमान पर बैठकर तरबूज़ को सुर्ख़ बनाता है, ख़रबूज़े को सफ़ेद बनाता है, करेले को कड़वा बनाता है, गाजर को मीठे बनाता है किसी को

ज़मीन के अन्दर उगाता है किसी को ज़मीन के ऊपर फैलाता है किसी को पेड़ के ऊपर फैलाता है इस में रंग भरता है इसमें ज़ाएके भरता है इसमें खुशबुएं भरता है। ये सांइसदां और ज़मींदार तो कुछ नहीं कर रहे हैं, वे तो इतना कर रहे हैं कि बीज डाला और बस अगला काम उस काएनात वाले का चलता है ﴿ما كان لكم ان تنبتوا شجرها﴾ वह अल्लाह तआला खुद अपना निज़ाम बताते हैं

فانبتنا فيها وعنبا وقضبا وزيتونا ونخلا و حدائق غلبا وفاكهة وابا (سورة القصص پ٢٠)

फिर उसमें से फल निकालता हूँ ग़ल्ले निकालता हूँ, झोल निकालता हूँ, ज़ैतून निकालता हूँ, गेहूँ निकालता हूँ, बाग़ात निकालता हूँ।

रात व दिन के बदलने में उस ज़ात-ए-क़ादिर की क़ुदरत

फिर रात का निज़ाम आ रहा है, फिर दिन का निज़ाम आ रहा है ﴿يولج اليل فى النهار﴾ रात लम्बी हो गई अब हम सो रहे हैं ﴿يولج النهار فى اليل﴾ दिन लम्बे होते चले जा रहे हैं ﴿الشمس تجرى لمستقرلها﴾ सूरज को अपने निज़ाम पर, ﴿والقمر قدرنه منازل﴾ चाँद का अपना निज़ाम है फिर दोनों में टकराव नहीं,

﴿لا الشمس ينبغى ان تدرك القمر ولا اليل سابق النهار﴾
(سورة يٰسين پ. ٢٣)

दिन रात नहीं टकराते सूरज चाँद नहीं टकराते। यह सारे अपने निज़ाम पर चल रहे हैं। इनको अल्लाह बिखेर दे तो दुनिया तबाह हो जाए

قل اره يتم ان جعل الله عليكم الليل سرمدا الى يوم القيآمة من الله
غير الله ياتيكم بضيآءِ افلا تسمعون ٥ (سورة القصص پ ٢٠)

तुम मुझे बताओ अगर मैं इसी रात को खड़ा कर दूं, सूरज़ को निकलने न दूं तो मेरे अलावा कौन है जो दिन निकाल के दिखा सके और दिन न आए तो ज़िन्दगी ही ख़त्म हो जाए, सूरज की हरारत पर तो ज़िन्दगी है, सूरज को रोक दे, रात को खड़ा कर दे तो कौन ज़िन्दगी को क़ायम कर सकता है फिर इसका उल्टा

قل اره يتم ان جعل الله عليكم الليل سرمدا... الى...يوم القيامة من
الله غير الله ياتيكم بليل تسكنون فيه افلا تبصرون ٥ (سورة القصص پ ٢٠)

अगर मैं तुम पर दिन को खड़ा कर दूँ, रात को न आने दूँ तो मेरे अलावा कौन है जो तुम्हारे लिए रात ला सके, कुछ तो ग़ौर करना चाहिए।

फिर एक और निज़ाम में ग़ौर फ़रमाएं। ज़मीन चौबीस हज़ार किलोमीटर के दायरे में है, गेंद है चौबीस हज़ार किलोमीटर का, अल्लाह तआला ने उसकी रफ़्तार एक हज़ार मील फ़ी घन्टा बनाई है, हज़ार मील फ़ी घन्टा की रफ़्तार से घूमती है तो चौबीस घन्टे में अपना चक्कर पूरा करती है। इसमें आधा वक़्त रात हो जाता है आधा वक़्त दिन हो जाता है। इसकी रफ़्तार हमने तो नहीं फ़िक्स की, न ही किसी साइंसदाँ ने फ़िक्स की है। अल्लाह तआला ने ही फ़िक्स की है। अल्लाह तआला ही एक्सीलेटर बढ़ा दे और हज़ार से दो हज़ार मील फ़ी घन्टा कर दे तो छः घन्टे का दिन हो जाएगा और छः घन्टे की रात हो जाएगी। न हम काम कर सकेंगे न आराम कर सकेंगे। अल्लाह तआला एक्सीलेटर कम कर दे तो चौबीस घन्टे का दिन हो जाएगा और चौबीस घन्टे की

रात हो जाएंगी। काम करते करते भी कमर टूटेगी और न रात गुज़रने को आएगी, न दिन गुज़रने को आएगा। यह उस मालिक-उल-मुल्क का निज़ाम है जो इन्सान के चारों तरफ़ घुमाया है कि बारह घन्टे का दिन बारह घन्टे की रात इसमें इसका निज़ाम चल सकता है।

सब अज़मतों का मालिक अल्लाह तआला है

अल्लाह तआला अगर एक काम कर दे हवा से कह दे वापस आजा, हवा वापस आ जाए तो हम यूँ हो जाएंगे जैसे गुब्बारा हवा में उड़ता है। यह ये अल्लाह तआला की निशानियां हैं

﴿سنريهم ايتنا فى الآفاق وفى انفسهم حتى يتبين لهم انه الحق﴾

(سورۃ حٰم سجدہ، پ۲۷)

हम तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएंगे, जिस से तुम्हें मेरी क़ुदरत नज़र आएगी और मेरी ताक़त नज़र आएगी कि वह ज़ात हक़ है जिसके हाथ में सारी काएनात है।

वह ﴿لا شريك﴾ शिर्क से पाक है ﴿لا وزير له﴾ वज़ीर उसका कोई नहीं ﴿لا مشير له﴾ मुशीर उसका कोई नहीं ﴿لا مثال له﴾ उस से मिलता जुलता कोई नहीं ﴿لا شبيه له﴾ उस जैसा काएनात में कोई नहीं

الملك لا شريك له الفرد لا ند له العلى لا سميع له الغنى لا ولى له.

ये सारे हदीस पाक के बोल हैं जो मैंने बोले कि वह ग़नी है मददगार कोई नहीं, अकेला है शरीक कोई नहीं, वह बुलन्द है उसके बराबर नहीं। एक आयत बड़ी अजीब अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में कही है ﴿هل تعلم له سميا﴾ क्या कह रहे हैं

अल्लाह तआला ऐ मेरे बन्दे मेरे इल्म में कोई नहीं कि कोई मेरे जैसा हो तुम्हें कोई पता है तो बताओ ﴿هل تعلم له سميا﴾ तुम्हें पता है कि कोई मेरे जैसा है तो फिर मुक़ाबला हो जाए, तो वह अल्लाह तआला जो सारी दुनिया को बनाने वाला है और बनाने में अकेला है, कोई उसका साझी नहीं, चलाने में अकेला ﴿يدبر الامر من السمآء الى الارض﴾ निज़ाम चलाता है ﴿هو الذى خلق لكم، خلق سبع السموات﴾ आसमान ﴿ومن الارض مثلهن﴾ ज़मीन, ख़ालिक़ मुदब्बिर काएनात में वह जो चाहे करके दिखलाए वह नहीं होता जो पुलिस वाले चाहते हैं वह नहीं होता जो फ़ौज वाले चाहते हैं वह नहीं होता जो पाकिस्तान, अमरीका वाले चाहते हैं इस काएनात में वह होता है जो अल्लाह तआला चाहता है।

ما تشآء ون الا ان يشاء الله رب العالمين، يفعل الله ما يشاء، يخلق الله ما يشاء، يهدى من يشآء، يضل من يشآء، وتعز من تشاء.

इज़्ज़त ﴿وتذل من تشآء﴾ ज़िल्लत ﴿يبسط الرزق لمن يشاء﴾ कुशादगी ﴿ويقدر﴾ तंगी ﴿امات﴾ मौत ﴿احيا﴾ ज़िन्दगी ﴿اضحك﴾ खुशी ﴿وابكى﴾ ग़म, खुशी, मौत, इज़्ज़त, ज़िल्लत, बढ़ना, घटना यह अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि मेरे इरादे से होता है तुम्हारे इरादे से नहीं।

ऐ इन्सान अपने बदन में रब को पहचान

मेरे भाईयो! जिस रब ने इतना बड़ा निज़ाम हमारे लिए चलाया है तो यह तो बाहर का निज़ाम है। यह कितनी बड़ी क़ुदरत है कि मेरे ख़्यालात आवाज़ की शक्ल में बदलते हैं वह आवाज़ बोल की

शक्ल लेती है फिर इन बोलों को आपके कानों तक पहुँचाती है और ख़्यालात आप समझने के क़ाबिल हो जाते हैं यह कितनी बड़ी अल्लाह की क़ुदरत है, यह गोश्त का लोथड़ा जो हिलता है और पीछे ख़्यालात हैं जो आगे आते हैं, ज़बान पर आते हैं तो लफ़्ज़ का रूप धार लेते हैं, आवाज़ की शक्ल बदलती है और अगर बीच में हवा न हो तो मैं चिल्लाता रहूँ आप एक लफ़्ज़ भी नहीं सुन रहे होंगे। हवा हमारे पैग़ाम को आपके कानों तक पहुँचाती है फिर वे बोल का मफ़हूम लेकर आपके दिमाग़ में जाते हैं यह कितनी बड़ी अल्लाह तआला की क़ुदरत है। ज़बान से बोलना होता तो ज़राफ़ा बोलता जिसकी इतनी लम्बी ज़बान है। अल्लाह तआला इतनी छोटी सी ज़बान को अल्फ़ाज़ से सजा रहे हैं।

कानों में दो लाख टेलीफ़ोन

फिर हमारे एक एक कान में एक एक लाख टेलीफ़ोन लगे होते हैं, एक लाख पर्दे हैं यूँ समझो एक लाख टेलीफ़ोन हैं। एक लाख इधर एक लाख इधर। अगर टेलीफ़ोन का बिल न दोगे तो महकमे वाले काटकर चले जाएंगे और अल्लाह तआला ने दो लाख टेलीफ़ोन लगाए हैं कोई बिल नहीं लिया, न कभी मांगा है, सिर्फ़ एक बिल मांगा है वह कोई भी नहीं देता उसके अलावा जिसे अल्लाह चाहे कि ऐ मेरे बन्दे! इन कानों से गाना न सुना कर, गाली न सुना कर, ग़ीबत न सुना कर और ग़लत बातें न सुना कर। इन कानों से वह सुनाकर जो मैं कहता हूँ। अपनी ज़रूरत की सुन, क़ुरआन सुन, अच्छी बातें सुन, पर क़िसी की गाली न

सुन, किसी की ग़ीबत न सुन, गाना बजाना न सुन, फ़हश औरतों का गाना न सुन। मेरा इतना ही बिल है। आपका तो टेलीफ़ोन हुकूमत काट जाए इधर दो लाख टेलीफ़ोन हैं मगर बिल देने वाले कोई लाखों में नज़र नहीं आता है फिर अल्लाह तआला का कनैक्शन जारी है। ठीक है चलने दो भाई कभी तो तौबा करेगा।

आँखों में तेरह करोड़ बल्ब

फिर हमारी आँखें हैं इस एक आँख में तेरह करोड़ बल्ब लगे हुए हैं तेरह करोड़ जो जलते बुझते हैं जो आपको रंग बताते हैं। आपको रोशनियाँ बताते हैं अगर वे छः लाख बल्ब अल्लाह तआला बुझा दे तो सफ़ेद काले पीले सब ग़ायब हो जाएंगे हर चीज़ सफ़ेद नज़र आएगी। वे कुछ बल्ब ऐसे हैं। वे अल्लाह तआला बुझा दें तो फ़ासले की समझ ख़त्म हो जाएगी कि आप मुझ से कितने फ़ासले पर बैठे हुए हैं। नज़र तो आएगा मगर अन्दाज़ा ख़त्म हो जाएगा। रोज़ टक्कर रोज़ टकराव। जी मैं तो समझा क़रीब से गुज़र रहा हूँ यह नहीं पता कि ऊपर ही चढ़ गया है। अल्लाह तआला इन बल्बों को बुझा दे तो साईज़ का पता नहीं चलेगा कि यह दो फ़िट चौड़ा है या दो फ़िट लम्बा है। इसकी तमीज़ अल्लाह तआला ही ख़त्म कर देगा और सारी ही बुझा दे तो अंधा ही हो गया तो अल्लाह तआला ने तेरह करोड़ बल्ब लगाकर सिर्फ़ एक बिल मांगा है सिर्फ़ एक बिल ﴿يا ابن آدم جعلت لك عينين﴾ मैंने तुझे दो आँखें दी हैं ﴿وجعلت لهما الغطى﴾ इस पर पर्दा लगाया ﴿فانظر بعينك احللته لك﴾ अपनी आँखों से वह देख जा मैंने

तेरे लिए हलाल कर दिया, हलाल देखो, हराम क्या है? वे सब को पता है और अगर तेरे सामने वह शक्ल आए जिसका देखना मैं रोक चुका हूँ, जिसके देखना मैं बेहयाई क़रार दे चुका हूँ तो यह पर्दा (पलकें) यूँ गिरा लिया कर। फ़रमाया और कोई बिल नहीं कितने हैं जो यह बिल देते हैं? अगली बात ﴿يا ابن آدم جعلت لك فرجا، وعلته سترا﴾ मैंने तेरे अन्दर शहवत रखी और उसके साथ हया का पर्दा भी रखा। अपनी शहवत को वहाँ इस्तेमाल कर जहाँ मैंने हलाल क़रार दिया है अगर कोई हराम चीज़ की तरफ़ शैतान दावत दे तो हया के पर्दे को गिरा। तू नहीं हया करेगा तो और कौन हया करेगा?

तेरी ज़बान रब के ताबे

फिर तीसरी चीज़ ﴿جعلت لك لسانا وجعلته بابا﴾ तुझे ज़बान दी है। ज़बान पर होंटों के दरवाज़े लगाएं हैं। एक तो यह बोलेने का काम देती है और एक ज़ाएक़े बताती है। ज़बान में तीन हज़ार ख़ाने हैं छोटे छोटे। आप मीठा खाएंगे तो बताएगी जनाब एसपी साहब आप मीठा खा रहे हैं, आप नमकीन खाएंगे तो बताएगी जनाब इंसपैक्टर साहब आप नमकीन खा रहे हैं और आप कढ़वा खाएंगे तो फ़ौरन बताएगी कि आप कढ़वा खा रहे हैं। अगर अल्लाह तआला इन ख़ानों को बन्द कर दें तो पत्थर खिला दो गोश्त खिला दो बराबर है, मीठा खिला दो, कढ़वा खिला दो तो बराबर है और उसे दवा खिला दो, मिट्टी खिला दो तो बराबर है। इन ज़ाएक़ों को खोलते रहना और फिर साथ साथ बोलने की ताक़त देते रहना कितना बड़ा कारनामा है।

हज़रत मौलाना अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० बहुत बड़े तक़रीर करने वाले गुज़रे हैं। आठ आठ घन्टे तक बोला करते थे। एक एक डेढ़ डेढ़ लाख के मजमे में बग़ैर लाउड स्पीकर के उनकी आवाज़ जाती थी। आख़िरी उम्र में उनकी ज़बान पर फ़ालिज का असर हुआ फिर आहिस्ता आहिस्ता ठीक हुई, लड़खड़ाने लगी। एक दिन कहने लगे अल्लाह तआला ने मुझे बताया कि अताउल्लाह! मैं बुलवाता था तू नहीं बोलता था। अपनी ताक़त से बोलता था तो अब बोलकर दिखा। बुलवाने वाले अल्लाह तआला हैं। तो क्या कहा तुझे ज़बान दी, इस पर दरवाज़ा लगाया ﴿انطلق بلسانك ما احللته لك﴾ अपनी ज़बान से वह बोल बोलो जिसकी मैंने तुझे इजाज़त दी। अब अगर आपको चढ़ गया ग़ुस्सा तो पकड़ लिया और गाली देने लगे जैसे आम तौर पर सिपाहियों की आदत है। सिपाही क्या सारे ही ताजिरों के ही छोटे छोटे बच्चे गालियाँ देते फिरते हैं। आपका नहीं सबका यही हाल है। एक हदीस में आता है ﴿واذا تسابت امتی سقطت من عین اللہ﴾ जब मेरी उम्मत में गाली गलौच आम हो जाएगी तो अल्लाह तआला की नज़र से गिर जाएगी। अफ़सर की नज़र से गिर जाएं तो कितना बुरा हाल होगा तो क्या कहा अल्लाह तआला ने जब ज़बान पर कोई ग़लत बोल आने लगे तो अपनी ज़बान को बन्द कर दे ﴿اغلق عليك الباب﴾ ताला लगा दे, ज़बान बन्द कर ले, आगे क्या कहा अल्लाह तआला ने,

﴿یا ابن آدم لا تطیق عذابی ولا تتحمل سخطی فتعصنی﴾

ऐ मेरे बन्दे! मेरी नाफ़रमानी न किया कर तू मेरे अज़ाब को बर्दाश्त नहीं कर सकेगा, तू मेरी पकड़ को सह नहीं सकेगा, तू मेरी नाफ़रमानी न किया कर तू मेरे अज़ाब को सह नहीं सकेगा।

सब इन्तिज़ाम तेरे लिए हैं और तू मेरे लिए है

तो मेरे भाईयो! हमारा सारा वजूद ही अल्लाह तआला का एहसानमंद है कि नुत्फ़े से इन्सान बने हुए हैं तो अल्लाह तआला ने सारी काएनात हमारी ख़िदमत में लगा कर हम से सिर्फ़ एक मुतालबा किया है ﴿يا ابن آدم خلقت الاشياء لأجلك﴾ ऐ मेरे बन्दे सारा जहाँ तेरे लिए है ﴿وخلقتك لا جلى﴾ और तू मेरे लिए है लिहाज़ा मेरी मानकर चल। हमें भाई आपकी ख़िमदत में दो तीन बातें अर्ज़ करनी हैं उनमें पहली बात मैंने पूरी की कि हम अल्लाह के मानने वाले बनें, वह न मानें जो मेरा जी चाहता है, वह मानें जो अल्लाह चाहता है। आप लोग हुकूमत की मानते हैं तो आपको तंख़्वाह मिलती है। आप हुकूमत की मानना छोड़ दें तो हुकूमत वाले निकाल देंगे तो जब अल्लाह तआला की मानेंगे तो अल्लाह तआला तो हुकूमत से ज़्यादा ग़ैरत वाला है। जब अल्लाह तआला की मानेंगे तो अल्लाह तआला के ग़ैबी ख़ज़ाने खुलेंगे हुकूमत ग़ैरत दिखाती है तो जब अल्लाह तआला के सिपाही बनेंगे तो अल्लाह तआला कितनी ग़ैरत दिखाएंगे, यक़ीनन अल्लाह तआला का ग़ैबी निज़ाम आपके लिए हरकत में आएगा।

अपने करीम रब के हुज़ूर झुक जा सच्ची तौबा कर

तो भाई हम अल्लाह तआला की मानें आज तक जो हुआ उससे तौबा कर लें। अल्लाह तआला की ज़ात जैसी रहीम और

करीम और उससे बड़ा मेहरबान और माफ़ करने वाला पूरी दुनिया में कोई नहीं सारी ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़र जाए एक दफ़ा कह दे ऐ अल्लाह! माफ़ कर दे। अल्लाह तआला सारे ही गुनाह माफ़ कर देते हैं ताना भी नहीं देते। आपकी और हमारी माँ खुदा न करे नाराज़ हो जाए। उसे राज़ी करना पड़े तो पहले ताने बोलियां देगी फिर माफ़ करेगी और अल्लाह तआला, या अल्लाह! मुझे माफ़ कर दे ग़लती हो गई। (अल्लाह तआला कहता है) चल मेरे बन्दे सारे ही गुनाह माफ़ किए तो भाई माफ़ी मांग लें। अल्लाह तआला से समझौता हो जाएगा तो सारा मसूअला ही हल हो जाएगा। नाफ़रमान के लिए ज़मीन व आसमान जोश खाते हैं कि ऐ अल्लाह! इजाज़त दें तो तेरे नाफ़रमानों को निगल जाएं तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मुझ से बड़ा सख़ी कौन होगा? मैं तो अपने बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार करता हूँ, अल्लाहु अकबर! ﴿من اقبل الى كلام﴾ में ग़ौर फ़रमाएं। मैं अल्लाह और उसके हबीब का कलाम अर्ज़ कर रहा हूँ। मेरी अपनी कोई बात नहीं, अल्लाह तआला की बात है या अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात है ﴿من اقبل الى﴾ जो मेरी तरफ़ चल पड़ता है चाहे सारा दामन गुनाहों से सन चुका हो और रूंआ-रूंआ उसका गुनाहों में जकड़ा हुआ हो लेकिन जब मेरी तरफ़ चल पड़े ﴿فلقيته من بعيد﴾ आगे बढ़कर मैं उसका इस्तिक़बाल करता हूँ, अल्लाहु अकबर! जिससे आपको ताल्लुक़ होता है आप उसे देखकर उठ पड़ते हैं और आगे बढ़कर उसको मिलते हैं। अल्लाह तआला क्या कह रहा है जो मेरी तरफ़ आ जाए मैं आगे बढ़कर उसको मिलूंगा फिर यही नहीं हम से जो मुँह मोड़े हम दस दफ़ा उससे मुँह मोड़ते

हैं ﴿ومن اعرض عنى﴾ और जो मुझसे मुँह मोड़ लेता है क़रीब में उसके जाकर उसे यूँ बुलाता हूँ, ऐ मेरे बन्दे! कहाँ जा रहा है? मस्अला तो इधर हल होगा, मुझे छोड़कर कहाँ चल दिया और उसको क़ुरआन मजीद में इस तरह बयान किया है

يا ايها الانسان ما غرك بربك الكريم. (سورة التكوير، پ ۳۰)

ऐ मेरे प्यारे बन्दे तुझे किस ने धोका दे दिया अपने रब की ज़ात के बारे में।

कि तू रब से जफ़ा कर बैठा और मख़्लूक़ से वफ़ा कर बैठा, क्या हुआ तुझे कि रब को भुलाकर मख़्लूक़ के पीछे भाग पड़ा। यह क़ुरआन के अल्फ़ाज़ हैं। उसकी तरफ़ आएं जो इन्तिज़ार में है और हदीस में है तू मुझे भूल जाता है मैं तुझे याद रखता हूँ ﴿ان ذكرتنى ذكرتك﴾ तू याद करता है तो तुझे मैं याद करता हूँ। भाई हम तौबा करें, अल्लाह की बारगाह की तरफ़ लौटें तुम देखोगे कि मैं कैसा मेहरबान हूँ फिर इससे अगली बात बताई। एक आदमी ने तौबा की पिछले गुनाह माफ़ हो गए, नहीं सिर्फ़ माफ़ नहीं हुए, जब आदमी तौबा करता है तो अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि तुम्हारे गुनाहों को मिटाकर फिर उसके बदले नेकियां लिख देता हूँ जो गुनाह किए हैं वह भी अल्लाह तआला ने नेकियाँ बना दीं। चाहे जब तौबा कर ले और तौबा सबसे ज़्यादा महबूब है। इसलिए हम सब को ख़ुलूसे दिल से तौबा करनी चाहिए और अच्छे आमालों की तरफ़ बढ़ना चाहिए। अल्लाह तआला हम सब का हामी और मदद करने वाला हो (आमीन)

○ ○ ○

अल्लाह तआला के असमाए हुस्ना का बयान

हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला के अस्माए हुस्ना जिनके साथ दुआएं मांगने का हमें हुक्म दिया गया है निन्नानवें नाम हैं जो शख़्स इनको याद करेगा और पढ़ता रहेगा वह जन्नत में दाख़िल होगा। इसी हदीस के दूसरे अल्फ़ाज़ ये हैं जो कोई शख़्स इनको मुँहज़बानी याद करेगा और बराबर पढ़ता रहेगा वह ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा। वे नाम ये हैं।

अस्माए हुस्ना (अल्लाह तआला के नाम) के पढ़ने का तरीक़ा

जब अस्माए हुस्ना की तिलावत करना चाहें तो इस तरह शुरू करें

هو الذی لا الله هو الرحمن الرحیم.

आख़िर तक लगातार पढ़ते जाएं हर नाम के आख़िर में पेश पढ़ें और दूसर नाम से मिला दें। जिस नाम पर साँस लेने के लिए रुकें उसको न मिलाएं और दूसरा नाम "अल" से शुरू करें। अगर किसी नाम का वज़ीफ़ा पढ़ें तो शुरू में "या" का इज़ाफ़ा करें।

मसलन "अर्रहमान" का वज़ीफ़ा पढ़ना है तो "या रहमान" न पढ़ें, "या अर्रहमान" पढ़ें। इसी तरह सारे नामों को लीजिए।

असमाए हुस्ना ख़ासियतों और फ़ायदे के साथ

1. अल्लाहु ﴿اَللّٰهُ﴾

जो शख़्स हज़ार बार रोज़ाना पढ़े अल्लाह तआला उसको यक़ीन का कमाल नसीब फ़रमावेंगे और जो शख़्स जुमा के दिन जुमा से पहले पाक व साफ़ होकर अकेले में दो सौ बार पढ़े उसका मतलब आसान होगा चाहे कैसा ही मुश्किल हो और जिस मर्ज़ के ईलाज से ईलाज करने वाले थक गए हों उस पर पढ़ा जावे तो अच्छा हो जावे शर्त यह है कि मौत का वक़्त न आ गया हो।

2. अर्रहमानु ﴿اَلرَّحْمٰنُ﴾ (बेहद रहम करने वाला)

हर नमाज़ के बाद सौ बार पढ़ने से दिल की ग़फ़लत और भूल दफ़ा हो और ज़्यादा तादाद में ज़िक्र करने वाला हर मकरूह काम से बचा रहे और अगर इसको मुश्क व ज़ाफ़रान से लिखकर किसी महफ़ूज़ जगह बद-खुल्क़ आदमी के घर में दफ़न कर दिया जाए तो उसमें हया और रहम और नरमी पैदा हो।

3. अर्रहीमु ﴿اَلرَّحِيْمُ﴾ (बड़ा मेहरबान)

जो शख़्स रोज़ाना सौ बार पढ़े उसके दिल में नरमी और

मुहब्बत पैदा हो और जिस किसी को कोई बात नागवार का अन्देशा हो "अर्रहमानुर्रहीम" की कसरत करे या लिखकर पढ़े और अगर इसको लिखकर पानी से धोकर वह पानी किसी पेड़ की जड़ में डाल दें तो उसके फल में बरकत हो औरअगर किसी को घोलकर पिला दें उसके दिल में लिखने वाले की मुहब्बत हो। इसी तरह अगर तालिब व मतलूब का नाम उनकी वालिदा के नाम के साथ उसकी मुहब्बत में पेरशान हो जाए शर्त यह है कि जाएज़ मुहब्बत हो।

4. अल्मलिकु ﴿الملك﴾ (हक़ीक़ी बादशाह)

जो शख़्स सूरज डूबने के वक़्त एक सौ बीस बार पढ़ा करे अल्लाह तआला उसको दिल की सफ़ाई और ग़िना अता फ़रमाएं चाहे ग़िना ज़ाहिरी हो या बातिनी।

5. अल्क़ुद्दूस ﴿القدوس﴾ (बुराईयों से पाक ज़ात)

जुमा की नमाज़ के बाद एक सौ पिचासी बार ﴿سبوح قدوس رب الملئكة والروح﴾ (सुब्बुहुन क़ुद्दुसुन रब्बुल मलाइकतिहि वर्रूह) कह कर फिर इसको रोटी पर लिखकर खावे सारी आफ़तों से महफ़ूज़ रहे और इबादत की तौफ़ीक़ हो।

6. अस्सलामु ﴿السلام﴾ (बे ऐब ज़ात):-

अगर मरीज़ के पास उसके सरहाने बैठकर दोनों हाथ उठाकर इसको एक सौ छत्तीस बार ऊँची आवाज़ से पढ़े ताकि मरीज़ भी

सुन ले, पढ़ें। इन्शाअल्लाह उसको शिफ़ा होगी।

7. अल्मुमिनु ﴿المؤمن﴾ (अमन व ईमान देने वाला)

जो कसरत से इसका ज़िक्र करे उसको अमन और ईमान की ताकत और ख़ौफज़दा हो तो इसको छत्तीस बार कहे, अपनी जान व माल में अमन पाए।

8. अल्मुहैमिनु ﴿المهيمن﴾ (निगहबान)

गुस्ल करके दो रक्अत नफ़िल पढ़कर सौ बार अकेले में दिल को हाज़िर करके पढ़ें तो आली हिम्मत पैदा हो।

9. अल्अज़ीज़ु ﴿العزيز﴾ (सब पर ग़ालिब)

चालीस रोज़ तक हर रोज़ इकतालिस बार पढ़ें ग़िना ज़ाहिरी या बातिनी और इज़्ज़त नसीब हो और किसी मख़्लूक़ का मोहताज न हो।

10. अल्जब्बारु ﴿الجبار﴾ (सबसे ज़बरदस्त)

सुबह व शाम दो सौ सोलह बार पढ़ें तो ज़ालिमों के शर से महफ़ूज़ रहे।

11. अल्मुतकब्बिरु ﴿المتكبر﴾

(बड़ाई और बुज़ुर्गी वाला)

कसरत से ज़िक्र करने से बुज़ुर्गी और बरकत हासिल हो और

पहली रात में बीवी के पास जाकर सोहबत से पहले दस बार ज़िक्र करे तो नेक लड़का (पैदा) हो।

12. अलख़ालिक़ ﴾الخالق﴿ (पैदा करने वाला)

सात रोज़ तक लगातार रोज़ाना सौ बार पढ़े तो तमाम आफ़तों से सलामत रहे।

13. अलबारियु, अलमुसव्विरु ﴾البارئ المصور﴿

(जान डालने वाला, सूरत बनाने वाला)

कसरत से ज़िक्र करने से सनाए अजीबया का ईजाद आसान हो और अगर बांझ औरत सात रोज़ तक रोज़ा रखे और पानी से इफ़्तार करे और इफ़्तार के बाद इक्कीस बार पढ़े तो इन्शाअल्लाह हमल क़रार पावे और औलाद हो।

14. अलग़फ़्फ़ारु ﴾الغفار﴿ (दरगुज़र करने वाला)

जुमा की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़े तो आसारे मग़फ़िरत पैदा हों यानी हर तंगी दूर हो, बे गुमान रिज़्क़ मिले।

15. अलक़ह्हारु ﴾القهار﴿

(सब को अपने क़ाबू में रखने वाला)

कसरत से ज़िक्र करने से दुनिया की मुहब्बत और अल्लाह के

ग़ैर की बड़ाई दिल से जाती रहे और दुश्मनों पर ग़ल्बा हो और अगर चीनी के बर्तन पर लिखकर ऐसे शख़्स को पिलाया जावे जो सहर की वजह से औरत पर क़ादिर न हो तो सहर दफ़ा हो।

16. अल्वह्हाबू ﴿الوھاب﴾ (बहुत बड़ा रोज़ी देने वाला)

कसरत से ज़िक्र करने से ग़िना और क़ुबूलियत और हैबत व बुज़ुर्गी पैदा हो अगर चाश्त की नफ़िलों के आख़िरी सज्दे में उसको चौदह बार कहे ये मक़ासिद उसको हासिल हों।

17. अर्रज़्ज़ाक़ु ﴿الرزاق﴾ (बहुत बड़ा रोज़ी देने वाला)

फ़ज्र की नमाज़ से पहले घर के सब कोनों में दस दस बार कहे और जो कोना क़िब्ले की सिम्त के दायीं तरफ़ हो उससे शुरू करे तो रिज़्क़ की वुसअत हो।

18. अल्फ़त्ताहु ﴿الفتاح﴾ (बहुत बड़ा मुश्किल कुशा)

फ़ज्र की नमाज़ के बाद सीने पर हाथ रखकर सत्तर बार पढ़े सारे कामों में आसानी हो और दिल में तहारत और नूरानियत और रिज़्क़ हासिल हो।

19. अल्अलीमु ﴿العليم﴾ (बहुत वसी इल्म वाला)

इसकी कसरत व पाबन्दी से हक़ाएक़ और माअरिफ़ मुन्कशिफ़

होते हैं और याद्दाश्त क़वी हो।

20. अल्क़ाबिज़ु ﴿القابض﴾ (रोज़ी तंग करने वाला)

चालीस रोज़ रोटी के लुक़्मे पर इसको लिखकर खावे तो भूख से तकलीफ़ न हो।

21. अल्बासितु ﴿الباسط﴾ (रोज़ी कुशादा करने वाला)

नमाज़ चाश्त के बाद दस बार पढ़ने से रिज़्क़ में कुशादगी हो।

22. अल्ख़ाफ़िज़ु ﴿الخافض﴾ (पस्त करने वाला)

पाँच सौ बार पढ़ने से हाजत पूरी हो।

23. अर्राफ़िऊ ﴿الرافع﴾ (बुलन्द करने वाला)

सत्तर बार पढ़ने से ज़ालिमों से अमन में हो।

24. अल्मुइज़्ज़ु ﴿المعزو﴾ (इज़्ज़त देने वाला)

पीर की रात व जुमे की रात मग़रिब की नमाज़ के बाद चालीस बार पढ़ने से उसकी हैबत लोगों के दिलों में पैदा हो।

25. अल्मुज़िल्लु ﴿المذل﴾ (ज़िल्लत देने वाला)

पिच्हत्तर बार पढ़कर सज्दे में सर रखकर दुआ करे तो हासिद

के हसद से महफ़ूज़ रहे और जिसका हक़ दूसरे के ज़िम्मे आता हो और वह उसमें टाल मटोल करता हो, इसको कसरत से पढ़ने से वह उसका हक़ अदा करे।

26. अस्समीऊ ﴿السميع﴾ (सबकी सुनने वाला)

जुमेरात के रोज़ चाश्त की नमाज़ के बाद पाँच सौ बार पढ़कर जो दुआ करे क़बूल हो।

27. अल्बसीरु ﴿البصير﴾ (सब कुछ देखने वाला)

जुमा की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़ने से बसीरत में सफ़ाई और नेक आमाल की तौफ़ीक़ हो।

28. अल्हकीमु ﴿الحكيم﴾ (हाकिम मुतलक़)

आधी रात के वक़्त वुज़ू करके दिल को हाज़िर करके ज़रा देर तक पढ़े तो अल्लाह तआला उसके दिल को राज़ खुलने की जगह बनाएंगे।

29. अल्अद्लु ﴿العدل﴾ (मुकम्मल इन्साफ़)

जुमा की रात में रोटी के बीस टुकड़ों पर उसको लिखकर खाने से मख़्लूक़ के दिल क़ब्ज़े में हो जावें।

30. अलुलतीफ़ु ﴿اللطيف﴾ (बड़ा लुत्फ़ व करम वाला)

एक सौ तैंतीस बार पढ़ने से रिज़्क़ में वुसअत हो। सारे काम लुत्फ़ से पूरे हों।

31. अलुख़बीरु ﴿الخبير﴾ (बाख़बर और आगाह)

सात रोज़ तक कसरत से पढ़ने से ख़ुफ़िया ख़बरें मालूम होने लगें और जो किसी मूज़ी के पंजे में गिरफ़्तार हो इसको कसरत से पढ़ने से हालत दुरुस्त हो जावें।

32. अलुहलीमु ﴿الحليم﴾ (बड़ा बुर्दबार)

अगर रईस आदमी इसको कसरत से पढ़े तो उसकी सरदारी ख़ूब जमे और राहत से रहे और अगर काग़ज़ पर लिखकर पानी से धोकर अपने पेशे के आलात व औज़ार पर मले तो उसके पेशे में बरकत हो अगर किश्ती डूब रही हो तो डूबने से बची रहे अगर जानवर का डर हो हर वक़्त आफ़ात से अमन में रहे।

33. अलुअज़ीमु ﴿العظيم﴾ (बहुत अज़मत वाला)

कसरत से ज़िक्र करने से इज़्ज़त और हर मर्ज़ से शिफ़ा हो।

34. अलुग़फ़ूरु ﴿الغفور﴾ (बहुत बख़्शने वाला)

बुख़ार वाले को तीन बार लिखकर बांध दिया जाए तो बुख़ार जाता रहे।

35. अश्-शकूरु ﴿الشكور﴾ (क़द्रदान)

जिसको साँस या थकान या गिरानी आज़ा हो इसको लिखकर बदन पर फेर दे और पीवे तो नफ़ा हो और अगर कमज़ोर निगाह वाला अपनी आँख पर फेरे निगाह में तरक़्क़ी हो।

36. अल्-अलियु ﴿العلى﴾ (बहुत बुलन्द व बरतर)

अगर लिखकर बच्चे के बांध दिया जाए जल्दी जवान हो अगर मुसाफ़िर अपने पास रखे तो जल्दी अज़ीज़ों से आ मिले अगर मोहताज हो तो ग़नी हो जावे।

37. अल्कबीर ﴿الكبير﴾ (बहुत बड़ा)

कसरत से ज़िक्र करने से इल्म व मारफ़त कुशादा हो अगर खाने की चीज़ पर पढ़ कर मियाँ बीवी को खिला दिया जाए तो उनमें आपस में मुहब्बत हो।

38. अल्हफ़ीज़ु ﴿الحفيظ﴾

(सब की हिफ़ाज़त करने वाला)

इसका ज़िक्र करने वाला या लिखकर पास रखने वाला हर ख़ौफ़ से महफ़ूज़ रहे अगर दरिन्दों के बीच में सो रहे तो नुकसान न पहुँचे।

39. अल्मुक़ीतु ﴿المقيت﴾

(सबको रोज़ी और तवानाई देने वाला)

अगर रोज़ादार इसको मिट्टी पर पढ़कर या लिखकर उसको तर करके सूंघे तो क़ुव्वत और ग़िज़ाइयत हासिल हो और अगर मुसाफ़िर कूज़े पर सात बार पढ़कर उससे पानी पिया करे तो वहशते सफ़र से अमन में रहे।

40. अल्हसीबु ﴿الحسيب﴾

(सबके लिए किफ़ायत करने वाला)

अगर किसी से तशद्दुद और हिसाब का अन्देशा हो या किसी भाई बिरादरी से किसी मामले में ख़ौफ़ हो तो सात रोज़ तक सूरज निकलने से पहले और मग़रिब के बाद इसको बीस बार पढ़े।

41. अल्जलीलु ﴿الجليل﴾ (बड़े और बुलन्द मर्तबे वाला)

इसको कसरत से ज़िक्र करने से या मुश्क व ज़ाफ़रान से लिखकर पास रखने से क़द्र व मंज़िलत ज़्यादा हो।

42. अल्करीमु ﴿الكريم﴾ (बहुत करम करने वाला)

सोते वक़्त कसरत से पढ़ा करे तो लोगों के दिल में उसका इकराम वाक़े हो।

43. अर्रक़ीबु ﴿الرقيب﴾ (बड़ा निगहबान)

इसके ज़िक्र करने से माल व अयाल महफ़ूज़ रहें और जिसकी कोई चीज़ गुम हो जावे उसको बहुत पढ़े तो इन्शाअल्लाह मिल जावे और अगर हमल गिरने का अन्देशा हो तो उसको सात बार पढ़े तो साक़ित न हो और सफ़र के वक़्त जिस बाल बच्चे की तरफ़ से फ़िक्र हो उसकी गर्दन पर हाथ रखकर सात बार पढ़े तो अमन में रहे।

44. अल्मुजीबु ﴿المجيب﴾

(दुआएं सुनने वाला और कुबूल करने वाला)

दुआ के साथ इसको ज़िक्र करना क़बूलियत को लाज़िम करता है।

45. अल्वासेउ ﴿الواسع﴾ (वुसअत देने वाला)

कसरत से ज़िक्र करने से ग़िना ज़ाहिरी व बातिनी हासिल हो और फ़राख़ हौसलगी व बुर्दबारी पैदा हो।

46. अल्हकीमु ﴿الحكيم﴾ (बड़ी हिकमतों वाला)

कसरत से ज़िक्र करने से मसाइब दफ़ा हों और इल्म का दरवाज़ा व हिकमत कुशादा हो।

47. अल्वदूदु ﴿الودود﴾ (बड़ा मुहब्बत करने वाला)

अगर खाने पर एक हज़ार बार पढ़कर बीवी के साथ खावे तो

मुहब्बत व फरमाबरदारी करने लगे।

48. अल्मजीदु ﴾المجيد﴿ (बड़ा बुजुर्ग)

अगर कोढ़ की बीमारी वाला महीने के बीच के दिनों में रोज़ा रखे और हर रोज़ इफ़्तार के वक़्त इसको कसरत से पढ़े तो इन्शाअल्लाह अच्छा हो जावे।

49. अल्बाइसु ﴾الباعث﴿

(मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला)

सोते वक़्त सीने पर हाथ रखकर इसको सौ बार पढ़ा करे तो उसका दिल इल्म व हिकमत से मुनव्वर हो।

50. अश्-शहीदु ﴾الشهيد﴿ (हाज़िर व नाज़िर)

अगर नाफ़रमान औलाद या बीवी की पेशानी पकड़ कर इसको पढ़े या हज़ार बार पढ़ कर दम करे तो वह फ़रमाबरदार हो जावें।

51. अल्हक़्क़ु ﴾الحق﴿ (बरहक़ व बरक़रार)

एक चौकोर कागज़ के चारों कोनों पर लिखकर उसको हथेली पर रखकर आख़ीर रात में आसमान की तरफ़ बुलन्द करे तो मुश्किलात में आसानी हो।

52. अल्‌वकीलु ﴿الوكيل﴾ (बड़ा कारसाज़)

हर हाजत के लिए इसकी कसरत मुफ़ीद है।

53. अल्‌क़व्वियु ﴿القوى﴾

(बड़ा ताक़त और क़ुव्वत वाला)

अगर कम हिम्मत पढ़े तो बा हिम्मत हो जावे और अगर कमज़ोर पढ़े तो ज़ोर आवर हो जावे और अगर मज़लूम अपने ज़ालिम को मग़लूब करने के लिए पढ़े तो वह मग़लूब हो जावे।

54. अल्‌मतीनु ﴿المتين﴾ (शदीद क़ुव्वत वाला)

इसकी ख़ासियत अल्‌क़व्वियु के है और अगर किसी फ़ाजिर मर्द या औरत पर पढ़े तो फ़ुजूर से बाज़ आवें।

55. अल्‌वलियु ﴿الولى﴾

(मददगार और हिमायती)

जो कसरत से इसको पढ़े महबूब हो जावे और जिसको कोई मुश्किल पेश आवे जुमा की रात को हज़ार बार पढ़े।

56. अल्‌मजीदु ﴿المجيد﴾ (तारीफ़ के लायक़)

इसकी कसरत से अच्छे अख़्लाक़ व काम व बात हासिल हों।

57. अल्मुह्सियु ﴿المحصى﴾

(अपने इल्म और शुमार में रखने वाला)

अगर रोटी के बीस टुकड़ों पर बीस बार पढ़े तो मख़्लूक़ काबू में आ जाए।

58. अल्मुबदियु ﴿المبدی﴾

(पहली बार पैदा करने वाला)

हामला औरत के पेट पर रात को पढ़े तो हमल महफ़ूज़ रहे और गिरे नहीं।

59. अल्मुईदु ﴿المعید﴾ (दोबारा पैदा करने वाला)

अगर कोई बात भूल जावे और याद करने से याद न आवे तो उसको बार बार ज़िक्र करे ख़्वाह अकेले या "मुबदियु" के साथ इन्शाअल्ला तआला याद आ जावे।

60. अल्मुह्यि ﴿المحی﴾ (ज़िन्दगी देने वाला)

जिसको किसी अलैहिदगी का अन्देशा हो या क़ैद का ख़ौफ़ हो इसको कसरत से पढ़े।

61. अल्मुमीतु ﴿الممیت﴾ (मौत देने वाला)

जिसकी आदत फ़िज़ूल ख़र्ची की हो या तबियत कहना मानने

पर आमादा न हो तो इसकी कसरत करे।

62. अल्हय्यु ﴿الحی﴾ (हमेशा हमेशा ज़िन्दा रहने वाला)

इसकी कसरत या लिखकर पीने से हर क़िस्म की बीमारियों से निजात हो।

63. अल्क़य्यूम ﴿القیوم﴾

(सब को क़ायम रखने और संभालने वाला)

इसकी कसरत से नींद आती है या हय्यु या क़य्यूम ﴿يا حي يا قيوم﴾ की फ़ज्र से सूरज निकलने तक पढ़ने से मुसतैदी और आमादगी ताआत में हासिल होगी।

64. अल्वाजिदु ﴿الواجد﴾ (हर चीज़ को पाने वाला)

लुक़मे पर पढ़कर खावे तो दिल को ताक़त हासिल हो।

65. अल्माजिदु ﴿الماجد﴾ (बुज़ुर्गी और बड़ाई वाला)

पाबन्दी से पढ़े तो दिल मुनव्वर हो जाए।

66. अल्वाहिदु ﴿الواحد﴾ (एक)

अगर हज़ार बार पढ़े तो ताल्लुक़ मख़्लूक़ का उसके दिल से निकल जाए।

67. अस्समदु ﴿الصمد﴾ (बेनियाज़)

आख़ीर रात में एक सौ पच्चीस दफ़ा पढ़े तो सच्चाई और सच्चेपन के आसार ज़ाहिर हों और जब तक इसका ज़िक्र करता रहे भूख का असर न हो।

68. अल्क़ादिरु ﴿القادر﴾ (क़ुदरत वाला)

दो रकअत पढ़कर इसको सौ बार पढ़े तो उसको क़ुव्वत हासिल हो और अगर वुज़ू करते वक़्त इसकी कसरत करे तो दुश्मनों पर ग़ालिब हो।

69. अल्मुक़्तदिरु ﴿المقتدر﴾ (पूरी क़ुदरत रखने वाला)

जब सोकर उठे इसकी कसरत करे तो जो उसकी मुराद हो इस तदबीर से अल्लाह तआला आसान कर देंगे।

70. अल्मुक़द्दिमु ﴿المقدم﴾ (पूरी क़ुदरत रखने वाला)

लड़ाई में जाकर पढ़े तो क़ुव्वत और निजात हो।

71.अल्मुअख़्ख़रु ﴿المؤخر﴾

(पीछे और बाद में रखने वाला)

कसरत से पढ़े तो बुरे कामों से तौबा नसीब हो।

72. अलअव्वलु ﴿الاول﴾ (सबसे पहले)

अगर मुसाफ़िर हर जुमा को हज़ार बार पढ़े तो जल्द ही अपने लोगों से आ मिले।

73. अल्आख़िरु ﴿الاخر﴾ (सबके बाद)

अगर हर रोज़ हज़ार बार पढ़े तो ग़ैर अल्लाह का ख़्याल दिल से निकल जाए।

74. अज़्ज़ाहिरु ﴿الظاهر﴾ (ज़ाहिर व आशकारा)

इशराक़ के वक़्त कसरत से पढ़े तो दिल में नूरे विलादत ज़ाहिर हो।

75. अल्बातिनु ﴿الباطن﴾ (पोशीदा व पिन्हा)

हर रोज़ तीन बार एक घन्टे तक इसको पढ़े तो कैफ़ियते उन्स हासिल हो।

76.अल्वलियु ﴿الولى﴾ (मुतवल्ली और चलाने वाला)

इसकी कसरत बिजली की कड़क से महफ़ूज़ रखती है।

77. अल्मुताअली ﴿المتعالى﴾ (सबसे बुलन्द व बरतर)

इसके ज़िक्र से रफ़अत और दुरुस्ती हासिल हो।

78. अल्बर्रु ﴿البر﴾ (बड़ा अच्छा सलूक करने वाला)

अगर सात बार पढ़कर बच्चे पर दम किया करे तो नेक बख़्त उठे।

79. अत्तवाबु ﴿التواب﴾

(बहुत ज़्यादा तौबा क़बूल करने वाला)

बाद नमाज़ चाश्त तीन सौ साठ बार पढ़े तो तौबा की तौफ़ीक़ हासिल हो और अगर ज़ालिम पर दस बार पढ़े तो उसे छुटकारा हो।

80. अल्मुन्तक़िमु ﴿المنتقم﴾ (बदला लेने वाला)

जो शख़्स अपने ज़ालिम दुश्मन से बदला न ले सकता हो तो इसकी कसरत करे अल्लाह तआला बदला ले लेंगे।

81. अल्अफ़ुव्वू ﴿العفو﴾ (बहुत ज़्यादा माफ़ करने वाला)

बकसरत ज़िक्र करे तो गुनाहों से माफी और रज़ाए इलाही हासिल हो।

82. अर्रउफ़ ﴿الرءوف﴾ (बहुत बड़ा मुशफ़िक़)

अपने ग़ुस्से के वक़्त या दूसरे के ग़ुस्से के वक़्त इसको दस बार पढ़े और दस बार दरूद शरीफ़ तो ग़ुस्से को सकून हो जावे।

83. मालिकुल-मुल्क ﴿مالك الملك﴾

(मुल्कों का मालिक)

इस पर पाबन्दी करे तो माल व तवंगरी हासिल हो।

84. ज़ुलजिलालि-वल-इकरामि ﴿ذوالجلال والاكرام﴾

(अज़मत व जलाल और ईनाम व इकराम वाला)

इसके ज़िक्र करने से इज़्ज़त व बुज़ुर्गी हासिल हो।

85. अल्मुक़्सितु ﴿المقسط﴾

(अद्ल व इन्साफ़ करने वाला)

इसकी पाबन्दी से इबादत में वसवसा न आए।

86. अल्जामिऊ ﴿الجامع﴾ (सबको जमा करने वाला)

इसकी पाबन्दी करने से अपने मक़ासिद व अहबाब से जुड़ा रहे और जिसकी कोई चीज़ गुम हो जावे इसको पढ़ ले तो मिल जावे।

87. अल्ग़नियु ﴿الغنى﴾

(बड़ा बेनियाज़ बे परवाह)

किसी मर्ज़ या बला के वक़्त पढ़े तो जाता रहे।

88. अलमुग़नियु ﴿المغنى﴾

(बेनियाज़ और ग़नी बना देने वाला)

हज़ार बार पढ़े तो तवंगरी हासिल हो और जमा की मशग़ूली जमा के वक़्त ख़्याल से पढ़े तो बीवी इससे मुहब्बत करने लगे।

89. अलमुअति ﴿المعطى﴾ (अता करने वाला)

हर मुराद के हासिल होने के लिए मुफ़ीद है।

90. अलमानिऊ ﴿المانع﴾ (रोक देने वाला)

जो अपनी मुराद तक न पहुँच सके उसको सुबह व शाम पढ़ा करे मुराद हासिल हो।

91. अज़्ज़ार्रु ﴿الضار﴾ (ज़र पहुँचाने वाला)

जुमा की रात में सौ बार पढ़ने से महफ़ूज़ रहे।

92. अन्नाफ़िऊ ﴿النافع﴾ (नफ़ा पहुँचाने वाला)

जिस चीज़ से नफ़ा हासिल करना हो इसको दिल से पढ़े।

93. अन्नूरु ﴿النور﴾ (सरतापा नूर और बख़्शने वाला)

इसके ज़िक्र से दिल का नूर हासिल हो।

94. अल्हादियु ﴿الهادى﴾

(सीधा रास्ता दिखाने और उस पर चलाने वाला)

इसके ज़िक्र से या लिखकर पास रखने से बसीरत और फ़हम सही पैदा हो। अहले हुकूमत के लिए भी मुनासिब है।

95. अल्बदियु ﴿البديع﴾

(बेमिसाल चीज़ों को बनाने वाला)

इसको हज़ार बार पढ़े तो हाजत पूरी हो और ज़र दफ़ा (दूर) हो।

96. अल्बाक़ी ﴿الباقى﴾ (हमेशा हमेशा बाक़ी रहने वाला)

हज़ार बार पढ़े तो ग़म से छुटकारा मिले।

97. अल्वारिसु ﴿الوارث﴾

(सबके बाद मौजूद रहने वाला)

मग़रिब व इशा के बीच हज़ार बार पढ़े तो हैरत दफ़ा (दूर) हो।

98. अर्ररशीदु ﴿الرشيد﴾

(रास्ती और निकोई पसन्द करने वाला)

इशा की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़े तो अमल क़बूल हो।

99. असूसबूरु ﴿الصبور﴾ (बड़े सब्र व तहम्मुल वाला)

सूरज निकलने से पहले सौ बार पढ़ा करे तो कोई तकलीफ़ न पहुँचे।

और किताबों में बेशुमार ख़ासियतें लिखी हैं मगर इख़्लास व यक़ीन के साथ इतना भी काफ़ी है।

(आमाले क़ुरआनीः हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि)

अल्लाह की बादशाहत

الحمد لله نحمده ونستعينهٔ ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ
بالله من شرور انفسنا ومن سيات اعمالنا من يهده اللهُ فلا
مضل لهٔ ومن يضللهٔ فلا هادى لهٔ ونشهد ان لا اله الا الله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمداً عبده ورسولهٔ اما بعد!

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم.

بسم الله الرحمن الرحيم.

قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن اتّبعنى
وسبحن الله وما انا من المشركين ٥ (سورة الانبياء ب:١٧)

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا سفيان جئتكم
بكرامة الدنيا والآخرة او كما قال صلى الله عليه وسلم.

मेरे भाईयो और दोस्तो!

अल्लाह वह ज़ात है जिसका कोई शरीक नहीं ﴿الملك لا شريك له﴾ अकेला ﴿لا اله الا الله وحده﴾ उसकी ज़ात में कोई शरीक नहीं, उसकी सिफ़ात में कोई शरीक नहीं। ﴿ليس كمثله شيء وهو السميع البصير﴾ उसकी सिफ़ात में उसके कामों में कोई उस जैसा नहीं है। वह बादशाहे कुल है वह शहंशाहे काएनात है। ज़मीन व आसमान का अकेला बादशाह है।

﴿له ما فى السموٰت وما فى الارض وما بينهما وما تحت الثرٰى﴾

वह अल्लाह जो आसमानों का भी मालिक, वह अल्लाह जो ज़मीन का भी मालिक, वह अल्लाह जो उसके दर्मियान का भी मालिक, वह अल्लाह जो तह्तुस्सरा का भी मालिक, ﴿لہ ما فی السموٰت وما فی الارض﴾ वह अल्लाह जो ज़मीन व आसमान में जो कुछ है उसका अकेला मालिक है। ﴿الا ان اللہ من فی السموٰت ومن فی الارض﴾ जो कुछ ज़मीन में है वह अल्लाह तआला का है। अल्लाह वह बादशाह है जिसकी बादशाही को ज़वाल नहीं, अल्लाह वह बादशाह है जिसकी बादशाही की कोई शुरूआत नहीं, अल्लाह वह बादशाह है जिसकी बादशाही का कोई आख़ीर नहीं। ﴿للہ الامر من قبل ومن بعد﴾ पहले भी अल्लाह और आज भी अल्लाह, आख़ीर भी अल्लाह, ज़ाहिर भी अल्लाह, बातिन भी अल्लाह। उसकी काएनात और उसकी मख़्लूक़ की तो एक हद है पर उसकी बादशाही की कोई हद नहीं है, उसकी ज़ात की कोई हद नहीं है।

सब अज़मतों का मालिक अल्लाह

और यह ऐसा निराला बादशाह है जिसे न पहरे की ज़रूरत है, जिसे न हिफ़ाज़त की ज़रूरत है, जिसे न खाने की ज़रूरत है, जिसे न पीने की ज़रूरत है, जिसे न बीवी की ज़रूरत है, जिसे न काम करने के लिए किसी मददगार की ज़रूरत है। वह अल्लाह है ﴿لا یستعین باشیء﴾ किसी से मदद नहीं लेता, ﴿لا یحتاج الی شیء﴾ किसी चीज़ का मोहताज नहीं। हर चीज़ उसके हाथ से बनी है ﴿خلق کل شیء فقدرہ تقدیرا﴾ फिर हर चीज़ का मालिक ﴿مالک کل شیء﴾ बनाने वाला है ﴿خالق کل شیء﴾ जानता है ﴿خبیر بکل شیء﴾ और अन्दर बाहर सारी काएनात उसके कब्ज़े में है ﴿یتنزل الامر بینھن﴾

ज़मीन पर भी उसका हुक्म चलता है, आसमान पर पर भी, अल्लाह ऐसा है न तो उसे घर की ज़रूरत न उसे मकान की ज़रूरत है। ﴿لا يحويه مكان﴾ किसी मकान में नहीं आता ﴿لا يشتمل عليه زمان﴾ किसी ज़माने की क़ैद में नहीं। गुज़रा, मौजूद, आने वाले ज़माने से ऊपर है। वह न गुज़रे का मोहताज न आने वाले का मोहताज, न मकान का, न छत का, न दीवारों का, न फ़र्श का मोहताज और इस सारे निज़ाम को चलाने में ﴿لا تأخذه سنة﴾ वह ऊँघता नहीं ﴿ولا نوم﴾ वह सोता नहीं ﴿ولا يؤده حفظهما﴾ वह थकता नहीं ﴿وما مسني من لغوب﴾ जहान को बनाकर थका नहीं, निज़ाम को चलाकर थका नहीं फिर इस सारे निज़ाम को चलाते हुए वह ग़ाफ़िल नहीं ﴿لا تحسبن الله غافلا﴾ वह भूला नहीं ﴿وما كان ربك نسيا﴾ वह ग़लत फ़ैसले नहीं करता ﴿لا يضل ربي﴾ और वह भूलकर फ़ैसले नहीं करता ﴿ولا ينسى﴾ फिर इस सारी काएनात में कोई चीज़ उससे छुपी हुई नहीं है ﴿يعلم ما في البر والبحر﴾ ज़मीन के अन्दर को भी जानता है, पानी के अन्दर की चीज़ों को भी जानता है ﴿سواء منكم من اسر القول﴾ कोई ज़ोर से बोले तो वही भी सुनता है ﴿مستخف بالليل﴾ कोई रात को छिपकर चले तो देखता है, ﴿سارب بالنهار﴾ कोई दिन के उजाले में चले तो देखता है। अल्लाह अपनी बादशाही में बेमिसाल है। दुनिया के बादशाह आए और मिट गए। अल्लाह वह बादशाह है ﴿وتوكل على الحي الذي لا يموت﴾ वह वह अल्लाह है जो मरता नहीं ﴿يميت الخلائق﴾ सबको मारता है मौत से पाक है, सबसे पहले, सबके बाद। सब ज़िन्दा को ज़िन्दा को रखा, ख़ुद अपनी ज़ात में ज़िन्दगी के किसी सबब का मोहताज नहीं। हर ज़िन्दा से पहले मौजूद, हर ज़िन्दा के बाद मौजूद, हर ज़िन्दा के

ऊपर मौजूद है।

बेशुमार निज़ामों को चलाने वाला अल्लाह

सारी काएनात अपने हाथों से बनाकर, अम्र से बनाकर, उसके निज़ाम को चलाकर। एक इन्सानों का निज़ाम, परन्दों का निज़ाम, परवानों का निज़ाम, चौपायों का निज़ाम, आठ पाए का निज़ाम, सोलह और बत्तीस टाँगों पर चलने वालों का निज़ाम, समंद्र की मछिलयों का निज़ाम, खुद पानी का निज़ाम, पत्थर और पहाड़ का निज़ाम, हवा और हवा के तूफ़ानों का निज़ाम, सूरज, चाँद सितारों का निज़ाम, जरासीमों का निज़ाम। मक्खी और मच्छर तक से जो रब ग़ाफ़िल न हो वह इस्लमाबाद वालों से कैसे ग़ाफ़िल हो जाएगा? ﴿ذالكم الله ربكم الحق﴾ यह हक़ीक़ी ज़ात है, यही असली बादशाह है।

जो वह चाहे वह होता है

उसकी बादशाही बेमिसाल, उसके इरादे अटल, उसके फ़ैसले बदलते नहीं ﴿لا رآد لما قضيت﴾ जो फ़ैसला कर ले वह बदलता नहीं ﴿لا مانع لما اعطيت﴾ जिसको दे कोई रोक नहीं सकता ﴿لا معطي لما منعت﴾ और जिसको न दे कोई दे नहीं सकता ﴿وان يمسسك الله بضر فلا كاشف له الا هو﴾ वह पकड़े तो कोई छुड़ा नहीं सकता ﴿وان يردك بخير فلا رآد لفضله﴾ वह देना चाहे तो सारा जहान मिलकर उसे रोक नहीं सकता ﴿ما يفتح الله للناس من رحمة فلا ممسك لها﴾ जब रहमत के दर खोलता है तो कोई बन्द नहीं कर सकता ﴿وما يمسك فلا مرسل له من

﴿بعده﴾ और जब वह बन्द करता है तो कोई उसे खुलवा नहीं सकता।

अल्लाह तआला की बड़ाई

मेरे भाईयो! अल्लाह तआला काएनात का असली हाकिम है, बादशाह है, आसमानों पर भी, ज़मीन पर भी, पानियों पर भी ﴿رب المشرق والمغرب﴾ पूरब पश्चिम का रब ﴿رب المشارقين ورب المغربين﴾ पूरबों और पश्चिमों का रब ﴿رب المشارق والمغارب﴾ मशारिक़ और मग़ारिब का रब ﴿رب السموٰت السبع﴾ सातों आसमानों कर रब, ﴿ورب العرش العظيم﴾ अर्शे अज़ीम का रब।

मेरे बन्दो! मुझे छोड़कर कहाँ चल दिए?

इन सारी आयतों से अल्लाह तआला हम से क्या चाहता है? वह हम से अपनी बादशाही मनवाना चाहता है कि मैं बहुत बड़ा बादशाह हूँ, लिहाज़ा ऐ लोगों जैसे तुम दुनिया के झूठे बादशाहों के ताबे होते हो, उनकी खुशामद करते हो, उनके पीछे दौड़ते हो। उनके पीछे दौड़ना छोड़ो, मेरे बनो, मेरी मान कर चलो ﴿لله الامر﴾ हुकूमत मेरे अल्लाह के हाथ में ﴿ان القوة لله جميعا﴾ ताक़त सारी अल्लाह तआला के हाथ में है ﴿الخلق﴾ मख़लूक़ ﴿والامر﴾ हुकूमत, ﴿واليل﴾ रात ﴿والنهار﴾ दिन में है जो रात में है ﴿لله وحده﴾ वह सारा का सारा अल्लाह तआला का है। ﴿فانى تسحرون افلا تتقون افلا تذكرون افلا ينظرون﴾ यह क़ुरआन की सारी आयतें हमें पुकार पुकार कर कहती हैं कि अल्लाह को छोड़कर कहाँ जा रहे हो? मंज़िल नहीं मिलेगी, भटक जाओगे। भटका हुआ राही इतना बेक़रार नहीं

जितना अल्लाह से बिछड़ा हुआ इन्सान बेक़रार होता है। तूफ़ानी मौजों में घिरी हुई किश्ती का मल्लाह और मुसाफ़िर इतने बेक़रार नहीं होते जितना अल्लाह पाक से भटका हुआ इन्सान बेक़रार और बेचैन होता है कि अल्लाह को छोड़कर रुह पर ज़ख़्म लगते हैं और ये ज़ख़्म न दुनिया की कोई ख़ूबसूरत शक्ल भर सकती है न दवा भर सकती है, न कोई औरत उस ज़ख़्म को भर सकती है न शराब भर सकती है न संगीत भर सकता है न दौलत की रेल पेल भर सकती है न तख़्ते शाही भर सकता है न दुनिया की सैर व तफ़रीह न दुनिया का फिरना उसके अन्दर के ज़ख़्मों को भर सकता है।

ऐ रूहानी असली सकून के तलाश करने वालो

क्योंकि यह ज़ख़्म रुह पर हैं और ये जो कुछ कर रखा है यह सिर्फ़ उसके जिस्म को नफ़ा पहुँचाने का सामान है।

रूह न औरत को जाने न शराब को जाने न संगीत जाने न पैसा जाने न हुकूमत जाने न घूमना फिरना जाने न सैर जाने न हरियाली से ढके पहाड़ जाने न बर्फ़ से ढके पहाड़ जाने न रेगिस्तान जाने न ख़ूबसूरत वादियाँ जाने। वह तो अल्लाह को जाने अगर उसे अल्लाह नहीं मिला तो कुछ नहीं मिला अगर अल्लाह मिल गया तो उसे सब कुछ मिल गया। जो इन्सान अपनी रुह को अल्लाह से तोड़ लेता है सारी काएनात सोना चाँदी बन कर उसके सामने ढेर कर दी जाए तो मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूँ कि यह नाकाम इन्सान है यह दुनिया का वीरान इन्सान है। ख़ुद

अल्लाह का ऐलान सुनो! ﴿الا بذكر الله تطمئن القلوب﴾ सिवाए अल्लाह की याद के कोई चीज़ नहीं जो दिल की दुनिया को चैन दे सके। भाग कर देखो दौड़कर देखो, अल्लाह से कटकर देख लो अगर कहीं चैन मिल जाए तो आकर मेरा गिरेबान पकड़ना और अल्लाह पाक से मिलकर देख लो, उसे अपना बनाकर कर देख लो फिर अगर रुह में जगह रह जाए या सीने पर कोई दाग़ रह जाए या दिल में कोई हसरत रह जाए तो फिर भी मुझे आकर पकड़ना।

अल्लाह जिसे मिला उसे सब कुछ मिला, जिसे न मिला कुछ नहीं मिला। अल्लाह इन्सान की जान की रग से ज़्यादा क़रीब है जैसे रोटी न मिले तो बेक़रार होता है, पानी न मिले तो बेक़रार होता है ऐसे ही जिस रुह को अल्लाह न मिले उसकी बेक़रारियों को सिवाए अल्लाह के मिलने के कोई इलाज नहीं है।

मेरे बन्दे मैं तेरे इन्तिज़ार में हूँ

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! हम अपने अल्लाह को अपना बना लें। क्या माँ मुहब्बत करेगी जो अल्लाह मुहब्बत करता है, क्या बाप मुहब्बत करेगा जो अल्लाह करता है, क्या बहन भाई मुहब्बत करेंगे जो अल्लाह मुहब्बत करता है। माँ को एक दफ़ा कहो अम्मा जी! तो जी कहती है फिर कहो अम्मा! तो हूँ कहती है फिर कहो अम्मा! तो कहती है सिर न खाओ और वह रब है जिसको एक दफ़ा कहो या अल्लाह! तो वह सैकड़ों दफ़ा, सत्तर दफ़ा, पचास दफ़ा, बेशुमार दफ़ा कहता है ﴿لبيك لبيك عبدى﴾ मेरा बन्दा मैं तो इन्तिज़ार में था कभी तो मुझे भी पुकारेगा

तूने ग़ैरों को ही पुकारा मुझे तो तुमने पुकारा ही नहीं और जब तू कहता है या अल्लाह! तो अर्श तक के दरवाज़े खुल जाते हैं और अल्लाह तआला फ़रमाता है लब्बैक। सोई हुई बीवी को उठाओ तो कहेगी क्या मुसीबत है, सोई हुई माँ को उठाओ तो कहेगी बेटा तुझे माँ के हक़ों का नहीं पता तूने सोई हुई माँ को उठाया। उस अल्लाह को सुनाओ जो सोता ही नहीं है ﴿لا تاخذه سنة ولا نوم﴾ न वह सोए न वह ऊँघे न वह घबराए न वह थके ﴿لا يتبرء بالحاح ذوالحاجات﴾ तुम्हारी ज़रूरतें सुनता सुनता उकताता नहीं, घबराता नहीं, वह थकता नहीं। माँ-बाप कहते हैं कि बस भी करो। तेरे लिए हमने कितना कमाया अब तू अपना खुद कमा। हमारी जान छोड़।

हर एक मुश्किल हल करने वाला अल्लाह

अल्लाह वह ज़ात है जिसे सारा जहान पुकारे ﴿اولكم﴾ पहले पुकारें ﴿اخركم﴾ पिछले पुकारें ﴿جنكم﴾ जिन्न पुकारें ﴿حيكم﴾ ज़िन्दा पुकारें ﴿صغيركم﴾ छोटे पुकारें ﴿كبيركم﴾ बड़े पुकारें ﴿ذكركم﴾ मर्द पुकारें ﴿وانثكم﴾ औरतें पुकारें ﴿فى صعيد واحد﴾ एक मैदान में खड़े होकर पुकारें और अल्लाह सबसे यह नहीं कहेगा बारी बारी बोलो। यह नहीं कहेगा कि सिर्फ़ अरबी बोलो कि मेरी ज़बान अरबी है, अल्लाह फ़रमाएगा बोलो, पश्तो भी बोलो, उर्दू भी बोलो, हिन्दी भी बोलो, पंजाबी भी बोलो, सिन्धी भी बोलो, बलूची भी बोलो, बरोही भी बोलो, अंग्रेज़ी भी बोलो, फ्रांसिसी बोलो, लातीनी बोलो। काएनात की सारी ज़बानों में अपने रब को पुकारो मैं तुम्हारा वह सुनने वाला रब हूँ कि मुझे तुम्हारी बारियाँ

लाने की ज़रूरत नहीं। मैं तुम सबकी चीख़ पुकार को अलग अलग सुनूंगा, समझूंगा ﴿لا تغلطه كثرة المسائل﴾ तुम सबका मुझे इकठ्ठा बोलना मुझे ग़लती में नहीं डालेगा कि शमशेर क्या बोला और आलमगीर क्या बोला, अकरम क्या बोला और सईद क्या बोला। मैं तुम सबको अलग अलग सुनूंगा और यह सुनकर ﴿لا يشغله سمع عن سمع﴾ एक का सुनना मुझे दूसरे से ग़ाफ़िल नहीं करता ﴿ولا تلهيه قول عن قول﴾ एक का सुनना मुझे दूसरे से ग़ाफ़िल नहीं करता ﴿ولا تمنعه فضل عن فضل﴾ एक को देते हुए दूसरे को यह नहीं कहता कि ज़रा इन्तिज़ार करो ख़ज़ाना ख़ाली है, अब तुम कल आओ तुम्हें कल मिलेगा।

ख़ज़ानों का मालिक, आसमानों का मालिक, समुंद्रों का मालिक, पानियों का मालिक, साने चाँदी का मालिक, आग, पत्थर, पानी, मिट्टी, हवा का मालिक, जन्नत और दोज़ख़ का मालिक, बेहद ख़ज़ानों का मालिक।

वह अल्लाह जिससे हमारे काम बनते हैं उससे अगर हम न जुड़ें तो न हमारी दुनिया है न हमारी आख़िरत है। करीम बादशाह है नाफ़रमानों को भी देता है, कहना मानने वालों को भी देता है। फिर एक दिन हिसाब का रखा है जिस दिन खरे खोटे को जुदा करेगा। दुनिया बनानी है अल्लाह को (साथ) लेना पड़ेगा, आख़िरत बनानी है अल्लाह को (साथ) लेना पड़ेगा।

यह मेरी ढील है करम नहीं

अल्लाह तआला का क़ानून है कि काफ़िर को भी खिलाता है

और उनके लिए अल्लाह तआला का खुद ऐलान है कि

﴿ذرني والمكذبين اولي النعمة ومهلهم قليلا۔ (سورۃ المزمل پ ۲۹، آیۃ ۱۰)﴾

आप छोड़ दें हम उन्हें थोड़े दिन की मोहलत दे रहे हैं ﴿ذرهم يخوضوا﴾ आप काफ़िरों का ज़िक्र छोड़ दें उनको हमने मौत तक छुट्टी दी हुई है। ये खालें और पीलें बल्कि और बताऊँ? ﴿ولو لا ان يكون الناس امة واحدة﴾ अगर यह ख़्याल न होता कि मुझे ये मुसलमान सारे ही छोड़ जाएंगे, कलिमा ही छोड़ जाएंगे, ईमान ही छोड़ जांएगे तो मैं क्या करता? मुसलमान को कुछ न देता। अभी तो इस्लामाबाद मिला हुआ है फिर कुछ न देता और काफ़िर को क्या देता?

لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ومعارج عليها
يظهرون وزخرفا۔ (سورۃ الزخرف پ ۲۵، آیۃ ۳۲)

मैं काफ़िरों के घर सोने के, छतें सोने की, सीढ़ियाँ सोने और चाँदी की, दरवाज़े सोने और चाँदी के, मिट्टी का फ़र्श नहीं उनके लिए सोने चाँदी की टाइलें लगवाता, और सोने की दीवारें खड़ी करता, चाँदी सोने की छतें बनाता, सोने चाँदी की उनके लिए चारपाईयाँ और मसहरियाँ बनाता।

यह तो क़ुरआन कहता है और हदीस में है कि उनके जिस्म लोहे को बनाता। लोहे से क्या मुराद है? न बूढ़े होते, न बीमार होते, न कमज़ोर होते, ऐसे ही ताक़तवर रहते। इस तरह उनको दुनिया देता और अपने पास बुलाता और तुम्हें कुछ न देता।

काफ़िर को मिलें हूर व क़सूरः एक सवाल

यह सवाल आज का नहीं हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से सुन

लो ﴿يا رب انك تقتر على المومن﴾ ऐ अल्लाह आप मुसलमानों को बड़ी तंगी देते हैं, क्या बात है? वह तो लाडले थे। इसलिए लाड में बड़ी बातें कर जाया करते थे। या अल्लाह यह क्या बात है आप मुसलमान को बड़ी तंगी देते हैं? ﴿وانك تكثر على الكافر﴾ और काफ़िर को आप बहुत कुछ देते हैं यह क्या बात है? तो अल्लाह तआला ने दोज़ख़ का दरवाज़ा खोला कहा ﴿يا موسى هذا ما اعدت للكافر﴾ यह देखो तो सही मैंने काफ़िर के लिए क्या बनाया है।

जब दोज़ख़ को देखा, तपते, भड़कते और शोर चीख़ मचाते। कैसी आग?

﴿انها لظى نزاعة للشوى تدعو من ادبر وتولى وجمع فاوعى﴾

वह कैसी है? ﴿تطلع على الافئدة﴾ वह कैसी आग है?

خذوه فغلوه ثم الجحيم صلوه ثم فى سلسلة ذرعها سبعون ذراعاً
فاسلكوه، تصلى ناراً حامية . تسقى من عين آنيه.

वह कैसी आग है?

﴿سموم حميم لا بارد ولا كريم﴾

वह कैसी आग है?

وجوه يومئذ خاشعة عاملة ناصبة. ليس لهم طعام الا من ضريع لا
يسمن ولا يغنى من جوع. هذه جهنم التى يكذب بها المجرمون
يطوفون بينها وبين حميم ان. فباى الآء ربكما تكذبان.

इन सारी आयतों का ख़ुलासा क्या है? कि वह एक ख़ौफ़नाक आग है भड़कती हुई है ﴿كلما خبت زدناهم سعيرا﴾ जब थोड़ी सी हल्की होती है अल्लाह उसे और भड़काता है। उसमें से ख़ुदा न करे एक क़तरा इस्लामबाद में गिर जाए तो सातों ज़मीनें कड़वी

हो जाएंगी। एक फल भी मीठा नहीं निकलेगा और एक तिनका हरा नहीं बचेगा। एक लोटा पानी समुंद्र में डाल दिया जाए तो सातों समुंद्र उबलने लग जाएंगे, खौलने लग जाएंगे।

जहन्नम वालों की बेबसी

जिस प्याले में उनको पानी पीने को दिया जाएगा वह पियाला जब मुँह के क़रीब करेंगे तो उसकी भाप से उनके सिर की खाल चेहरे की खाल उधड़ कर पियाले में अपने आप गिर जाएगी, अपने चेहरे की खाल को उस पानी में देखेगा फिर भी उसे पीना पड़ेगा और उसमें वह डूब रहे हैं, तैर रहे हैं, उबल रहे हैं, उतर रहे हैं और वह मौत को पुकारते हैं। लो आज मौत भी मर गई है। वह कहते हैं ﴿يا مالك ليقض علينا ربك﴾ ऐ मालिक अपने रब से कहो हमें मौत दे दे। वह कहते हैं ﴿انكم ماكثون﴾ भूल जाओ, मौत को भी मौत आ गई, अब नहीं मर सकते। वह कहते हैं

﴿ادعو ربكم يخفف عنا يوم من العذاب.﴾

अच्छा मौत नहीं आती तो थोड़ा सा अज़ाब कम कर दो। जवाब आता है ﴿اولم تك تاتيكم رسلكم بالبينت﴾ दुनिया में कोई तुम्हें बताने नहीं आया था? ﴿قالو بلى﴾ कहा बताने तो आए थे पर हम ने ही उनका मज़ाक़ उड़ाया फिर ﴿ذوقوا مس سقر﴾ अब भुगतते रहो यह अज़ाब, अब यह नहीं हो सकता। अच्छा अब क्या करें? कहेंगे अल्लाह को पुकारो ﴿يا ربنا، يربنا، ربنا ربنا﴾ हज़ारों साल बाद अल्लाह तआला फ़रमाएंगे बोलो क्या कहते हो? कहेंगे या अल्लाह!

﴿غلبت علينا شقوتنا وكنا قوما ضالين۔(سورة المومنون پ. ١٨، آية ١٠٥ تا ١٠٨)﴾

मर गए नाफ़रमानी करके हमें माफ़ कर दे अब तौबा। अल्लाह तआला फ़रमाएगें ﴿اخسوفيها ولا تكلمون﴾ बकवास बन्द करो, मुझ से कोई बात न करो। यह आख़िरी बात होगी। जहन्नम वालों को अल्लाह तआला से, उसके बाद अल्लाह तआला दोज़ख़ को ताला लगवा देगा, आज के बाद न कोई चीज़ अन्दर जा सकती है न कोई चीज़ बाहर निकल सकती है।

चार दिन की चाँदनी है फिर अन्धेरी रात है

अगर एक शख़्स सारे जहान की दौलत जमा कर ले, सारी दुनिया का हुस्न अपने पहलू में समेट ले और दुनिया के सबसे बड़े तख़्त पर बैठ जाए लेकिन मरकर यहाँ चला जाए तो बोलो उसने क्या देखा? मूसा अलैहिस्सलाम की जो नज़र पड़ी जहन्नम पर तो बेसाख़्ता निकलाः

﴿وعزتك وجلالك وعلو مكانك﴾

तेरी ज़ात की क़सम, तेरी इज़्ज़त की क़सम, तेरे जलाल की क़सम,

﴿لو ملك الدنيا كلها وعاش الدهر كله وكان مسيره هذا لم ير خيرا قط﴾

मेरे मौला! अगर काफ़िर सारे जहान का मालिक बन जाए, क़यामत तक की ज़िन्दगी गुज़ारे और उसे मौत न आए, दुःख न आए, तकलीफ़ न आए, पर मर कर यहाँ चला जाए जो तूने मुझे दिखाया है तो तेरी इज़्ज़त की क़सम उसने कुछ नहीं देखा। हम क्या करें जन्नत और दोज़ख़ का यक़ीन मिट चुका है इसलिए

दुनिया की तकलीफ़ों से परेशान होते हैं और काफ़िरों की तारीफ़ें शुरू कर देते हैं। वह ऐसे हैं वह ऐसे हैं, वह ऐसे हैं। यह नहीं जानते हैं कि वह कितने बड़े अल्लाह तआला के दुश्मन हैं और उनके साथ क्या होने वाला है?

है साहिबे ईमान और परेशानः दूसरा सवाल

फिर मूसा अलैहिस्सलाम का दूसरा सवाल आया या अल्लाह! तू मुसलमान को तंगी में रखता है, परेशानी में रखता है, दुःख में रखता है। छोड़ो सबकी बात छोड़ो जिससे न कोई बेहतर आया न आएगा वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिसके वजूद की अल्लाह तआला क़सम खाए, जिसके शहर की क़सम खाए, जिसकी सिफ़ात की क़सम खाए, जिस जैसा न पहले बनाया न बाद में बनाएगा, जिसे हबीब बनाया, वह ख़ुद कोई और नहीं, यह मदीने की मस्जिद है और वह बैठकर नमाज़ पढ़ रहे, ऊपर से अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु आए ﴿بابی انت وامی یا رسول اللہ﴾ मेरे माँ-बाप क़ुर्बान हों आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेट की तरफ़ इशारा किया, अबू हुरैरह भूख की तेज़ी ने बिठा दिया, खड़ा नहीं हो सकता। हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु अन्दर आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा हैं, रंग फीका पीला था। कहने लगे ﴿یا رسول اللہ بابی انت امی مالی اراک معیر اللون﴾ मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान आपका रंग पीला क्यों है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उंगली पेट की तरफ़ रखी और यूँ

इर्शाद फ़रमाया

﴿ما دخل جوفی ما يدخل جوف ذات كبد منذ ثلاث.﴾

ऐ काब! तीन दिन गुज़र चुके हैं मेरे पेट में एक लुक़्मा दाख़िल नहीं हुआ, पेट पर दो पत्थर एक जोड़े में ज़िन्दगी गुज़रे और इतनी बड़ी सलतनत, इतना बड़ा क़ब्ज़ा कि सातों ज़मीनों के ख़ज़ानों की चाबियाँ पेश की जा रही हैं कि यह चाबियाँ है और ये सारे पहाड़ सोने, चाँदी, ज़मुर्द, याक़ूत बन के आपके साथ चलेंगे, आपको मंज़ूर है? कहा नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। एक दिन भूखा रहूँगा एक दिन रोटी खाऊँगा। अपनी उम्मत के ग़रीबों को तसल्ली दी और अपनी उम्मत का ज़हन साफ़ किया ग़रीब होना ज़िल्लत नहीं, नाफ़रमान होना ज़िल्लत है, मालदार होना इज़्ज़त नहीं, फ़रमाबरदार होना इज़्ज़त है, बादशाही इज़्ज़त नहीं, अल्लाह की इताअत इज़्ज़त है, दौलत, मुल्क, माल इज़्ज़त नहीं, अल्लाह की इताअत इज़्ज़त है, ग़रीबी और फ़क़ीरी ज़िल्लत नहीं अल्लाह का नाफ़रमान हो जाना सबसे बड़ी ज़िल्लत है।

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! हमारी दुनिया भी अल्लाह के हाथ में हमारी आख़िरत भी अल्लाह के हाथ में, हमारा रिज़्क़ भी अल्लाह के हाथ में, हमारी इज़्ज़त भी अल्लाह के हाथ में, हमारी ज़िल्लत भी अल्लाह के हाथ में और सारी काएनात के ख़ज़ाने अल्लाह के हाथ में। सब कुछ जिसके हाथ में वह हम से कहता है मेरी मान कर चलो।

काएनात का बनाने वाला अल्लाह

जिस ज़मीन पर हो वह अल्लाह की ﴿ان الارض لله﴾ जिस

आसमान की छत के नीचे रहते हो वह अल्लाह तबारक व तआला का ﴿خلق سبع سموٰت طباقا﴾ जिस सूरज से रौशनी उठाते हो वह सूरज अल्लाह तआला का ﴿الشمس تجرى لمستقرلها﴾ जिस चाँद की किरनों से तुम्हारे फल मीठे होते हैं और तुम्हारे समुंद्रों में ज्वार-भाटा आता है वह चाँद अल्लाह तआला का ﴿والقمر قدرنه منازل﴾ जिन सितारों से रास्ते बनाते हो, रास्ते तय करते हो वह सितारे अल्लाह के ताबे ﴿والنجوم مسخرات بامره﴾ जिस पानी को पी कर ज़िन्दगी का सामान बनाते हो वह पानी अल्लाह तआला के हाथ में

افرء يتم الماء الذى تشربون ء انتم انزلتموه من
المزن ام نحن المنزلون.

यह पानी तुम्हारे हाथ में गिलकिगित के पहाड़ों की बर्फ़ और चतराल के पहाड़ों की बर्फ़ और सकरदू के पहाड़ों की बर्फ़, आसमान से उतरने वाला पानी, यह तुमने बनाया? नहीं नहीं देखते नहीं ﴿الم تر ان الله يزجى سحابا﴾ तुम्हारे रब ने बादलों को जमा किया ﴿ثم يولف بينه﴾ उन्हें इकट्ठा किया फिर उनको हाँका फिर उसको हुक्म दिया ﴿انا صببنا الماء صبا﴾ बारिश को बरसाया ﴿ثم شققنا الارض شقا﴾ ज़मीन को फाड़ा ﴿فانبتنا فيها حبا وعنبا﴾ फल फूल गल्ले उगाए ज़मीन उसके ताबे, पानी उसके ताबे, हवा उसके ताबे ﴿وتصريف الرياح﴾ बादल उसके ताबे ﴿والسحاب المسخر بين السماء والارض﴾ किश्तियाँ उसके ताबे ﴿وترى الفلك مواخر فيه﴾ और समुंद्र की मछलियाँ उसके ताबे ﴿لتاكلوا منه لحما طريا﴾ काएनात की कोई चीज़ तो दिखाओ जो उसके ताबे न हो ﴿فمنهم من يمشى على رجلين﴾ दो पाँव वाले उसके ताबे ﴿ومنهم من يمشى على بطنه﴾ पेट के बल

चलने वाले उसके ताबे। आसमानों की बादशाही हो, ज़मीन की बादशाही हो, हवाओं का निज़ाम हो, समुंद्र का निज़ाम हो सब अल्लाह तआला के ताबे है।

कौन है मेरे सिवा ज़रा बता तो सही!

उसका सवाल देखो ﴿قل لمن الارض ومن فيها﴾ ज़मीन किस की है और जो कुछ ज़मीन में है क्या इस्लामाबाद वालों का है? पाकिस्तान वालों का है? नहीं, नहीं, नहीं वह एक अल्लाह है

﴿سيقولون لله، قل من رب السموٰت السبع ورب العرش العظيم﴾

बोलो कौन है सातों आसमानों का रब? कोई कह सकता है कि हम हैं ﴿سيقولون لله﴾ कहेंगे अल्लाह ही है

﴿قل من بيده ملكوت كل شيء وهو يجير ولا يجار عليه﴾

(سورة المؤمنون، پ. ۱۸ رکوع ٤، آية ۸۳ تا ۸۸)

कौन है जो पनाह देता है तो कोई इस पर हाथ नहीं उठाता, जिस पर से वह हाथ उठा ले उसे कोई बचा नहीं सकता। ज़मीन व आसमान, खुश्की व तरी, हवा व मौसम, फिर आगे इज़्ज़त व ज़िल्लत ﴿وتعز من تشاء﴾ जिसको वह इज़्ज़त देगा (तो इज़्ज़त) मिलेगी ﴿وتذل من تشاء﴾ जिसको वह ज़िल्लत देगा उसे ज़िल्लत मिलेगी, जिसको वह इज़्ज़त देगा उसे इज़्ज़त मिलेगी ﴿يحى ويميت﴾ जिसे मारेगा उसे कोई उठा नहीं सकता, जिसे बचाएगा उसे कोई मार नहीं सकता, जिसे देगा उससे कोई ले नहीं सकता, जिससे लेगा उसको कोई दे नहीं सकता।

ऐ आदम के बेटे! मैं तुझ से प्यार रखता हूँ

तो मेरे भाईयो! वह अल्लाह यह सारा कुछ बताकर कहता है, ऐ मेरे बन्दो! अपने उस अल्लाह की मान लो। इतनी बड़ी बादशाही के बावजूद उसकी मुहब्बत तुम से बेमिसाल है ﴿یا ابن آدم انی لک محب﴾ ऐ इब्ने आदम मैं तुम से मुहब्बत करता हूँ ﴿فبحق لی﴾ ﴿یا ابن آدم ـحبا﴾ तुझे मेरी कसम तू भी तू मुझ से मुहब्बत कर ﴿اذکرك وتنسانی﴾ मैं तुम्हें याद रखता हूँ, गुनाहों पर पर्दे डालता हूँ, तू मुझे भूल जाता है ﴿واسترك ولا تخشانی﴾ मैं तेरे गुनाहों पर पर्दे डालता हूँ तू फिर भी मुझ से हया नहीं करता।

﴿یا ابن آدم ان ذکرتنی ذکرتك﴾

तू मुझे याद करता है मैं तुझे याद करता हूँ।

﴿ان نسیتنی ذکرتك﴾

तू मुझे भूल जाता है मैं फिर भी तुझे याद करता हूँ।

यह जो आप गर्मी में बैठे हुए हैं अल्लाह आप में से एक एक का अर्श पर बैठा हुआ नाम ले लेकर खुश हो रहा है। कहा देखो ज़रा मेरे बन्दे मेरे लिए कैसी गर्मी सह रहे हैं? कैसी पियास बर्दाशत कर रहे हैं? कैसी धूप सह रहे हैं? कैसे पसीने निकल रहे हैं? फ़रिश्तों ज़रा बताओ तो सही ये क्यों बैठे हैं? उन्होंने ठंडे कमरे छोड़े, ठंडी छावं छोड़ी, घने साएदार पेड़ छोड़े, घर का पानी छोड़ा, बीवी बच्चों को छोड़ा और बर्फ़ के पानी छोड़े। ये यहाँ पतली सी छत के नीचे और तपते मैदान में क्यों बैठे हुए हैं? पसीना पसीना हो रहे हैं। फ़रिश्ते कह रहे हैं, ऐ अल्लाह! तेरे लिए बैठे हैं। वह आगे कह रहा है कि जाओ गवाह बन जाओ कि मैंने

उन सब को माफ कर दिया।

कलिमा तैय्यिबा का मफ़हूम

मेरे भाईयो! तबलीग़ की मेहनत यह है कि अपने अल्लाह को अपना बना लें। कोई फ़लसफ़ा नहीं, कोई जमात नहीं, कोई तहरीक नहीं। यह मेहनत है कि *"ला इलाहा इल्लल्लाह"* को अपने हाथ में पकड़ लें, दिल अल्लाह को दे दें। सारी मख़्लूक़ को दिल से निकाल दें। *"ला इलाहा"* कोई पूजने के लायक़ नहीं। जब *"ला इलाहा इल्लल्लाह"* कहते हैं तो पत्थर ज़हन में आता है कि पत्थर को सज्दा नहीं करना, नहीं अपनी बन्दगी भी छोड़ दो। ﴿أفرأيت من اتخذ إلٰهه هواه﴾ इस *"ला इलाहा"* को अपने ऊपर भी चलाओ कि मैं भी नहीं माबूद, मैंने अपनी इबादत नहीं करनी। अपनी इबादत का क्या मतलब? जो दिल में आया वह कर दिया, यह अपनी इबादत है। *"ला इलाहा"* तू भी कुछ नहीं है।

"ला इलाहा" दुकान भी कुछ नहीं *"इल्लल्लाह"* अल्लाह ही सब कुछ है। *"ला इलाहा"* टैंक, तोप, तलवार कुछ नहीं *"इल्लल्लाह"* अल्लाह सब कुछ है। *"ला इलाहा"* ऐटम बम, हाइड्रोजन बम कुछ नहीं *"इल्लल्लाह"* अल्लाह ही सब कुछ है। *"ला इलाहा इल्लल्लाह"* की तलवार को समुंद्र पर चलाओ, पानी पर चलाओ, ज़मीन पर चलाओ, फ़िज़ाओं पर चलाओ, अपने आप पर चलाओ, अपनी दुकान पर चलाओ, अपनी तिजारत पर चलाओ कि नहीं नहीं नहीं तू कुछ नहीं, मेरा अल्लाह ही सब कुछ है। फिर इसी तलवार से अल्लाह तआला ने आसमानों को तोड़

दिया, जिब्राईल अलैहिस्सलाम और मीकाईल अलैहिस्सलाम को तो तोड़ दिया कि ये भी कुछ नहीं, अल्लाह ही सब कुछ है।

आज नहीं तो कल देखोगे कि

और यह दिखा देगा उस दिन जब हुक्म होगा

﴿فاذا نفخ فى الصور نفخة واحدة. (سورة الحاقه پ. ٢٩، آية ١٣)﴾

आज देखो। कोई इलाहा नहीं, अल्लाह ही अल्लाह, कोई माबूद नहीं अल्लाह ही अल्लाह, कोई देने वाला नहीं, अल्लाह ही अल्लाह, कोई बचाने वाला नहीं, अल्लाह ही अल्लाह, कोई बेनियाज़ नहीं, अल्लाह ही अल्लाह।

आवाज़ पड़ी ﴿واذا زلزلت الارض زلزالها﴾ ज़मीन में ज़लज़ला ﴿واذا البحار فجرت﴾ समुंद्रों में आग ﴿اذا السماء انفطرت﴾ आसमान टूटा ﴿واذا الكواكب انتثرت﴾ सितारे टूटे ﴿اذا الشمس كورت﴾ सूरज अंधा हो गया, बेनूर हो गया। ज़मीन थर्थराने लगी।

واذا الارض مدت والقت ما فيها وتخلت،

يوم تشقق السماء بالغمام

आसमान फट रहा है, ज़मीन फट रही है, आग बरस रही है, आग निकल रही है और इन्सान चीख़ व पुकार कर रहे, मासूम बच्चों का माँए उठाकर फेंक देंगी कि मैं बचूँ मेरा बच्चा मरे लेकिन न आज माँ बचेगी न बच्चा बचेगा और वह आवाज़ तेज़ हो रही है। यहाँ तक कि इस्लामाबाद के यह ख़ूबसूरत पहाड़ फटने लगे, मारगला की पहाड़ियों में आग लग जाएगी और पूरे इस्लामाबाद की ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो जाएगी। इसमें आग निकलेगी, ऊपर ख़ौफ़नाक चीख़ होगी, इधर से आग निकलेगी और पूरी दुनिया के

इन्सान एक मौत मरेंगे। *"ला इलाहा इल्लल्लाह"* दुनिया के बादशाह मरे पड़े हैं। अब कोई है अल्लाह का मुक़ाबिल तो अपने को बचा कर दिखाए। फिर आसमानों की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ ﴿اذا السماء انفطرت﴾ आसमान तोड़ दिया, दूसरा आसमान तोड़ दिया, तीसरा आसमान तोड़ दिया, चौथा, पाँचवा, छठा, सातवाँ तोड़ दिया, मौत की नींद सुला दिया और सारी काएनात को मौत की घाट उतारते उतारते अल्लाह ने कहा जिब्राईल तू भी मर जा, मीकाईल तू भी मर जा तो अल्लाह का अर्श भी हिल जाएगा। ऐ अल्लाह ये जिब्राइल और मीकाईल मर जाऐंगे इनको तो बचाएं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे

﴿اسكت فقد كتبت الموت على من كان تحت عرشى﴾

मेरे अर्श के नीचे सबको मौत है कोई बच नहीं सकता। यह मरा पड़ा है जिब्राईल और यह मरा पड़ा है मीकाईल, अल्लाह के बड़े क़रीबी फ़रिश्ते भी। अल्लाह फ़रमाएंगे तू मर जा इसराफ़ील जो सूर फूंक रहा है यह भी मरा, ऊपर उठ गया सूर। नीचे इज़राईल ऊपर इज़राईल का रब। अल्लाह अपनी बेनियाज़ी के साथ तकब्बुर के साथ, शहंशाही अदा के साथ कहेगा, "कौन बाक़ी है?" कहा ऊपर तू बाक़ी है नीचे मैं बाक़ी। अल्लाह तआला फ़रमाएगा तू भी मेरी एक मख़लूक़ है तू भी मर जा। इज़राईल की भी ऐसी चीख़ निकलेगी अगर दुनिया के इन्सान ज़िन्दा होते तो कलेजे फट जाते, ज़मीन व आसमान फट जाते। वे तो पहले ही फटे पड़े हैं। सब को मार कर

لا اله الا الله توكل على الحى الذى لا يموت، الٓمٓ o الله لا اله الا هو الحى القيم لا تأخذه سنة ولا نوم له ما فى السمٰوٰت وما فى

الارض من ذا الذی یشفع عنده الا باذنه یعلم ما بین ایدیهم وما
خلفهم ولا یحیطون بشیء من علمه الا بما شآء وسع کرسیه
السموٰت والارض ولا یؤده حفظهما وهو العلی العظیم۔ (سورة
البقره پ۔ ۳ رکوع ۲، آیة ۲۵۷)

अल्लाह की बादशाहत

आज वह अबदी बादशाह, अज़ली बादशाह, अव्वल बादशाह, आख़ीर बादशाह, ज़ाहिर बादशाह, बातिन बादशाह, क़दीम बादशाह, रहमान बादशाह, रहीम बादशाह, जब्बार बादशाह, क़ह्हार बादशाह, अव्वल अव्वलीन बादशाह, आख़िरुल-आख़िरीन बादशाह, अकरमुल-अव्वलीन बादशाह, राहिमुल-मसाकीन बादशाह, अर्रहमुर्राहीमीन बादशाह, अज़ीज़ुलइन्तिक़ाम बादशाह और ज़ित्तौल बादशाह, रहमान बादशाह, शदीदुल इक़ाब बादशाह।

सारी काएनात पर "ला इलाहा" की तलवार चलाकर फिर कहेगा

﴿من کان لی شریك فلیات.﴾

कोई मेरा शरीक है तो आ जाए।

कहाँ गयीं अजम की हुकूमतें और अरब की हुकूमतें? चंगेज़ जैसे, हलाकू ख़ाँ जैसे, महमूद जैसे, सिकन्दर जैसे, तैमूर जैसे कहाँ हैं?

﴿من کان لی شریك فلیات.﴾

कोई मेरा शरीक है तो आ जाए।

कोई हो तो अल्लाह के सामने आए। आज तो मेरे मौला तेरी ही बादशाही है।

अब तो बताओ मेरे सिवा कौन है?

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएगा ﴿اين الملوك﴾ बादशाह कहाँ है? ﴿اين الجبارون﴾ वे ज़ालिम कहाँ हैं? ﴿اين المتكبرون﴾ वे तकब्बुर करने वाले कहाँ है? ﴿نحن الملك اليوم﴾ आज कौन बादशाह है? कौन जवाब दे सकता है? फिर अल्लाह ख़ुद कहेगा ﴿لله الواحد القهار﴾ आज अकेले अल्लाह ही की बादशाही है।

﴿انا الذی بدات بالدنیا ولم تکن شیئا وانا الذی اعیدها.﴾

मैंने दुनिया बनाई, मैंने मिटाई, इन्तिज़ार करो अब दोबारा बनने का वक़्त आने वाला है कि जब तुम सब मेरे सामने खड़े होंगे और ऐसा आलम होगा, नंगे बदन, नंगे सिर, नंगे पाँव और ऐसे टांगे काँप रही होंगी और फ़रिश्ते गर्दन में हाथ डालकर अल्लाह के सामने खड़ा कर देंगे और अल्लाह ख़ुद फ़रमाएगा

﴿یا ابن آدم اعطیتك خولتك وانعمت علیك ارنی ما ذا صنعت فیها.﴾

ऐ मेरे बन्दे जो ज़िन्दगी दी, जो रिज़्क़ दिया, जो दौलत दी, आज दिखा क्या लाया है?

आज बड़े बड़े बादशाहों को आप देखेंगे ज़लील होता हुआ।

हर एक जो जफ़ा करे वह बेवफ़ा दुनिया

जिस अल्लाह से हम भाग नहीं सकते उसी से हम भाग रहे हैं और जो दुनिया आज तक किसी की नहीं बन सकी उसको अपनाने के चक्कर में पड़े हुए हैं। आज तक दुनिया ने किसी से वफ़ा की? अगर यह वफ़ा करती तो आज इस्लामाबाद वालों को

न मिलती? मेरी मुराद है ये जो हम सब बैठे हुए हैं हम ने किसी से ली, हमारे बाप दादा से दुनिया दग़ा कर गई और हमारे हाथ में आ गई और क़रीब ही हम से ग़द्दारी कर जाएगी और हमें छोड़कर चली जाएगी फिर उनसे बेवफ़ाई करके आगे चली जाएगी फिर उनसे बेवफ़ाई करके आगे चली जाएगी अगर यह वफ़ादार होती तो कभी सिकन्दर का ख़ानदान ख़त्म न होता, कभी दारा का ख़ानदान ख़त्म न होता, कभी तातारी ख़ानदान ख़त्म न होता, कभी बनू उमैय्या, बनू अब्बास ख़त्म न होते।

तीन हज़ार एक सौ चौंसठ साल सासान वालों ने हुकूमत की पर इनमें से हज़ारों इन्सानों ने आज पहली दफ़ा सासान का नाम सुना होगा। सासान वालों ने तीन हज़ार एक सौ चौंसठ साल हकूमत की आज उनकी क़ब्रों का निशान कोई नहीं है।

इस ग़द्दार दुनिया, इस बे वफ़ा दुनिया, इस मकर व फ़रेब की दुनिया, इस बूढ़ी दुनिया। यह वह बुढ़िया जिसने बड़ा मेकअप करके अपने आपको संवारा है, सजाया है और आपके सामने आकर आपको आशिक़ बना रही है और मुझे दीवाना बना रही है औरों को दीवाना बना रही है। अल्लाह की क़सम इससे बड़ा मक्कार कोई नहीं, इससे बड़ा ज़ालिम कोई नहीं, इससे बड़ा दग़ाबाज़ कोई नहीं। मैं अल्लाह को न छोड़ूँ चाहे मेरा सब कुछ चला जाए क्योंकि यह सब कुछ एक दिन मुझे छोड़ना है:—

इस हिर्स हवस को छोड़ मियाँ मत देस बदेस फिरे मारा
क़ज़्ज़ाक़ अजल का लूटे है दिन रात बचा कर नक़्क़ारा

وتفاخر بينكم وتكاثر فى الاموال والاولاد.

खेलकूद तमाशा, लहू व माल की दौड़, दुनिया की दौड़ इज़्ज़त की दौड़ और यह अल्लाह का महबूब फ़रमा रहा है ﴿ارتحلت الدنيا مدبرة﴾ इस्लामबाद और लाहौर और पाकिस्तान और ईरान और हिन्दुस्तान और सातों महाद्वीपों ने मुँह मोड़ लिया है और आख़िरत की तरफ़ भागे जा रहे हैं ﴿ارتحلت الاخرة مقبلة﴾ और आख़िरत ने अपने बाज़ू फैला दिए हैं पर फैला दिए हैं और तेज़ रफ़्तारी से उक़ाब की तेज़ी के साथ वह तुम्हार तरफ़ उड़ी चली आ रही है ﴿ولكل واحدة منها بنون﴾ कुछ लोग हैं जो दुनिया के पुजारी हैं

﴿فكونا من ابناء الاخرة ولا تكونوا من ابناء الدنيا.﴾

तुम आख़िरत के पुजारी बनना, तुम दुनिया के पुजारी न बनना।

﴿فان كل ام يتبعها ولدها﴾

क़यामत के दिन जैसे बेटा माँ के पीछे चलता है, भूल जाए तो कहता है अम्मा, भटक जाए तो कहता है अम्मा, रोटी के लिए कहता है अम्मा, पानी के लिए कहता है अम्मा। क़यामत के दिन दुनिया आएगी बूढ़ी शक्ल में, काली शक्ल में। अल्लाह कहेगा जानते हो यह कौन है? कहेंगे नहीं, कहा यह दुनिया है जिसके इश्क़ में तुमने मुझे भुला दिया था। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ले जाओ इसको दोज़ख़ में। उसको दोज़ख़ में ले चलेंगे। वह कहेगी मेरे बच्चे तो मेरे साथ कर। मैं बेटों के बग़ैर कैस जाऊँ? तो अल्लाह तआला कहेंगे जिसने तुझ से इश्क़ किया उनको भी लेकर चली जा। सब जा रहे हैं, सब खिंचे जा रहे हैं। हम दुनिया के

गुलाम नहीं हैं हम अल्लाह के गुलाम हैं।

मेरे भाईयो! *"ला इलाहा इल्लल्लाह"* में हम ने अल्लाह अल्लाह से इक़रार किया है कि ऐ अल्लाह तू ही एक माबूद है, तेरे अलावा कोई नहीं लिहाज़ा तेरी मानकर चलना ही हमारी ज़िन्दगी है। इस पर हम मिट चुके हैं। अब जान चली जाए, चली जाए, माल चला जाए, चला जाए, वह होगा जो अल्लाह चाहता है, वह नहीं होगा जो मैं चाहता हूँ, वह नहीं होगा जो मेरा जी चाहता है। जब अल्लाह ने कह दिया तो कर दिया।

ऐ अल्लाह तेरी रज़ा पर हम राज़ी हैं

एक सहाबी तिजारत के लिए शाम गए। शाम में कुछ देकर शराब ख़रीद लाए। अभी शराब हराम नहीं हुई थी। शराब ख़रीदकर लाए, अपने सारे माल से शराब ख़रीदकर लाए। अपने सारे राशन माल से शराब ख़रीदकर लाए। मदीना पहुँचे तो पता चला शराब तो हराम हो गई तो यह नहीं कहा कि अब मेरा क्या बनेगा? अब मैं बच्चों को रोटी कहाँ से खिलाऊँगा? सारा पैसा तो मैंने इस पर लगा दिया। कहा जब अल्लाह ने हराम कर दी तो हमने भी हराम की। ख़न्जर लेकर सारे मुशकीज़े फाड़कर ज़मीन पर गिरा दी। कहा ऐ अल्लाह जिस पर तू राज़ी है उसी पर मैं भी राज़ी हूँ। हम पैसे पर नहीं बिकते, हम अल्लाह पर बिक जाते हैं, हम माल पर नहीं बिकते, हम हुकूमत पर नहीं बिकते, अल्लाह के दीन पर बिकते हैं, उसकी जन्नत पर बिकते हैं, हम दुनिया के लिए नहीं बिकते, *"ला इलाहा इल्लल्लाह"* यह अल्लाह ने हम से

इक़रार करवाया कि ऐ अल्लाह बस तू ही तू है उसी के लिए जीना उसी के लिए मरना, उस पर फ़िदा होना, उस का बनकर रहना ही ज़िन्दगी है।

फ़क़ीर कौन है?

क्या हमारी बदकिस्मती है कि साल में कोई एक रक्अत भी ऐसी नसीब नहीं हुई जिसमें मैंने अल्लाह के साथ प्यार मुहब्बत के साथ बात की हो और मैं अपने अल्लाह को याद करके, अल्लाहु-अकबर से शुरू हुआ और सज्दे तक अल्लाह के इश्क़ में चला गया, यह कैसा फ़क़ीरों को देस है, यह कैसी फ़क़ीरों की दुनिया है। लोग फ़कीर कहते हैं जो यह झुग्गियों में रहते हैं।

फ़क़ीर वह है कि जिसे अल्लाह न मिला, फ़क़ीर वह है कि जो अल्लाह के घर में आकर भी अल्लाह को न पा सका, जो तन्हाइयों में अल्लाह के सामने बैठकर रो न सका, जो अल्लाह को दुखड़े न सुना सका, जो अल्लाह की मुहब्बत में न तड़पा, न रोया और न मचला, यह फ़क़ीर है। मेरे भाईयों फ़क़ीर वह नहीं जो इस्लामाबाद की गलियों में मांगता फिर रहा है।

हम हर हाल में मुहम्मदी हैं

मेरे भाईयो! अल्लाह के वास्ते अपने अल्लाह को अपना बना लो। उसके सिवा मंज़िल नहीं मिलेगी। भटकी हुई इन्सानियत है। मंज़िल मिलाने के लिए और अल्लाह तक पहुँचाने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी

नमुना बनाया है। अल्लाह के यहाँ अरबी, अजमी यह नहीं चलते। क़ुरैशी, पठान नहीं चलते, राजपूत, ख़ान नहीं चलते। अल्लाह से मिलना है तो मुहम्मदी बनना पड़ेगा। ज़ाहिर में भी मुहम्मदी, अन्दर से भी मुहम्मदी। ज़िन्दगी की हर अदा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सांचे में ढल जाऐ, कितनी हमारी बदक़िस्मती है कि जिस चीज़ को अल्लाह के रसूल ने पसन्द किया वह हमारी पसन्द न बनी और जिस को उन्होंने चाहा हम ने उसे न चाहा।

ज़ाहिर भी सुन्नत के मुताबिक़ और बातिन भी

पाकिस्तान का जरनैल जो पच्चीस साल में. तीस साल में जरनैल बनता है हिन्दुस्तान के जरनैल की वर्दी पहन कर आ जाए तो फ़ौरन उसका कोर्टमार्शल होगा। फ़ौरन उस पर ग़द्दारी का मुक़दमा चलेगा। वह कहेगा मुझे क्यों पकड़ते हो मैंने तो तीस साल पाकिस्तान की ख़िदमत की है। उसे कहा जाएगा तेरी वर्दी ग़द्दारी की है, तेरी वर्दी दुश्मन का लिबास है लिहाज़ा तेरा अन्दाज़ शक के दायरे में आ गया। क्यों? कि ज़ाहिर दुश्मन जैसा हो गया। देखा न कपड़े गन्दे हों तो हम उतार देते हैं। क्यों? नापाक तो नहीं तो उतारें क्यों? इसलिए कि ज़ाहिर में गंदे हो गए हैं।

अब गिलास में यह मुझे पानी दे रहा है, यह साफ़ सुथरा गिलास है। इसी गिलास पर उधर थोड़ा सा तेल लगा हो, इधर थोड़ी सी ग्रीस लगी हो, इधर थोड़ा सा सालन लगा हो, उधर थोड़ी सी मिट्टी लगी हुई हो। सारी चीज़ें पाक हैं मगर मैं उसमें

पानी नहीं पी सकता क्योंकि इसकी ज़ाहिरी गंदगी मुझे नफ़रत दिला रही है। उससे कराहियत है। उसका ज़ाहिर साफ़ होना भी ज़रूरी है।

मेरे भाईयो! शैतान ने हमें चक्कर दिया, अन्दर ठीक होना चाहिए, बाहर की ख़ैर है तो यह गन्दे गिलास में पानी क्यों नहीं पीते? नौकर को डाँट पड़ जाती है कि तुझे सलीक़ा नहीं, तू गंदे गिलास में पानी लाया। वह कहे आक़ा! इसका अन्दर बिल्कुल ठीक है बाहर को न देखो, इसके ज़ाहिर को न देखो, इसके अन्दर बिल्कुल साफ़ पानी है। आप पी लें यह कभी भी नहीं हो सकता। उसके मुँह पर गिलास मारा जाएगा।

हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम हैं। उनके सांचे में ढलना उनके तरीक़ों पर चलना यह हमारी ज़िन्दगी की मैराज (बुलंदी) है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और सुन्नत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुर्ता पहना तो उसका आस्तीन बड़ा था। उसमें से बाज़ू छिप गया। अपने बेटे से कहा बेटा छुरी लाओ इसको काटता हूँ। उन्होंने कहा अब्बा जान! आप इसको कैंची से काटें सीधा कटेगा। कहा नहीं मेरे बेटे मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा उनके कुर्ते का आस्तीन बड़ा था तो उन्होंने उसको छुरी से काटा था तो मैं भी छुरी से काटूंगा। मैं नहीं उसको कैंची से काटता।

तो मैं यूँ कहता हूँ कि चाहे उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कैंची न मिली हो, आपने छुरी से काट दिया लेकिन जैसे करते देखा वैसे करते चले गए।

एक जगह से गुज़रे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ठोकर लगी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब वहाँ गुज़रते ठोकर खाते कि यहाँ मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ठोकर लगी थी। मैं भी ठोकर खाऊँगा। यह इश्क़ था।

मजनूं की मिसाल

पाए सग बोसीदा व मजनूं ख़ल्क परसद ईं चे शूद
ईं सग दर कूए लैला गाहे गाहे रफ़ता बूद

मजूनं ने तो कुत्ते के पाँव भी चूमे। लोगों ने कहा दीवाने कुत्ते को क्यों चूमता है? उसने कहा पागलों! यह कुत्ता लैला की गली से गुज़रता है। इसलिए मुझे अच्छा लगता है। इसके पाँव चूमता हूँ तो हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े न चूमें। उसके तरीक़े न चूमें जिस जैसा कोई है नहीं। जिस जैसा कोई बनाया नहीं। "मैराज" पर गए। था अल्लाह! ﴿ابراهيم اتخذته خليلا﴾ उनको अपना ख़लील बनाया ﴿وموسى كليما﴾ मूसा अलैहिस्सलाम को कलीम बनाया ﴿النت لداوٗد الحديد﴾ दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए आपने लोहा नरम फ़रमाया ﴿سخرت لسليمٰن الريح﴾ सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए आपने हवा ताबे की मेरे लिए क्या है? तो अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿الا ذكر الا ذكرت معى﴾

क़यामत तक तेरा मेरा नाम इकठ्ठा रहेगा जुदा नहीं हो सकता।

ऐ मेरे महबूब! मेरे नाम के साथ तेरा नाम रहेगा

﴿امنو بالله ورسوله﴾ इकठ्ठे हो गए ﴿تؤمنو بالله ورسوله﴾ इकठ्ठे हो गए ﴿اطيعوا الله واطيعوا الرسول﴾ इकठ्ठे हो गए ﴿من يطيع الله ورسوله﴾ देखो कैसे इकठ्ठे हो गए ﴿يطيعون الله ورسوله﴾ देखो कैसे इकठ्ठे हो गए ﴿ذلك بانهم كفرو بالله ورسوله﴾ कैसा साथ आ रहा है।

من يشاقق الله ورسوله. من يحادد الله ورسوله. براء ة من الله ورسوله.
اذان من الله ورسوله. فاذنوا بحرب من الله ورسوله. لا تخونو الله
والرسول،. استجيبوا لله وللرسول. والله ورسوله احق ان يرضوه.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में यह बड़ी अज़ीम शान वाली आयत है। अल्लाह तआला यूँ फ़रमा रहा है कि सिर्फ़ मुझे राज़ी करने से काम नहीं बनेगा, मेरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी राज़ी करो। इसलिए कहा क़यामत तक तेरा नाम मेरा नाम साथ चलेगा, कभी जुदा नहीं हो सकता।

सलाम नबियों पर मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर निराली शान से

फिर अल्लाह तआला ने अपने नबियों को सलाम भेजा।

﴿سلام على نوح﴾ नूह अलैहिस्सलाम पर सलाम।

﴿سلام علی ابراھیم﴾ इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर सलाम।

﴿سلام علی موسٰی و ھارون﴾ मूसा अलैहिस्सलाम व हारून अलैहिस्सलाम पर सलाम।

﴿سلام علیٰ الیاسین﴾ यासीन अलैहिस्सलाम पर सलाम।

नबियों पर सलाम लेकिन जब अपने महबूब पर सलाम भेजा तो अल्लाह तआला कहता है ﴿سلام علی محمد﴾ जैसे औरों को कहा

سلام علی ابراھیم، سلام علی نوح، سلام علی
موسٰی و ھارون، سلام علیٰ الیاسین،

तक कहता ﴿سلام علی محمد﴾ बात ख़त्म। अल्लाह ने यूँ नहीं कहा, अपने महबूब की शान दिखाई, कलाम बदला, अन्दाज़ बदला, ख़िताब बदला। मैं उसको उर्दू में कैसे समझाऊँ जो अल्लाह ने इसमें बताया यह कह कर? कितनी ताक़तवर बात फ़रमाई और कितनी अज़ीमुश्शान बात फ़रमाई है ﴿ان الله وملئکته﴾ एक लफ़्ज़ उनकी ताक़त, फिर लफ़्ज़ उस ज़ात की ताक़त, फिर आगे ﴿وملئکته﴾ नहीं कहा बल्कि ﴿وملئکته﴾ तो फ़रिश्ते हैं ही अल्लाह के अगर अल्लाह ﴿وملئکته﴾ कहता तो भी बात ठीक थी पर अल्लाह अपना नाम दो दफ़ा लाया है। कहा सुनो मेरे बन्दों तहक़ीक़ बेशक यह कोई उनके तर्जुमे नहीं हैं और उसके अलावा कोई लफ़्ज़ है नहीं जो इनके लिए लाया जाए। उर्दू हो या फ़ारसी हो अंग्रेज़ी हो सारी लूली लंगड़ी ज़बानें हैं। ये अरबी का कहाँ तर्जुमा कर सकती हैं? यह नहीं कहा ﴿ان الله﴾ बेशक ﴿وملئکته﴾ अल्लाह और उसके फ़रिश्ते, इसमें आपकी शान कहाँ से कहाँ तक पुहँचा दी, क्या कहते हैं? ﴿یصلون علی النبی﴾ उस नबी पर दरूद

भेजते हैं:

﴿يا يها الذين امنوا صلوا عليه وسلموا تسليما. (سورة الحزاب پ. ٢٢، آيت ٥٦)﴾

ऐ ईमान वालों! तुम भी वही करो जो तुम्हारा रब और उसके फ़रिश्ते करते हैं। इतनी ऊँची बात से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान बताई।

एक बार एक लम्बा सज्दा किया। मालूम हो गया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम डर गए। जब आप उठे तो पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतना लम्बा सज्दा किया? कहा यह सज्दा-ए-शुक्र है कि मेरे अल्लाह ने कहा है ऐ मेरे महबूब जो तुझ पर एक बार दरूद पढ़ेगा उस पर दस बार पढ़ूंगा। ऐसा लाडला नबी दिया।

यह फ़र्क़ है कलीम अलैहिस्सलाम और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में

मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने तूर पर बुलाया तो दौड़े हुए आए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿ما اعجلك عن قومك يا موسى﴾ ऐ मूसा दौड़ कर क्यों आए हो? तो उन्होंने कहा या अल्लाह ﴿هم اولاء على اثرى﴾ वे मेरे पीछे आ रहे हैं। ﴿عجلت اليك رب لترضى﴾ मैं दौड़ के आया ताकि तू खुश हो जाए अगर मालिक नौकर को बुलाए वह दौड़कर आए तो मालिक खुश हो जाता है। कहा या अल्लाह मैं इसलिए दौड़कर आया हूँ ताकि तू खुश हो जाए। वह अल्लाह जिसको मूसा अलैहिस्सलाम कह रहे हैं तू खुश हो जाए। वह अल्लाह अपने हबीब से कह रहा है

﴿ولسوف يعطيك ربك فترضى. (سورة الضحى پ.٣٠)﴾

ऐ मेरे हबीब मैं तुझे इतना दूंगा कि तू खुश हो जाएगा, तू राज़ी हो जाएगा। क्या कमाल है।

फिर हमें अदब सिखाया

﴿لا تجعلوا دعآء الرسول بينكم كدعاء بعضكم بعضا.﴾

(سورة النور پ. ١٨ آية ٦٣)

मेरे नबी को नाम से मत पुकारो। या मुहम्मद मत कहो, बेअदबी है या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहो, या नबीअल्लाह कहो, या हबीबुल्लाह कहो और ऊँचे मत बोलो।

﴿لا ترفعوا اصواتكم فوق صوت النبى.﴾

(سورة الحجرات پ. ٢٦، آية ٢)

ऊँचे मत बोलो।

है क़ुरआन जिसकी तारीफ़ करने वाला

यह सिर्फ़ क़ुरआन जिसमें जो अल्लाह अपने नबी की तारीफ़ कर रहा है।

﴿انا ارسلنك شاهداً ومبشراً ونذيراً وداعياً الى الله باذنه وسراجاً منيراً.﴾

(سورة الاحزاب، پ. ٢٢)

तू गवाह है, तू बशारत देने वाला है, तू डराने वाला है, तू चिराग़ है और रौशन चिराग़ है, तू खुशख़बरी देने वाला है, तू डराने वाला है, तू सारे आलम के लिए रहमत है, तू सारे आलम के इन्सानों के लिए है।

और एक दफ़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से कहा ऐ जिब्राईल अल्लाह जो मुझे रहमतुल्लिल-आलमीन कहता है तो तुझे रहमत से क्या हिस्सा मिला? कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम डर लग रहा था कहीं अल्लाह तआला दोज़ख़ में न डाल दे लेकिन आपकी बरकत से अल्लाह ने मेरी तारीफ़ की है तो मुझे उम्मीद लग गई कि मेरी जान बख़्शी गई कि अल्लाह तआला ने आपकी बरकत से मेरे बारे में फ़रमाया,

﴿انه لقول رسول كريم، ذي قوة عند ذي العرش مكين مطاع ثم امين﴾

(سورة التكوير پ ۳۰، آیة ۱۹ تا ۲۱)

अल्लाह तआला ने मेरी तारीफ़ की है, फ़रिश्ता है, करीम है और उसकी इताअत की जाती है, अमानत वाला है, ताक़त वाला है, तो जब अल्लाह ने मेरी तारीफ़ की तो मुझे पता चला कि अब मैं दोज़ख़ से बच जाऊँगा। आपकी रहमत से अल्लाह ने मुझे यह हिस्सा दिया है।

कोई तो लाओ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखने वाला

उस महबूब के तरीके को छोड़कर कहाँ तक भागता है। कोई माँ तो ऐसी लाओ जो इतना रोई हो जितना अपनी उम्मत के लिए आप रोए, कोई बाप तो ऐसा दिखाओ जो अपनी औलाद के लिए इतना पिसा हो जितना आप पिसे, कोई बाप तो दिखाओ

जिसने पाँच घंटे लगातार अपने बच्चों के लिए दुआ की हो, कोई माँ तो दिखाए जिसने लगातार पाँच घंटे अपने बच्चों के लिए दुआ की हो और यह देखो महबूबे ख़ुदा अप्रैल का महीना, आपके ऊपर छत तो पड़ी हुई है, कुछ न कुछ तो गर्मी रुकी पड़ी है। अरफ़ात का मैदान, अप्रैल का महीना, एक बजे से लेकर सूरज छिपने तक कोई छः घंटे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊँटनी जैसी सवारी पर जिस पर कोई आराम नहीं बैठे हुए हैं और अपनी उम्मत के लिए दुआ में लगे हुए हैं। सूरज की चिलचिलाती धूप भी थक हार कर लौट गई और सूरज भी डूब गया पर महबूबे ख़ुदा की दुआएं ख़त्म नहीं हुईं। या अल्लाह! या अल्लाह! या अल्लाह! आने वाली नस्लों के लिए दुआएं कर दीं और न खाया न पिया, शक पड़ गया कि पता नहीं रोज़ा है। उम्मे फ़ज़ल रज़ियल्लाहु अन्हा का अल्लाह भला करे उन्होंने एक पियाला दूध भेज दिया जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरफ़ात के मैदान में पिया उसके अलावा कुछ नहीं पिया। इतनी लम्बी दुआएं न कोई माँ मांगे न कोई बाप मांगे। उसके तरीक़ों में हमें इज़्ज़त नज़र न आए, उसके तरीक़ो में हम अपनी निजात न समझें तो फिर कहाँ जाएंगे।

मेरे भाईयो! ﴿اين تذهبون﴾ इस क़ुरआन के लफ़्ज़ की पुकार को सुनो। ﴿اين تذهبون﴾ ऐ अल्लाह के बन्दो! कहाँ जा रहे हो? जैसे कोई माँ अपने नाफ़रमान बच्चे को कहती है ना! अरे कहाँ जा रहा है? उसकी अक़ल में ख़राबी आ गई है न माँ की सुनता है न बाप की सुनता है तो माँ कहती है कहाँ जा रहा है? अल्लाह इससे ज़्यादा मुहब्बत के साथ, इससे ज़्यादा दर्द के साथ अल्लाह कह रहा है कहाँ जा रहे हो?

और उससे ज़्यादा दर्द के साथ अल्लाह के महबूब की सुनो ﴿یا ربی امتی امتی﴾ या रब्बी उम्मती, उम्मती।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को राज़ी करूंगा

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ सुनो!

या अल्लाह इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा

﴿فمن تبعنی فانه منی ومن عصانی فانك غفور رحيم.﴾

(سورة الرعد، پ. ۱۳)

ऐ अल्लाह! जो मेरी माने मेरा, जो न माने तेरी मर्ज़ी माफ़ कर दे, अज़ाब दे दे। ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा

﴿ان تعذبهم فانهم عبادك وان تغفرلهم فانك انت العزيز الحكيم.﴾

(سورة المائدہ، پ. ۷، آیة ۱۱۸)

तेरे बन्दे हैं अज़ाब दे, तेरे बन्दे हैं तू माफ़ कर। यह ईसा अलैहस्सलाम की दुआ है।

या अल्लाह मैं न इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कहूँ न मैं ईसा अलैहिस्सलाम की कहूँ बल्कि मैं अपनी कहूँ

﴿یا رب امتی امتی، یا رب امتی امتی﴾

ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत को माफ़ कर दे, माफ़ कर दे, माफ़ कर दे, नहीं करना फिर भी कर दे। "उम्मती", "उम्मती" कह कर जो रोना शुरू किया यहाँ तक कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम भागे हुए आए। अल्लाह ने दौड़ाया कि जाओ पूछो मेरे महबूब क्यों रोते हो? उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

अल्लाह ने मुझे भेजा है, आप क्यों परेशान हो? क्यों रो रहे हो? कहा जिब्राईल मुझे मेरी उम्मत का ग़म खा रहा है तो अल्लाह ने कहा अच्छा जाओ ख़ुशख़बरी दो तेरी उम्मत के बारे में तुझे राज़ी करूंगा।

ऐ अल्लाह! मेरे बाद उम्मत का क्या होगा?

और यह दुनिया से जाने का दिन आ गया। जिब्राईल अलैहिस्सलाम अन्दर इज़राईल अलैहिस्सलाम बाहर, आज अनोखा मौत का क़िस्सा पेश आने वाला है जो आज तक कभी नहीं हुआ कि इज़राईल बाहर खड़े हों, जिब्राईल अन्दर आए हों। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह बाहर इज़राईल अलैहिस्सलाम हैं अन्दर आने की इजाज़त मांग रहे हैं और अल्लाह ने फ़रमाया है कि इजाज़त मिले तो जाना नहीं तो वापस आ जाना। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब से मौत का काम ज़िम्मे लगा है अल्लाह तआला ने किसी को इख़्तियार नहीं दिया आपको इख़्तियार दिया है चाहें तो रहें, चाहें तो चलें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिब्राईल जवाब बाद में दूंगा। जाओ अल्लाह से पूछ कर आओ मेरे बाद मेरी उम्मत के साथ क्या करेगा? ऐसे मौक़े पर उम्मत याद रही। जिब्राईल अलैहिस्सलाम वापस आए। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला फ़रमा रहें हैं आपकी उम्मत को अकेला नहीं छोडूंगा। कहा ﴿الآن قرت عيني﴾ अब मेरी आँखे ठंडी हैं। या अल्लाह मेरी उम्मत का अगर तू मुहाफ़िज़ है तो मुझे अपने पास बुला ले।

जिब्राईल अलैहिस्सलाम भी इस बात पर ग़मगीन हो गए, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर आपने दुनिया से जाने का फ़ैसला कर लिया है तो मेरा भी आज दुनिया में यह आख़िरी दिन है, आज के बाद मैं "वही" लेकर नहीं आऊँगा। वह मुबारक सिलसिला जो आदम अलैहिस्सलाम से चला आज वह टूट गया। आज वह ख़त्म हो गया और जब इज़राईल अलैहिस्सलाम ने अपना काम शुरू किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहना शुरू किया

﴿الصلوة وما ملكت أيمانكم، الصلوة وما ملكت أيمانكم،
الصلوة وما ملكت أيمانكم،﴾

नमाज़ पढ़ते रहना, नमाज़ पढ़ते रहना, मातहतों के साथ अच्छा सुलूक करना। ये आख़िरी बोल थे। उन बोलों का आज इस्लामाबाद में पाकिस्तान में मुसलमानों ने क्या पास किया कि पिच्वानवें फ़ीसद लोग नमाज़ छोड़ गए। आख़िरी बोल नमाज़, नमाज़, नमाज़, गुलामों से अच्छा सुलूक, मातहतों से अच्छा सुलूक और फिर जब आवाज़ पस्त हो गई फिर ﴿الصلوة، الصلوة﴾ नमाज़ नमाज़ फिर आख़िर में कहा ﴿اللهم الرفيق الاعلى﴾ यह कहकर अल्लाह के पास चले गए।

मंज़िल की तलाश में कभी न भटके अगर

मेरे भाईयो! मंज़िल पर पहुँचना है तो अल्लाह के रसूल के हाथों में हाथ देना पड़ेगा नहीं तो हम भटक जाएंगे, हलाक हो जाएंगे, रास्ता नहीं मिलेगा, मंज़िल नहीं मिलेगी। मंज़िल तक

पहुँचने के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम-ब-क़दम चलना पड़ेगा।

ये गाड़ियाँ खड़ी हुई हैं। पचास लाख से लेकर पाँच लाख तक की गाड़ियाँ हुई हैं। पचास लाख की गाड़ी के एक टायर में से हवा निकाल दो। क्या निकला? एक रुपए की हवा निकल गई, यह गाड़ी अब नहीं चल सकती। कौन दीवाना है जो अब इसको चलाए। कहेंगे उलट जाएगी, कोई कहेगा मेरी पचास लाख की गाड़ी है अगर हवा निकल गई तो क्या हो गया? एक रुपए की हवा निकली है। इससे क्या होता है? गाड़ी चलाओ तो चलाएगा तो ज़रूर उलट कर गिरेगी इसी के ऊपर। मेरे भाईयो! गाड़ी के पहिए में से हवा निकली गाड़ी उलट गई। महबूबे ख़ुदा की सुन्नत निकली तो ईमान की गाड़ी कैसे सलामत चलेगी?

क्या अल्लाह के रसूल की सुन्नत टायर की हवा से भी सस्ती है? क्या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा टायर की हवा से भी ज़्यादा सस्ता है? क्या इसकी अहमियत इतनी भी नहीं जितनी टायर में हवा की है? क्या इसकी क़ीमत इतनी भी नहीं जितनी इस हवा की है?

मेरे भाईयो! एक तार कट जाए तो सारा सिस्टम फेल हो जाता है एक सुन्नत जब टूटती है तो बन्दे और रब का सिस्टम ज़रूर टूटता है और क्योंकि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत को नहीं जानते। मस्अला यहाँ अटका हुआ है। अल्लाह को ऐसा नहीं जानते जैसा वह है। उसके रसूल को वैसा नहीं जाना जैसे वह हैं। उसकी मुहब्बतों को हमने नहीं पहचाना जैसे वह करके गया। उसके दर्द को और दुःख को

हम नहीं पढ़े जैसे वह कर के गया।

मेरे भाईयो! अल्लाह के रसूल की एक एक अदा अल्लाह को महबूब है। उस पर आना पड़ेगा। जो आए वे कैसे ऊँचे उड़ गए।

सुन्नतों की क़दर करने वालों का मक़ाम

1. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

﴿انی لا عرف رجلا باسم أبيه وأمه لا يأتي بابا من ابواب الجنة الا قال مرحبا اي تشريفا مباركا.

मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूँ, जिसके माँ और बाप को जानता हूँ। जब वह जन्नत के दरवाज़े पर आएगा तो आठों दरवाज़े खुल जाएंगे हर दरवाज़ा कहेगा

﴿مرحبا مرحبا مرحبا مرحبا مرحبا مرحبا مرحبا مرحبا﴾

हर दरवाज़ा कहेगा इधर से आएं, इधर से आएं, इधर से आएं। सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु घुटनों पर खड़े हो गए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कौन है यह इज़्ज़तों वाला। आपने कहा वही अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु है जिसको आठों दरवाज़े पुकारेंगे। क्यों? सब कुछ लगा दिया सब कुछ लुटा दिया अल्लाह के दीन पर।

2. फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उमर मैंने रात को एक घर देखा जन्नत में। एक ईंट मोती की, एक याक़ूत की, एक ज़मुर्द की ﴿قلت لمن هذا﴾ मैंने पूछा यह किसका है? मुझे कहा गया ﴿فتى من قريش﴾ एक क़ुरैशी का है तो इतना ख़ूबसूरत महल था कि मैं अन्दर जाने लगा तो मुझ

से फ़रिश्ते ने कहा आपके ग़ुलाम उमर बिन ख़त्ताब (रज़ियल्लाहु अन्हु) का है। फिर आपने मज़ाक़ किया उमर दिल तो चाहता था अन्दर जाकर देखूँ तेरा ग़ुस्सा याद आ गया इसलिए नहीं देखा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे आप पर ग़ुस्सा हो सकता हूँ? रोने लगे।

3. फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा उस्मान ﴿ان لكل نبی رفيقا فی الجنة انت فريقی فی الجنة﴾ जन्नत में हर नबी का साथी है मेरा जन्नत का साथी तू है।

4. फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ा और थोड़ा अपने क़रीब किया फिर इर्शाद फ़रमाया या अली ﴿اترضى ان يكون منزلك مقابل منزلی فی الجنة﴾ ऐ अली तू राज़ी हो जा जन्नत में तेरा घर मेरे घर के सामने होगा, आमने सामने। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु रोने लगे कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं राज़ी हूँ।

5. फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा

﴿يا طلحة ويا زبير ان لكل نبي حواريا فی الجنة انتما حواری فی الجنة﴾

ऐ तल्हा, ऐ ज़ुबैर जन्नत में हर नबी का एक हव्वारी (साथी) है मेरे दो हव्वारी हैं तल्हा और ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)।

6. फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अब्दुर्रहमान तू सबसे आख़ीर में मेरे पास आया। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु अशरा मुबश्शरा (वे दस सहाबा जिनको

दुनिया में ही जन्नती होने की बशारत मिली है) में हैं। कहा तू आया तो सही पर सबसे आख़ीर में आया। कहा क्यों या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम? कहा तेरे माल की कसरत ने तुझे हिसाब में फंसा दिया। हलाल माल ने इतनी देर करा दी। जब माल ही हराम होगा तो क्या बनेगा? जब कमाई हराम की होगी तो क्या हाल होगा? जिन्होंने माल दे दिया वह किस तरह ऊपर उठे।

7. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो जन्नती औरत से शादी करना चाहे उम्मे ऐमन से कर ले। हब्शी औरत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जल्दी से शादी की। कहा जो जन्नती देखना चाहे तो दरवाज़े से आ रहा है। एक अन्सारी सहाबी दाढ़ी से पानी टपकता हुआ, जूता हाथ में लिए दाख़िल हो गए। अगले दिन फिर फ़रमाया जो जन्नती देखना चाहे आ रहा है। वही सहाबी कल वाला पानी दाढ़ी से टपकता हुआ जूता हाथ में। फिर आप बैठे हुए हैं कहा जो जन्नती को देखना चाहे आ रहा है। वही सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु तीनों दिन एक सहाबी। वह आ रहा है और उसकी दाढ़ी से उसी तरह पानी टपक रहा है और वह आकर जूता रखकर नमाज़ पढ़ रहा है।

8. यमन से बहुत ख़ूबसूरत कपड़ा आया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम कहने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कितने ख़ूबसूरत हैं। आपने कहा छोड़ो साद बिन मअ़ाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की जन्नत की पौशाकें हैं वे इनसे ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं।

9. हारसा रज़ियल्लाहु अन्हु की माँ आई या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा बेटा बदर में शहीद हो गया। मेरा एक ही बेटा था, मर गया, मुझे बताएं जन्नत में है तो सब्र करूं अगर दोज़ख़ में है तो ऐसा रोना रोऊँगी कि सारा मदीना देखेगा। आपने फ़रमाया– उम्मे हारसा तो दीवानी है? तो पगली है? क्या कह रही है? अल्लाह के रास्ते में मरने वाला भी दोज़ख़ में गया, मैं तुझे ख़ुशख़बरी देता हूँ कि तेरा बेटा जन्नतुल फ़िरदौस की नहरों में नहाता फिर रहा है।

10. फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ज़ैद ने झंडा उठाया आगे बढ़ा क़िताल किया, शहीद हुआ, वह गया जन्नत में, जाफ़र ने झंडा उठाया, क़िताल किया, शहीद हुआ, वह गया जन्नत में, अब्दुल्लाह ने झंडा उठाया, क़िताल किया, शहीद हुआ, ज़रा ठहर कर फ़रमाया, वह गया जन्नत में फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीनों को देखता हूँ जन्नत के मेवे खाते फिरते हैं, जन्नत की फ़िज़ाओं में उड़ते फिरते हैं और जन्न्त की नहरों में ग़ोते लगाते फिरते हैं।

11. फिर यह हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम आ रहे हैं या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को सलाम पेश कर रहे हैं और यह कह रहे हैं उनको जन्नत में एक ख़ूबसूरत घर की ख़ुशख़बरी दे दीजिए।

12. फिर आप फ़रमा रहे हैं यह फ़रिश्ता आया अभी मेरे पास और ख़ुशख़बरी लाया है मेरे लिए कि मेरी बेटी फ़ातिमा

जन्नत की औरतों की सरदार है और मेरे बेटे हसन रज़ियल्लाहु अन्हु और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत के नौजवानों के सरदार हैं।

﴿وسيدا شباب اهل الجنة الحسن والحسين﴾

13. आप तशरीफ़ रखते हैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु सोए हुए, दोनों बच्चे खेल रहे हैं। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बैठी हुई हैं। आप ने फ़रमाया कि मुझे ख़ुशख़बरी मिली है, मेरी बेटी फ़ातिमा और मेरे दो बच्चे और यह जो सोया पड़ा है यानी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु क़यामत के दिन एक ही मक़ाम पर होंगे, एक ही जगह पर होंगे। जन्नत में भी इकठ्ठे और मैदाने हश्र में भी इकठ्ठे होंगे। यूँ जिन लोगों ने अपनी जानों का नज़राना पेश किया और अल्लाह के महबूब के पीछे चले अल्लाह तआला ने उनको इस तरह ऊँचा बना दिया।

14. और सुनो ये तो सब क़ुरैशी हैं, आले रसूल हैं, ये अहले बैत हैं इनका तो ऐसा मक़ाम होना ही चाहिए, उनका न हो तो किस का हो? अगर हसन हुसैन न शहज़ादे बनते तो और कौन बनता और फ़ातिमा जन्नत की औरतों की सरदार न बनती तो और कौन बनती? हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की सुनो जो हब्शी और काला और काले का बेटा है, ग़ुलाम है और ग़ुलाम का बेटा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे हैं बिलाल क्या चक्कर है जब भी जन्नत में जाता हूँ तेरे क़दमों की आहट आगे आगे सुनता हूँ और सुनो! आप ने फ़रमाया जब मैं जन्नत में जाऊँगा तो सबसे पहले जन्नत

का दरवाज़ा मेरे लिए खुलेगा और जन्नत की सवारी पर सवार हूँगा और उसकी लगाम नीचे होगी और अल्लाह का ऐलान होगा यह लगाम बिलाल को पकड़ाई जाए और बिलाल मेरी सवारी की लगाम को पकड़कर मेरे साथ जन्नत में दाख़िल होगा।

15. यह दर्जों की बुलन्दी है और सुनाऊँ। आप ने फ़रमायाः

﴿ان الله يتجلى للناس عامة ولابي بكر خاصة﴾

सारी दुनिया को दीदारे आम कराएगा और मेरे अबूबक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) को दीदारे ख़ास कराएगा। कहा वह दीदारे ख़ास क्या है जो होगा? जन्नत की सबसे बड़ी नेमत अल्लाह की ज़ियारत है।

हूर भी पीछे, क़ुसूर (महल) पीछे, नहरें भी पीछे, ग़िलमान भी पीछे, नईम भी पीछे, मुल्क भी पीछे।

क्या अल्लाह ने नक़्शा खींचा है ﴿جنتن، ذواتا افنان﴾ यह देखो हरी भरी जन्नतें ﴿من كل فاكهة زوجان﴾ हर चीज़ जोड़ा जोड़ा। यह देखो ﴿عينن نضاختان﴾ बहते हुए चश्मे। यह देखो ﴿جنتن مدهامتان﴾ हरी भरी और ऐसी हरी के स्याही माईल हो जाएं। यह देखो ﴿عينن نضاختان﴾ फ़व्वारे मारते हुए चश्मे यह देखा ﴿فاكهة ونخل ورمان﴾ फलों की बहुतात। यह देखो

﴿قصرات الطرف وحور عين كانهن الياقوت والمرجان.﴾

(پ، ۲۷ سورة الرحمن)

और ﴿عربا اترابا كواعب اترابا﴾ वे लड़कियाँ ऐसी ख़ूबसूरत लड़कियाँ हैं।

जन्नती औरत

जो मुश्क से बनी, ज़ाफ़रान से बनी, काफ़ूर से बनी, जिनकी उंगली का एक पोरा सूरज को दिखाएं तो सूरज बेनूर हो जाए, समुंद्र में थूक डालें तो सातों संमुद्र शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएं, मुर्दों से बातें करें तो ज़िन्दा हो जाएं और ज़िन्दों से बात करें तो कलेजे फट जाएं, दुपट्टे को हवा में लहराएं तो सारी काएनात में खुशबू फैल जाए, एक बाल तोड़कर ज़मीन पर डाल दे तो सारा जहान उससे रौशन हो जाए और जब वह बात करे तो पूरी जन्नत में घंटियाँ बजने लग जाएं और जब वह चलती है और एक क़दम उठाती है तो उसके पूर जिस्म में एक लाख क़िस्म के नाज़ अन्दाज़ ज़ाहिर होते हैं, नुमाया होते हैं। उसका नख़रा ऐसा है, उसका नाज़ ऐसा है, उसका अन्दाज़ ऐसा है कि एक क़दम पर एक लाख क़िस्म के नाज़ व नख़रे दिखाती है। जब वह सामने आती है तो चेहरा सामने होता है जब वह पीठ फेरती है तो भी चेहरा सामने रहता है उसका चेहरा नज़रों से ग़ायब नहीं होता चाहे सामने हो चाहे पीठ फेरे और सत्तर जोड़े सत्तर जोड़ों में चमकता जिस्म, चाँदी की तरह नज़र आता है।

नज़र की हिफ़ाज़त का ईनाम

अल्लाह ने कहा ज़िना न करो अगर कोई पाबन्दी लगाई है तो वह पीछे देना चाहता है ﴿وزوجنهم بحور عين﴾ अब मैं तेरी उन लड़कियों से शादी करता हूँ जिस को देखने में तेरे चालीस साल गुज़र जाएंगे। मेरे रब की क़सम पहली नज़र पड़ेगी और चालीस

साल देखता रहेगा और उसकी पलक झपक नहीं सकती, नज़र लौट नहीं सकती, दांए बाएं देख नहीं सकता, चालीस साल देखने में गुम हो जाएगा ऐसे हसीन नक़्शे और ऐसे शाहकार ﴿عربا اترابا﴾ ﴿كواعب اترابا﴾ याक़ूत व मरजान की तरह ﴿لم يطمثهن انس قبلهم ولا جان﴾ न इन्सान ने छुआ न जिन्न ने छुआ फिर अल्लाह तआला कहता है

﴿فبای الآء ربكما تكذبن. (سورة الرحمن پ. ۲۷)﴾

अब भी मेरी नेमतों को झुठलाते हो तो फिर मैं तुम्हारा क्या इलाज करूं? जिस घर को खुद बनाया, इस्लामाबाद के पहाड़ों को "अम्रे कुन" से बनाया लोग इसी को जन्नत बनाने के चक्कर में पड़े हुए हैं।

जन्नतुल फ़िरदौस को अपने हाथों से बनाया और फिर दिन में पाँच दफ़ा रोज़ाना उसकी डेकोरेशन करता है, उसको ख़ूबसूरत बनाता है, उसको ख़ुशबूदार बनाता है और उसे कहता है

﴿ازدادی طيبا لأوليائي وازدادي حسنا لاوليائي﴾

ऐ जन्नत मेरे दोस्त आ रहे हैं ख़ुशबुदार हो जा, महक जा, बन जा, सज जा, धज जा।

उसके बाद अल्लाह कहेगा अपने रब की मुलाक़ात को आ जाओ। यह मज़ा भी ले लिया। अब अपने मौला का दीदार भी करके देखा कि तुम्हारा रब कैसे जमाल वालों, कमाल वाला और क्या उसमें कशिश है।

इधर दरबार में पहुँचे उधर खाने सजे, उधर पानी पिलाए गए, फल खिलाए गए, लिबास पहनाए गए, सजाया गया, पहनाया

गया, खिलाया गया, महकाया गया, फिर अल्लाह तआला कहेगा जन्नत की हूरों से आओ ज़रा ये मेरे बन्दे है जो दुनिया में गाने बजाने नहीं सुनते थे इनको जन्नत के गाने सुनाओ। सारी जन्नत साज़ में बदल जाएगी और हूर का सुर और जन्नत का साज़ और हूर की आवाज़, वह आवाज़ जो मेरे भाईयो! सारे इन्सानों के दिलों को अपनी ज़ात से ग़ाफ़िल कर देगी। वह आवाज़ होगी, वे मिलकर गाएंगी और यह गाना अल्लाह की तारीफ़ का होगा, उसकी तारीफ़ और यकताई का होगा। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे बोलो कभी ऐसा सुना? कहेंगे नहीं सुना। कहा देखा! यह मैंने दुनिया में रंडी का गाना हराम किया था कि तुम्हें यह सुनाना चाहता था। कहने लगे इससे अच्छा सुनाऊँ? कहा इससे अच्छा क्या है? फ़रमाया है, ऐ दाऊद आजा मिंम्बर पर बैठ तू मेरे बन्दों को सुना। दाऊद (अलैहिस्सलाम) की आवाज़ और जन्नत का साज़ क्या कहने उस मंज़र के। बोलो कभी सुना है? कहेंगे नहीं नहीं सुना, कहा इससे अच्छा सुनाऊँ? वह क्या है?

जब अल्लाह क़ुरआन ख़ुद पढ़ेंगे

फ़रमाया ऐ मेरे हबीब आजा! तू मिंम्बर पर बैठ जा, महबूब की आवाज़ होगी और जन्नत का साज़ होगा और अल्लाह की तारीफ़ का बोल होगा। क्या कहने उस मंज़र के जब जन्नत पर भी वज्द तारी हो जाएगा।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ऐसा सुना?

कहेंगे नहीं सुना।

(अल्लाह तआला) कहेंगे इससे अच्छा सुनाऊँ?

इससे अच्छा या अल्लाह क्या हो सकता है।

कहा इससे अच्छा तो तुम्हारा रब है जो तुम्हें अभी ख़ुद सुनाएगा।

और पर्दे उठा देगा, दरवाज़ा खोल देगा, पर्दे उठ जाएंगे और अल्लाह सामने होगा और अल्लाह अपना क़ुरआन सुनाएगा, आँखें दीदार से से लज़्ज़त पा रही होंगी, कान उसकी आवाज़ से लज़्ज़त पा रहे होंगे, रुह उसके क़ुर्ब से झूम रही होगी। ऐसे मस्त होंगे कि जन्नत भूल जाएंगे, नेमतें भूल जाएंगे, हूरें भूल जाएंगे, महल भूल जाएंगे, खाना-पीना भूल जाएंगे।

और बेख़ुद होकर कहेंगे, "ऐ मौला तू ऐसे जमाल वाला, हमें इजाज़त दे हम तुम्हें एक सज्दा करना चाहते हैं।" अल्लाह फ़रमाएंगे बस जो दुनिया में नमाज़ें पढ़ीं थीं वही काफ़ी हैं यहाँ सज्दे माफ़ हैं। यह नमाज़ ऐसी नहीं कि छोड़ दी जाए।

नमाज़ तो जी अमल है, बेड़ा उतर जाए, नमाज़ भी कोई ज़ाती अमल है। नमाज़ तो इज्तिमाई काम है। जिसके छूटने से उम्मतें बर्बाद हो गईं। आज नमाज़ की क़द्र देखो। कहा तुमने दुनिया में नमाज़ें पढ़ीं थीं। उसके बदले हमने तुम्हारी नमाज़ें माफ़ कर दीं। अब तुम मेहमान हो और मैं मेज़बान हूँ। यह तो दीदार आम है, दीदारे ख़ास क्या होगा? वह क्या चीज़ है?

अल्लाह का दरबार आम

फिर अल्लाह एक एक का नाम लेकर कहेगा

﴿ما احد منكم الا سيحاوره ربه محاذيا﴾

अल्लाह एक एक से पूछेगा तेरा क्या हाल है? तेरा क्या हाल है? तेरा क्या हाल है? ठीक हो? ख़ुश हो? राज़ी हो? और कुछ लोगों से अल्लाह मज़ाक़ फ़रमाएगा ﴿اتذكر يوم كذا فعلت كذا﴾ ऐ मेरे बन्दे याद है वह दिन, इशारा करेगा, और वह वह किया था। इशारा करेगा, यह नहीं कि तूने ये ये किया था। ख़ाली वह दिन वह किया था। जिसने किया था उसको तो समझ में आ गया कि मैंने क्या किया था बाक़ियों को तो कोई पता नहीं तो आगे से उसको भी पता था कि अब माफ़ी हो चुकी है लिहाज़ा उल्टी सीधी भी चल जाएगी। तो वह कहेगा फिर माफ़ करके दोबारा किस्सा क्यों छेड़ बैठे हो? ﴿اولم تغفرلی﴾ या अल्लाह! यह माफ़ करके फिर फ़ाइल खोल ली। जाने दो यह दोबारा फ़ाइल कैसे खोल ली तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया बेशक बेशक माफ़ किया तो तू यहाँ बैठा है।

मेरे भाईयो! अल्लाह के वास्ते इसका शौक़ करो कि हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी के ख़रीदार बन जाएं, आप वाले अख़्लाक़ हमारे हों, आप वाली इबादतें हमारे अन्दर हों, अज़ान की आवाज़ आए तो सारे इस्लामाबाद की दुकाने बन्द हो जाएं। क्या अल्लाह ख़ुश होगा कि जब इस्लामाबाद (की दुकानों) को ताले लग रहे हों। क्या हुआ भाई? अज़ान हो गई। क्या हुआ भाई? अज़ान हो गई। यह क्या दफ़ा है कि दुकानों पर ही मुसल्ले बिछाकर नमाज़ें शुरू हो गयीं।

अगर सदर साहब बुलाएं, दुकान बन्द करके जाएगा या नहीं? घर बीवी को भी फ़ोन करके कहेगा सदर साहब ने बुलाया है, जा रहा हूँ। अरे पाँच दफ़ा ज़मीन व आसमान के बादशाह ने बुलाया

आजा, मेरे घर में आजा, मुझ से बातें कर, मैं तेरे इन्तिज़ार में हूँ, तेरे सज्दे देखना चाहता हूँ, तेरा क़ुरआन सुनना चाहता हूँ।

﴿ان ناشئة الليل هي اشد وطئا واقوم قيلا.﴾

(سورة المزمل پ. ٢٩، آية ٦)

रात को भी उठाकर, तन्हाई होती है, अंधेरा होता है, लोग सोए हुए होते हैं, तू मुझ से बातें कर।

एक हवस सी दिल में उठती है एक दर्द जिगर में होता है
हम रात को उठ उठ रोते हैं जब सारा आलम सोता है

हम अल्लाह और रसूल के ग़ुलाम हैं

जब इस्लामाबाद सो जाए तो कहे तू फिर देख मेरी मुहब्बत किस तरह तेरे लिए टूट टूट कर आती है। सारी पिन्डी बन्द हो जाए, सारा इस्लामाबाद बन्द हो जाए। सामने मस्जिद और नमाज़ दुकान में पढ़ी जाए। यह कौन सी वफ़ा है? किस तरह मैं समझाऊँ? कैसे मैं यह बात साफ़ करूँ कि यह कितनी बड़ी बेवफ़ाई है अपने अल्लाह के साथ कि वह कह रहा है आजा, आजा ﴿حی علی الفلاح﴾ आजा यह कामयाबी बड़ी है।

छोड़ दे कारोबार, छोड़ दे दुकान, छोड़ दे कपड़ा, छोड़ दे ज़ेवर, छोड़ दे लोहा, तांबा, पीतल की तिजारत।

आजा आजा मैं तेरे इन्तिज़ार में हूँ। तेरे आने पर अल्लाह उस माँ से भी ज़्यादा खुश होता है जिस माँ का बच्चा बिगड़ा हुआ, रूठा हुआ, भटका हुआ, लौट कर वापस आ जाए। अल्लाह ज़्यादा ख़ुश होता है उस माँ से जब कोई बन्दा अल्लाह की तरफ़ उठकर

चलता है।

सारा इस्लामाबाद जो बन्द हो जाए, क्या हुआ? कहा मुहम्मदी बन गए। हम अल्लाह और उसके रसूल के ग़ुलाम बन गए। आज के बाद हम मस्जिद वाले हैं। हम सुपर मार्केट वाले नहीं और हम राजा बाज़ार वाले नहीं हैं, हम मस्जिद वाले हैं, अल्लाह पुकारेगा हम दौड़ेंगे, हम जाएंगे उसके सामने सज्दे में पड़ जाना यही तो हमारी ज़िन्दगी की मैराज है। ﴿ان الساجد يسجد في قدمي الرحمٰن﴾ बड़े ज़माने के बाद एक हदीस आपकी बरकत से याद आ गई। अल्लाह तआला के महबूब ने फ़रमाया कि जब कोई बन्दा ज़मीन पर सिर रखता है सज्दे में, तो अल्लाह तआला कहता है ज़मीन पर नहीं उसे कहो मेरे क़दमों पर सिर रखकर पड़ा हुआ है। तो यह बेवफ़ाई न हो कि इस्लामाबाद में बेनमाज़ी हों और यह बेवफ़ाई न हो कि नमाज़ी दुकानों में खड़े पढ़ रहे हों, मस्जिद की तरफ़ दौड़ें।

जब महबूब का बुलावा आए तो

अल्लाह की तरफ़ दीवानावार भागो, कहाँ जा रहे हो? अल्लाह ने बुलाया, क्यों जा रहे हो? अल्लाह ने बुलाया, किस लिए जा रहे हो? अल्लाह ने बुलाया है। मुहब्बत में जा रहे हैं, शौक़ में जा रहे हैं, इश्क़ में जा रहे हैं। अज़ान होते ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे का रंग बदल जाता था। अज़ान सुनकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे शहसवार पर, और बहादुर पर, दिलेर पर, जो ख़ैबर का दरवाज़ा तोड़ कर गए ऐसे पहलवान पर अज़ान

सुनकर कपकपी तारी हो जाती थी, बदन पर लरज़ा तारी हो जाता था, जिस्म काँपने लग जाता था, वह जानते थे—

चु मी गोयम मुसलमानम बलरज़म कि दानम मुश्किलात ला इलाहा

वह जानते थे कि अल्लाहु-अकबर की सदा क्या है, किसने बुलाया है? किसने पुकारा है? क्या बग़ावत है मेरे भाईयो! कि दरवाज़े के साथ मस्जिद हो और अल्लाह बुलाए और वहीं दुकान पर नमाज़ पढ़े और घर में नमाज़ पढ़े और जमात क़ज़ा करके पढ़े, मुहम्मदी की ज़िन्दगी की पहचान यह है कि अज़ान पर सारा रावलपिन्डी बन्द, सारा इस्लामाबाद बन्द, सारा पाकिस्तान बन्द। क्या हुआ? अल्लाह ने बुलाया है, राज़िक़ ने बुलाया। आ जाओ मुझसे ले लो।

नमाज़ हो तो ऐसी

अबू रेहान रज़ियल्लाहु अन्हु जिहाद के सफ़र से आए। घर पहुँचे तो रात को इशा की नमाज़ के बाद बीवी से कहने लगे दो नफ़िल पढ़ लूँ फिर बैठकर बातें करते हैं। दो नफ़िल "अल्लाहु-अकबर" अब वह बैठी हुई हैं कि ﴿قل هو الله﴾ "क़ुल हुवल्लाह" पर रुकू कर देंगे लम्बे सफ़र से आए हैं तो कोई बैठकर बातचीत होगी। वह ﴿قل هو الله﴾ "क़ुल हुवल्लाह" क्या वह तो ﴿الم﴾ "अलिफ़-लाम-मीम" शुरू हो गया। चलते चलते फ़ज्र की अज़ान हुई और अबू रेहान ने सलाम फेरा तो बीवी ग़ुस्से से बिफर गई ﴿أما لنا منك نصيب﴾ मेरा हक़ कहाँ गया? ﴿تعبت واتعبتني﴾ मुझे भी थकाया ख़ुद भी थका, एक जुदाई का सदमा, एक क़रीब आकर

तड़पाया। मेरा हक़ कहाँ है? कहने लगे माफ़ करना भूल गया, कहा तेरा अल्लाह भला करे तू कैसे भूल गया? यहाँ तो चले दो सौ मील भी नहीं भूलती। यह एक कमरे में भूल गऐ। कैसे भूल गए? कहा जब अल्लाहु-अकबर कहा तो जन्नत सामने आ गई तो सब भूल गया।

मेरे भाईयो! अल्लाह के वास्ते हम उस ज़िन्दगी की तरफ़ लौट जाएं जिस में दुनिया और आख़िरत की कामयाबी छिपी हैं। वह अल्लाह के रसूल की पसन्दीदा ज़िन्दगी है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बुलन्द अख़्लाक़

अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो अख़्लाक़ दिए वह अख़्लाक़ ज़िन्दा कर दें।

﴿صل من قطعك، وعط من حرمك، واعف عمن ظلمك﴾

जो तोड़े उसे जोड़ो, जो महरूम (न दे) उसको दो, जो ज़ुल्म करे उसे माफ़ करो। अल्लाह का रसूल कहता है दस्तख़त कर वालो जन्नतुल फ़िरदौस में घर लेकर दूँगा। हाँ माफ़ करना आसान नहीं, हज़ार नफ़िल पढ़ लूँगा मगर माफ़ नहीं करूंगा, सौ नफ़िल पढ़वा लो मगर माफ़ नहीं करूंगा। सौ नफ़िल पढ़ लेगा सलाम न करने वाले को सलाम नहीं करेगा। जो टोल पख़ैर कहेगा उसे ही यह टोल पख़ैर कहेगा वरना बिल्कुल नहीं कहेगा चाहे मर जाए। यह उसे ही सलाम करेगा जो इसे सलाम करेगा

नहीं नहीं नहीं हमारे यह अख़्लाक़ नहीं हैं। हमारा समाज इन्तिक़ामी समाज नहीं है।

हमारे अख़्लाक़ और हैं ﴿صل من قطعك﴾ जो सलाम न करे हम उसे जाकर सलाम करते हैं ﴿واعط من حرمك﴾ जो हमें न दे हम उसके घर जाकर देते हैं ﴿تعفو عن من ظلمك﴾ जो हम पर ज़्यादती करे हम कहते हैं जाओ अल्लाह के वास्ते माफ़ किया। हम माफ़ करना सीखें, दरगुज़र करना सीखें। हमारा समाज इन्तिक़ामी समाज नहीं है। मेरे भाईयो! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक अख़्लाक़ यह हमारा सरमाया हैं। आपका इल्म यह हमारा सरमाया है।

अल्लाह की नज़र में हाफ़िज़ क़ुरआन का मक़ाम

क़ुरआन की अज़मत हो, इल्म की अज़मत हो, उसके ज़िक्र की अज़मत हो—

ان فی الجنة نهرا إسمه ريّان، عليه مدينة من مرجان، لهٗ سبعون
الف باب من ذهب وفضة لحامل القرآن.

जन्नत की नहरों में से एक नहर है जिसका नाम रय्यान है जिस पर मरजान के शहर है जिसके सत्तर हज़ार सोने चाँदी के दरवाज़े हैं। अल्लाह तआला हाफ़िज़े क़ुरआन को देगा।

क़ुरआन पढ़ाना बेकार हो गया और अंग्रेज़ी स्कूलों में पाँच पाँच हज़ार फ़ीस देकर कहते हैं हमारे बेटे आदमी बनेंगे। यह क्या बड़ा बनेगा जो अपने बाप को भी न पहचाने, अपनी माँ को भी न पहचाने, यह बड़ाई कैसी बड़ाई है। कमाने वाला तो बना दिया,

अल्लाह वाला न बनाया, क़ुरआन से ग़ाफ़िल रखा, क़ुरआन के इल्म से ग़ाफ़िल रखा। यह ऐलान सुनो कयामत का ﴿اين الفقهاء﴾ उलमा कहाँ हैं? ﴿اين الائمة﴾ इमाम मस्जिद कहाँ हैं? ﴿اين المؤذنون﴾ अज़ान देने वाले कहाँ हैं? जो आजकल छोटे लोग हैं न, यह छोटा तबक़ा कहलाता है, अज़ान देने वाले की क्या हैसियत है? छोटे छोट ताजिर भी आकर उसकी ठुकाई कर देते हैं तूने लेट अज़ान दी, इमाम मस्जिद की हैसियत क्या है बेचारा हर वक़्त नमाज़ियों की डाँट खाता रहता है, हर वक़्त नमाज़ियों के नीचे दबा रहता है।

अंधों से रौशनी की उम्मीद

आज उलमा को कौन पूछता है। लोग कहते हैं कि ये तो फ़रसूदा लोग हैं। हमें पुराने ज़माने की तरफ़ ले जाना चाहते हैं। हम नई रौशनी के लोग हैं। हम नई रौशनी लेना चाहते हैं, किन से? अंधों से, किन से? कानों से, किन से रौशनी लेना चाहते हैं? बातिल से और काफ़िरों से। काफ़िर कौन हैं? अल्लाह तआला कहता है ﴿كالانعام بل هم اضل﴾ यह इन्सान नहीं हैं जानवर हैं, ये देखने वाले नहीं हैं ये अंधे हैं। मुसलमान देखने वाला, काफ़िर अंधा। मुसलमान कहे कि हज़रत मेरा मसअला तो हल कर दो। मुझे रास्ता तो दिखा दो। यह क्या चक्कर है?

क़ुरआन शिफ़ा है मगर

अल्लाह का क़ुरआन बोल रहा है ﴿هدى وشفاء﴾ और ﴿شفاء ورحمة﴾ यह मेरी किताब है तुम्हारे लिए शिफ़ा है। ये इसका क्या

मतलब लेते हैं? पेट में दर्द हो तो सूरहः फ़ातेहा घोलकर पिला दो और बीमार हो गया तो क़ुरआन की आयत उसके ऊपर लटका दो बीमार हो गया तो आयते शिफ़ा लिखकर पिला दो। आयते शिफ़ा का मतलब सिर्फ़ यह समझा है। यह इतना मतलब नहीं। अल्लाह तआला कह रहा है।

तुम्हारी रोज़ी का निज़ाम बीमार हो जाए तो उसकी शिफ़ा क़ुरआन में मौजूद है। तुम्हारा जिस्म बीमार हो जाए तो उसकी शिफ़ा भी है। तुम्हारा तिजारत बीमार हो जाए तो उसकी शिफ़ा भी है, तुम्हारा लेन देन बीमार हो जाए तो उसकी शिफ़ा भी है, तुम्हारा मुल्क बीमार हो जाए उसकी शिफ़ा भी है, तुम्हारी पंचायती मस्अला बीमार हो जाए उसकी शिफ़ा भी क़ुरआन है, तुम्हारा ज़ाती मस्अला बीमार हो जाए उसकी शिफ़ा भी क़ुरआन में है, तुम्हारे वकील बीमार हो जाएं, तुम्हारे डाक्टर बीमार हो जाएं, तुम्हारे मज़दूर बीमार हो जाएं, उम्मत का हर हर मस्अला अकेले का हो, सबका हो, माल का हो, सियासत का हो, अदालत का हो, तिजारत का हो, सदारत का हो, हुकूमत का हो।

हर हर मस्अले की शिफ़ा क़ुरआन में है, सिर्फ़ तिलावत के लिए नहीं है और बरकत के लिए नहीं है, दुकान खोली सूपर मार्केट में क़ारी साहब बच्चे भेजना क़ुरआन पढ़ना है। आज क़ुरआन पढ़ा कल को ब्याज का कारोबार शुरू किया तो क़ुरआन कैसे बरकत देगा?

जब क़ुरआन वालों की इ़ज़्ज़त होगी

शिफ़ा है ﴿هدى وشفاء﴾ तो ऐलान होगा तो आज क़ुरआन को

समझना, क़ुरआन को पढ़ना, क़ुरआन को पढ़ाना, क़ुरआन से शिफ़ा लेना यह तो आज दस्तूर ही नहीं रहा। आज सुनो ﴿ايــن العــلــمــاء﴾ उलमा कहाँ हैं? हाज़िर ﴿لبيك﴾ मौजूद हैं जी ﴿ايــن الــمــؤذنــون﴾ अज़ान देने वाले कहाँ हैं? इस्लामाबाद की मस्जिदों मौज़्ज़िन छोटे छोटे कमरों में रहते हैं और क़ारी साहिबान कहाँ हैं? आलिम कहाँ हैं? अज़ान देने वालें कहाँ हैं? इमाम मस्जिद कहाँ हैं? कहा ये मौजूद हैं। कहा सब बाहर आ जाओ। उनको ऐसे निकाला जाएगा और ये इस तरह आ रहे होंगे जैसे बादशाह अपनी प्रजा में चलकर आता है। अल्लाह तआला कहेगा मिम्बर बिछाओ, बिछ गए, बैठ जाओ, बैठ गए। कहा तुम फ़ारिग़ हो और उनका हिसाब मुझे लेने दो।

अगर किसी का बेटा मौज़्ज़िन है तो वह कह सकता है मेरा बेटा मौज़्ज़िन है। उसके तो मुँह से निकलता ही नहीं और अगर इन्जीनियर हो, डाक्टर हो, ताजिर हो, साइंसदान हो, बड़ी दुकान वाला हो। कहा मेरे बेटे की सुपर मार्केट बड़ी दुकान है, बड़ा डाक्टर है, बड़ा इन्जीनियर है। जब मैंने मैडिकल छोड़ा तो मेरा छोटा भाई कहने लगा अब तो हमेशा शर्म आती है किसी को बताते हुए कि तुम मौलवी बन रहे हो। पहले हम कहते थे हमारा भाई डाक्टर बन रहा है और अब हमें शर्म आती है कि हम कहें कि मौलवी बन रहा है। कोई कहेगा मेरा बेटा मौज़्ज़िन है? इमामुल हुदा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की सुनो! हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि ए काश! मैं हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए मस्जिद-ए-नबवी की अज़ान रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मनवा लेता कि आपके बाद मेरे बेटे

ही अज़ान दिया करेंगे।

मेरे भाईयो! इस मुबारक ज़िन्दगी को अल्लाह की इताअत, उसके रसूल की इत्ताअत, उसकी नमाज़ें, इबादतें, अख़्लाक़ियात, उसका इल्म, उसका क़ुरआन, उसकी किताब, ये सब वज़न हमने उठाना है फिर इस वज़न को सारी दुनिया में उठाकर सारी दुनिया में हमने पहुँचाना है। कोई नबी नहीं आएगा या तो कोई नबी आए कि हम कहें कि हमारी छुट्टी हो गई। हम तो इस्लामाबाद और रावलपिंडी में कमाएंगे और नबी साहब आकर तबलीग़ करेंगे। अब नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द हो गया, जो नबुव्वत का आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद माने तो वह काफ़िर है। नबुव्वत का दरवाज़ा बन्द है और पैग़ामे नबुव्वत बाक़ी है।

हमारी मेहनत का मैदान

आप तेईस साल दुनिया में रहे और अल्लाह के पास चले गए। सारी दुनिया ख़ाली पड़ी है। कौन अल्लाह का पैग़ाम सुनाए? कौन उनको जाकर दावत दे? हम सिर्फ़ इस्लामाबाद के नहीं कि हम इस्लामाबाद में तबलीग़ करेंगे, हम रावलपिन्डी में तबलीग़ करेंगे, हम मुलतान में तबलीग़ करेंगे। सारा आलम हमारी मेहनत का मैदान है। हमारे नबी ने सारे आलम को कहा

﴿ان الله بعثنى كافة للناس رحمة فادوا عنى﴾

मेरे अल्लाह ने सारे जहानों का नबी बनाकर भेजा है कि मेरा पैग़ाम आगे पहुँचाओ। ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ मेरी बात ग़ायब (जो मौजूद नहीं) तक शाहिद (जो मौजूद हैं) पहुँचा दो। ﴿بلغوا عنى ولو﴾

﴿آية﴾ मेरी एक बात भी तुम्हें आती हो तो पहुँचा दो। यहाँ आमिल होने की शर्त भी हटा दी, ﴿بلغوا عني ولو آية﴾ इसमें अमल की शर्त भी हटा दी कि अमल हो तो पहुँचाओ और अमल न हो तो न पहुँचाओ। यह शर्त भी हटा दी। ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ इस में यह शर्त हटा दी कि अमल हो तो तबलीग़ करो नहीं हो तो न करो।

अगर अल्लाह का रसूल ﴿فليبلغ العالم الغائب﴾ कहता तो आलिम तबलीग़ करते, अमल वाले तबलीग़ करें, बेअमल तबलीग़ न करें तो भी छुट्टी होती। एक लफ़्ज़ बोला ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ क्या ख़ूबसूरत लफ़्ज़ बोला, क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फ़साहत का कमाल है। लफ़्ज़ शाहिद मौजज़ा है कि इसने उम्मत के किसी फ़र्द को नहीं छोड़ा।

आलिम को नहीं छोड़ा, जाहिल को नहीं छोड़ा, बेअमल को नहीं छोड़ा, पैसे वाले को नहीं छोड़ा, फ़क़ीर को नहीं छोड़ा।

सबको बांध दिया है कि सारी दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना इस उम्मत के मर्द व औरत के ज़िम्मे है।

दाई (दावत देने वाले) के लिए बेशुमार इनाम क़ुरआन की ज़ुबान से

तबलीग़ी जमात हमें तबलीग़ का काम नहीं दे रही है। तबलीग़ का काम हमें अल्ला दे रहा है। अल्लाह तआला ने इसके लिए निज़ाम चलाया। पहले दीन मुकम्मल किया

﴿اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الاسلام دينا.﴾

(سورة المائدة، پ. ٦ آية ٣)

पहला काम यह किया कि इसको यानी दीन को मुकम्मल किया, इसमें कोई नहीं, ज़्यादती नहीं, दूसरा काम यह किया इसकी हिफ़ाज़त की।

﴿انا نحن نزلنا الذكر وانا لهٗ لحافظون. (سورة الحجر پ. ١٤، رکوع ١ آیة ٩)﴾

हम ने क़ुरआन उतारा, हमने उसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया। अब यह क़ुरआन में न कोई ज़्यादती हो सकती है न कोई कमी हो सकती है, न इसमें तहरीफ़ हो सकती है न इसको बदला जा सकता है।

لا تبديل لكلمٰت الله لا مبدل لكلمٰته لا ريب فيه، قول فصل. وما
هو بالهزل، تبيانا لكل شئ فصلت آياته. احكمت آياتهٗ

सारी आयतें यही बताती हैं, क़ुरआन की हिफ़ाज़त है, मुकम्मल किया, महफ़ूज़ किया। फिर एक ऐसी जमात तैयार की जिन्होंने इस पैग़ाम को गले लगाया फिर उस जमात की अल्लाह ने खुद तस्बीह की कि यह जमात वह है जिन से मैं खुद भी राज़ी हूँ ﴿وكل وعد الله الحسنٰى﴾ यह आयत आख़िरी दिनों की आयत है, ﴿وكل وعد الله الحسنٰى﴾ इनमें जमातें बनायीं।

لا يستوى منكم من انفق من قبل الفتح وقاتل اولئك اعظم درجة
من الذين امنوا من بعد وقاتلوا. (سورة الحديد پ. ٢٧ رکوع ٧، آیت ١٠)

फ़तेह मक्का से पहले सहाबा और फ़तेह मक्का के बाद सहाबा उनका दर्जा तो बराबर नहीं है लेकिन ﴿وكل وعد الله الحسنٰى﴾ हम दोनों के लिए जन्नत का वायदा किया है। अल्लाह उनसे राज़ी है और जिसके लिए "हुस्ना" का वायदा है ﴿وكل وعد الله الحسنٰى﴾ उसके लिए "हुस्ना" है। यह "हुस्ना" एक और जगह क़ुरआन करीम में बयान हो रहा है।

﴿ان الذين سبقت لهم منا الحسنى اولئك عنها مبعدون.﴾

जिनके लिए मैं ने "हुस्ना" लिख दिया है वे दोज़ख़ से दूर होंगे। ﴿لا يسمعون حسيسها﴾ वे दोज़ख़ की आहट नहीं सुनेंगे। ﴿وهم في ما اشتهت انفسهم خلدون﴾ वे जन्नत की नेमतों में हमेशा रहेंगे ﴿لا يحزنهم الفزع الاكبر﴾ उन्हें कभी भी क़यामत का सदमा नहीं आएगा ﴿وتتلقهم الملائكة﴾ फ़रिश्ते उनको मिलेंगे।

﴿هذا يومكم الذي كنتم توعدون.﴾

(سورة النبياء ب.١٧، آيت ١٠١ تا ١٠٣)

वह दिन आ गया जिसका तुम्हारे लिए वायदा किया गया था।

सहाबा और ताबईन पूरे आलम में फैले

अल्लाह ने दीन को मुकम्मल किया, उसकी हिफ़ाज़त की। फिर एक पाकीज़ा जमात तैयार की जिन्होंने इसको अल्लाह के महबूब से "मिना" की वादी में लिया और आप की वफ़ात के बाद इस्लाम की आवाज़ उठी और सिर्फ़ सन् 90 हिज्री में दीपालपुर तक पहुँची, कश्मीर तक पहुँची। सन् 50 हिज्री में मुहम्मद बिन अबि ज़फ़र काबुल के रास्ते पेशावर से निकलते हुए लाहौर से निकलते हुए क़ल्लात तक पहुँचे। क़ल्लात में 7 सहाबा और ताबईन शोहदा आज भी पहाड़ के दामन में सोए हुए हैं।

और मुहम्मद बिन क़ासिम रह० सन् 90 हिज्री में वह देबल के रास्ते आऐ और मुलतान तक पहुँचे। देपालपुर तक पहुँचे, कश्मीर तक पहुँचे और इधर क़तीबा बिन मुस्लिम अल्बहली रह० काशग़ज़ तक पहुँचे और हज़रत अब्दुर्रहमान जबले सिराज तक

पहुँचे, अबू अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु इस्तंबूल तक पहुँचे और अब्दुर्रहमान बिन अब्बास, माबद बिन अब्बास, उक़्बा बिन नाफ़े, अबू ज़ामा अन्सारी, अबू ज़बाबा अन्सारी, रदीफ़ा अन्सारी ये वे सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं जो शुमाल (उत्तरी) अफ़्रीक़ा, लीबिया, मराकश, अलजज़ाइर और त्युनस। इन सबके अन्दर उनकी क़ब्रें फैलीं।

उक़्बा बिन नाफ़े रज़ियल्लाहु अन्हु अलजज़ाइर में दफ़न हुए, अबू ज़ामा रज़ियल्लाहु अन्हु त्यूनस में दफ़न हुए, अब्दुर्रहमान बिन अब्बास, माबद बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा शुमाली अफ़्रीक़ा में दफ़न हुए, हज़र अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु जुनूबी (दक्षिणी) फ़्राँस, पैरिस से जुनूब की तरफ़ दो ढाई सौ किलोमीटर दूर उनकी क़ब्र बनी। असद बिन सिराज इटली के नीचे टापू है सिसली जहाँ उनकी क़ब्र बनी। कसम बिन अब्बास की समरक़न्द में क़ब्र बनी, रबी बिन ज़ैद हारसी की शजिस्तान में क़ब्र बनी, अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु की इस्तंबूल में क़ब्र बनी। अबू तल्हा अन्सारी की बेहरा रोम में क़ब्र बनी, बरा बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की तुस्तुर में क़ब्र बनी, नौमान बिन मक़रन रज़ियल्लाहु अन्हु की निहाविन्द में क़ब्र बनी, उमर बिन मादयकरब रज़ियल्लाहु अन्हु की निहाविन्द में क़ब्र बनी, अबू राफ़े गिफ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़ुरासान में क़ब्र बनी। उस वक़्त यह अफ़ग़ानिस्तान का हिस्सा था। यह देखो इनकी क़ब्रों का नेटवर्क। ये किस तरह अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान होते होते दुनिया में, ज़मीन में छिप गए और अल्लाह का कलिमा बुलन्द हुआ।

यह बेहतरीन उम्मत कैसे बनी?

﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ मेरा पैग़ाम ग़ायबीन तक पहुँचाया जाए और ﴿كنتم خيرا امة اخرجت للناس﴾ तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए निकाले गए हो ﴿اخرجت﴾ निकाले गए हो। ﴿اخرجت﴾ का लफ़्ज़ यहाँ अज़ीमुश्शान माईने दे रहा है। आपने कहीं कार्ड भेजा कहा जी मेरे घर में वलीमा है, एक घर में आप ख़ुद गए कहा भाई मेरे घर वलीमा है आप तशरीफ़ लाएं जिसके घर आप ख़ुद गए हैं उस घर वाले को आपने सबसे ज़्यादा इज़्ज़त दी है कि मैं आप को ख़ुद बुलाने आया हूँ। मेरे घर में वलीमा है।

यह लफ़्ज़ यहाँ मतलब दे रहा है कि ऐ मेरे महबूब की उम्मत तुम्हारा रब तुम्हें ख़ुद बुलाने आया है कि आओ एक काम है वह करो, कहा मैं बुलाने आया हूँ। अल्लाह हमें बुलाने आया है हम न जाएं तो डूब के मर जाएं फिर अरे ये राइविन्ड वाले नहीं बुला रहे हैं, ज़क्रिया वाले नहीं बुला रहे हैं, ये इस्लामाबाद के इज्तिमा वाले नहीं बुला रहे हैं, अल्लाह बुला रहा है। ऐ उम्मते मुहम्मद! मैं तुम्हें बुलाने आया हूँ किस लिए आया लोगों को नफ़ा पहुँचाओ। कौन सा नफ़ा?

हस्पताल बनाएं? यतीम ख़ाने बनाएं? सड़कें बनाएं? ट्रस्ट बनाएं? क्या बनाना है। कहा नहीं नहीं ये काम सारी दुनिया कर सकती है। ये काम भी करने हैं लेकिन जिस काम के लिए हम ने तुम्हें बुलाया है वह यह नहीं है। वह क्या है? ﴿تامرون بالمعروف﴾ जाओ भलाई फैलाओ ﴿وتنهون عن المنكر﴾ जाओ बुराई मिटाओ ﴿وتؤمنون بالله﴾ और मुझ पर ईमान लाओ। यह तुम्हारा वह काम

है जो पूरी दुनिया में कोई नहीं कर सकता। यह सिर्फ़ तुम ही कर सकते हो। इसलिए तुम सबसे बेहतरीन उम्मत हो तुम जैसा कोई नहीं।

मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रास्ता

तुम सबसे बेहतरीन उम्मत हो। मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा या अल्लाह मेरी उम्मत से अच्छी उम्मत कोई है? बादलों का साया किया, मनसलवा खिलाया। कहा ऐ मूसा! मेरे महबूब की उम्मत को सारी दुनिया पर वह इ़ज़्ज़त हासिल है जो मुझे अपनी मख़्लूक़ पर हासिल है, कुछ समझे भाई? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ अल्लाह वह उम्मत मुझे दे दे। कहा नहीं तुझे नहीं देनी। मेरे महबूब की उम्मत है, क्यों? कहा ﴾اخرجت للناس﴿ तुम्हारे ज़िम्मे लगाया है कि मेरा पैग़ाम आगे पहुँचा दो, सारी दुनिया में पहुँचा दो।

﴾قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن اتبعنى.﴿

(سورة يوسف پ. ۱۳، رکوع ۶، آیت ۱۰۸)

ऐ मेरे महबूब कहो यह है मेरा रास्ता ﴾هذه سبيلى﴿ यह है मेरा रास्ता ﴾هذه سبيلى﴿ में एक ज़बरदस्त माईने छिपे हुआ है जो तर्जुमे में नहीं आता। अरबी अदब से समझ में नहीं आता है। यह क्या माईन छिपा हुआ है?

नबुव्वत आलमी है इसलिए दावत भी आलमी है

यहाँ यह पीछे लाख गाड़ी खड़ी हुई हैं, इधर एक साईकल खड़ी हुई है। एक आदमी गाड़ी से गुज़रता है कहता है यह मेरी

गाड़ी है। उसके लहजे में एक तकब्बुर होता है, एक फ़ख़्र होता है। कहता है यह मेरी गाड़ी है तो दूसरा आदमी जिसे पता नहीं है वह कहता है भाई वाक़ई कितनी बड़ी गाड़ी है? कितनी अज़ीमुश्शान गाड़ी है? कितनी बेहतरीन गाड़ी है।

यह मेरा बंगला है यह है मेरा घर, यह है मेरी दुकान, यह है मेरी गाड़ी, जिसकी साईकल होती है वह कहता है यह तो मेरी साईकल है। उसके लहजे में तवाज़े होती है। अजी यह मेरी साईकल है। अल्लाह तआला कहता है ﴿هٰذهٖ سبیلی﴾ कहो फ़ख़्र से यह मेरा रास्ता है, यह मेरा रास्ता है, क्या है? ﴿ادعوا الی اللہ﴾ मैं तबलीग़ करता हूँ तो क्या तबलीग़ सिर्फ़ मेरे घर में करते हो? कहा नहीं सारे आलम में फिरना पड़ेगा क्योंकि हमारा नबी आलमी है सारे आलम में जाना पड़ेगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु जुमा पढ़ने के लिए पीछे रह गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलाम फेरा, अब्दुल्लाह! तू गया नहीं? (अल्लाह के रास्ते में) कहा जी जुमा की तमन्ना थी आपके पीछे पढूंगा। कहा कितना पीछे रह गए? कहा आधा दिन आगे चले गए। कहा नहीं, पूरब और पश्चिम के फ़ासले के बराबर तू उन से दूर हो गया।

मेरे भाईयो! तबलीग़ हमारे ज़िम्मे है। हज़रत मुहम्मद और उसका रब दोनों मिलकर कह रहे हैं कि जाओ मेरा पैग़ाम फैला दो तो यह तबलीग़ का काम इसकी याद दिहानी है। तो मेरे भाईयो सारी दुनिया इस वक़्त इन्तिज़ार में है कि कोई अल्लाह का पैग़ाम जाकर सुनाए और बताए। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अमल से करके दिखाया।

या अल्लाह तू ही मेरा सहारा है

आपने एक जमात रवाना की। क़हत का ज़माना था। सबको थोड़ा खाना दिया। एक सहाबी जैरान को नहीं दिया। उनको याद नहीं रहा। वह भूखे चल पड़े। जर्फ़ तक पहुँचे सात मील पैदल। ऐ अल्लाह तेरे नबी ने दिया नहीं, मैंने मांगा नहीं तू ही मेरा साथी, तू ही मेरा पेट भरेगा, तू ही मेरी प्यास दूर करेगा ﴿سبحن لله لا اله الا الله الله اكبر﴾ यही मेरी ग़िज़ा है यही मेरा खाना है। यह कहते जा रहे थे, चलते जा रहे थे। जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपने सब को दिया जैरान को दिया ही नहीं। आप ने फ़रमाया ओहो! याद ही नहीं रहा, पीछे आदमी भगाया और उसको थैली दी। कहा सुनो वह क्या कहता है यह पीछे पहुँचे थैली पकड़ाई। उन्होंने थैली पकड़ी, आसमान की तरफ़ देखा। कहा ऐ अल्लाह!

الحمد لله الذى ذكرنى من فوق عرشه ومن فوق سبع سموته.

मेरे मौला तू कितना करीम है, तूने मुझे अर्शों पर याद रखा, आसमानों पर याद रखा, ऐ मौला जैसे तू मुझे नहीं भूला मुझे तू तौफ़ीक़ दे कि मैं भी तुझे न भूलूँ।

आज के बाद मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरा बाप और आएशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) तेरी माँ

बशीर इब्ने इकरिमा रज़ियल्लाहु अन्हु मासूम बच्चे थे हिजरत करके माँ-बाप मदीने में आए। माँ का आते ही इन्तिक़ाल हो

गया। बच्चा छोटा था। एक सहारा बाप रह गया। वह उनकी तर्बियत में थे। इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ओहद की तरफ़ निकले। यह भी साथ चले गए। वहाँ जाकर शहीद हो गए। मासूम बच्चे को पता नहीं कि मेरा बाप दुनिया से उठ गया। पता चला कि लश्कर आज वापस आ रहा है। यह अपने बाप से मिलने के शौक़ में मदीने से निकले और चट्टान पर जाकर बाहर बैठ गए कि इधर से लश्कर गुज़रेगा। मैं अपने अब्बा से मिलूंगा। मेरा अब्बा मुझे देखेगा बड़ा खुश होगा। लश्कर गुज़रा। महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुज़रे पर बाप न गुज़रा तो उनका माथा ठनका, दिल धक धक करने लगा। नीचे उतरे, भाग के गए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿ما ذا ابی﴾ मेरे बाप कहाँ हैं, नज़र नहीं आते? अल्लाह के नबी ने आँखें चुरा लीं। फिर वह सामने से आए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! ﴿ما ذا ابی﴾ मेरे वालिद कहाँ हैं नज़र नहीं आए? तो आप की आँखों में आँसू निकल पड़े, आप रोने लग गए। हज़रत बशीर को पता चल गया कि मेरे बाप के साथ क्या हुआ तो आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की टाँगों से लिपट गए, आपकी टाँगों से लिपट गए और रोने लगे। कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा कोई नहीं रहा तो अल्लाह के रसूल ने आपको प्यार से कहा कि बशीर तू खुश हो जा आज के बाद मैं तेरा बाप हूँ और आएशा तेरी माँ है ﴿اما ترضی ان یکون رسول الله اباك وعائشة امك﴾ तू राज़ी नहीं है कि आएशा तेरी माँ बने और मैं तेरा बाप बनूं? कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम मैं राज़ी हूँ।

यह महबूब के लिए रोना है

हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हुए। आपको मस्जिदे नबवी में दिखा दिया गया। आप रो पड़े, रोते हुए उनके घर में गए तो उनकी एक बेटी आई और आपकी गोद में गिर कर रोने लगी तो आपकी आँखों से आँसू आए। साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह रोना कैसा है? कहा ऐ साद यह महबूब का रोना है महबूब की जुदाई पर। मेरा बेटा मुझ से जुदा हो गया। ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को बेटा बनाया हुआ था।

मेरा बाप आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन पर क़ुर्बान हो गया

जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हुए तीन छोटे छोटे बच्चे औन, अब्दुल्लाह, मुहम्मद। उनको पता चला। आप उनके घर गए। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा आटा गूँध रही थीं और बच्चे खेल रहे थे। आप ने कहा जाफ़र के बच्चे मेरे पास बुलाओ। तीनों बच्चे भागे भागे आए। आप ने उनको लिया और यूँ अन्दर मुँह करके रोने लगे तो हज़रत अस्मा कहने लगीं कि मेरा दिल धक धक करने लगा। कोई ख़ैर ख़बर है कि नहीं। आख़िर बेक़रार हो गई। सब्र न आया। मैंने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम जाफ़र की कोई ख़ैर ख़बर है। कहा हाँ सब्र करो वह अल्लाह के पास चले गए। मासूम बच्चे तो यतीम, जवान बीवी बेवा, और बेहोश होकर गिरी और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि जब अल्लाह के रसूल मदीने वापस आया करते थे, मुझे पहले प्यार करते थे कि मेरा बाप उनके दीन पर क़ुर्बान हो गया। यह सहाबा की झलकी है।

मुद्दत से लग रही है लबे बाम टकटकी

एक दौर आगे चले जाएं। हज़रत फ़र्रूख़ रह० ताबईन में से हैं। मस्जिद में तर्ग़ीब हुई कौन है तैयार तुर्किस्तान के लिए। यह वहाँ से उठे और नाम दिया। घर में आए कहने लगे बेगम अल्लाह के रास्ते में जाने का नाम दे दिया है तुर्किस्तान के लिए। यह हामला थीं। कहने लगीं मैं हामला हूँ, पीछे क्या बनेगा? कहा तू और जो कुछ तेरे अन्दर है अल्लाह के सुपुर्द। कहने लगीं अच्छा जाओ। उस ज़माने की बीवियाँ ऐसी थीं जिन्हें सब्र करना भी आता था और हक़ माफ़ करने भी आते थे। उसने कहा ठीक है जाओ मेरा अल्लाह वारिस है, मेरा तुम से कोई मुतालबा नहीं। ख़ुद उसको ज़िरह पहनाई, उनके घोड़े पर ज़ीन रखी। अपने हाथों से उनको घोड़े पर सवार करा दिया और अपने हाथों से उनको अल्विदा कहा। उसे नहीं पता कि यह जुदाई कितनी लम्बी जाने वाली है और वह उनकी गर्द (धूल) को देखती रहीं। यहाँ तक कि उनका हुलिया गर्द गुब्बार में ग़ाएब हो गया। इधर इन्तिज़ार कि घड़ियाँ शुरू हो गयीं।

क्या घंटे, क्या घड़ियाँ, क्या दिन, क्या हफ्ते, क्या महीने, क्या साल पर साल, दिन पर दिन, हफ्ते पर हफ्ते, महीनों पर महीने। सूरज चढ़ चढ़कर डूबता मगर फ़रूख़ रह० की कोई ख़बर नहीं आई। कितनी बहारें आयीं, बहार ख़िज़ां से ख़िज़ां बहार से बदली, गर्मी सर्दी से सर्दी गर्मी से बदली पर न फ़रुख़ आया न ख़बर मिली। कभी पता चले शहीद हो गए कभी पता चले क़ैद हो गए, कभी पता चले ज़िन्दा है, कभी मौत की। पक्की ख़बर होती तो आगे दूसरी शादी करतीं। इसी उधेड़बुन में चलते चलते उसकी जवानी की बहार ख़िज़ां में बदल गई और सिर में सफ़ेद चाँदी आ गई और वह रात की स्याही गई और बुढ़ापे ने आकर डेरे जमाए, सारी जवानी दीवारों के साथ गुज़ार दी और सारा दुःख अपने सीने पर झेला, अपने ऊपर झेला, बच्चे को पढ़ाया, परवान चढ़ाया, उसे आलिम बनाया। तीस बरस गुज़र गए।

तीन चिल्ले नहीं, एक साल नहीं, सात महीने नहीं, चिल्ला नहीं, चार महीने नहीं तीस साल गुज़र गए और न वह आया न उसकी ख़बर आई और उसकी जवानी बुढ़ापे में बदल गई।

मुद्दत से लग रही है लगे बाम टकटकी
थक थक के गिर गई नज़र इन्तिज़ार आज

उनकी निगाहें थक थक कर आख़िर गिर गयीं, तीस बरस गुज़रे।

आज एक अंधेरी रात है। एक बड़े मियाँ घोड़े पर सवार ख़ामोश चाल के साथ मदीने में दाख़िल हुए। एक नस्ल ख़त्म हो चुकी है कोई पता नहीं यह कौन बड़े मियाँ आ गए, यह कौन

बूढ़ा आ गया। यह वह बूढ़ा है जो यहाँ से तीस बरस पहले ख़ूबसूरत जवान बनकर निकला था। यह वह जवान है जो अपनी जवानी को इस्लाम पर बूढ़ा करके आया, अपनी हड्डियों का गूदा सारा ख़त्म करके आया, अपनी जवानी की बहार अल्लाह के नाम पर लुटा कर आया और यह थकन से चूर, बदहाल, परेशान पता नहीं मेरी बीवी की ज़िन्दा की ख़बर मिलेगी या मुर्दा की ख़बर मिलेगी। बच्चा हुआ, घर उसी जगह मौजूद है, साथी ज़िन्दा मौजूद हैं? इन्हीं ख़्यालात में हैरान हैं परेशान हैं, दरवाज़े पर पहुँच गए। कहने लगे मेरा ही घर लगता है। अन्दर दाख़िल हुए। घोड़े की आवाज़, हथियारों की आवाज़ उनके बेटे सो रहे बरामदे में। आँख खुली तो देखा एक बड़े मियाँ, चाँद की चाँदनी और हथियारों से सजे हुए हैं तो उनको एक दम गुस्सा आया। उठे झपटे, गिरेबान से पकड़ा, झंझोड़ा और कहा बड़े मियाँ तुझे शर्म नहीं आती, मुसलमान के घर में बिना इजाज़त दाख़िल होते हुए। ऐसे झटका दिया। वह तो पहले ही शक में थे कि पता नहीं मेरा घर ही भी सही कि नहीं है? मेरी दुनिया उजड़ी कि आबाद है? वह घबरा गए कहने लगे, बेटा माफ़ कर देना, मुझे नहीं पता चला, मैं समझा मेरा घर है तो वह कहने लगे अच्छा एक चोरी एक सीना ज़ोरी। एक बग़ैर इजाज़त के आते हो, एक ऊपर से कहते हो मेरा घर है। इस बुढ़ापे में शर्म नहीं आती झूठ बोलते हो? चल मैं अभी तुझे क़ाज़ी के पास ले चलता हूँ। अब यह जान छुड़ाने को और वह पकड़ने को, यह दब रहें हैं वह चढ़ रहे हैं। इसी छीना झपटी में उनकी माँ जो बाड़े पर सोई हुई थी उसकी आँख खुल गई। उसने यूँ खिड़की को खोला कि यह नीचे क्या हो रहा है?

ख़ाविन्द का चेहरा सामने था। यूँ जो झांका तो एक सेकण्ड में तीस साला पिछला ज़माना पीछे लौट आया और सारे गुज़रे हुए दर, खिड़कियाँ खुलते खुलते सारे दरीचे जो खुले तो तीस साल पुराना फ़र्रूख़ घोड़े पर सवार अल्विदा होता हुआ नज़र आया तो उसकी चीख़ निकली, कहा रबी क्या हुआ? कहा जानते हो कौन है? कहा नहीं जानता। कहा अरे ज़ालिम! यही तेरा बाप है जिसके लिए तेरी माँ की जवानी दीवारों के साथ गुज़र गई।

क़दमों में गिर गए, पाँव चूम रहे हैं। क्या मुलाक़ात है बाप बेटे की, क्या मंज़र ज़मीन आसमान देख रहे हैं। किस तरह अल्लाह के लिए लोग जुदा हुए। क्या और क्या मिलाप है, आहा। जिस ज़मीन व आसमान ने इस उम्मत का यह मंज़र देखा हो वह ज़मीन व आसमान आज देखकर रोएगा नहीं तो और क्या करेगा? बाप बेटे में माफ़ियाँ हो रहीं, कहानियाँ हो रहीं। रात बीत गई आँखों में, फ़ज्र की नमाज़ में पहुँचे। बेटे पहले चले गए यह बाद में पहुँचे। नमाज़ हो चुकी नमाज़ पढ़ी। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़े पर दरूद सलाम। यूँ देखा तो मस्जिद भरी हुई है। एक नौजवान हदीस पढ़ा रहा है। नज़र कमज़ोर हो चुकी, नज़र नहीं आ रहे, पीछे बैठ गए। सुनते रहे। दर्स ख़त्म हुआ। साथ वाले से पूछा बेटा यह कौन दर्स दे रहा है? उसने कहा चचा आप इन्हें नहीं जानते? आप मदीने के नहीं हैं? कहा नहीं बेटा! मदीने का हूँ, आया हूँ बड़ी देर से। कहा यह तो रबी हैं मुसलमानों के इमाम। तेज़ी में बाप का नाम नहीं जोड़ा। अरब तो बाप बेटे का नाम साथ जोड़ते हैं। कहा यह रबी हैं, मुसलमानों के सरदार। कहा बेटा इसका बाप कौन है? कहा

इसका बाप फ़र्रुख़ है जो अल्लाह के रास्ते में कहीं निकल गया था फिर कभी लौटकर नहीं आया।

कई चिराग़ बुझे तब ला इलाहा का चिराग़ जला, कई घर लिए और तब जाकर घर दुनिया में आबाद हुआ। न हम तारीख़ पढ़ें न हम अपने महबूब की ज़िन्दगी पढ़ें। हमें क्या ख़बर किस तरह जान ख़तरे में डालकर यह अमानत इस्लामाबाद तक पहुँची है।

वह क्या दिन होगा क़यामत का जब लोग पहाड़ जैसे आमाल लेकर अल्लह की बारगाह में पेश होंगे और हम गुनाहों की झोलियाँ भरकर अल्लाह के सामने खड़े होंगे।

ना आज छिप सकते हैं, ना भाग सकते हैं, ना इन्कार कर सकते हैं वह क्या दिन होगा जब एक मजमे का मजमा रातों की तहज्जुद दिखाएगा आज का मुसलमान अपनी रात में क्या दिखाएगा कि मैं इस्लामाबाद में रातों में क्या करता रहा।

मेरे भाईयो! लोगों की नज़रों से गिर जाना भी हलाकत है अगर हम अल्लाह की नज़रों से गिर गए तो हमारा क्या हाल होगा? इसलिए अल्लाह के वास्ते यह सारा मजमा तौबा करे कि या अल्लाह हम तो तेरे पैग़ाम के फैलाने वाले थे, कमाइयों में लग गए। घर बनाने के शौक़ चढ़े हुए हैं। बड़े बड़े घर बनाए। किस के सामने रोएं। फ़िरऔन की तरह घर बनाए। अरे भाई इन घरों का हिसाब क्या दोगे? तबलीग़ वाले कह रहे हैं कि जी जमातें ठहराएंगे फिर हिसाब किताब माफ़ हो जाएगा। अल्लाह को धोका दे रहे हैं।

न महबूब के रहन सहन से प्यार, न उसके काम से प्यार।

अल्लाह के वास्ते हम उसकी बारगाह में तौबा करें। वह इस वक़्त हमें देख रहा है और उसकी मुहब्बत की नज़र हम पर पड़ रही है और यहाँ से अल्लाह के रास्ते में नक़द निकल जाओ। पीछे लौट कर मत देखो। पीछे आग ही आग है और आगे जन्नत ही जन्नत। हर उठने वाला क़दम आपको अल्लाह के क़रीब कर देगा। यह इतना बड़ा मजमा है। इसमें से कम से कम एक हज़ार आदमी तो ऐसे खड़े हो जाएं जिसने पहले नाम न दिया हो कि आज मैं नक़द अल्लाह के रास्ते में निकलने के लिए तैयार हूँ।

﴿اللهم صلى على محمد كما تحب و ترضى له﴾

○ ○ ○

अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त की सिफ़ात

1. अल्लाह वह ज़ात है जिसने आसमानों को बग़ैर सुतूनों के खड़ा कर दिया है, आसमानों के पैदा करने और खड़ा करने में किसी से मदद नहीं ली, न वह किसी का मोहताज है।
2. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने बड़े बड़े पहाड़ों को पैदा फ़रमाया है। हर पहाड़ में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मादनयात (खदान), जमादात (पत्थर वग़ैरह) और नबातात (पेड़-पौधे) पैदा फ़रमाए हैं।
3. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने बड़े बड़े समुंद्रों को पैदा किया और हर समुंद्र में अलग अलग क़िस्म की बड़ी बड़ी मख़्लूक़ पैदा फ़रमाई।
4. अल्लाह वह ज़ात है जिसने पानी के ऊपर ज़मीन को फैलाया और इस ज़मीन के अन्दर अलग-अलग मख़्लूक़ात पैदा फ़रमाई है। ज़मीन से अनाज, फल और सब्ज़ियाँ उगाता है।
5. अल्लाह वह ज़ात है जिसने सूरज, चाँद, सितारों और सय्यारों का निज़ाम चलाया और सूरज, चाँद और सय्यारे रोज़ाना पूरब

से निलकते हैं और पश्चिम में अल्लाह के हुक्म से डूबते हैं।

6. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हवा को पैदा फ़रमाया, हवा अल्लाह तआला के हुक्म से तेज़ या सुस्त चलती है।

7. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने सारी मख़्लूक को बग़ैर किसी किस्म के नमूने के पैदा फ़रमाया, पहले कोई चीज़ नहीं थी, अल्लाह पाक ने सारी चीज़ों को वजूद दिया।

8. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने आदम अलैहिस्सलाम को बग़ैर माँ और बाप के पैदा फ़रमाया।

9. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा को बग़ैर माँ के पैदा फ़रमाया।

10. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत इसा अलैहिस्सलाम को बग़ैर बाप के पैदा फ़रमाया।

11. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आग में हिफ़ाज़त फ़रमाई और नमरूद को मच्छर के ज़रिये हलाक कर दिया।

12. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमा कर दुशमन फ़िरऔन ही के घर में पालने का इन्तिज़ाम फ़रमाया।

13. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को दोबारा माँ की गोद में पहुँचाया।

14. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए दरिया में रास्ते बनाए और फ़िरऔन को इसी दरिया

में डुबो दिया।

15. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने क़ारून को ज़मीन के अन्दर धंसाया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को इज़्ज़त बख़्शी।

16. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने अब्राह के लश्करों को परिन्दों के ज़रिए से हलाक कर दिया और बैतुल्लाह शरीफ़ की हिफ़ाज़त फ़रमाई।

17. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम के मुतालबे के मुताबिक़ एक बड़ी चट्टान से गाभन (हामला) ऊँटनी को पैदा फ़रमाया।

18. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुँए से निकाल कर मिस्र के तख़्त पर बिठाया।

19. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम और उनके गधे को सौ साल के गुज़रने के बाद दोबारा ज़िन्दा फ़रमाया।

20. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने बनी इस्राईल के छः लाख इन्सानों को बग़ैर खेती बाड़ी करने के चालीस साल तक ख़ूब खिलाया पिलाया।

21. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने असहाबे कहफ़ को तीन सौ साल बग़ैर खाने पीने के ज़िन्दा रखा।

22. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली के पेट के अन्दर ज़िन्दा रखा।

23. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा (लाठी) को बड़ा साँप बना दिया।

24. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने फ़िरऔन के जादूगरों को ईमान नसीब फ़रमाया।

25. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने बदर के मुक़ाम पर तीन सौ तेरह को एक हज़ार के मुक़ाबले में कामयाब किया।

26. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत मरियम अलैहास्सलाम को बे मौसम फल खिलाया।

27. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की गर्दन पर छुरी फिरने के बावजूद हिफ़ाज़त फ़रमाई।

28. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबुबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ग़ार के अन्दर दुश्मनों से हिफ़ाज़त फ़रमाई।

29. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उंगली के इशारे से चाँद के दो टुकड़े फ़रमाए।

30. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने अबू जहल के हाथ की कंकरियों से कलिमा पढ़वाया।

31. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने ग़ज़्बे तबूक के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ की उंगलियों से पानी के चश्मे जारी फ़रमाए।

32. अल्लाह तआला वह ज़ात है जो दिन से रात और रात से दिन निकालता है।

33. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने मुर्दे से ज़िन्दा और ज़िन्दा से मुर्दा को निकाला है।

34. अल्लाह तआला वह ज़ात है कि जंगल के अन्दर बकरियों के चरवाहे को भेड़िये के ज़रिये दावत दिलाई और इमामुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों बैत करा कर ईमान नसीब फ़रमाया।

35. अल्लाह तआला वह ज़ात है कि उम्मे माबद रज़ियल्लाहु अन्हा की बीमार और कमज़ोर बकरी के थनों में इमामुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ मुबारक लगने से दूध के चश्मे जारी फ़रमाए।

36. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़त को दरिया में डालने की बरकत से दरिया के अन्दर पानी जारी फ़रमाया।

37. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसने जन्नत और दोज़ख़ को पैदा फ़रमाया।

38. अल्लाह तआला वह ज़ात है कि एक दिन में इस दुनिया के निज़ाम को दरहम बरहम करेगा।

39. अल्लाह तआला वह ज़ात है कि सारी मख़्लूक़ को फ़ना करेगा।

40. अल्लाह तआला वह ज़ात है कि दोबारा तमाम मख़्लूक़ को पैदा करेगा।

41. अल्लाह तआला वह ज़ात है कि तमाम जानदार मख़्लूक़ की बोलियाँ जानता है।

42. अल्लाह तआला वह ज़ात है कि सारी मख़्लूक़ को देखता है।

43. अल्लाह तआला वह ज़ात है कि सारी मख़्लूक़ की आवाज़ को सुनता है।

44. अल्लाह तआला वह ज़ात है जिसको तमाम मख़्लूक़ की तादाद का इल्म है।

45. अल्लाह तआला वह ज़ात है जो सारी मख़्लूक़ को रोज़ी पहुँचाता है।

अल्लाह तआला हम सब को अपनी पहचान नसीब फ़रमाए! आमीन। अल्लाह पाक यही चाहते हैं कि मुझे राज़ी कर लो। अपने दिलों में मुझे जगह दो। इसके लिए अल्लाह तआला की बड़ाई बयान करें। इसकी आदत डालने के लिए अल्लाह के रास्ते में निकलना है। अल्लाह तआला हम सब को अपने रास्ते में निकलने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

1. हम्द व सना के लाएक़

﴿الحمد لله رب العالمين.﴾

सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे जहाँ का पालने वाला है।

2. रज़्ज़ाक व ख़ालिक़

﴿وما من دآبة في الارض الا على الله رزقها ويعلم مستقرها ومستودعها.﴾

(پاره ۱۲، رکوع ۱)

और कोई नहीं चलने वाला ज़मीन पर मगर, अल्लाह पर है उसकी रोज़ी और वह जानता है जहाँ वह ठहरता है और जहाँ वह सोता है।

3. तख़्लीक़े काएनात

الذی جعل لکم الارض فراشا والسمآء بنآء وانزل من السمآء
مآء فاخرج بہ من الثمرات رزقا لکم. (پارہ ۱، رکوع ۳)

वह जिसने बनाया तुम्हारे वास्ते ज़मीन बिछौना और आसमान को छत बनाया और उतारा आसमान से पानी फिर निकाले उससे मेवे तुम्हारे खाने के वास्ते।

4. ज़िन्दगी और क़याम

اللہ لا الہ الا ھو الحی القیوم لا تاخذہ سنۃ ولا نوم. ﴾

(سورۃ البقرہ پ۔ ۳، رکوع ۲)

अल्लाह उसके सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िन्दा है, सब का थामने वाला न उसको ऊँघ दबा सकती है न नींद।

5. हुकूमत और दबदबा

﴿لہ ما فی السموٰت وما فی الارض من ذالذی یشفع عندہ الا باذنہ. ﴾

(سورۃ البقرہ پ۔ ۳، رکوع ۲)

उसी का है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है। ऐसा कौन है जो उसके पास सिफ़ारिश करे बिना उसकी इजाज़त के।

6. इल्म व नज़र

﴿يعلم ما بين ايديهم وما خلفهم. (سورة البقرة ب. ٣، ركوع ٢)﴾

वह (अल्लाह तआला ऐसा है कि) जानता है अपनी मख़्लूक़ के तमाम हाज़िर व ग़ायब हालात को।

7. कमाले इल्म

﴿ان الله لا يخفى عليه شيء فى الارض ولا فى السمآء.﴾

(ب. ٣، ركوع ٩)

बेशक अल्लाह तआला से कोई चीज़ छिपी हुई नहीं है ना कोई चीज़ ज़मीन में और ना कोई चीज़ आसमान में।

8. सानेअ (बनाने वाला) हक़ीक़ी

﴿هو الذى يصوركم فى الارحام كيف يشآء. (ب. ٣، ركوع ٩)﴾

वह ऐसी ज़ात पाक है कि तुम्हारी सूरत बनाता है (माओं के पेटों में) जिस तरह चाहता है।

9. क़ब्ज़ा व इख़्तियार

مالك الملك تؤتى الملك من تشآء وتنزع
الملك ممن تشآء وتعز من تشآء وتذل من تشآء
بيدك الخير انك على كل شيء قدير. (ب. ٣، ركوع ١٠)

मालिक है मुल्क का, जिस को चाहे सलतनत दे और जिससे चाहे सलतनत छीन ले, जिसे चाहे इ़ज़्ज़त अता फ़रमाए और जिसे चाहे ज़लील कर दे। तेरे ही इख़्तियार में है सब भलाई, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

10. तसर्रुफ़ (दख़ल) व ताक़त

﴿تولج الیل فی النھار وتولج النھا فی الیل.(پ۔۳، رکوع ۱۱)﴾

दाख़िल करता है तू रात को दिन में और दाख़िल करता है दिन को रात में।

11. मौत व हयात

﴿الذی خلق الموت والحیاۃ لیبلوکم ایکم احسن عملا.(پ۔۲۹ رکوع۱)﴾

जिसने मौत व ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुम में कौन आदमी अच्छा काम करता है।

12. हश्र का दिन

﴿قل ھو الذی ذراکم فی الارض والیہ تحشرون.(پ۔۲۹، رکوع ۲)﴾

आप कह दीजिए (अल्लाह के रसूल) कि वही है जिस ने तुम को रूए ज़मीन पर फैलाया और तुम उसके पास इकठ्ठे जाओगे।

13. चाँद व सूरज

﴿وجعل القمر فیھن نورا وجعل الشمس سراجا.(پ۔۲۹، رکوع ۹)﴾

और चाँद को नूर बनाया इस (आसमान) में और सूरज को चिराग बनाया।

14. रब्बे जहाँ

﴿رب المشرق والمغرب لآ اله الا هو فاتخذه وكيلا.(پ. ٢٩، ركوع ١٣)﴾

वह मशरिक़ (पूरब) और मग़रिब (पश्चिम) का मालिक है उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं तो फिर उसी को वकील बनाते रहो।

15. बक़ा व दवाम

﴿كل من عليها فان ويبقى وجه ربك ذو الجلال والاكرام.(پ. ٢٧، ركوع ١٢)﴾

जो कोई है ज़मीन पर सब फ़ना हो जाएंगे और बाक़ी रहेगी तेरे परवरदिगार की ज़ात जो अज़मत व एहसान वाली है।

16. अमल की दावत

يا معشر الجن والانس ان ستطعتم ان تنفذوا من اقطار السموٰت
والارض فانفذوا لا تنفذون الا بسلطٰن.(پ. ٢٧، ركوع ١٢)

ऐ गिरोह जिन्नात और इन्सानों के अगर तुमको यह क़ुदरत है कि आसमान व ज़मीन की हदों से कहीं बाहर निकल सको तो निकल जाओ, भाग कर नहीं निकल सकते, बिना सनद के।

17. अल्लाह का क़ुर्ब

﴿وهو معكم اين ما كنتم والله بما تعملون بصير.(پ. ٢٧، ركوع ١٧)﴾ -

और वह तुम्हारे साथ रहता है चाहे तुम लोग कहीं भी जाओ और वह तुम्हारे सब आमाल को देखता है।

18. क़ुरआने पाक का उतरना

هو الذی ینزل علی عبده ایت بینت لیخرجکم من الظلمت الی النور، وان الله بکم لرؤف الرحیم.(پ ۲۷، رکوع ۱۲)

वह अल्लाह तआला ऐसा है कि अपने बन्दों पर साफ़-साफ़ आयतें भेजता है ताकि तुम को अंधेरे से रौशनी की तरफ़ लाए और बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे हाल पर बड़ा शफ़ीक़ और मेहरबान है।

O O O

अल्लाह की क़ुदरत की निशानियाँ और शाने रिसालत

अल्लाह की क़ुदरत की निशानियाँ

खुत्बे के बाद

अल्लाह का इल्म ही सबसे बड़ा है। मेरी और आपकी आवाज़ और सीनों में जो भेद हैं अल्लाह जानता है। सबकी एक वक़्त में सुनता है। सड़कों पर चलने वाली गाड़ियों के हर पुर्ज़े की आवाज़ को भी अल्लाह सुनता है। बिलों में च्युँटियाँ हैं, बिच्छू हैं, साँप हैं, चूहे हैं उनकी आवाज़ को हर दम सुनता भी है और जानता भी है। जंगल में शेर हैं, हाथी हैं, चीते हैं, गीदड़ हैं, कुत्ते हैं, सूअर हैं, बन मानुस हैं, गायों के रेवड़ हैं, बकरियों के रेवड़ हैं उन सब की आवाज़ को हर लम्हे सुनता भी है जानता भी है। सारी काएनात में उड़ने वाले परिन्दे, फिज़ा में गर्दिश करने वाले सय्यारे और

सितारे और फिर हवा के ज़र्रात, पेड़ों के पत्तों की सरसराहट, हवा की सनसनाहट, समुंद्र की मौजों का तलातुम उनकी सबकी आवाज़ अल्लाह तआला इकठ्ठी सुनता है और सुनने में कोई वक़्त नहीं। अल्लाह तआला कहता है

لو ان اولكم وآخركم وانسكم وجنكم وحيكم وميتكم ورطبكم
ويابسكم وصغيركم وكبيركم وذكركم وانثكم.

यह बारह क़िस्म की मख़्लूक़ात हैं ﴿ثم تسئلونی﴾ ये सब अपनी अपनी ज़बान में मुझ से मांगते हैं। इनकी ज़बान एक नहीं है अल्लाह तआला की क़ुदरत तो यह है कि उसको तर्जुमान की ज़रूरत नहीं, दूसरी क़ुदरत यह है कि सबकी एक वक़्त में सुनता है, सब की अलग-अलग सुनता है। इस सुनने में उसकी क़ुदरत की आख़िरी हद क्या है? ﴿لا تغلطه كثرة المسائل﴾ तुम सबका इकठ्ठा बोलना मुझे ग़लती में नहीं डालता है कि तुम्हारा सवाल ग़लत हो जाए, नहीं हर्गिज़ नहीं! हर एक को अलग अलग सुन रहा है, हर एक की पुकार अलग अलग सुन रहा है, हर एक की चाहत देख रहा है, फिर कहता है मैं सबकी सुनता हूँ। ज़बान की तबदीली पर, लहजे की तबदीली पर, आवाज़ की तबदीली पर फिर सबकी चाहत दे दूँ

﴿ما نقص ذالك مما عندى الا مما ينقص اذا ادخل فى البحر﴾

मेरे ख़ज़ानों में इतनी भी कमी नहीं आती जितनी सूई के सिरे को समुंद्र में डालने से समुंद्र में कमी आती है। इसमें फिर भी छोटा क़तरा लग जाता है लेकिन अल्लाह तआला के ख़ज़ाने में इतनी कमी भी नहीं आती। तुम सबको दे दूँ तो कोई कमी नहीं आती।

इतनी सारी जन्नतें अल्लाह ने बनायीं हैं कि उनको मुसलमान को दे दें, काफ़िरों को भी दे दें तो भी अल्लाह के ख़ज़ानों में किसी क़िस्म की कोई कमी नहीं आती।

हम पानी को ऊपर पहुँचाने में प्रेशर मोटर लगा देते हैं। वह मशीन पानी को ऊपर पहुँचाती है। दस फ़िट, बीस फ़िट, पचास फ़िट। अल्लाह तआला पाँच सौ फ़िट का पेड़ बनाता है और ज़मीन के नीचे से पानी का इन्तिज़ाम फ़रमाता है और पेड़ के सबसे ऊपर वाले पत्ते पर पानी को पहुँचा देता हूँ पाँच सौ फ़िट वाले पत्ते पर भी वह पानी पहुँचा हुआ है। नीचे कोई प्रेशर पम्प नहीं लगा हुआ है कोई मोटर मशीन नहीं लगी हुई है। यह अल्लाह का निज़ाम है कि पेड़ों को बनाया। ज़मीन की रगों को हुक्म दिया कि वह जड़ की तरफ़ चलती हैं। ग़िज़ा को ले जाती हैं फिर वह ग़िज़ा पेड़ों की रगों से हर-हर पत्ते पर, हर डाल पर, हर टहनी पर और हर शाख़ में ले जाती है और ज़मीन भी ख़ुश्क, ज़मीन के अन्दर मिठास कोई नहीं, शहद कोई नहीं, शक्कर किसी ने नहीं डाला लेकिन उसके अन्दर से अल्लाह आम की मिठास को, केले की मिठास को, अमरूद की मिठास को निकालता है। उसने हलवा बनाकर पर्दे में बन्द करके खड़ा कर दिया, हम हलवा बनाते हैं कितनी मुसीबत पड़ती है। अल्लाह ने पहले तैयार करके खड़ा कर दिया। बूढ़े भी खाएं, बच्चे भी खाएं, जवान भी खाएं वरना न ख़ुद ज़मीन से निकले और न आसमान से उतरे यह सब कुछ अल्लाह के अम्र से वजूद में आता है। नारियल का पेड़ खड़ा है और फल लगा हुआ है। उसके अन्दर पानी भरा हुआ है। पेड़ काटो तो पानी का कोई पता नहीं, पत्ते चीरो तो पानी कोई नहीं,

ज़मीन को चीरो पानी कोई नहीं लेकिन उसके फल को चीरो तो उसमें पानी भरा हुआ है न ज़मीन की रगों में है और न पेड़ के अन्दर है और पत्तों की रगों में है। बस यह अल्लाह का निज़ाम है इस पानी की ज़रूरत है अपने बन्दों के लिए। उसको इसी फल के अन्दर पेदा फ़रमाया। यह पानी न ज़मीन में है न बारिश में, न पेड़ के अन्दर है। मालिक ने इसको इसी फल के अन्दर पैदा फ़रमा दिया और उसको उसके अन्दर खड़ा करके मक्खन बना देता है। हमें मक्खन बनाने में कितने लम्बे चौड़े निज़ाम को बनाना पड़ता है। अल्लाह तआला ने एक पेड़ को हुक्म दिया कि इसको मक्खन की शक्ल में तैयार करो तो वह मक्खन की शक्ल में तैयार हो गया। जब यह सारी ज़मीन पर आसमान पर, पेड़ और पत्थर पर अल्लाह की हुकूमत है तो क्या लाहौर और कराची में अल्लाह की हुकूमत नहीं होगी?

सारे मसाइल का हल अल्लाह की तरफ़ रुजु करने में है

﴿افامن الذین مکروا السیات ان یخسف اللہ بہم الارض.﴾

(پارہ ١٤، رکوع ١٢، آیت ٤٥)

मैं तुम्हें ज़मीन में धंसा दूँ तो तुम में से कोई मुझे रोक सकता है? ﴿اویاتیھم العذاب من حیث لا یشعرون.﴾ आएगा मेरा अज़ाब तुम पर और तुमको पता भी न चले तो कोई रोक सकता है? अल्लाह जल्ले जलालुहू सारी काएनात का बादशाह है अपनी ज़रूरतें और मसाइल उसके सामने पेश करें अगर अल्लाह चाहे तो यह मसाइल

हल होंगे अगर न चाहे तो सारी दुनिया के इन्सान मिलकर भी ये मसाइल हल नहीं कर सकते हैं।

अल्लाह का दस्तूर

मेरे भाईयो और दोस्तो! अब अल्लाह तआला दस्तूर बता रहा है कि हालात कब बनाता हूँ और कब बिगाड़ता हूँ। अल्लाह तआला फ़रमाता है मसलन ﴿كانت امنة مطمئنة﴾ एक बस्ती की कहानी सुनो। बड़े मज़े में रहते थे। बड़ा अच्छा खाते थे, बड़ा अच्छा पहनते थे ﴿ياتيها رزقها رغداً من كل مكان﴾ मैंने उन पर चारों तरफ़ रिज़्क़ के दरवाज़े खोले हुए थे। बड़े ख़ुशहाल थे ﴿فكفرت بانعم الله﴾ अल्लाह के नाफ़रमान हुए।

﴿فاذاقها الله لباس الجوع والخوف بما كانوا يصنعون.﴾

(سورة النحل پ. ١٤، آيت ١١٢)

जब अल्लाह के नाफ़रमान हुए तो अल्लाह ने उनको भूख और ख़ौफ़ का लिबास पहनाया दिया ज़िल्लत और पस्ती की मार दे दी दूसरी जगह क़ायदा बताया ﴿وكم اهلكنا من قرية﴾ कितनी बस्तियों को अल्लाह ने हलाक और बर्बाद करके रख दिया यह क्यों? ﴿كانت ظالمة﴾ वे ज़ालिम थे यहाँ पर अल्लाह हालात के बिगाड़ने और संवारने के असबाब बता रहे हैं। दुनिया के भी और आख़िरत के भी बिगाड़ने के असबाब क्या हैं? अब काफ़िरों को एक तरफ़ कर दिया जाए क्योंकि मौत तक की मोहलत है। जिस तरह एक बच्चा स्कूल में पढ़ता है तो स्कूल में होता है वही धक्के खाता है। स्कूल के क़ायदों का पाबन्द होता है क्योंकि आगे जाकर उसको कुछ बनना है। इस वक़्त की परेशानी बाद में राहत का सबब

बनेगी और जो गली-कूचों में घूमते रहते हैं ये इस वक़्त तो मज़े में हैं उन पर किसी क़िस्म की क़ानून पाबन्दी नहीं है आगे चलकर इसको परेशानी होगी। मसाइल पैदा होंगे लिहाज़ा काफ़िरों की मिसाल उन बच्चों की सी है जो पूरा दिन गली-कूचों में घूमते और खेलते रहते हैं। अल्लाह ने काफ़िरों को छुट्टी दे दी है। दूसरी मिसाल यूँ है कि मेरा एक बच्चा है। मैं उसकी तालीम का ख़्याल करता हूँ। उसके अख़्लाक़ की तर्बियत का लिहाज़ रखता हूँ, बुरी सोहबत से बचाने की फ़िक्र करता हूँ लेकिन दूसरों के बच्चों की फ़िक्र नहीं करता। मुसलमानों की मिसाल है अपने बच्चे की और स्कूल के बच्चे की और काफ़िर की मिसाल गली-कूचों के बच्चे की है और बाज़ारी बच्चे की है। उसको मौत तक छुट्टी मिल गई है।

अल्लाह की मदद हमारे साथ क्यों नहीं है?

आज क्योंकि हम सारी दुनिया के बातिल को दावत नहीं दे रहे हैं तो अल्लाह ने उनको मोहलत दी हुई है अगर उनको दावत दी जाए तो उनके ऐटम और राकेट अल्लाह उनके ख़िलाफ़ चलाएगा। उनकी ताक़तों को उन्हीं के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर देगा।

﴿ولا يحيق المكر السيء الا باهله. (سورة فاطر، پ ۲۲، رکوع ۱۷، آیت ۴۳)﴾

उनकी ताक़तों को उनके ऊपर मारकर अल्लाह बर्बाद कर देंगे।

﴿بل نقذف بالحق على الباطل فيدمغه فاذا هو زاهق.﴾

(سورة الانبياء پ. ۱۷، رکوع ۲، آیت ۱۸)

हम हक़ को बातिल के ऊपर मारते हैं तो बातिल का भेजा निकल जाता है। वह दुनिया में मिट जाता है। बातिल को मिटाने

के लिए दावत को अल्लाह ने शर्त क़रार दिया है। वह भी अल्लाह के बन्दे हैं। काफ़िरों को भी अल्लाह ने बनाया है, उनसे भी अल्लाह ताल्लुक़ और मुनासबत रखता है। क़ारून को अल्लाह ने सज़ा दी पहले अल्लाह ने मूसा अलैहिस्स्लाम को ज़मीन का इख़्तियार दे दिया तो मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़मीन से कहा कि क़ारून को निगल ले तो ज़मीन ने उसको धंसाना शुरू किया तो क़ारून मूसा अलैहिस्सलाम से कहता रहा कि मुझे बचा ले, मुझे माफ़ कर दे। मूसा ज़मीन से कहते रहे कि इसको धंसा दे तो वह धंसता धंसता ग़र्क़ हो गया। उसका जुर्म बहुत बड़ा था। उसने मूसा अलैहिस्सलाम पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाया था यह उसका बदला था लेकिन अल्लाह की रहमत का अन्दाज़ा लगाइए। अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम पर "वही" उतार दी कि मूसा तुझे पुकारता रहा अगर वह मुझे पुकारता तो मैं उसको निकाल लेता। एक दफ़ा कह देता कि अल्लाह माफ़ कर दे तो उसी वक़्त निकाल कर बाहर रख देता। जब ऐसे मुजरिम के साथ अल्लाह का इतना ताल्लुक़ है तो आम काफ़िर के साथ क्यों नहीं होगा। हमारी दुआओं से काफ़िर थोड़े मरेंगे। उनको जाकर दावत दें। अरे भाई कलिमा पढ़ा ले अल्लाह की वहदानियत को तसलीम कर ले। निजात का रास्ता अपना ले, जब वह इसका इन्कार करेगा फिर अल्लाह के अज़ाब का हक़दार होगा। इससे पहले अज़ाब नहीं आएगा।

अल्लाह की काएनात की वुसअत कोई नहीं जानता

मूसा अलैहिस्स्लाम पर अर्श से तजल्ली पड़ी। अर्श कितनी दूर

है। इसका अल्लाह के अलावा किसी को कोई पता नहीं। यह जो आसमान है आज तक किसी ने इसको नहीं देखा। इसमें जो ख़ला है उस में 97 फ़ीसद अंधेरा है 3 फ़ीसद रौशनी है और उसमें पाँच अरब कहकशाएं हैं और एक कहकशां में दस खरब सय्यारे हैं और जिस कहकशां में हम रहते हैं और हमारा निज़ाम शम्सी (सूरज) ज़िस कहकशां में मौजूद है उस कहकशां का फ़ासला 20 लाख लायर है। लायर का मतलब यह है कि एक लाख छियास्सी हज़ार मील फ़ी सेकण्ड की रफ़्तार से 20 लाख साल सफ़र किया जाए तो तब जाकर हमारी कहकशा ख़त्म होगी और ऐसी पाँच अरब कहकहशाएं हैं। हमारी कहकशां के साथ 17 कहकशाएं मिली हुई हैं। हम 17 कहकशाओं के मजमूए में रहते हैं। वे 17 मजमूई कहकशाएं हैं। इनका फ़ासला 20 लाख नूरी साल है। अब पाँच अरब का कौन हिसाब लगाएगा? फिर आसमान के ऊपर इसी तरह दूसरे आसमान, तीसरे आसमान, चौथा, पाँचवाँ, छठा, सातवाँ आसमान फिर सातवें आसमान के ऊपर जन्नत है फिर जन्नत उठी है अर्श तक फिर अर्श के ऊपर ﴿لا يعلمه إلا الله﴾ उसके बाद अल्लाह ही जानता है वहाँ से मूसा अलैहिस्सलाम पर तजल्ली पड़ी। खुद उनके चेहरे पर नहीं। उनके सामने पहाड़ पर पड़ी। ﴿فلما تجلى ربه للجبل﴾ जब आपके रब ने तजल्ली ज़ाहिर की पहाड़ पर ﴿جعله دكا﴾ पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो गया।

﴿وخر موسى صعقا. (سورة الاعراف پاره ۹، رکوع ۷، آیت ۱٤۳)﴾

और मूसा चालीस साल तक बेहोश पड़े रहे।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी और अल्लाह से मसाइल हल कराने का तरीक़ा

मेरे भाइयो! अल्लाह से मसाइल हल करवाने का जो रास्ता है वह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी है। अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को दुनिया और आख़िरत में अपने मसाइल हल करने का, जन्नत की हमेशा हमेशा वाली ज़िन्दगी का ज़रिया बनाया है और ऐलान कर दिया कि जिसको कामयाबी चाहिए, आराम व सकून वाली ज़िन्दगी चाहिए, राहत व चैन चाहिए तो वह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में आ जाए और उसके अलावा सारे रास्ते और दरवाज़े बन्द हैं, सारी शरियतें रद्द हैं।

﴿ختم بكتابه الكتب وبدينه الأديان وبشريعة الشرائع.﴾

इस किताब पर किताबें ख़त्म, इस दीन पर दूसरे दीन ख़त्म, इस शरियत पर शरियतें ख़त्म।

अल्लाह ने ऐसी इज़्ज़त बख़्शी सारे नबियों का सरदार बनाया, सारे नबियों का पेशवा बनाया ﴿انا نبی الاولین انا نبی الانبیآء﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं सारे नबियों का नबी हूँ, सिर्फ़ हमारे नबी नहीं सवा लाख नबियों को बैतुलमुक़द्दस में जमा करके हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनका इमाम बना दिया। उन पर नुबुव्वत को साबित कर दिया। ईसा अलैहिस्सलाम आएंगे तो उम्मती बनकर आएंगे नबी बनकर नहीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اولهم خلقا﴾ मैं

सबसे पहले बनाया गया हूँ। आसमानों ज़मीनों, सूरज, चाँद, सितारे और सय्यारों, हवा, फ़िज़ा और ख़ला से पहले बनाया गया हूँ। भेजने में सबसे बाद में पैदाइश में सबसे पहले। एक यहूदी ने आपकी शान में गुस्ताख़ी की तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे मारा। उस यहूदी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में शिकायत की। पीछे हज़रत उमर भी आ गए। आपने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि आपने इनको क्यों मारा है? उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसने आपकी शान में गुस्ताख़ी की और मुझसे बर्दाश्त नहीं हुआ। आपने फ़रमाया ﴾فاما انت يا عمر فارضه﴿ आप इसे राज़ी कर लें और ﴾واما انت فاص بى﴿ यहूदी से कहा कि तुम मेरी बात मान लो।

मैं कहा करता हूँ कि अल्लाह के हबीब की शान को अल्लाह के अलावा कोई नहीं समझ सकता। सारी काएनात मिलकर नहीं समझ सकती। इतना ऊँचा मक़ाम! अल्लाहु-अकबर।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बुलन्द मक़ाम

लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किया हुआ। उठाया बैतुल्लाह से कुछ लम्हों में बैतुलमुक़द्दस पहुँचाया, दो रकअत नफ़िल पढ़ी। घोड़ा वहाँ बाँधा और जिब्राईल अलैहिस्सलाम के साथ पहले क़दम पर पहला आसमान, आदम अलैहिस्सलाम इस्तिक़बाल के लिए तैयार खड़े हैं। दूसरे क़दम पर दूसरा आसमान यहया अलैहिस्सलाम और ज़क्रिया अलैहिमस्सलाम

इस्तिक़बाल के लिए खड़े हैं, तीसरे क़दम पर तीसरा आसमान, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम इस्तिक़बाल के लिए तैयार हैं। चौथे क़दम पर चौथे आसमान इदरीस अलैहिस्सलाम इस्तिक़बाल के लिए तैयार हैं, पाँचवे क़दम पर पाँचवा आसमान, हारून अलैहिस्सलाम इस्तिक़बाल के लिए, छठे क़दम पर छठा आसमान, मूसा अलैहिस्सलाम इस्तिक़बाल के लिए तैयार हैं, सातवें आसमान पर इब्राहीम अलैहिस्सलाम बैठे हुए हैं। यह इस्तिक़बाल के लिए नहीं उठे। यह तो बाप थे, सफ़ेद लम्बी दाढ़ी बैतुलमामूर से टेक लगाकर बैठे हुए हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ये बड़े मियाँ कौन है? यह आपके दादा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं। बैतुल्लाह की सीध में सातवें आसमान पर बैतुलमामूर है फिर आप उनके क़रीब हुए तो खड़े हुए मेरा बेटा आजा, मेरा बेटा आजा। पिछले सारों ने ﴿مرحبا باخ الصالح﴾ लेकिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿مرحبا بابن الصالح﴾ सुब्हानअल्लाह क्या बाप की शान है? क्या बेटे की शान है? फिर सिदरतुल मुन्तहा पर पहुँचे। यहाँ से आगे मख़्लूक़ नहीं जा सकती। जिब्राईल ने भी यहाँ माज़रत कर दी कि मैं आगे नहीं जा सकता तो ऊपर से एक तख़्त उतारा उस पर बिठाया (और अपनी "अम्रे कुन" की क़ुदरत के साथ तख़्त को चलाया) आप अर्श को चीरते हुए आगे चले गए। अर्श के ऊपर सत्तर हज़ार पर्दे हैं। सत्तर हज़ार पर्दों को अल्लाह तआला ने उठाया अपने सामने बिठाकर फ़रमाया ﴿يا حبيبى ادن منى﴾ ऐ मेरे हबीब क़रीब हो जाओ। जिस रसूल का इतना ऊँचा मक़ाम हो तो उसके तरीक़े में कितनी ताक़त होगी और जो उसके तरीक़े को छोड़ेगा कहाँ निजात पाएगा? उसको कौन सी दुकानें निजात देंगी,

कौन सी फैक्ट्री निजात देगी? कौन सी हुनरमंदी निजात देगी जो ऐसे अज़ीम नबी के तरीक़े छोड़ दे।

नबी का दामन पकड़ो अल्लाह दुनिया में भी चमकाएगा और आख़िरत में भी

मेरे भाइयो! लाहौर का ताजिर हो या न्यूयार्क का ताजिर हो या लन्दन और मास्को का ताजिर हो या सिंगापूर का कारोबारी हो या कोरिया का दुकानदार हो उसको निजात हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े अपनाने में मिलेगी वरना अल्लाह की नज़र से गिर जाएगा। किसी को माल का मिल जाना उसकी बड़ाई की निशानी नहीं है, किसी को ताक़त का मिल जाना उसकी बड़ाई की निशानी नहीं है।

अल्लाह ने कैसर व सासान को दो हज़ार साल हुकूमत दी थी जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों ख़त्म हुई। यह हुकूमत का मिल जाना कोई बड़ी चीज़ नहीं है अल्लाह राज़ी हो जाए और उसके रसूल के तरीक़े ज़िन्दगियों में आ जाएं यह कामयाबी की दलील है तो सारी दुनिया के मर्दों और औरतों को कामयाबी चाहिए तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों में आना पड़ेगा। अरब के बुतपरस्त थे जिनको ना खाने को कुछ मिलता था, आपस की लड़ाइयाँ और पस्ती में गिरे हुए थे लेकिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दामन पकड़ा तो अल्लाह तआला ने दुनिया में ऐसा चमकाया कि काएनात उसका नमूना पेश नहीं कर सकती। जिनके जनाज़े पर फ़रिश्ते उतारे जा

रहे हों। हज़रत साद बिन मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिक़ाल हुआ। हज़रत जिब्राइल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कौन फ़ौत हुआ है? जिब्राईल फ़रमाने लगे आज अर्शे इलाही ख़ुशी से झूम रहा है कि आज किसी की आमद है। रुह अर्श पर जाकर सज्दा करती है ﴿اهتز عرش الرحمٰن﴾ अर्शे रहमान ख़ुशी से झूम रहा है कौन आने वाला है? हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया साद ज़ख़्मी शायद उसी का इन्तिक़ाल हुआ हो। ﴿ما ذا فعل سعد﴾ साद का क्या हुआ? किसी ने कहा इन्तिक़ाल कर गए। आपने फ़रमाया कि जल्दी चलो। आप तेज़ी से जा रहे थे। सहाबा इकराम आपके पीछे दौड़ रहे थे। उनकी चादरें कन्धों से गिर रही थीं, जूतों के तस्में टूट रहे थे। उनमें से किसी न कहा या रसूलुल्लाह! ﴿اتعبتنا﴾ आपने हमें थका दिया। ज़रा आहिस्ता तो चलें। आपने फ़रमाया कि जल्दी चलो कि फ़रिश्ते हम से पहले साद को उठा न लें और ग़ुस्ल न करा लें और हम उसके ग़ुस्ल से महरूम हो जाएं। यह कल तक बुतपरस्त थे। माविया बिन माविया लैसी रज़ियल्लाहु अन्हु मदीने में हैं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तबूक में हैं। सूरज बड़ा चमकता हुआ निकला। इतने में जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए। आपने दर्याफ़्त किया आज सूरज में बड़ी चमक है क्या बात है? जिब्राईल कहने लगे कि नहीं या रसूलुल्लाह! यह सूरज की चमक नहीं है आज आपके सहाबी माविया बिन माविया लैसी का इन्तिक़ाल हुआ है और उनके जनाज़े में ऐसे सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरे हुए हैं जिन्होंने कभी ज़मीन पर क़दम नहीं रखा और जनाज़ा आपको पढ़ाना है। आप

ने फ़रमाया मैं पढ़ाऊँ? मैं यहाँ वह मदीने में। उन्होंने कहा हुक्म यही है और जनाज़े को उठाकर सामने रख दिया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनाज़ा पढ़ा दिया तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने जनाज़ा उठाकर वापस मदीने पहुँचा दिया। कल बुतों के पुजारी आज इतने ऊँचे परवाज़ कर रहे हैं। उमरो बिन जमूह रज़ियल्लाहु अन्हु शुरू में इस्लाम पर दिल नहीं ठुकता था। बेटा मुसलमान हो गया। उसने कहा कि मैं अपने बुतों को नहीं छोड़ सकता। बेटा रात को आया बुतों को उठाकर बाहर कचरे में डाल दिया। जब सुबह उठे तो दखा कि खुदा ग़ायब है। इधर उधर देखा और तलाश में बाहर निकल गए तो क्या देखते हैं कि उनका खुदा तो कूड़े के ढेर में पड़ा हुआ है। हाय मेरे खुदा तेरे साथ किसने यह सुलूक किया अगर मुझे पता चल जाए तो उसकी गर्दन उड़ा दूँ। उठाकर लाए नहला धुलाकर फिर घर में रखकर इबादत शुरू कर दी। अगली रात बेटे ने फिर उठाकर बाहर फेंक दिया। सुबह हुई तो ख़ुदा फिर ग़ायब, कई दफ़ा ऐसा हुआ। एक दिन कहने लगे हाय मेरे रब! मैं बूढ़ा हो गया हूँ। तेरा पहरा नहीं दे सकता लिहाज़ा तलवार तेरे पास रख देता हूँ जो आएगा खुद ही उसे निमटा लेना, अपनी तलवार अपने खुदा के सामने रख दी और खुद जाकर सो गए। सत्तर साल के बूढ़े थे। जब बेटे ने रात को आकर देखा तो तलवार साथ ही पड़ी है। फिर वह बाहर निकल गया और पूरे मदीने में घूमा, एक मुर्दा कुत्ता पड़ा था। उसका जिस्म फटा फूला हुआ था। उसकी टांगे ऊपर उठ गयीं थीं। उसको उठाकर घर में लाया और उसकी टांगे और बुत की टांगे उठाकर बाँधा फिर बाहर फेंक दिया। बाप जब सुबह को उठे

तो खुदा ग़ायब, तलवार पड़ी है। हाय अफ़सोस! बेड़ा ग़र्क़ हो जाए कौन मेरे खुदा की तौहीन करता है, बाहर फिरते फिरते देखा तो कुत्ते के साथ टांगे बन्धी पड़ी है अरे तेरी अक्ल पर अफ़सोस है अगर यह खुदा होता तो कुत्ते के साथ टांगे न बाँधता फिर इस्लाम पर दिल जम गया। इस हालत में सत्तर साल गुज़र गए और कलिमा पढ़कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ़ एक साल गुज़रा। अब ओहद का मौक़ा आ गया और यह एक टांग से माज़ूर हैं और कहते हैं कि मैं भी जाऊँगा, शहीद हो जाऊँगा। बेटों ने मना कर दिया। इस तरह झगड़ा हुआ तो मुक़द्मा मस्जिदे नबवी में हुज़ूर के सामने पेश हुआ। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आप माज़ूर हैं, आप पर जिहाद फ़र्ज़ नहीं है तो कहने लगे कि या रसूलुल्लाह! मेरा दिल चाहता है कि मैं इस लंगड़े पाँव के साथ जन्नत में चलूं। आपने फ़रमाया इसको जाने दो, यह शौक़ीन है। सत्तर साल कुफ़्र को एक साल नबी की ग़ुलामी ने कहाँ तक पहुँचाया है। ओहद की जंग में शहीद हो गए। आपका उनकी लाश पर गुज़र हुआ तो आपने फ़रमाया कि मैं इसको जन्नत की ज़मीन को रौंदते हुए देख रहा हूँ लंगड़े पाँव के साथ नहीं बल्कि सही पाँव के साथ।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भाई कौन हैं?

आपने फ़रमाया ﴿لوددت ان اری اخوانی﴾ मेरा दिल चाहता है कि मैं अपने भाईयों का देख लूँ। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़

किया हम आपके भाई नहीं या रसूलुल्लाह? आपने फ़रमाया ﴿انتم اصحابی﴾ तुम मेरे सहाबी हो मेरे दोस्त हो।

﴿اخوانی الذین امنوا بی ولم یروانی﴾

जब आपके दुनिया से जाने का वक़्त आया तो एक हफ़्ते पहले सबको जमा किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबको दुआ दी:

اوٰی کم اللہ، حفظکم اللہ، نصر کم اللہ، رفعکم اللہ. زادکم
اللہ، اید کم اللہ، قوا کم اللہ، سلمکم اللہ.

इतनी लम्बी दुआऐं उसके बाद फ़रमाया:— मेरे जाने का वक़्त क़रीब है। मैं तुम्हें सलाम करता हूँ। तुम्हारे बाद जो आएंगे उनको भी सलाम करता हूँ। उनके बाद जो आएंगे उनको भी सलाम करता हूँ और तुम गवाह रहो क़यामत तक जो मेरी उम्मत आएगी उन सबको मैं अपना सलाम करता हूँ।

हम अपने वजूद को अल्लाह और उसके रसूल की मर्ज़ी पर ढालना सीखें

और यह सीखा हुआ इन्सान है कि मेरी शहवत कहाँ जानी चाहिए और कहाँ रोकनी चाहिए और ब्रेक ठीक हो चुके हैं। पीछे से अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से जो हुक्म आ रहा है उसकी वजह से जिस्म की हरारत में आराम और सकून है। हमारा जिस्म इससे बाग़ी है। बग़ावत है अल्लाह व रसूल के साथ। मेरे भाई इसको सीखना पड़ेगा। उस तरफ़ हमारी हरकत हो जिस तरफ़ अल्लाह चाहता है और उस

चीज़ से रुक जाएं जिससे अल्लाह नाराज़ है। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए। जब सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा को पता चला तो बड़ी तेज़ी से आयीं। जब आपने देखा कि सफ़िया आ रही हैं तो कहा उसको रोको। यह आपकी फूफी थीं कि हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को देखकर कहीं बेक़ाबू न हो जाएं। हज़रत ज़ुबैर रजियल्लाहु अन्हु दौड़ कर गए। यह उनके बेटे थे। अम्मा रुक जाओ, रुक जाओ। एक मुक्का मारा तो उड़कर उधर जा गिरे। जब हुज़ूर की आवाज आई तो एक दम रुक गयीं और ब्रेक लगाया और कहा कि हम अल्लाह और उसके रसूल की मर्ज़ी पर राज़ी हैं तो हमारा सिस्टम ख़राब हो चुका है जिस गाड़ी के ब्रेक ख़राब हों तो आप उस पर सवार होंगे? चाहे एक करोड़ की गाड़ी हो कोई भी सवार न होगा। मेरे दोस्तो! हमारे वजूद की गाड़ी का ब्रेक फ़ेल हो चुका है फिर इसको लेकर क्यों जाते हो दुकान में? बाज़ार में? पहले उसे ठीक कर लो वरना ऐसी टक्कर होगी जिससे जहन्नुम के अलावा कोई और ठिकाना नहीं मिलेगा। हम इस वजूद को अल्लाह और रसूल की मर्ज़ी पर ढालना सीखें।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक यतीम के साथ शफ़क़त करना

मैं कहता हूँ जहाँ यह लिखा है वह आप पढ़ते नहीं, जहाँ लिखा हुआ है वहाँ पढ़ो तो सही, कैसे बच्चों को छोड़कर चले जाते थे। जहाँ लिखा है वहाँ पढ़ते नहीं। डायजिस्टों में थोड़ी मिलेगा, टाईम न्यूज़ में थोड़ी मिलेगा। यह सहाबा की ज़िन्दगी

पढ़ने से पता चलेगा कि कैसे छोड़ छोड़कर चले जाते थे अगर वे न छोड़ते आप हम कैसे मुसलमान होते? हज़रत बशीर बिन उक़्बा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे बाप अल्लाह के रास्ते में शहीद हो गए और उस वक़्त यह मासूम बच्चे थे। इनकी माँ पहले मर चुकी थीं। मक्का छोड़कर मदीने में आए। अब इस मासूम की परवरिश कौन करेगा? और कोई रिश्तेदार नहीं अगर इसके बाप अल्लाह के रास्ते में चले जाएं तो इस बच्चे की रखवाली कौन करेगा? इस मासूम बच्चे को छोड़कर बाप जा रहा है। जब लश्कर वापस आया तो यह बच्चा अपने बाप के इस्तिक़बाल करने के लिए मदीने से बाहर निकलकर लश्कर के रास्ते में जाकर बैठ गया। जब पूरा लश्कर गुज़र गया, उसका बाप नज़र नहीं आया तो दौड़ा कर हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम के सामने आकर भरी आँखों से देखते हुए पूछने लगा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे बाप कहाँ हैं? उस वक़्त सात साल के बच्चे थे।

हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने जवाब न देकर चेहरा-ए-अनवर को दूसरी तरफ़ फेर दिया कि इसको किस तरह बताया जाए? इसी तरह चार बार हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम मुँह फेरते रहे और यह बच्चा चारों तरफ़ दौड़ते हुए पूछ रहा है कि या रसूलुल्लाह! मेरे बाप कहाँ हैं? मेरे बाप कहाँ हैं? हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम की आँखों में पानी भर आया और चेहरा-ए-अनवर आँसू छलक पड़े और रोने लगे और बच्चा कहता है कि मैं समझ गया। मैं हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम की टाँगों में चिपट पड़ा और रोने लगा या रसूलुल्लाह! अब न मेरे बाप रहे और न मेरी

माँ रही, अब मेरा कौन है? तो हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने उनको उठा लिया और कहा कि आज के बाद मैं तेरा बाप हूँ और आएशा तेरी माँ है। हमको इस काम को छोड़े हुए सदियाँ गुज़र चुकी हैं इसलिए हम नहीं जानते। जिस काम को छोड़ दिया जाए उसका तरीक़ा क्या पता चलेगा? एक आदमी नमाज़ ही नहीं पढ़ता तो उसको क्या पता है कि सज्दा कैसे करना है, रुकू और क़याम कैसे करना है, तहारत और वुज़ू क्या होते हैं? जब वह मस्जिद में आकर नमाज़ शुरू कर दे तो इन सबका पता चल जाएगा। हमें इज्तिमाई तौर पर दीन का काम छोड़े हुए सदियाँ गुज़र गई हैं। अकेले-अकेले हर दौर में रहा। मुहद्दिसीन के ज़रिए, मुफ़स्सरीन के ज़रिए और फ़ुक़हा के ज़रिए लेकिन हर-हर मुसलमान इस काम को लेकर उठे तो इस इज्तिमाई काम को छोड़े हुए ज़माना गुज़र चुका है इसलिए हमें पता नहीं है कि अल्लाह ने क्या हुक्म दिया है, दीन फैलाने के लिए। सबसे बड़ी मौत शहादत है अगर बीवी बच्चों के हक़ लाज़मी होते तो शहादत बड़ी मौत क्यों होती?

तबलीग़ करने का फ़ायदा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़मानत

इसलिए आप तबलीग़ के काम को अपना लें तो सारे पाकिस्तान में दीन का काम फैल जाएगा और पूरी दुनिया में तबलीग़ का काम फैल जाएगा।

और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़मानत दी है कि

अल्लाह का वायदा है ﴿يخلفه في اهله وماله﴾ मैं उसकी जान का वारिस और उसके घर का वारिस हूँ। दुनिया में अज़ाब आने नहीं दूँगा। अल्लाह से बड़ा देखभाल करने वाला कौन होगा अगर वह हमारे घर बार और दुकानों का वारिस हो जाए तो हमें क्या ज़रूरत है और इन्तिज़ाम करने की?

तबलीग़ को ज़िन्दगी का मक़सद बनाओ

तो इसलिए मेरे भाइयो! हम अगर इस मेहनत को करने वाले बन जाएंगे और मस्जिदों के खूंटे बन जाएंगे, तबलीग़ को बयान बाज़ी न बनाओ कि जाकर शबे जुमा में तक़रीर सुनी और वापस आ गए बल्कि अपने खाने और बिस्तर लेकर जाओ, रात को वहीं रहो और फ़ज्र का बयान सुनकर वापस आओ, रात का क़याम बड़ा ज़रूरी है वरना नीचे की तरफ़ गिरते चले जाओगे। सुन लो फ़रिश्तों का ईमान न बढ़ता है न घटता है, नबियों का ईमान रोज़ाना ऊपर, नबियों का ताल्लुक़ और ईमान रोज़ाना ऊँची उड़ान और हमारा ईमान कभी ऊपर जाता है और कभी नीचे आता है, ईमानी माहौल में आता है तो ईमान ऊँचा हो जाता है। तुम यहाँ तीन घंटे से बैठे हो क्यों नहीं हिल रहे कि ईमान की बात हो रही है और ईमान ज़्यादा हो रहा है अगर मैं इधर उधर की मारता तो आप में से आधे उठकर चले जाते लेकिन मैं अल्लाह और उसके रसूल की बात कहता हूँ। ईमान बढ़ रहा है। आप थके हुए हैं लेकिन फिर भी बैठे हैं। यह ईमान की तरक़्क़ी की निशानी है और जब बाज़ार के माहौल में जाएंगे तो ईमान नीचे जाएगा लेकिन अगर आप बार बार निकलते रहेंगे तीन दिन के लिए जा

रहे हैं, दस दिन के लिए जा रहे हैं, चार माह के लिए जा रहे हैं तो ईमान में तरक़्क़ी होगी। अपने मर्कज़ में जाकर क़याम करोगे। यह रात का क़याम मामूली न समझो। यह शहर वाले जितने हैं ये गड़बड़ करते हैं। बयान सुनकर घर वापस हो जाते हैं। कुछ तो इशा की नमाज़ अपनी मस्जिद में पढ़ते हैं। ये मैं आप हज़रात से नहीं कह रहा हूँ बल्कि ये चार महीने और चिल्ले लगाने वालों से कह रहा हूँ। आप हज़रात महसूस न फ़रमाएं। बेशक आप बयान सुनकर वापस जाओ कोई बात नहीं। यह तो हम पुराने दोस्तों से कह देते हैं क्योंकि उनसे ताल्लुक़ है। आपको तो हम सलाम करेंगे। ये तीन चिल्ले वाले शबे जुमा में रात क़याम करें वरना नीचे को गिरेंगे। इनका ठहरना बहुत ज़रूरी है और रोज़ाना अपनी मस्जिद में जुड़ो और दावत दो।

जिसे फ़िक्र होती है वह मेहनत करता है

तो मेरे भाईयो! ज़िन्दगी हम ने आपको बता दी है। पता हमें भी कोई नहीं कि इस मंज़िल तक पहुँचना है कि नहीं पहुँचना। यह तो मौत पर जाकर पता चलेगा लेकिन मेरे भाईयो! अल्लाह की ज़ात करीम है जो रास्ते पर चलता है वह मंज़िल पर पहुँच जाता है जो मंज़िल की तरफ़ चलते हैं उन्हें मंज़िल मिला करती है।

من خاف ادلج ومن ادلج بلغ المنزل الا ان سلعة
الله غالية الا ان سلعة الله الجنة. (الحديث)

जिसे फ़िक्र होती है वह रात को सफ़र शुरू करता है। मुसाफ़िर शब से चलता है जिसे दूर जाना होता है वह रात से

सफ़र का सामान बाँधता है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और आख़िरत का फ़िक्र

मेरे भाईयो! सफ़र बड़ा लम्बा है। हज़रत अली बिन अबि तालिब रो रोकर कहते या अल्लाह! सफ़र बड़ा लम्बा है तोशा मेरे पास कोई नहीं हाँलाकि हज़रत अली से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नू यूँ फ़रमाया ऐ अली! जन्नत में तेरा घर मेरे घर के सामने होगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन की ख़ातिर मुसीबतें सहना

मेरे भाईयो! बताओ भला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पनाह की ज़रूरत थी जिसके साथ अल्लाह हो? नहीं दुनिया असबाब की जगह है। दुनिया को यह बताना है कि दीन का काम मेहनत से होगा वरना मुझे किसी की पनाह की क्या ज़रूरत? वह कहने लगा। यह मैं वह हदीस के अलफ़ाज़ आपको सुना रहा हूँ। नक़ल कुफ़्र कुफ़्र ना बाशद (कुफ़्र की बात नक़ल करना कुफ़्र नहीं है) इब्ने फ़रास क़ैशरी ने कहा (नअउज़ुबिल्लाह) इस पूरे बाज़ार में अगर सबसे बदतरीन कोई चीज़ है तो यह है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि चला जा, खड़ा हो जा यहाँ से अगर मेरी क़ौम तुझे यहाँ न बिठाती तो मैं अभी तेरी गर्दन उड़ा देता।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान मुबारक से तो एक बोल भी नहीं निकला। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चादर उठाई, ग़मीगीन परेशान उठे और ऊँटनी पर सवार होने लगे और ऊँटनी जब खड़ी हुई तो उस ख़बीस ने जो नीचे से नेज़ा मारा और ऊँटनी उछली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उलट कर ज़मीन पर गिरे। फिर भी ज़बान से बद्दुआ नहीं निकली। लोग कहें कि क्यों ज़लील होते फिरते हो? अरे वह तो ऐसों के सामने गिरे लेकिन ज़बान से बद्दुआ नहीं निकली। अबू जहल ने मारा लेकिन आपकी ज़बाने मुबारक से बद्दुआ के बोल नहीं निकले।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तकलीफ़ें सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान से

एक सहाबी कहते हैं कि एक नौजवान है बहुत ख़ूबसूरत, लोगों को दावत देते फिरते हैं। सुबह से चल रहा है और कलिमे की तरफ़ बुला रहा है। मैंने कहा यह कौन है? उन्होंने कहा कि यह क़ुरैश का एक नौजवान है जो बे दीन हो गया है। सुबह से वह आदमी बात करता है यहाँ तक कि सूरज सिर पर आता है। एक आदमी ने उसके मुँह पर थूका और दूसरे ने गिरेबान फाड़ा, एक ने सिर पर मिट्टी डाली, एक ने आकर थप्पड़ मारा लेकिन नबी की बर्दाश्त को देखो कि ज़बान से एक बोल बद्दुआ का नहीं निकाला, इतने में ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को पता चला तो वह ज़ारो क़तार रोते हुए पियाले में पानी लेकर आ रही हैं। जब आपने बेटी को रोते हुए देखा तो आँखें ज़रा नम हो गयीं कि

हाय! बेटी अपने बाप पर ग़म न कर कि तेरे बाप की अल्लाह हिफ़ाज़त कर रहा है, मेरा कलिमा ज़िन्दा होगा। वह सहाबी कहते हैं (जो बाद में मुसलमान हो गए थे उस वक़्त काफ़िर थे) यह लड़की कौन है? कहा यह उसकी बेटी है।

मेरे भाईयो रेढ़ी वाला आवाज़ लगा रहा है, पान सिगरेट वाला आवाज़ लगा रहा है। तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती होकर कलिमे की आवाज़ न लगाओ तो भाई हम क्या कहेंगे अगर आप अपनी मस्जिदों में बैठ गए तो हम समझेंगे कि हमारा आना वसूल हो गया और अगर नहीं तो हम यह समझेंगे कि भाई हम से क़ुसूर हो गया कि हम आपको समझा न सकें।

आज रेढ़ी वाला आवाज़ लगा रहा है हम दीन की आवाज़ लगाते हुए शर्माते हैं

मेरे दोस्तो! मैं हैरान होता हूँ बाहर सब्ज़ी वाला आवाज़ लगा रहा है। आलू की आवाज़ लग रही है, छोले की आवाज़ लग रही है, प्याज़, लहसुन की आवाज़ लग रही है, क़हवे और निसवार की आवाज़ लग रही है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ लगाने वाला कोई नहीं। उनका काम हमारी नज़रों से इतना गिर गया कि लोग कहते हैं कि यह फ़ारिग़ लोगों का काम है, ये बेकार फिरते हैं, पागल लोग हैं, फ़ारिग़ लोग हैं, घरों से निकाले गए हैं, बेकार फिरते हैं। यही नबियों को कहा करते थे। जो इस काम को करेगा उसे हौसला रखना पड़ेगा, उसे ये बातें सुननी पड़ेंगी।

हज़रत मौलाना इलियास साहब रहमतुल्लाहि अलैहि और उम्मत की फ़िक्र

हज़रत मौलाना इलियास साहब रह० ने जब मेवातियों में गश्त शुरू किया और वे मारते थे, गालियाँ देते थे तो उलमा ने कहा कि मौलाना इलियास ने इस इल्म को ज़लील कर दिया क्योंकि काम वजूद में नहीं था। उलमा ने कहा कि यह इल्म की ज़िल्लत है। मौलाना इलियास साहब ने कहा हाय! मेरा हबीब तो अबू जहल से मार खाता था तो मैं मुसलमानों की मिन्नत करके कैसे ज़लील हो सकता हूँ। मैं तो अल्लाह के कलिमे के लिए ज़लील होकर इज़्ज़त हासिल करना चाहता हूँ कि अल्लाह के कलिमे के लिए ज़िल्लत भी इज़्ज़त है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ख़ेमे में गए और उनसे दीन की बात की। उन्होंने कहा हमारे सरदार आ जाएं फिर तेरे से बात करेंगे। आप इन्तिज़ार में बैठ गए। इतने में उनका सरदार आया, पूछा कौन है? उन्होंने कहा वही क़ुरैशी नौजवान है जो कहता है मैं नबी हूँ और कहता है कि मुझे पनाह दो मैं अल्लाह का कलिमा पहुँचाना चाहता हूँ।

अपने ऐबों को देखो दूसरों के न देखो

मेरे भाईयो! ताने से बचो, एक दूसरे को ताना मत दो। किसी मुसलमान की ग़ीबत मत करो, किसी मुसलमान के ऐब तलाश मत करो, किसी मुसलमान के ऐब मत देखो, मुसलमान के ऐब

देखना बर्बादी है। अपने ऐब तलाश करो कि मैं खुद ही इतना बुरा हूँ। अपने अल्लाह व रसूल के हुक्म को सामने रखकर चलो, अपने बड़ों से जुड़कर चलो, नुक्ताचीनी से बचो, अपनी तबियत आज़ाद न बनाओ, एतिराज़ न करो, किसी की बात रद्द न करो। ये बातें वे हैं जो आज उम्मत को बर्बाद कर रही हैं। तन्क़ीद (नुक्ताचीनी), तरदीद (किसी की बात का इन्कार करना), ऐतिराज़ व तन्क़ीस (कमी निकालना) किताब के मुक़ाबले में किताब, तक़रीर के मुक़ाबले में तक़रीर ये बातें वे हैं जो दिलों को तोड़ती हैं। नहीं भाई आपस में मुहब्बत से चलो, प्यार से चलो, अल्लाह तुम्हें रहमत की नज़र से देखेगा और आपस में सलाम को फैलाओ "पख़ैर रागले नर" मत कहो, "पख़ैर रागले" को कहीं दफ़न कर दो। सब एक दूसरे को सलाम करो। अल्लाह ने "पख़ैर रागले" नहीं कहा।

﴿سلام قولا من رب رحيم. (سورة يٰسين ٢٣، ركوع ٣، آيت ٥٨)﴾

फ़रिश्ते भी सलाम करते हैं,

﴿سلام عليكم طبتم فادخلوها خالدين. (سورة الزمر پ. ٤ ركوع ٥، آيت ٣٧)﴾

﴿سلٰم عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الدار. (سورة الرعد پ. ١٣، ركوع ٨، آيت ٢٤)﴾

और अल्लाह का नबी कहता है ﴿افشوا السلام. (الحديث)﴾ सलाम को फैलाओ।

हमारी सोच और कोशिश नाक़िस है

मेरे भाइयो और दोस्तो! आजकल दुनिया में हर इन्सान हालात का शिकार है और इन्सान अपनी उलझनों को हल करना चाहता

है। थोड़ी सी ज़िन्दगी है और यह उलझनें भी थोड़ी सी हैं। असल उलझन मौत के बाद शुरू होने वाली है और वह ऐसी ज़िन्दगी है जिसका आख़िर अल्लाह नहीं लिखा ﴿خالدين فيها ابدا﴾ जन्नत वालों के लिए भी,

﴿ومن يعص الله ورسولهٗ فان لهٗ نار جهنم خالدين فيها ابدا.﴾
(سورة الجن پاره ۲۹، آیت ۲۳)

दोज़ख़ वालों के लिए भी तो हम बड़े कमज़ोर हैं। यहाँ पर आसानी चाहते हैं आगे भी अल्लाह के अज़ाब से पनाह चाहते हैं। दुनिया भी बने और आख़िरत भी, दुनिया बनने का यह मतलब नहीं कि हमें कोई बड़ी हुकूमत मिल जाए या कोई बड़ी दौलत मिले, बड़े माल व चीज़ें मिलें, नहीं बल्कि आफ़ियत की ज़िन्दगी अल्लाह नसीब फ़रमाए। अभी अल्लाह चाहे तो आफ़ियत मिल सकती है अगर अल्लाह ना चाहे तो नहीं हो सकता चाहे सारी दुनिया के समझदार जमा हो जाएं और हो रहे हैं। सारी दुनिया के कारोबारी लाइन के माहिर जमा हो रहे हैं, मज्लिसें लगती हैं, मशवरे हो रहे हैं, स्कीमें बनाई जा रही हैं, चलाई जा रही हैं ऊपर वाला मौक़े पर फ़ैसला करेगा तो होगा अगर फ़ैसला बदल जाए तो कोई करवा नहीं सकता। अब एक तर्तीब हमको चलानी होती है कि अपने-अपने मसाइल हल करने के लिए तरह तरह की कोशिशें अपनाएं। हमारी कोशिश कमज़ोर और अधूरी और अल्लाह तआला की बताई हुई तदबीर यक़ीनन हक़ और सच है और अल्लाह तआला का बनाया हुआ निज़ाम यक़ीनन नतीजा देने वाला है। हमारी कोशिशों में इसलिए कमी है कि हमारी अक़्ल में कमी है। हम कुछ देर सोच सकते हैं फिर थोड़ी देर बाद थक

जाते हैं। यह हमारी अक्ल के नाक़िस होने की निशानी है अगर गुस्सा ज़्यादा चढ़ जाए तो हमारी सोच काम करना छोड़ देती है, यह नाक़िस होने की निशानी है, अगर बहुत ज़्यादा खुशी हासिल हो जाए तो अक्ल काम करना छोड़ देती है यह भी नाक़िस होने की निशानी है, कोई सदमा पहुँच जाए या बीमार हो जाएं तो सोच काम करना छोड़ देती है। यह इसके नाक़िस होने की अलामत है, सो जाए तो मर जाता है, थोड़ी सी उम्र ज़्यादा हो जाए तो बिल्कुल बच्चा हो जाता है। ये सारी हमारी सोच के नाक़िस होने की निशानियाँ हैं।

हम थोड़ी सी सोच के मालिक हैं और उसमें इतने नुक़सानात और ऐब हैं तो अब ये सारे समझदार जमा हो जाएं तो भाई जितने ज़्यादा नाक़िस (अधूरे) जमा होंगे उतना ही नुक़सान बढ़ जाएगा। जितने नाक़िस अक्ल वाले बढ़ते चले जाएंगे तो दुनिया में उतने ही नुक़सान बढ़ते चले जाएंगे। अल्लाह तआला ने इस नुक़सान का अपने फ़ज़्ल से इन्तिज़ाम फ़रमाया है कि अपने इल्म को अक्ल तक पहुँचाया अपने नबियों के ज़रिए से।

हमारा मुशाहिदा (तजुर्बा)

अल्लाह तआला ने कह दिया कि मैं तुम्हारे नुक़सानों को पूरा कर दूँगा अगर तुम अपनी अक्ल को, समझ को, फ़िरासत को, तदबीरों को, तजुर्बों को मेरे ताबे करके चलो, मेरे हुक्म के ताबे करके चलो अगर हम अपनी तदबीरों को उसके हुक्म के ताबे करके चलें तो ज़ाहिर में उसके ख़िलाफ़ होता नज़र आता है और उसमें कमियाँ और कोताहियाँ नज़र आती हैं और अपनी मर्ज़ी पर

चलें तो काम बनता नज़र आता है। इसकी मिसाल यूँ है कि एक आदमी एक सौ रुपए देता है सूद पर तो एक सौ बारह नज़र आते हैं, एक दस रुपए सदक़ा कर देता है तो नब्बे रुपए बाक़ी रह जाते हैं। एक तरफ़ एक सौ बारह रुपए दूसरी तरफ़ नब्बे रुपए हैं। इसमें हम कहते हैं कि एक सौ बारह ज़्यादा हैं और नब्वे थोड़ें हैं। इसमें सारी इन्सानी दिमाग़ों और अक़्लों का इत्तिफ़ाक़ है कि एक सौ बारह ज़्यादा हैं और नब्वे कम हैं लेकिन अल्लाह की ख़बर इसके ख़िलाफ़ आ रही है ﴿يمحق الله الربوا ويربي الصدقات﴾ मैं सूद को घटाता हूँ और ख़ैरात को बढ़ाता हूँ। अब यहाँ पर अल्लाह की ख़बर ज़ाहिर के ख़िलाफ़ है। इन्सानी अक़्लों, सोचों, तदबीरों, तजुर्बों के ख़िलाफ़ है। एक सौ बारह ज़्यादा हैं और नब्वे कम हैं लेकिन अल्लाह कहता है ऐसा नहीं है। अब अपनी सोच को इसके ताबे करने के लिए अन्दर के ईमान की रौशनी चाहिए। जब तक वह रौशनी नहीं जागती तो आदमी को एक सौ बारह ज़्यादा नज़र आते हैं और नब्वे थोड़े नज़र आते हैं। जब उसके ईमान की शमा रौशन हो जाऐ और जल जाए तो नब्वे ज़्यादा नज़र आते हैं और एक सौ बारह कम नज़र आते हैं। वह अल्लाह के इल्म की तसदीक़ अपनी अक़्ल से ज़्यादा करता है, अल्लाह पाक की ख़बर की तसदीक़ अपनी सोच से ज़्यादा करता है। अल्लाह के नबी की ख़बर की तसदीक़ अपने समझ से ज़्यादा करता है।

एक बद्दू का वाक़िया और हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की गवाही

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़र पर तशरीफ़ ले जा

रहे हैं, रास्ते में एक बद्दू से घोड़े का सौदा तय हुआ, क़ीमत तय हुई। आपने कहा मदीने में जाकर रुपए दूँगा। उसने कहा ठीक है आगे चल दिए, पीछे सहाबा आकर मिल गए। अब सहाबा को पता नहीं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने घोड़े का सौदा कर लिया है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने देखा घोड़ा खड़ा है। उन्होंने कहा हमें घोड़ा ख़रीदना है। हम तुम्हें इतने रुपए देते हैं और ये हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ीमत से ज़्यादा बताई तो अब उस बदवी की नियत बदल गई। उसने कहा या रसूलुल्लाह! घोड़ा लेना है तो ले लो वरना इनको बेच देता हूँ। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रुपए मदीने में देना तय हुआ था। इस बदवी ने कहा कोई मुआहिदा नहीं किया है लिहाज़ा पैसे दे दो वरना मैं आगे बेच देता हूँ, आपके पास गवाह कौन है कि मुआहिदा इस तरह हुआ था। सहाबा में से एक सहाबी हुज़ैफ़ा बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु पीछे से खड़े हुए और कहा मैं गवाह हूँ कि सौदा इस तरह तय हुआ था। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू किस तरह गवाही देता है तू यहाँ था ही नहीं। सहाबी ने कहा या रसूलुल्लाह! जब आप आसमान की ख़बरें देते हैं तो उनको सच और सही मानते हैं तो आप घोड़े की ख़बर दें तो हम उसको कैसे सच न कहें, यह तो नहीं हो सकता, आपने ऐसे ही किया जो आप कह रहे हैं चाहे मैं था या नहीं था। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की गवाही को दो के बारबर कर दिया। सारी दुनिया में उनकी गवाही दो के बराबर क़रार दी जाती थी।

तसदीक़ पर इनाम

जब अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखने का हुक्म दिया तो जब तक एक आयत दो आदमियों के पास लिखी नहीं होती तो उसको क़ुरआन में नक़ल नहीं करते थे, कम से कम वह दो आदमियों के पास लिखी हुई होनी चाहिए। क़ुरआन में सिर्फ़ एक आयत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लिखी हुई थी और किसी के पास लिखी हुई नहीं थी। याद थी लेकिन लिखी सिर्फ़ हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थी। सूरहः तौबा की आख़िरी आयतः

﴿لقد جاء كم رسول من انفسكم عزيز عليه الخ۔ (پاره ۱۱)﴾

यह आयत लिखी हुई सिर्फ़ हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थी याद तो अक्सर सहाबा को थी। अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन जमा करने में मसरूफ़ हैं। जब यह आयत लेकर हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो अबूबक्र सिद्दीक़ ने कहा कि यह आयत सिर्फ़ आपके पास है और किसी के पास नहीं। क़ायदे के मुताबिक़ में इसे क़ुरआन में नक़ल नहीं कर सकता। हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया आप मुझे जानते नहीं कि मैं कौन हूँ? मैं दो के बराबर हूँ। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हुज़ैफ़ा की गवाही दो के बराबर है फिर यह आयत उनसे लेकर क़ुरआन में लिखी गई।

एक सहाबी की जिहाद में शिरकत

हज़रत हंज़ला की रात को शादी हुई। सुबह उठे सिर में पानी

डाला है और आवाज़ लगती है कि मुसलमानों की हार हो गई है तो नहाए बग़ैर मैदान की तरफ़ भाग गए। सिर्फ़ एक रात की शादी थी और अल्लाह के रास्ते में जाकर शहीद हो गए तो उनकी लाश हवा में उठ गई। आसमान के बीच फ़रिश्ते आ गए और जन्नत के पानी से गुस्ल दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु को गुस्ल दिया जाता है तो फिर लाश नीचे आ गई। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने देखा कि सिर के ऊपर पानी टपक रहा है। बाद में पूछताछ करने पर पता चला के जनाबत की हालत में शहीद हुए थे। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के ज़रिए गुस्ल का इन्तिज़ाम फ़रमाया। उनकी बीवी के हक़ों का क्या हुआ। क्या उनके घर उजड़ गए? उनके घर तो वीरान हुए और हमारा ज़हन कहता है कि बीवी बच्चों को छोड़कर चले जाना कहाँ का इस्लाम है? इससे आप ख़ुद अन्दाज़ा लगाएं और फ़ैसला फ़रमा लें।

एक सहाबी का वाक़िया

हबीब बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसैलमा बिन कज़्ज़ाब के पास भेजा। मुसैलमा ने उनको बड़ी बेदर्दी से शहीद कर दिया कि पहले एक हाथ काटा फिर दूसरा हाथ फिर एक पाँव फिर दूसरा पाँव फिर उनकी ज़बान काटी। इस तरह उनके टुकड़े टुकड़े करके सारा गोश्त पोस्त उतारकर अपने हाथों से उठाया जिस तरह बकरे के टुकड़े टुकड़े कर दिया जाता है मुसैलमा का दावा था और वह इस सहाबी

रज़ियल्लाहु अन्हु से यह बात कहलवाना चाहता था कि तुम मेरी नुबुव्वत का इक़रार करो और वह इन्कार करते रहे यहाँ तक कि शहीद हो गए। जब यह ख़बर उनकी वालिदा उम्मे आमरा को पहुँची कि तेरे बेटे को मुसैलमा ने शहीद कर दिया तो ग़ैरते ईमान से भरपूर माँ ने जवाब दिया कि इसी दिन को देखने के लिए मैंने उसको दूध पिलाया था।

﴿لهذا اليوم ارضعته وعند الله احتسبته﴾

मैं भी अल्लाह की रहमत से उम्मीद करती हूँ कि मेरे बेटे की वजह से मेरी बख़्शिश हो जाएगी। हम में से किसी का बेटा डाक्टर बन जाऐ तो कहते हैं कि इसी दिन को देखने के लिए मैंने इसकी परवरिश की थी और पाला था।

हमें अपनी क़द्र व क़ीमत पहचाननी चाहिए

मेरे भाईयो! दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़तें यहाँ छिपी हुई हैं। उनकी एक एक सुन्नत सातों आसमान और ज़मीन से ज़्यादा क़ीमती है। जब किसी कपड़े के थान में से या कपड़े में कोई धागा निकल जाए तो उसकी क़ीमत गिर जाती हे, ताजिर भाई जानते हैं। सिर्फ़ एक धागा निकल जाने से क़ीमत गिर जाती है और क्वालिटी बदल जाती है। अब ख़ुद सोचें जो ज़ात इतनी ऊँची हो अगर उसकी एक अदा हम से निकल जाए तो हमारी क़ीमत अल्लाह के यहाँ गिरेगी कि नहीं? हमारे ऊपर फ़र्ज़े ऐन है कि हम अल्लाह की मानें और अल्लाह के नबी की मानें यह हमारे अन्दर पैदा हो जाए और यह सीखने से पैदा होती है। बग़ैर सीखे

पैदा नहीं होती।

हमने अपने वजूद का इस्तेमाल इस तरह नहीं सीखा जिसकी डोर अल्लाह और उसके रसूल के हाथ चली जाए। एक आदमी एक आपके साथ लेनदेन कर रहा है और अन्दर से थका हुआ है, परेशान है, दिल ही नहीं चाहता बात करने को मगर फिर खिले चेहरे के साथ बात कर रहा है। माल का लालच और उसकी तमा उसकी तबियत को तोड़कर आपसे बात करवा रही है और अपनी बात-मनवा रहा है। इसी तरह एक आदमी दुकान पर बैठा हुआ है, ऊँघ रहा होता है, आपको देखकर खड़ा हो जाता है। रोटी का निवाला चाय की पियाली हाथ में होती है उसे रखकर खड़ा हो जाता है। उसके जिस्म पर माल का क़ब्ज़ा है। इधर आर्डर आता है। वही उसी के मुताबिक़ अपने जिस्म को इस्तेमाल कर रहा होता है अगर अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से कोई आर्डर आ जाए तो उससे हमारे जिस्म में कोई हलचल पैदा नहीं होती क्योंकि हम ने इसको सीखा नहीं है। मिसाल है हम गाड़ी चलाना सीख जाते हैं तो चलाने का निज़ाम दिल में आ जाता है। सामने कोई रुकावट नज़र आती है तो पाँव अपने आप ब्रेक पर चला जाता है अब उसको बताने की ज़रूरत नहीं होती कि ब्रेक मारो आगे रुकावट है। ऐसा कोई नहीं करता क्योंकि हमने वक़्त लगाकर उसको सीखा है तो पाँव और हाथ आने आप इस्तेमाल होते हैं। इसके लिए न कोई उसको बताता है और न खुद अपने को तैयार करता है क्योंकि इस निज़ाम को सीखा हुआ है इसलिए हाथ-पाँव अपने आप सही इस्तेमाल होते हैं।

आँख का ग़लत इस्तेमाल ईमान ले जाता है

अब दूसरी तरफ़ आ जाइए कोई आदमी बाज़ार में जा रहा है सामने लड़की खड़ी है। अब इसकी आँखों को यहाँ ब्रेक लग जाना चाहिए, आँख का ब्रेक लग जाए और आँख झुक जाए और रुक जाए लेकिन क्योंकि अन्दर का निज़ाम सही नहीं है, क्योंकि इस पर मेहनत नहीं हुई है अब यहाँ पर आँख के पर्दे को ब्रेक लगना चाहिए क्योंकि अन्दर का निज़ाम अल्लाह और उसके रसूल के हवाले नहीं किया हुआ है, ख़्वाहिशों और शैतान के हवाले किया हुआ है इसलिए आँख खुली रहती है। गाड़ी की टक्कर से आँख की टक्कर ज़्यादा ख़तरनाक है, गाड़ी की टक्कर जान लेगी और आँख की टक्कर ईमान लेगी। यह क्योंकि सीखा हुआ नहीं है इस लिए ब्रेक नहीं लगता। हाथ ग़लत तरफ़ जा रहा है अगर इस पर अल्लाह और रसूल का क़ब्ज़ा होता तो अपने आप इसको रोक कर पीछे ले जाता। इसी तरह ज़बान ग़लत बोलने लगती है। अल्लाह और रसूल का इसकी ज़बान पर क़ब्ज़ा होता तो ज़बान पर ब्रेक लगता। ख़्वाहिश ग़लत जगह चलने लगती है अगर अल्लाह और रसूल का क़ब्ज़ा होता तो वहीं रुक जाती।

एक बुज़ुर्ग का एक औरत को तौबा की दावत देना

अरीक़ इब्ने हुसैन रह० उनकी बुज़ुर्गी की बड़ी शोहरत हो गई। उनकी बुज़ुर्गी का चर्चा हुआ। लोग दिल अज़ीज़ हुए। कुछ

लोगों ने एक औरत को पकड़ा कि इसको वरग़लाओ तो वह औरत बड़ी बनाओ सिंगार करके ख़ूब ज़ेब व ज़ीनत के साथ रात के अंधेरे और तन्हाई में उनके पास चली गई और उनको दावत दी। उन्होंने देखा और कहा बहन आज जिस हुस्न पर तुझे नाज़ है। उस दिन को याद कर जिस दिन तेरे ख़ूबसूरत चेहरे को कीड़े मकौड़े खा रहो होंगे और तेरी इन आँखों में कीड़े चल रहे होंगे। जिससे तू लोगों को गुमराह करती है और तेरी ये आँखें बड़े-बड़े कीड़ों की ग़िज़ा बन चुकी होंगी और वह वक़्त जिस दिन क़ब्र तेरे जिस्म को एक झटके से रेज़ा रेज़ा कर देगी। तेरे जिस्म की हड्डियाँ टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे।

जब इन बुज़ुर्ग हस्ती की बातें सुनीं तो बेहोश होकर ऐसी गिरी कि तीन दिन तक होश नहीं आया और ऐसी तौबा की कि अपने वक़्त की सबसे बड़ी ज़ाहेदा आबेदा औरत बनी।

बनी इस्राइल का एक वाक़िआ

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनी इस्राइल के आदमी का वाक़िया सुनाया कि बनी इस्राइल में एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा कि मुझे नक़द रक़म चाहिए और मैं परदेसी हूँ। मेरा घर दरिया के पास बस्ती में है। दूसरे आदमी ने कहा इस पर गवाह कौन होगा? क़र्ज़ मांगने वाले ने कहा ﴿وكفى بالله شهيدا﴾ अल्लाह मेरा गवाह है। उसने कहा कितना चाहिए? क़र्ज़ मांगने वाले ने कहा तीन सौ। उसको दे दिया और तारीख़ वापसी के लिए तय हो गई। जब वह क़र्ज़ वापस करने के लिए आए तो दरिया में बहुत ज़्यादा चढ़ाव चल रहा था। किश्तियाँ खड़ी हुई हैं

तो यह आदमी सिर पकड़कर दरिया के किनारे बैठकर फ़रियाद करने लगा या अल्लाह! मैंने आपको गवाह बनाया था और वकील बनाया था। अब तय शुदा वक़्त पर न पहुँचा सका तो तेरी गवाही झूठी साबित होगी। जितना मुझ से हो सका मैंने कर दिया। आप अपना काम तो कर देना। एक बड़ा तिनका लकड़ी का पड़ा हुआ था। उसको अन्दर से खोदा और पैसे की थैली उसमें डाली और साथ उसमें पर्चा लिख डाला कि दरिया में चढ़ाव की वजह से नहीं आ सका। इस लकड़ी में डाल रहा हूँ और जिसको कफ़ील और गवाह बनाया था उसको कह रहा हूँ क वह इसको तुझ तक पहुँचा दे और लकड़ी को दरिया में डालकर खुद घर चला गया। दूसरी तरफ़ जिसने क़र्ज़ दिया था किश्ती के इन्तिज़ार में बैठा हुआ है जब कोई किश्ती नहीं आई तो कहने लगा कि अल्लाह को गवाह बनाया झूठा और वायदा ख़िलाफ़ निकला। जब वापस जाने लगा तो वह लकड़ी नज़र आई तो कहा चलो घर के लिए ईंधन तो हाथ आ गया। वह लकड़ी दरिया की मौजों को चीरती हुई उसके पास दरिया के किनारे खड़ी हो गई। यह उठाकर घर लाया फिर चीरने के लिए कुल्हाड़ा लेकर आया। दो तीन बार कुल्हाड़ी लकड़ी पर पड़ी तो छन छन करते हुए दरहम बाहर गिर गए और पर्ची भी उठाकर पढ़ी और उसके भी बक़ाया मिल गए।

कुछ ज़माने के बाद वह आदमी आया और कहने लगा कि मेरे साथ यह वाक़िया हुआ था और मैंने इस तरह कर दिया था। अब अगर वह रक़म न पहुँची हो तो यह ले लो तो उसने कहा अल्हम्दुलिल्लाह जिसको तुमने वकील बनाया और गवाह बनाया उसने वह रक़म भी पहुँचा दी और ईंधन भी पहुँचा दिया।

मेरे दोस्तो! हम दीन पर चलें, दीन का काम करें तो अल्लाह की कसम अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम हिफ़ाज़त करेगा। अब बताओ इस काम के लिए कौन कौन तैयार है? उधार नहीं हमें नक़द चाहिए। अब फ़रमाएं के कौन कौन चार महीने और चिल्ले के लिए नक़द तैयार है?

हमारी पैदाइश का मक़सद

मेरे भाईयो! हमें सारी दुनिया में दीन ज़िन्दा करना और सारी दुनिया के इन्सानों को दीन की तरफ़ बुलाना और सारी दुनिया के इन्सानों पर माल व जान ख़र्च करके उनको दोज़ख़ से बचाकर जन्नत पर लाना, इसके लिए अल्लाह ने हमें चुना है। यह उम्मत इस काम के लिए चुनी हुई है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल से यह काम मिला है।

उम्मते मुहम्मदिया की खुसूसियत

इसी वजह से यह उम्मत सबसे पहले जन्नत में जाने वाली बनेगी और हदीस शरीफ़ में आता है कि जन्नत वालों की एक सौ बीस सफ़ें हैं उनमें से अस्सी सफ़ें इस उम्मत की होंगी और चालीस सफ़ें बाक़ी नबियों की उम्मतों की होंगी। अल्लाह ने हमें यह काम दिया है। इस काम को ध्यान में रखते हुए कि दुनिया में कैसे हर हर मुसलमान अल्लाह के हुक्मों पर चलने वाला बन जाए, राइविन्ड में हर साल इज्तिमा होता है। इस साल भी 6-7-8 नवम्बर को इज्तिमा होगा। मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से और सारी दुनिया

से लोग आते हैं और फिर जमातें बन बनकर अल्लाह के रास्ते में फिरते हैं और लोगों को इस बात पर उठाते हैं कि भाई यह मेहनत है कि हमारी ज़िन्दगी अल्लाह के हुक्मों पर और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों पर आ जाए। हम भी सीख रहे हैं। आप भी इसके लिए निकलें और अल्हम्दुलिल्लाह फ़िज़ा और माहौल में आदमी आता है तो इन्सानों की ज़िन्दगियों में पलटा आता है। फ़िज़ा हो तो बात सुनने से ज़हन बनता है, तबियत असर लेती है लेकिन अमल की ताक़त माहौल से पैदा होती है। इसलिए सिर्फ़ इज्तिमा पर जाना ही नहीं बल्कि इस इज्तिमा से आगे अल्लाह के रास्ते में निलने के लिए इरादे भी करने हैं और जमातें बन बनकर जाएं, जमातों को लेकर जाएं और खुद भी अपने इरादे लेकर जाएं कि या अल्लाह हम ज़रूर तेरे रास्ते में निलकेंगे। अभी नाम नहीं लिखवाया तो घबराओ नहीं। अल्लाह से मांगते रहो इन्शाअल्लाह कभी न कभी वक़्त आएगा आप भी वक़्त लगाने वाले बनेंगे। आप ही में ऐसे लोग बैठे हैं जो सारी दुनिया में अल्लाह के दीन को फैलाने वाले बनेंगे, हिम्मत न हारो, हौसला न हारो।

दीन पर लाने की मेहनत एक अज़ीम मेहनत है

मेरे दोस्तो और भाईयो जब मुस्तहब मिट रहा हो तो तबलीग़ का काम मुस्तहब होता है अगर सुन्नतें मिट रही हों तो तबलीग़ का काम सुन्नत होता है और अगर वाजिबात मिट रहे हों तो तबलीग़ का काम वाजिब होता है अगर फ़राईज़ मिट रहे हों तो तबलीग़ फ़र्ज़ होती है। बाज़ार में कितने लोग आते हैं और नमाज़ी

कितने होते हैं? हाँलाकि हमारे बाज़ार में झलक हो रही है।

﴿لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله الخ.﴾
(سورة النور، پ. ١٨، ركوع ١٥، آيت ٣٦)

इधर अल्लाहु अकबर हो उधर दुकानें बन्द होना शुरू हो जाएं, किया हुआ भाई तो आवाज़ आऐ कि बड़े ने बुलाया जिसने दुकान दी है उसी ने बुलाया जिसने रिज़्क़ दिया उसने कहा आ जाओ मेरा शुक्र अदा करो, मेरे शुक्र के लिए मस्जिद में आजा। ये मुसलमानों के बाज़ार हैं। इसमें अज़ान के साथ ही यह आवाज़ आती हो कि चलो अल्लाह की तरफ़ चलो अल्लाह की तरफ़। सारे कारोबार, ज़िन्दगी थम जाती कि अल्लाहु अकबर की पुकार आ गई।

कितने हमारे भाई ऐसे हैं जिनको एक हफ़्ते में एक सज्दा नसीब नहीं सिवाए जुमा के और कितने ऐसे हैं जिनको जुमा भी नसीब नहीं सिवाए ईद के और कितने ऐसे होंगे जिनको ईद की नमाज़ भी नसीब नहीं।

फ़ैसलाबाद में गश्त करके हम दो आदमियों को मस्जिद में लाऐ हमारी जमात से बड़े मुतास्सिर हुए और कहने लगे कि हम ज़िन्दगी में पहली बार मस्जिद में आए हैं। हमने कहा इस मस्जिद में पहली दफ़ा? उन्होंने कहा नहीं नहीं, मस्जिद में ही पहली दफ़ा आए हैं। हमने कहा पहले कभी नहीं पढ़ी है। उन्होंने कहा नहीं पढ़ी है। चालीस साल के बीच की उम्र थी। हमने कहा जुमा की नमाज़ और ईद की नमाज़? उन्होंने कहा कि हमने न जुमा की न ईद की नमाज़ पढ़ी।

इससे ज़्यादा अजीब बात एक दिन बैतुल्लाह से बाहर निकला, सामने सड़क पार की, सामने टैक्सी थी। उससे कहा फ़लाँ जगह जाना है। जब उसके साथ बैठा तो वह हर सामने से गुज़रने वाले को गालियाँ दे रहा था तो मैंने सोचा इसको दावत देनी चाहिए। जब दावत देना शुरू की तो उसने कहा कि मैंने दस साल से बैतुल्लाह नहीं देखा तेरी क्या सुनूँ।

बैतुल्लाह से सड़क पार करके टैक्सी स्टैंड है बीच में एक फ़र्लांग का फ़ासला है। उसका दिल सख़्त हो चुका है कि जिस बैतुल्लाह को देखने के लिए सात बर्रे आज़मों के लोग खिंच-खिंच के आते हैं वह दस साल से बैतुल्लाह की ज़ियारत नहीं करता। उसकी बातें सुनकर मेरा चेहरा बदला तो उसने कहा परेशान क्यों होते हो मेरे जैसे यहीं पर सैकड़ों हैं। मेरे भाइयों दीन इस्लाम की क़दर करो। शीशे में थोड़ा सा दाग़ पड़ जाए तो नौकर से कहते हैं कि शीशे को साफ़ करो। दिल पर कितने बड़े-बड़े दाग़ पड़े हुए हैं उनको साफ़ नहीं करना है। कपड़ा मैला हो जाए तो उतारकर फेंक देते हैं और दिल को इतना गन्दा किया हुआ है कि इसमें गंदगियों की गटर है। दिल तो अल्लाह के लिए था। ﴿لا اتى فى الارض ولا فى السماء﴾ न मैं आसमान पर आता हूँ और न ज़मीन पर बल्कि मैं अपने बन्दे के दिल में आता हूँ। मुसलमान का दिल अल्लाह का अर्श है जिसमें अल्लाह मुहब्बत को उतारता है अगर हम अपने लिए गन्दा कपड़ा पसन्द नहीं करते तो अल्लाह के लिए गन्दा दिल क्यों पसन्द किया हुआ है? अपने दिल को बदलना होगा मेरे भाईयो।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सारी दुनिया के [illegible]

अल्लाह और रसूल का पैग़ाम लेकर जाना हमारी ज़िम्मेदारी है। सबसे पहले दीने इस्लाम की मेहनत ताजिरों ने की। सबसे पहला मुसलमान मक्का का बड़ा ताजिर है रेशम का कारोबार करने वाला है और सबसे पहले कलिमा पढ़ने वाला और उससे भी कलिमा पढ़ने वाली हज़रत ख़दीजातुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा है। वह मक्का की सबसे बड़ी ताजिर हैं।

इस्लाम को उरूज (तरक़्क़ी) और ज़वाल (गिरावट) दो तब्क़ों से मिला

सबसे पहले इस्लाम को ताजिरों से सहारा मिला है और अब ताजिर ही इसको तोड़ रहे हैं। दो तब्क़े इस्लाम को आबाद और बर्बाद करते हैं। एक ताजिर दूसरा ज़मींदार। ये दोनों मिलकर ही इस्लाम की तामीर करते हैं। मैं अपनी तरफ़ से नहीं हदीस से कह रहा हूँ। ﴿اذا تبايعتم بالعينه﴾ यहाँ पर ताजिर आ गया ﴿ورضيتم بالزرع﴾ यहाँ ज़मींदार।

﴿اخذتم آذان البقر وتركتم الجهاد سلط الله عليكم الذلة﴾

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम परेशान होकर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आते हैं कि ऐ ख़दीजा! मेरा बिस्तर उठा दे मेरी राहत और आराम के दिन ख़त्म हो गए। ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा कि क्या हुआ? (आपने फ़रमाया) मेरे रब ने मुझ से कहा है अपनी क़ौम को डराओ:

﴿قم فانذر وربك فكبر وثيابك فطهر﴾

(سورة المدثر پ ۲۹، آيت ۲،۳،٤)

अभी तक छिपकर दावत दी जा रही थी अब खुलकर क़ौम को दावत देने का वक़्त आ गया कि क्या करूं तीन सौ साठ (खुदाओं) को मानने वालों को कैसे दावत दूँ कि एक की मानो। दिल टूटा हुआ है परेशान और ग़मगीन हैं तो उस वक़्त हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा या रसूलुल्लाह! ﴿انت اول تدعو وانا اول اهتدى﴾ आप सबसे पहले दावत देने वाले हैं और मैं सबसे पहले कलिमा पढ़ने वाली हूँ। सबसे पहले एक ख़ातून ताजिर से इस्लाम को इज़्ज़त दी गई उसके बाद मक्का के बड़े ताजिर मर्द से इस्लाम को इज़्ज़त मिल गई। चारों खुलफ़ाए राशिदीन ताजिर हैं और अशरा मुबश्शरा सबके सब ताजिर हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक ही महफ़िल में बशारत दी।

﴿ابوبكر فى الجنة، عمر فى الجنة، عثمان فى الجنة، على فى
الجنة، طلحة فى الجنة، زبير فى الجنة، سعد فى الجنة، عبد
الرحمٰن فى الجنة، سعيد فى الجنة، ابو عبيده فى الجنة،

ये दस अशरा मुबश्शरा कहलाते हैं। इनको एक ही महफ़िल में जन्नत की बशारत सुनाई गई। ये दस के दस ताजिर हैं। यह इस्लाम के दस सुतून थे। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तिजारत सारे पाकिस्तान वाले मिलकर नहीं कर सकते। जब उनका इन्तिक़ाल हुआ तो तीन अरब दस करोड़ बीस लाख दीनार तरका छोड़ा है। दीनार काग़ज़ी नोट नहीं सोने के सिक्के हैं। आज के हिसाब से ज़रब व तक़सीम करो। एक हज़ार घोड़े, दस हज़ार बकरियाँ, एक हज़ार ऊँट फिर सोने की ईंटें। जब उनकी औलाद काट काटकर तक़सीम करने लगी तो काटते-काटते आरियाँ टूट गयीं और ये इन ऊपर के दस सहाबा में से हैं।

मुसलमान मुसलमान बनकर ज़िन्दगी गुज़ारें

हम कहते हैं कि आप भी इस्लाभ के सुतून बन जाएं, ताजिर बनकर न चलें बल्कि मुसलमान ताजिर बन कर चलें, ज़मींदार बनकर न चलें बल्कि मसुलमान ज़मींदार बनकर चलें, हाकिम बनकर न चलें बल्कि मुसलमान हाकिम बनकर चलें, प्रोफ़ेसर बनकर न चलें बल्कि मुसलमान प्रोफ़ेसर बनकर चलें। जिनके अन्दर दर्द व ग़म होते हैं। एक यह मैं ख़ुद भी दीन पर चलूँ दूसरों को भी दीन पर चलने की, दीन को फैलाने की दावत दूँ। यह मेरी ज़रूरत है, ज़रूरत से बढ़कर मक़सद है। हम कोई तहरीक नहीं चला रहे हैं या कोई जमात नहीं बना रहे है। बल्कि हम कहते हैं कि हर मुसलमान कलिमा पढ़ने के नाते इस्लाम पर चलने का पाबन्द है और ﴿لانبی بعدی﴾ मेरे बाद कोई नबी नहीं इस अक़ीदे की वजह से इस्लाम को दूसरों तक पहुँचाने का पाबन्द है और यह आगे पहुँचाना अल्लाह ने हमारे ज़िम्मे किया है, बाल बच्चों के हक़ अल्लाह ने बताए, माँ-बाप के हक़ अल्लाह ने बताए हैं, घर उसके मसाइल अल्लाह ने बताए हैं, हलाल कमाई के लिए अल्लाह ने कहा है और उसी अल्लाह ने कहा है कि मेरे दीन को दूसरों तक पहुँचाओ और उसमें क़ुर्बानी से हिचकिचाओ नहीं। यह हक़ मारना नहीं है कि बीवी बच्चे छोड़कर कहाँ जाएं?

तबलीग़ हर वक़्त और हर मौसम में करनी है

और यह तबलीग़ का काम है और अब नबी कोई नहीं आएगा, इसको पहुँचाना सीखिए। गर्मी हो सर्दी हो हम आ रहे हैं

ब्रेक की पुकार पर, हम जा रहे हैं। जब किसी मस्जिद में बेचारा मौलवी नमाज़ को देर से आता है तो सारी मस्जिद में नमाज़ियों ने शोर मचाया होता है। पाँच मिनट की देर बर्दाशत नहीं है औ यही नमाज़ी साहब किसी बड़े से मिलने जाते हैं तो एक घन्टा बाहर बैठा हुआ होता है कि अभी मुलाक़ात का वक़्त नहीं मिला। गाड़ी के इन्तिज़ार में पौन घन्टा स्टेशन पर बैठे हुए हैं लेकिन हमने जिस्म को इस तरफ़ का पाबन्द बनाया हुआ है और इस तरफ़ का पाबन्द नहीं बनाया है।

﴿بیوتی فی الارض المساجد﴾ अल्लाह कहता है मेरे घर ज़मीन में मस्जिदें हैं ﴿زارنی زوارها﴾ जो मेरे घर में आता है गोया मेरी ज़ियारत करता है ﴿فطوبی لمن تطهر لبیتی ثم زارنی﴾ खुशख़बरी सुना दो जो मेरे घर में आए मेरी ज़ियारत करता है।

﴿حق علی من زارنی ان یکرم زائره﴾ मेरे ऊपर वाजिब है कि मस्जिद में आने वाले की ज़ियारत करूँ अगर जिस्म का निज़ाम इस तरफ़ चला हुआ तो जितनी देर मस्दिज मे गुज़र जाए तो कोई परवाह न होगी। अदालत के सहन में तीन-तीन घन्टे बैठना गवारा है। हम च्युंट में थे दिसम्बर का महीना था। तेज़ बारिश और तेज़ हवाएं चल रही थीं। सर्दी सख़्त थी, हम गश्त करते-करते एक दुकान्दार से मिले तो कहने लगे मौलवी साहब इस वक़्त क्या कर रहे हो? जाओ मस्जिद में बैठ जाओ। (हम ने कहा) मस्जिद में कौन सा हीटर लगा हुआ है? वहाँ भी सर्दी है यहाँ भी सर्दी है। तुम यहाँ क्या कर रहे हो? जाओ घर में जाकर बीवी के साथ बैठ जाओ और चाय पियो, मज़े उड़ाओ। उसने कहा हमारी मजबूरी है कि दुकान खोलना है चाहे कोई आए या न आए। हमने कहा हमारी

भी मजबूरी है चाहे बारिश हो, सर्दी हो, गर्मी हो, बर्फ़ हो, भाप हो अल्लाह की आवाज़ लगानी है।

तबलीग़ इस उम्मत के ज़िम्मे है

हमारे अन्दर वह निज़ाम फेल हो चुका है जिसमें चैन व सकून के साथ अल्लह के अम्र लगे हुए हों। इसको हम ने सीखा हुआ नहीं। सीखने के लिए कहते हैं कि जाओ भाई अल्लाह के रास्ते में घूमो और फिरो ﴿ولانبی بعدی﴾ मेरे बाद कोई नबी नहीं ﴿لا امة بعد امتی﴾ मेरी उम्मत के बाद कोई उम्मत नहीं।

مثلی ومثل الانبیآء من قبلی کمثل رجل بنی بیتا فاجمله
واحسنه الا لبنة ترك خالية فجعل الناس يطوفون به ويعجبون
لهٗ يقولون الا وضعت هذه فانا لبنة الآخرة، وانا خاتم النبين.

हमारी मिसाल उस आदमी की सी है जिसने ख़ूबसूरत घर बनाया लेकिन उसमें एक पत्थर नहीं लगाथा सारे लोग कहते हैं कि घर तो बहुत ख़ूबसूरत है अगर एक पत्थर और लग जाता तो कामिल हो जाता। आपने फ़रमाया वह घर और वह महल नुबुव्वत का महल है और वह पत्थर मैं हूँ। मेरे अलावा नुबुव्वत का घर अधूरा है, नाक़िस है। मेरे बाद कोई नबी नहीं तुम्हारे बाद कोई उम्मत नहीं। पहले नबी आकर लोगों को दीन बताते थे, समझाते थे, सिखाते थे और अब कौन करेगा और यह ज़िम्मेदारी कौन लेगा?

इसलिए फ़रमाया ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ अब मेरी उम्मत यह काम करेगी जो मौजूद नहीं हैं उन तक मेरे हुक्मों को पहुँचाएगी।

लाहौर वाले, पिन्डी वाले, कराची वाले, पूरे आलम के मुसलमान मेरे पैग़ाम को ग़ैरों तक पहुँचाएंगे। यह काम नबी ने हमारे ज़िम्मे लगाया है। तबलीग़ी जमात ने नहीं लगाया, यह कोई नस्ली काम नहीं कि फ़लां क़बीले वाले करेंगे।

हमारी हालत

सदियाँ गुज़र गयीं कि उम्मत ने सिवाए कारोबार के और कोई मशग़ला ही न समझा। मेरे भाईयो! यह निकलकर समझने की चीज़ है कि सारी दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचे, सारे जहाँ में हिदायत फैले, सारी दुनिया दीन की तरफ़ आए। यह आपके ज़िम्मे है, मुसलमान ताजिर बनकर, मुबल्लिग़ ताजिर बनकर दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाओ, हर आने वाले को दावत दो और हर जाने वाले को भी दावत दो। आप हैरान होंगे कि अल्लाह ने ताजिरों में सलाहियत रखी है। अशरा मुबश्शरा ताजिर थे, अन्सार ज़मींदार थे, ज़मींदार में क़ुर्बानी के लिहाज़ से ज़्यादा ताक़त होती है, तदबीर और तंज़ीम में ताजिर आगे होता है।

इस्लाम पर मुश्किल वक़्त

एक ज़माना ऐसा आया है इस्लाम पर कि ऐसा लगता था कि अब इस्लाम जड़ से मिट जाएगा। यह छः सौ दस हिजरी की बात है जब बग़दाद की ईंट से ईंट बज गई और हलाकू ख़ां ने सारे बग़दाद को तहस नहस कर दिया। वह अज़ाब बनकर और क़हर बनकर ज़ाहिर हुआ और सन् 696 हिजरी में यह ख़ुद हलाक हो

गया। उस वक़्त यह नज़र आता था कि अब तीन चार दिन बाक़ी हैं थोड़ी देर बाद इस्लाम जड़ से मिट जाएगा।

तुर्कमानिस्तान के ताजिर या मिस्र के ताजिरों ने तातारियों में काम शुरू किया। उस वक़्त तातारी इतनी बड़ी ताक़त बन चुके थे कि कोई दुनिया की ताक़त उनको नीचे नहीं कर सकती थी और मशहूर हो गया था कि कोई कहता कि तातारियों को हार हो गई तो कहा जाता था कि तुम झूठ बोलते हो।

चंगेज़ ख़ां के चार बेटे थेः

1. जोज़ी बड़ा बेटा था।

2. बग़दाई

3. चुग़ताई

4. तुलोई

सबसे बड़े बेटे को उसने रूस की सलतनत दी थी। बग़दाई को अपना कैपिटल दिया था। चुग़ताई को क़राकक का कोई इलाक़ा दिया था और तुलोई को उसने तुर्कमानिस्तान का इलाक़ा दिया था और यह हलाकू तुलोई का बेटा था। बड़ा बेटा जोजी था उसका पोता पर्तगा था। तुर्कमानिस्तान के ताजिर या मिस्र के ताजिर पर्तगा पर मेहनत करके इस्लाम में लाए। कुछ लोग ज़ोर दे रहे थे कि तातार बुधमत में दाख़िल हो जाएं। दूसरे इसाई इतने छा चुके थे कि हलाकू ख़ां की बीवी वक़ूज़ा इसाई थी और उसका सिपहसालार कदूबग़ा इसाई था।

और क़रीब था कि सारे तातार में इसाई मज़हब फैल जाता। उसकी बीवी के साथ पहियों वाला गिरजा था। इसलिए हलाकू ख़ां

ने बीवी और सिपहसालार की वजह से मुसलमानों पर ज़्यादा ज़ुल्म किया। कुछ ताजिरों के दिल में ख़्याल आया के सौदा बाद में बेच देंगे पहले इस्लाम को फैला दें। यही बात आज के ताजिरों कह दें कि पहले इस्लाम फैला दें सौदा बाद में करेंगे। इसके बाद जितना इस्लाम फैला है यह सारा उन ताजिरों के खाते में जा रहा है। जिन्होंने तातार को मुसलमान किया। पुर्तगा ख़ां मुसलमान हो गया। अपने इस्लाम लाने के बाद इतने ज़ोर से दावत का काम चलाया कि पूरे रूस की तातार क़ौम मुसलमान होती चली गई। कुछ दिन पहले रूस के एक तातारी यूसुफ़ ख़ां से मुलाक़ात हुई तो मैंने उससे कहा कि तेरे दादा ने हम को मारा है क़त्ल किया है। तुर्कमानिस्तान की सारी क़ौम इस्लाम के साए-ए-रहमत में आ गए थोड़े से ताजिरों की बरकत से।

हमारे मक़सद ही बदल गए

मेरे भाईयो और दोस्तो! इस्लाम फैलाना और उस पर चलना भी हमारे ज़िम्मे है। इसको सीखने के लिए हमें घरों से निकलना पड़ता है और उस ज़माने में माँ-बाप ने हक़ माफ़ कर दिए थे कि जाओ दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाओ। जन्नत में साथ रहेंगे। दुनिया रहने की जगह थोड़ी है। यहाँ पर आख़िरकार जुदाई है, कितना ज़िन्दा रहें आख़िर मरेंगे।

﴿عش ما شئتم انکم میتون...﴾

हम में से कौन ऐसे हैं जिन्होंने अपने बच्चों को तैयार कर दिया कि जाओ दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाओ। हम

तैयारी कर रहे हैं डाक्टर बन जाओ, इन्जीनियर बन जाओ और ताजिर बन जाओ, कारोबार संभाल लो और वे तैयार कर रहे थे कि जाओ दुनिया में अल्लह का दीन पहुँचाओ, ख़ुदा का पैग़ाम पुहँचाओ

ताजिर अपने मक़सद को जानें

तो ताजिर बिरादरी तंज़ीम चलाना जानते हैं अगर आप हज़रात दीन के काम को भी अपना समझें तो अल्लाह तआला और भी ज़्यादा देगा और दुकानों की भी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा और साथ साथ इस्लाम भी फैल जाएगा। इसको तबलीग़ में निकलकर सीखो अल्लाह ने इस काम को दुनिया में ज़िन्दा कर दिया है।

हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० ने लिखा है कि अगर किसी काम को उठाना है तो लाहौर से उसकी शुरूआत करो। चाहे ख़ैर का हो या शर का।

﴾خیرکم فی الجاهلية خیرکم فی الاسلام.﴿

जो शर में आगे होता है वह दीन में भी आगे होता है। मुझे ख़्याल आया कि अल्लाह की दावत का काम मरकज़ निज़ामुद्दीन है और मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० के ज़माने में पूरा बर्रे सग़ीर एक ही था। शेरशाह सूरी कहा करता था कि मेरे ज़हन में है कि मैं लाहौर शहर को हटा दूँ और जड़ से मिटा दूँ। वह लाहौर की क़ाबलियत को समझता था। उसकी तीन ख़्वाहिशें थीं। एक लाहौर को ख़त्म करना, दूसरे इब्राहीम लोदी के मज़ार को बनाना, तीसरे एक बहरी बेड़ा तैयार करना। छः साल की हुकूमत के बाद अल्लाह ने उसको उठा लिया। यहूदी भी इस जगह की अहमियत

को समझते थे।

अल्लाह का अज़ाब बहुत दर्दनाक है

मेरे भाईयो! हम अपनी सोच और अपनी अक्ल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़बर से हटाकर इस्तेमाल कर रहे हैं। इसलिए दुनिया भी ख़राब हो रही है और आख़िरत भी ख़राब हो रही है। ﴿ولنذيقنهم من العذاب الادنى﴾ मैं दुनिया में थोड़ा अज़ाब देता हूँ ﴿دون العذاب الكبر﴾ बड़ा अज़ाब नहीं देता ﴿لعلهم يرجعون﴾ ताकि यह तौबा कर लें।

﴿لعذاب الآخرة اكبر. (سورة السجده پ ۲۱، رکوع ۱۵، آیت ۲۱)﴾

आख़िरत का अज़ाब बहुत ख़तरनाक और दर्दनाक है।

मेरे भाईयो और दोस्तो! बात दरअसल करने की इस वक़्त यह है कि हम सब के सब अल्लाह की तरफ़ पलटें। सारी दुनिया और आसमान की हुकूमत अल्लाह के हाथ में है। उसका शरीक कोई नहीं। मूसा अलैहिस्सलाम से बनी इस्राइल कहने लगे तेरा रब सोता है? मूसा अलैहिस्सलाम को ग़ुस्सा आ गया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ठहरो मैं इनको समझाता हूँ। तुम रात को पियाला लेकर खड़े हो जाओ। वे प्याला लेकर खड़े हुए जब आधी रात हो गई तो उनको ऊँघ आने लगी, अरे पियाला टूट जाएगा सोते हो? जब रात का आख़िरी वक़्त आया तो सो गए और पियाले गिर कर टूट गए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया तेरा रब रात या दिन किसी वक़्त सो जाए तो आसमान व ज़मीन व सूरज और चाँद के पियाले गिरकर टूट जाएंगे ओर तबाह हो जाएंगे।

जहन्नुम बहुत बुरा ठिकाना है

अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाता है:

لا یغرنك تقلب الذین كفروا فی البلاد، متاع قلیل ثم ماوٰھم
جھنم وبئس المھاد الخ... (سورۃ آل عمران پ.۳، رکوع ۱۱، آیت ۱۹۵)

आख़िरत में जहन्नुम काफ़िरों का ठिकाना होगा। यह बहुत ही बुरा ठिकाना है ﴿لهم من فوقهم ظلل من النار﴾ उनके ऊपर आग के पर्दे होंगे ﴿ومن تحتهم ظلل﴾ नीचे आग के पर्दे होंगे और आग के बड़े बड़े सन्दूक़ बनाए जाएंगे फिर काफ़िरों को उन सन्दूक़ों में रखा जाएगा। फिर उनके जिस्म में जितनी रगें हैं हर एक रग में कील गाड़े जाएंगे फिर एक और आग के ताबूत मे उस सन्दूक़ को डाला जाएगा फिर उसके बाद उनको जहन्नुम की दीवारों में जहन्नुम के पहाड़ों में, जहन्नुम की वादियों में गाड़ा जाएगा जिस तरह हम कील दीवार में ठूंसते हैं। हमेशा हमेशा की बर्बादी उनके लिए मुक़द्दर कर दी गई और काफ़िर के लिए भी यह क़ायदा बयान किया गया है ﴿وما كنا معذبين حتى نبعث رسولا﴾ उनके पास नबी आता है दावत देता है उनको समझाता है जब नहीं मानता, ठुकरा देता है तब जाकर अल्लाह की पकड़ आती है। जब वह नबी की बात मान लें तो अल्लाह मेहरबान होता है कामयाब कर देता है। जब न मानें तो अज़ाब देता है।

जन्नत में दीदारे इलाही की मुद्दत

हमेशा हमेशा की ज़िन्दगी। इमाम ग़ज़ाली रह० की एक

रिवायत (मुझे इसकी सनद का इतना पक्का पता नहीं है) कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का पहला दीदार होगा। आठ लाख बरस तक होता रहेगा। देख रहे हैं अपने रब को देख रहे हैं। अरे महबूबा के पास बैठा रहे रातें गुज़रती है पता नहीं चलता तो वह तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रब है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का रब, हज़रत मूसा का रब, ख़लील का रब, हज़रत यूसुफ़ का रब जिसे देखकर औरतों ने फल काटने के बजाए ﴿قطعن ایدیهن﴾ हाथ काट दिए वह रब कैसे हुस्न व जमाल वाला होगा कभी इसको भी तो सोचा करो। भाई सारी ज़िन्दगी दुकानों की ही दे दी। कहते हैं है कमाना फ़र्ज़ है, कमाना फ़र्ज़ है अरे उस रब का पड़ौस लेना इससे भी बड़ा फ़र्ज है। अल्लाह अपना दीदार करा कर हँसता हुआ सामने आएगा और कहेगा बता तेरा क्या हाल है? सोचो तो सही उसमें क्या लज़्ज़त होगी। जिस बाबे इश्क़ से वास्ता पड़ा हो उसे ख़बर होगी। भाई हमें तो पता नहीं है बस हदीस में पढ़ा इसलिए आपको सुना देते हैं। क्या वह मन्ज़र होगा जब अल्लाह तआला तुम्हें अपना दीदार करा रहा होगा और जन्नत की हूरें नग़में गा रही होंगी और तबारक व तआला फ़रमाएंगे कि ऐसा नग़मा कभी सना है? कहेंगे कि कभी नहीं सुना। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि ऐ दाऊद तू सुना। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम सुनाएंगे फिर अल्लाह तआला कहेंगे बताओ ऐसा कभी सुना, कहेंगे कभी नहीं सुना फिर कहेंगे ऐ मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब तू सुना। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह का कलाम सुनाएंगे। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कभी ऐसा सुना? कहेंगे कभी नहीं सुना

होगा। फिर अल्लाह तआला जन्नतियों को अपना कलाम सुनाएंगे तो जन्नती मदहोश हो जाएंगे। इस कलाम को सुनने में ऐसी लज़्ज़त होगी जिसे कोई बयान नहीं कर सकता। सुनाएगा अपनी ज़बान से सुनाएगा।

मेरे भाईयो! उस ज़िन्दगी की आज कोई दौड़ ही नहीं लगाता तो भाई यह मेहनत का मैदान है। हम आपको देकर जा रहे हैं। हमने एक महीना यहाँ पर काम किया, आप हज़रात के सामने जैसा चाहिए था, जैसे कहने का हक़ था वह हम से अदा नहीं हो सका, जो कर सकते थे वह तो नहीं किया लेकिन शायद अल्लाह तआला आप हज़रात के इखलास की बरकत से हमें भी क़बूल फ़रमा ले।

अरब नौजवान का अजीब वाक़िया

एक अरब जद्दा (सऊदी अरब) से आया था। बहुत बड़ा आलिम था। कहने लगा जानते हो मैं क्यों आया हूँ? मैंने कहा फ़रमाइए। कहने लगा मैं जद्दा में हूँ और हमारे नौजवान सऊदी लड़के अमरीका पढ़ने के लिए जाते थे लेकिन साथ मे उनके बड़े गन्दे इरादे होते थे और पता नहीं क्या शराब व ज़िना में डूबे रहते थे लेकिन कुछ वक़्त से मैं देख रहा हूँ कि इसमें बहुत से लड़के आते हैं उनकी दाढ़ियाँ रखी हुई होती हैं, पगड़ियाँ बंधी होती हैं और अल्लाह व रसूल की बातें करते हैं। रात को खड़े होकर रोते हैं। मैं हैरान हूँ कि ये जब हिजाज़ में थे तो बेदीन थे। अमरीका में गए तो और बे दीन होना था वहाँ से नबी की सुन्नत

को लेकर आ रहे हैं। यह क्या बात है? मैंने पूछा कि यह क्या चक्कर है तो उन्होंने बताया कि पाकिस्तान में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन को ज़िन्दा करने की एक मेहनत हो रही है। वहाँ से जमातें अमरीका आती हैं। हम उनके साथ वक़्त लगाते हैं। मैं भी वक़्त लगाने आया हूँ। मेरी उसकी एक साथ तश्कील हुई।

अरब शायर के शे'रों का तर्जुमा

वह नौजवान शायर था। राइविन्ड के सालाना इज्तिमा का मौक़ा आया। वह बहुत बड़ा शायर था। उसने मजमा देखा वह ठाठें मारता हुआ समुंद्र तो खड़ा हो गया और एक दम बे सोचे समझे ये शे'र कहना शुरू किया जिसका तर्जुमा है:

1. अल्लाहु अकबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन रौशन हो रहा है और इस जगह पर उसके नूर के आसार नज़र आ रहे हैं।
2. और अल्लाह की तरफ़ से रहमत और बरकत इन लोगों पर आ रही है जिन लोगों ने कसरत की वजह से ज़मीन तंग कर दी।
3. और घरों को छोड़कर आ रहे हैं। रातों को खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहे हैं और ऐसी बीवी को छोड़कर आ रहे हैं जिसके पाँव की पाज़ेब की आवाज़ भी उनके कानों में गूँज रही है लेकिन फिर भी सीने पर पत्थर रखकर आ रहे हैं।
4. घर छोड़ा, वतन छोड़ा, बीवी-बच्चे छोड़े, औलाद को छोड़ा,

माँ-बाप की जुदाई को बर्दाश्त किया। अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने के लिए और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूर को बुलन्द करने के लिए चल रहे हैं।

5. कभी बयान हो रहा है कभी तालीम हो रही है, कभी हिदायतें हो रही हैं और उनकी फ़िक्र की सवारियों में यह बात है कि सारी दुनिया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मेहनत का मैदान बन जाए।

यह शे'र उसने बे सोचे पढ़े जिनका तर्जुमा आप पढ़ रहे हैं। अभी इस साल फिर आया। यह हमारे राइविन्ड में एक छोटा सा इज्तिमा होता है। जिसमें सिर्फ़ चार माह वालों को बुलाया जाता है। पुरानों का जोड़ साल में एक दफ़ा दस दिन का होता है। वह अरब जिसका नाम अहमद था मैंने कहा शेख़ अहमद इसमें कुछ इज़ाफ़ा करो। इस पर कुछ और कहो। वह कसीदा जो आपने पढ़ा था कुछ इस पर और भी कहो वह बहुत उम्दा था। इस पर कुछ शे'र और बढ़ाओ। कहने लगाः

शे'रों का तर्जुमा

1. कि आज मैं देख रहा हूँ कि काम यहाँ तक पहुँच चुका है कि सुरैय्या सितारे से भी ऊँचा और फ़रक़द सितारे की खोपड़ी से भी ऊँचा (ये दोनों सितारे आसमान में हैं) कि तबलीग़ का काम इससे भी ऊँचा चला गया है।
2. इन्सान जो तरक़्क़ी करता है ऊँचाई की तरफ़ मेहनत करता है पैसों से नहीं, सोने से नहीं बल्कि मेहनत से तरक़्क़ी करता है।
3. जो अल्लाह के दीन की मदद करेगा अल्लाह (उसकी) मदद

करेगा और अल्लाह तआला उसके नसीब को चमका कर रखेगा।

4. कल को यानी क़यामत में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ और सहाबा के साथ होगा। ऐश की ज़िन्दगी का साया, हमेशा हमेशा की नेमतें।

मैंने कहा कि अरब अरब ही होते हैं।

ताना देना फ़साद का ज़रिया है

मेरे भाईयो! मुसलमान का ताना देने से बचो, चाहे कितना ही गिरा पड़ा मुसलमान हो लेकिन ताना मत दो। देखो सहाबा के ज़माने में एक बात नाज़ुक है लेकिन छेड़ ही दूँ। सहाबा के ज़माने में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में इख़्तिलाफ़ था लेकिन कोई ऐसे तानेबाज़ी नहीं करता था। कुछ मसाइल में इख़्तिलाफ़ था लेकिन कोई किसी पर ताना नहीं करता था।

हालात के बिगड़ने पर लोगों की मुख़्तलिफ़ बातें

एक किताब में मैंने एक बुज़ुर्ग का क़ौल पढ़ा। जब हालात बिगड़ते हैं तो एक बड़ा तब्क़ा यूँ कहता है भाई अब कुछ नहीं हो सकता। जैसे हालात चल रहे हैं उसी धारे में तुम भी चलो। एक छोटा सा तब्क़ा कहता है कि भाई कुछ टक्कर तो मारो न करने से कुछ करना बेहतर है तो यह छोटा तब्क़ा दीवानगी और पागलपन में मजनूँ बनकर टक्कर लेता है और हालात से टक्कर

लेता है तो यह बड़े बड़े इन्क़लाब को वजूद देता है। आज लोग कहते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली ज़िन्दगी नहीं चल सकती। आज इस पर काम नहीं हो सकते। अब इस पर ज़िन्दगी का चलना मुश्किल है। भाई तुम यूँ तो कहो हम टक्कर तो लेंगे और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले कलिमे की दावत देंगे। जब अल्लाह हमारी क़ुर्बानी को क़ुबूल करेगा। वह हवा चलाएगा तो इन्शाअल्लाह दिल पलटा खाते चले जाएंगे। हम इसके लिए मेहनत करेंगे ओर इसको वजूद में लाएंगे। इसके लिए अगर जिन लोगों ने वक़्त लगाए हुए हैं चार-चार महीने, चालीस-चालीस दिन अगर ये इज्तिमा के बाद अपनी अपनी मस्जिदों में बैठ जाएं और रोज़ाना इस की दावत दें, रोज़ाना इस की मेहनत करें। लोगों को इसके लिए तैयार करें तो बहुत फ़ायदा होगा तो पेशावर ऐसी जगह है कि यहाँ से पूरी दुनिया में जमातें जा सकती हैं। आपके यहाँ तो लोगों की मेहनत है और दीन से ऐसी निस्बत है कि अगर इन लोगों पर मुहब्बत से मेहनत की जाए तो सारी दुनिया में दीन आप फैला सकते हैं लेकिन इसकी थोड़ी तर्तीब है कि भाई हम निकलकर सीखें। तीन तीन दिन के लिए निकलना हो, चार-चार महीने चालीस-चालीस दिन के लिए निकलना हो। जब अल्लाह इतनी तौफ़ीक़ दे दे फिर बाहर मुल्कों में जाना हो। अल्लाह ने थोड़ी सी नक़ल व हरकत से बाहर मुल्कों में मदरसे खुलवा दिए। मस्जिदें बन गयीं और अल्लाह के फ़ज़ल व करम से ऐसे ऐसे नौजवान जो सारी रात क्लबों में नाचते थे दाढ़ियाँ रखी हुई हैं पगड़ियाँ बाँधी हुई हैं और अल्लाह और रसूल की बात करते हैं।

सहाबा के इख़्तिलाफ़ के बावजूद आपस की मुहब्बत

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास एक आदमी आया कि माविया रज़ियल्लाहु अन्हु "वितर" की एक रक्अत पढ़ते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास ने कहा चुप रहो वह आलिम हैं। ख़बरदार! बात मत करो। यह तीन रक्अत पढ़ते थे। वह एक पढ़ते थे लेकिन झगड़ा नहीं किया।

मेरे भाईयो! एक दूसरे को ताने मत दो। अल्लाह ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक-एक सुन्नत को ज़िन्दा कर रखा है। इसलिए आपके सारे तरीकों को उम्मत में फैला दिया। किसी को ताना मत दो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ही सारी चीज़ें साबित हैं।

सुन्नत में इख़्तिलाफ़ की अजीब हिकमते रब्बी

अल्लाह का वास्ता इन पर न झगड़ो। अल्लाह को अपने हबीब की एक-एक अदा पसन्द थी। इसलिए किसी मुसलमान की जमात को एक सुन्नत दे दी किसी जमात को दूसरी सुन्नत दे दी। एक फ़िक्ह वालों को रफ़अ-यदैन (नमाज़ में बार बार हाथ उठाना) करना सिखा दिया। एक को छोड़ना सिखाया क्योंकि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों काम किए हैं। अल्लाह को अब पसन्द नहीं आया कि मेरे हबीब का एक तरीक़ा रहे दूसरा न रहे लिहाज़ा दोनों तरीक़े ज़िन्दा किए। जिसकी

एक-एक अदा पसन्द थी लिहाज़ा उसको तक़सीम कर दिया तो इस पर लड़ते क्यों हो? यह कोई लड़ने की चीज़ नहीं है। अपने नफ़्स से लड़ो। तेरा सबसे बड़ा दुश्मन तेरा नफ़्स है जो तेरे अन्दर बैठा हुआ है। सारे तरीक़े अल्लाह को अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पसन्द थे। सारे ज़िन्दा कर दिए कभी आमीन ऊँची कही कभी पस्त कही। अल्लाह तआला ने दोनों तरीक़े ज़िन्दा कर दिए ताकि मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक-एक सुन्नत ज़िन्दा रहे।

इस्लाम और हुस्ने अख़्लाक़

अस्सलामु अलैकुम को रिवाज दो और एक दूसरे का इकराम करो, एक दूसरे से मुहब्बत करो, एक दूसरे को हदिया दो, एक दूसरे की तारीफ़ करो और तोड़ने वाले से जोड़ो, महरूम करने वाले को अता करो, ज़ुल्म करने वाले को माफ़ करो, बुराई करने वाले से अच्छाई करो। अल्लाह की क़सम सारी दुनिया का बातिल अंडे के छिलके की तरह टूट जाएगा अगर ये सिफ़ात अपने अन्दर पैदा कर लो, ये सिफ़ात हैं सिफ़ाते नुबुव्वत, तो हम समझेंगे कि हमारा आना ठिकाने लग गया नहीं हुआ तो मेहनत करते रहो अल्लाह तआला कभी पहुँचा देगा और अल्लाह से मांगो कि या अल्लाह! तू हमें इस काम के लिए क़ुबूल फ़रमा ले। यह नबियों वाला काम है। हम इसके क़ाबिल नहीं थे। आज अल्लाह ने हमें यह हीरा दे दिया है। हम नाक़दरे हैं जैसे बच्चे को हीरा दिया जाए तो उसको समझ नहीं होती। जैसे बच्चे के हाथ में दस करोड़ रुपए का चैक दे दिया जाए तो चैक की क़ीमत नहीं जानता।

जलेबी की क़ीमत जानता है। वह चैक को फेंक देगा। जलेबी को खा लेगा हाँलाकि उसे क्या ख़बर है कि उस चैक के ऊपर कितने कितने बड़े-बड़े महल्लात हैं। यही हमारा हाल है। हमें आज दीन की ख़बर नहीं है। हम इस मिठाई को देख रहे हैं जो शैतान ने बनाकर दे दी है।

तबलीग़ के फ़ायदे

तो मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह आपको खुशहाल रखे, शादाब रखे अगर आप मेहनत करने वाले बन जाओगे तो तुम्हारी दुनिया भी बनेगी और आख़िरत भी बनेगी। आज हमारा (यहाँ का) आख़िरी दिन था। कल हमारी वापसी है। ऐसी मुहब्बत करने वाले न हमने कहीं देखे न हमने कहीं सुने। ऐसे ध्यान से सुनने वाले हमने कहीं भी नहीं देखे न हमने कहीं सुने। इतना अर्सा गुज़र गया सोलह सत्रह साल से फिर रहे हैं लेकिन मेरे भाईयो! जिस मुहब्बत से आप नाम देते हैं ऐसा मजमा कहीं नहीं देखा एक तो यह दर्खास्त है कि सब भाई आख़ीर तक बैठे रहें। यह मजलिसें फिर होंगी या नहीं और दोबारा फिर मिलना अल्लाह के इल्म में है फिर होगा या नहीं होगा तो इसलिए दुआ तक सारे बैठे रहें और अल्लाह के रास्ते में निकलने के लिए नक़द नाम दो ताकि इस नुबुव्वत वाली ज़िन्दगी और इस जन्नत वाली ज़िन्दगी को लेने के लिए हम नक़द तैयार हैं तो बताओ भाई कौन-कौन तैयार है? अल्लाह तुम्हें खुश रखे।

○ ○ ○

बेहतरीन उम्मत

نحمده ونصلی علی رسول الکریم، امابعد.

मेरे मोहतरम दोस्तो अल्लाह जल्ले जलालुहू अम्मानवालुहू ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सारी काएनात के लिए रहमत और सारी काएनात के लिए रसूल बनाकर भेजा है और जैसे आपको सारी काएनात पर अल्लाह तआला ने फ़ज़ीलत अता फ़रमाई है और सारी काएनात पर आपको चुना है इसी तरह मेरे भाईयो अल्लाह पाक ने इस उम्मत को भी सारी उम्मतों से अफ़ज़ल और तमाम उम्मतों से आला उम्मत बनाया है।

तुम सबसे बढ़िया उम्मत हो, तुम सबसे बेहतर उम्मत हो। जितनी भी पहली उम्मतें गुज़री हैं उनमें अल्लाह पाक ने तुमको सबसे अफ़ज़ल बनाया है। मेरे भाईयो सोचने की बात है कि हमें यह फ़ज़ीलत क्यों दी गई? साचने की बात है कि अल्लाह ने हमें यह फ़ज़ीलत क्यों अता फ़रमाई?

मेरे भाईयो! किसी चीज़ की फ़ज़ीलत या किसी चीज़ की कीमत लगती है उसकी किसी ख़ूबी पर लगती है, किसी ओहदे पर लगती है। इस उम्मत को अल्लाह पाक ने नबुव्वत वाला काम अता फ़रमाया, इस उम्मत को अल्लाह पाक ने नबियों वाली मेहनत अता फ़रमाई और इस उम्मत के मुक़द्दर में अल्लाह पाक

ने घरों को छोड़कर सारे आलम में हिदायत के पैग़ाम को पहुँचाना और सारे आलम में दर-ब-दर फिरना और ठोकरें खाना और बीवी बच्चों की जुदाई सहना और माँ-बाप की जुदाई सहना और अपने वतन से दूर और मेरे भाईयो वतन से दूर होकर परदेसी की सूरत में मरना भूख प्यास की हालत में चलना इस उम्मत की शान बनाया कि यह उम्मत नबियों की शान की तरह मेरे दीन को लेकर दर-ब-दर ठोकरें खाएगी और मेरे नाम की तरफ़ दावत देगी और मेरी तरफ़ पुकारेगी। इस पर मैं इस उम्मत को सारे आलम का सरदार बना रहा हूँ।

इसलिए रबी बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रुस्तम ने पूछा क्यों आए हो हमारे मुल्क में? क्या तुम्हें भूख ने निकाला है या तुम्हें मुल्क ने निकाला है या तुम्हें माल ने निकाला है, किस चीज़ के लिए हमारे पास आए हो? पैसा चाहते हो तो हम देते हैं, मुल्क चाहते हो तो जितना जीत चुके हो यही ले लो। वापस चले जाओ। तुम्हारे अमीर को दुगना दे देंगे। तुम्हें भी इतना देंगे, कपड़े भी दे देंगे और तुम वापस चले जाओ और इसी पर बस कर लो। रबी बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह जज़ाए ख़ैर दे।

हर क़ुर्बानी के बाद दीन ज़िन्दा होता है

मेरे भाईयो! अल्लाह पाक तमाम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को जज़ाए ख़ैर दे जो बीवी-बच्चों की जुदाइयाँ, माँ-बाप की जुदाइयाँ, कारोबार की जुदाइयाँ, अपनी ज़ात की क़ुर्बानियाँ, अपनी हर चीज़ की क़ुर्बानी देकर सारी उम्मत को क़यामत तक के लिए

बता गए कि दीन का काम किस तरह किया जाता है। बूढ़े भी करके दिखा गए, जवान भी करके दिखा गए, शादी-शुदा भी करके दिखा गए, ग़ैर शादी-शुदा भी करके दिखा गए, बच्चे भी करके दिखा गए, औरतें भी करके दिखा गयीं, बूढ़ी औरतें भी करके दिखा गयीं, जवान औरतें भी करके दिखा गयीं कि दुनिया में दीन को किस तरह ज़िन्दा किया जाता है। अपने जज़्बात को इस तरह पीसा जाता है और अपने अहसासों को इस तरह क़ुर्बान किया जाता है। हम क़यामत तक के लिए तुम्हें नमूना देकर जा रहे हैं। अब तुम्हारे लिए कोई हुज्जत (वजह) बाकी नहीं रहेगी कि हम दुनिया में कैसे दीन फैलाते और दीन का काम दुनिया में कैसे करते? हमें यह परेशानी थी, हमें वह परेशानी थी।

इस उम्मत की बअ़सत (भेजने) का मक़सद

मेरे भाईयो! सहाबा ने सारी उम्मत को दिखा दिया। हज़रत रबी बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, "भाई रुस्तम! न मुल्क ने हमें निकाला है न माल ने ﴿بعثنا﴾ बअ़सत का लफ़्ज़ अल्लाह नबियों के लिए इस्तेमाल करता है ﴿هو الذى بعث فى الاميين رسولا﴾ बअ़सत का लफ़्ज़ नबियों के लिए आया है और यहाँ रबी बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने लिए इस्तेमाल कर रह हैं। इस उम्मत के लिए सहाबी बअ़सत का लफ़्ज़ इस्तेमाल कर रहा है ﴿ان الله ابعثنا﴾ हमें हमारे रब ने मबऊस किया है, भेजा है क्यों?

﴿لنخرج الى عبادة رب العباد﴾

लोगों को लोगों की बन्दगी से निकालकर लोगों के रब की

बन्दगी पर डाल दें। सारी काएनात का पालने वाला एक अकेला अल्लाह है न मुल्क न माल न ज़मीन न आसमान न खेती न तिजारत न कारोबार न हुकूमत न बाप पालने वाला न माँ पालने वाली न भाई पालने वाला न तिजारत पालने वाली अकेला अल्लाह है जो सारी काएनात के निज़ाम को चला रहा है।

خلق السموٰت والارض فی ستة ایام ثم استوی علی العرش
یغشی الیل النهار یطلبهٗ حثیثاً والشمس والقمر والنجوم
مسخرٰت بامره الا له الخلق والامر تبارك الله رب العالمین. ٥
(سورۃ یٰسین، پ۔۲۳)

उस अल्लाह के हम दा'ई (दावत देने वाले) हैं और उस अल्लाह का तार्रुफ़ करा रहे हैं जिस अल्लाह ने ज़मीन व आसमान को छः दिन में बनाया फिर जाकर अर्श पर जलवा अफ़रोज़ हुआ। दिन और रात का निज़ाम चलाया और सूरज को निकाला, रात को चाँद निकाला।

﴿والقمر قدرنٰه منازل حتی عاد کالعرجون القدیم﴾ (سورۃ یٰسین، پ۔۲۳)

हमने चाँद की मंज़िलें तय कीं और इस तर्ज़ पर चाँद की मंज़िलों को तय किया, यह कभी घटता है कभी चढ़ता है, कभी डूबता है कभी पतला होते होते खजूर की टहनी की तरह हो जाता है ﴿حتی عاد کالعرجون القدیم﴾ और सूरज का निज़ाम उसके साथ चलाया।

﴿لا الشمس ینبغی لها ان تدرك القمر ولا الیل سابق النهار وکل
فی فلك یسبحون٥﴾ (سورۃ یٰسین، پ۔۲۳)

और हमने सूरज का निज़ाम चलाया, सूरज और चाँद को अपने अपने मदार में चलाया। सूरज के डूबने में और निकलने में

जल्दी या देर नहीं हुई। कभी चाँद के निकलने में जल्दी या देर नहीं हुई। कभी सितारों के चमकने में जल्दी या देर नहीं होती। मैं अकेला चला रहा हूँ।

हम अल्लाह के सफ़ीर हैं

मेरे भाईयो! मुसलमान अल्लाह का सफ़ीर था। यह तिजारत का सफ़ीर नहीं था कि अपनी तिजारत की शोहरत करता और खेती की शोहरत करता और अपनी हुकूमत की शोहरत करता। रबी रज़ियल्लाहु अन्हु का बोल देखो। अल्लाह रबी रज़ियल्लाहु अन्हु को जज़ाए ख़ैर दे जो सारी उम्मत को मक़सद बताकर जा रहे हैं। क्यों आए हो इस दुनिया में? किस लिए भेजे गए हो इस दुनिया में, न तुम खेती करने वाले हो, न तुम ताजिर बनकर आए, न तुम हाकिम बनकर आए। अरे तुम तो लोगों को लोगों की ग़ुलामी से निकालकर अल्लाह की ग़ुलामी में डालने आए हो और अपनी गर्दनों को अल्लाह की ग़ुलामी में देने के लिए आए हो कि हमारा मालिक, ख़ालिक़, राज़िक़ और मुइज़्ज़ (इज़्ज़त देने वाला), मुज़िल्ल (ज़िल्लत देने वाला), मुहयि और राज़िक़ एक अकेला अल्लाह है जो सारी काएनात के निज़ाम को चला रहा है अगर सूरज को बीच में खड़ा कर दे तो तो रात नहीं आ सकती अगर रात को बीच में खड़ा कर दे तो दिन नहीं निकल सकताः

قل ارأيتم ان جعل عليكم اليل سرمداً الى يوم القيمة من الله غير
الله ياتيكم بضياء افلا تسمعون○

मुझे बताओ अगर तुम्हारा रब रात को खड़ा कर दे और एक

वक़्त आगे आएगा कि अल्लाह तआला रात को खड़ा कर देगा। सूरज को कहा जाएगा मत निकलो, रात को कहा जाएगा मत ढल, तेरा अंधेरा चलता रहे, सारी काएनात की ताक़त आज सूरज को नहीं निकाल सकती कि तेरे रब का अम्र मुतवज्जेह हो चुका है अरे रात रुक जा और ऐ सूरज मत उग, आज कोई नहीं निकाल सकता। अल्लाह तआला दिखा रहा है कि मैं अगर रात को रोक दूँ तो कौन सी ताक़त है जो तुम्हारे लिए सूरज को लाए। तुम देख सको कुछ तो सोचो, कुछ तो देखो, कुछ तो ग़ौर करो। मैं तुम्हें कैसी-कैसी निशानियाँ बतलाकर अपनी तरफ़ बुला रहा हूँ। मेरी तरफ़ तो आओ ﴿ففروا الى الله﴾ ऐ मेरे बन्दों मेरी तरफ़ को दौड़ो। ﴿ففروا الى الله﴾ मेरी तरफ़ को आओ।

ऐ मेरे बन्दे मुझे तुझ से मुहब्बत है

﴿يا ابن آدم اني لك محب فبحقي عليك كن لي محبا﴾

ऐ मेरे बन्दे मुझे तुझसे मुहब्बत है तुझे मेरी इज़्ज़त की क़सम मेरे हक़ की क़सम तू भी तो मेरे से मुहब्बत कर। तू किसके पीछे दौड़ता है।

मैंने तुझे परवान चढ़ाया, पाला पोसा, जवान किया, रिज़्क़ दिया, अक़्ल और समझ दी अब बीवी की ख़ातिर मुझे ठुकराता है और किसी की ख़ातिर तू मेरे अम्र को तोड़ता है, मेरे अम्र से तुझे हुकूमत मिली, मेरा अम्र तेरी हुकूमत को फ़ना की घाट उतारेगा, मेरे अम्र से तुझे इज़्ज़त मिली मेरा अम्र तुझे मौत की वादी में भटका देगा, मेरो अम्र से तुझे सेहत मिली और मेरा अम्र तुझें

बीमारी की मुसीबतों में धकेल देगा तू किधर भागता है मुझे छोड़कर?

इन्सान की हिफ़ाज़त का ग़ैबी निज़ाम

मैंने तुझे पैदा किया, परवान चढ़ाया और सारे आलम से बेहतर बनाया और तुझे इस तर्ज़ पर उठाया और परवान चढ़ाया अपने फ़रिश्तों को तुम्हारी हिफ़ाज़त के लिए लगाता हूँ अगर तुम्हारी हिफ़ाज़त के लिए मेरे फ़रिश्ते न उतरें तो तुम्हें सारी मेरी छुपी हुई बलाएं चीर फाड़कर खा जाएं, मेरे फ़रिश्ते हिफ़ाज़त में चल रहे हैं और यह मरो ग़ैबी निज़ाम है जो तुम्हें आफ़तों से बचा रहा है और आसमानी बलाओं से बचा रहा है, छिपे हुए फ़ितनों को तुमसे दूर कर रहा हूँ और तुमसे सारी बलाओं को धकेल रहा हूँ फिर तुम कहाँ छोड़कर मुझे भागते हो और मेरे ग़ैर की तरफ़ मुतवज्जेह होते हो। मैं ही अकेला हूँ, तन्हा हूँ ﴿الصمد الحمد﴾ मैं ही अकेला हूँ कोई मेरा बदल नहीं कि ﴿لا مثال﴾ कोई मिसाल नहीं कि ﴿لا شريك﴾ कोई मुशाबेह नहीं ﴿لا نه﴾ कोई मेरे मुक़ाबले में नहीं, कोई मेरे सामने नहीं आ सकता। मैं ही अकेला तन्हे तन्हा हूँ जो तुम्हें अदम से वजूद दे रहा हूँ। सोच तो सही तू क्या था।

﴿هل اتى الانسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكوراً.﴾

(سورة الدهر ب. ٢٩)

जब तेरा न ज़मीनों में ज़िक्र था न आसमान की चक्की को चलाया, सूरज चाँद की गर्दिश को चलाया और तुझे मिट्टी में नुत्फ़ा बनाया।

من سلالة من طين ثم جعلناهُ في قرار مكين ثم خلقنا النطفة علقة فخلقنا العلقة مضغة فخلقنا المضغة عظاماً فكسونا العظام لحما ثم انشأنهُ خلقاً.

फिर तुझे नुत्फ़ा बनाकर माँ के पेट में ठहराया फिर तुझे ख़ून से बदला फिर तुझे लोथड़े में बदला तुझ पर गोश्त चढ़ाया फिर तुझे एक नई ख़ूबसूरत शक्ल दी। फिर भी तू मुझ से भागता है।

हाँलाकि ﴿يا ابن آدم ان ذكرتني ذكرتك﴾ तू मुझे याद करता है मैं तुझे याद करता हूँ ﴿ان نسيتي ذكرتك﴾ तू मुझे भूल जाता है मैं फिर भी तुझे याद करता हूँ और मैं तेरी तरफ़ निगाह लगाए रखता हूँ कि मेरा बन्दा मुझे भूला हुआ है उसे मोहलत दो। उसे ढील दो शायद यह मेरी तरफ़ कभी लौटे। मैं मौत तक तुझे मोहलत देता चला जाता हूँ, आज आ जाए, आज आ जाए। या अल्लाह तेरी रहमत अल्लाहु अकबर मेरे बनाए समुंद्रों में जोश उठता है मेरी ज़मीन में ज़लज़ले आते हैं।

शिर्क बड़ा ज़ुल्म है

﴿تكادو السمٰوٰت يتفطرن منه وتنشق الارض تخر الجبال.﴾

ज़मीन फटने को आती है, आसमाने टुकड़े-टुकड़े होने को होता है पहाड़ रेज़ा-रेज़ा होने को हो जाते हैं जब तुम मेरा शरीक ठहराते हो। मैं हूँ ﴿يمسك السمٰوٰت والارض ان تزولا﴾ जो ज़मीन आसमान को गिरने से रोक लेता हूँ कि नहीं नहीं मुझे गिराना है अभी मत गिरो। मैं इन्सान का इन्तिज़ार कर रहा हूँ। उसकी तवज्जेह का मुन्तज़िर हूँ और कहता है।

﴿ما من يوم الا والبحر يستاذن ربه في ان يغرق ابن ادم.﴾

समुंद्र में जोश आता है ऐ मेरे रब मुझे इजाज़त दे मैं तेरे नाफ़रमान इस आदमी को खड़े-खड़े निगल जाऊँ, निशान मिटा दूँ और अल्लाह ने कुछ लोगों को निगल जाने का हुक्म दिया। ऐ ज़मीन निगल जा और ज़मीन ने पकड़ा।

﴿وهو يتجلجل في الارض الى يوم القيامة﴾

और क़यामत तक ज़मीन में धंसता जा रहा है।

मुश्रिकीन की पकड़ और रहमते इलाही

﴿منهم من خسفنا﴾ किसी पर मेरा अम्र आया और मैंने ज़मीन में धंसाया है, किसी पर मेरा अम्र आया ﴿منهم من اغرقنا﴾ किसी पर मेरा अम्र आया मेरे पानियों ने उन्हें ग़र्क़ किया है, किसी पर मेरा अम्र आया ﴿منهم من اخذته الصيحة﴾ फ़रिश्ते की चीख़ ने इन्सान के कलेजे को फाड़ दिया और उन्हें हलाक व बर्बाद कर दिया।

الم تر اكيف فعل ربك بعاد ٥ ارم ذات العماد ٥ وفرعون ذى الاوتاد ٥
الذين طغوا فى البلاد ٥ فاكثروا فيها الفساد ٥ فصب عليهم ربك
سوط عذاب ٥ ان ربك لبالمرصاد ٥ (سورة الفجر ب ٣٠)

देखो तेरे रब ने क्या सुलूक किया क़ौमे आद के साथ उन जैसा पैदा नहीं किया। बच्चा पैदा होता था, बालिग़ होने में तीन सौ बरस लग जाते थे। तीन सौ बरस में उनका बच्चा बालिग़ होता था। हज़ार हज़ार बरस की उम्रें थीं।

﴿لم يخلق مثلها في البلاد.﴾

ऐसा कोई मैंने पैदा नहीं किया।

टक्कर ली अल्लाह की ज़ात से, अल्लाह की ज़ात पर क़ुर्बान जाएं, बन्दों से मुहब्बत है, नबियों को भेजता है और अल्लाह को पता है कि इस क़ौम में कोई ईमान नहीं लाएगा। उसकी ख़ातिर भी नबी आ रहा है कि जाओ समझाओ, ऐसी मुहब्बत लोगों से ﴿ان نسیتنی ذکرتك﴾ जब तू भूल जाता है तो मैं फिर भी याद रखता हूँ और ऐसी मुहब्बत बन्दों से कि समुंद्र इजाज़त चाहे कि ग़र्क़ कर दूँ, ज़मीन इजाज़त चाहे ऐ अल्लाह कि धंसा दूँ, फ़रिश्ते इजाज़त चाहें कि हलाक कर दें लेकिन वह करीम ज़ात मेरे भाईयो! नाफ़रमानों से इतनी मुहब्बत करती है तो फ़रमांबरदारों से मुहब्बत का क्या अन्दाज़ा होगा? अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿ان کان عبدکم فشانکم به﴾

अगर ये तुम्हारे बन्दे हैं और तुम्हारे पैदा किए हुए हैं तो उन्हें पकड़ लो ओर उन्हें हलाक कर दो।

﴿فان کان عبدی فمنی والی عبدی.﴾

और अगर यह मेरा बन्दा है तो तुम बीच में से हट जाओ। मैं बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार कर रहा हूँ। ﴿ان اتانی نهاراً قبلته﴾ अगर दिल में भी तौबा का ख़्याल आ गया तो मैं इसकी तौबा कबूल कर लूँगा।

ऐ मेरे बन्दे आ जा तेरा इन्तिज़ार है

یا ابن آدم لو بلغت ذنوبك عنان السماء ثم
استغفرتنی غفرت لك ولا ابالی.

ऐ मेरे बन्दे मायूस न हो अगर तेरे गुनाह ज़मीन को भर दें

और ज़मीन की वुसअतों को भर दें और फिर अगर ऊपर उठते चले जाएं और फिर ख़ला को भी भर दें और ख़ला से निकलकर आसमाने के किनारे तेरे गुनाह छूने लगें फिर तुझे नदामत आ जाए और तेरे आँसू निकल जाएं और तू तौबा के हाथ उठाए मैं ऐसा करीम, ऐसा सख़ी, मैं ऐसा रहीम ﴿غفرت لك ولا ابالي﴾ मैं तेरे सारे गुनाहों पर क़लम फेर दूँगा और मुझे कोई नहीं पूछ सकता, मैं तेरी तौबा का मुन्तज़िर हूँ कि तू मेरी तरफ़ को झुके मेरी तरफ़ को आए, माँ से ज़्यादा मुझे मुहब्बत है तेरे बाप से ज़्यादा मुझे मुहब्बत है तेरे से, तू सोच तो सही मैंने तुझे कैसे बनाया? मेरे भाइयो! अल्लाह से ज़्यादा रहीम, अल्लाह से ज़्यादा करीम और अल्लाह से ज़्यादा मुहब्बत करने वाला कोई नहीं, सबसे रहीम ज़ात और सबसे करीम ज़ात और सबसे मेहरबान ज़ात अल्लाह की ज़ाते आली है, अल्लाह जल्ले जलालुहू की ज़ाते आली और अल्लाह जैसी रहीम ज़ात ﴿يا ابن ادم لك محب﴾ ऐ मेरे प्यारे बन्दे मैं तेरे से मुहब्बत करता हूँ तुझे मेरी तरफ़ आना है।

तेरी तरफ़ को नबियों का सिलसिला चलाया और एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया अलैहिमुस्सलाम को भेजा कि जाओ मेरे भटके बन्दों को मेरे से जोड़ो कि ये मेरे से जुड़ें कि सबसे ज़्यादा, सबसे बड़ी क़ुदरत अल्लाह पाक की इन्सान के बनने में इस्तेमाल हुई है। ज़मीन व आसमान को छोटी क़ुदरत से पैदा किया, फ़रिश्तों को, जन्नत को, दोज़ख़ को छोटी क़ुदरत से पैदा किया।

ऐ मेरे बन्दे अपनी हक़ीक़त पर ग़ौर कर

लेकिन इन्सान को बहुत बड़ी क़ुदरत से पैदा किया ﴿من منى

﴿يمنى﴾ टपकी हुई मनी से ﴿من سلالة من طين﴾ खटकती हुई मिट्टी से, ﴿من نطفة امشاج﴾ मर्द औरत का पानी ﴿الم يك نطفة من مني يمنى﴾ किया तू टपकती हुई मनी का कतरा नहीं है ﴿من ماء مهين﴾ गन्दा नापाक पानीः

﴿وقد خلقنا الانسان من سلالة من طين﴾

तुम्हें खटकती मिट्टी से बनाया और बनाकर वजूद दिया, माँ के पेट को तेरे लिए करार बनाया।

﴿يا ابن آدم جعلت لك قراراً فى بطن امك﴾

ऐ मेरे बन्दे माँ के पेट में तुझे महफ़ूज़ जगह अता फ़रमाई।

﴿وغشيتك فى غشاء لان لا تفزع من ظلمت﴾

रहम और तुझे पर्दों में लपेटा कि माँ के अन्धेरों से और अन्दर के अंधेरों से तुझे ख़ौफ़ महसूस न हो, मैंने तुझे पर्दों में लपेटा ﴿فى ظلمات الثلاث﴾ तीन पर्दे ﴿وتحولت وجهك الى ظهرها﴾ तेरे चेहरे को तेरी माँ की पुश्त की तरफ़ फेर दिया ﴿لان لا تضرك رائحة الطعام﴾ ताकि अन्दर के खाने की गन्दगी से तुझे तकलीफ़ न हो।

और यह मेरा निज़ाम फ़िरऔन के लिए भी चल रहा है ओर यह निज़ाम मेरा मूसा अलैहिस्सलाम के लिए भी चल रहा है। मुझे पता है कि पेट में बनने वाला फ़िरऔन बनेगा, यह पेट में पलने वाला शद्दाद बनेगा और यह पेट में पलने वाला क्या कुछ बनेगा यह मेरी क़ुदरत, मेरी रहमत, मेरी मुहब्बत फिर भी तुझे इसी तरह पालता हूँ जैसे मैं नबियों का निज़ाम चलाता हूँ न ख़ुद बच्चा अपनी ताक़त से नीचे को होता है ओर न बच्चा अपनी ताक़त से वजूद में आता है अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम है जो इस वक़्त उतर रहा है।

जो माँ के पेट में राज़िक़ है वह

﴿یا ابن آدم من اوصل الیك الغذاء وانت جنین فی بطن امك﴾

ऐ मेरे बन्दे! आज तू रोज़ी की ख़ातिर मेरे दीन से हटा, कारोबार की ख़ातिर मेरे दीन से मुँह मोड़ा, बीवी-बच्चों की ख़ातिर और उनके रिज़्क़ की ख़ातिर तूने मेरे दीन की मेहनत को छोड़ा यह बता ﴿من واصل الیك الغذاء﴾ माँ के पेट में रोज़ी किसने पहुँचाई थी? ﴿وانت جنین فی بطن امك﴾ जब तू माँ के पेट में था वहाँ कौन सा निज़ाम था दुकान का, वहाँ कौन सी तिजारत थी, कौन सी हुकूमत थी, कौन सी खेती थी, कौन सा नक़्शा था? कोई नहीं था मेरा निज़ाम था ﴿الم ادبر فيك﴾ मेरी तदबीर तेरे में चलती रही, तुझे परवान चढ़ाती रही, जिसे तोड़ना चाहता है फ़रिश्तों को कहता है ﴿غیر مخلقة﴾ मैंने इसे परवान नहीं चढ़ाना, इसे ख़त्म कर दिया जाता है और जिसे मैं परवान चढ़ाता हूँ उसे मैं वजूद देकर कहता हूँ ﴿مخلقة﴾ उसे पैदा किया जाएगा तेरी क़ब्र की मिट्टी लाकर तेरे नुत्फ़े में गूँधकर माँ के रहम में रख दिया जाता है। अब तुझे वहीं दफ़न होना होगा जहाँ से तेरी मिट्टी को उठाकर तेरी माँ के रहम में डाला गया। ऐसा क़वी निज़ाम है, तेरे दाने-दाने पर हमने मुहर लगा दी तेरे आने से पहले ﴿فلما ان تمت مدة اشهر﴾ जब तेरे माँ के पेट में रहने का ज़माना पूरा हो गया ﴿اوحین الی الملك الموكل بالارحام﴾ मैंने फ़रिश्ते को भेजा जिसके ज़िम्मे मैंने काम ही यह लगाया है कि माँ के पेट से बच्चे को बाहर लाओ ﴿فاخرجك علی ريشة من جناحه﴾ इस फ़रिश्ते ने तुझे अपने पर के ऊपर बाहर निकाला ﴿ثم السبيل يسره﴾ मैं ही हूँ जो तेरे दुनिया में आने के रास्ते

को आसान करता हूँ।

रास्ता आसान किया माँ के पेट से बाहर निकाला, माँ के पेट से गोद में आया इस हाल में आया ﴿مالك سن تقطع﴾ तेरे मुँह में दाँत नहीं कि तू किसी चीज़ को काट सके, हैं दाँत? ﴿ولا لك يد تبطش﴾ हाथ में ताकत नहीं कि किसी चीज़ को पकड़ सके, पकड़ सकता है? आज जवानी पर गुरूर करता है, अपनी जवानी पर मस्ती करता है और वह वक़्त भूल गया जब इतनी भी तमीज़ नहीं थी कि पेशाब और पाख़ाने में लिथड़ा हुआ है आज अपनी अक़्ल पर मस्त होता है और अपने इल्म पर गुरूर करता है और अपनी क़ुव्वत पर नाज़ करता है।

कामयाबी हो या नाकामी सब अल्लाह के हाथ है

अरे भाईयो! अकेला अल्लाह ही है जो सब कुछ करता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में दाख़िल हो रहे हैं। दस हज़ार का लश्कर साथ है और अबूसुफ़ियान ऊपर खड़े देख रहे हैं लश्करों पर लश्कर गुज़र रहे हैं। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद गुज़रते हैं मुसलामनों का लश्कर लेकर तकबीर पढ़ते हुए निकलते हैं। ज़ुबैर बनि अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु आते हैं और लश्कर लेकर निकलते हैं, अबू ज़र ग़िफ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु आते हैं और लश्कर को लेकर निकलते हैं ओर बरदा बिन हसीब आते हैं लश्कर को लेकर निकलते हैं, और काब बिन हसासी आते हैं और लश्कर को लेकर निकलते हैं और बनू अश्जाअ आते हैं लश्कर को लेकर निकलते हैं, बनूबक्र आते हैं और लश्कर को लेकर

निलकते हैं। मुज़ैना क़बीला आता है नौमान बिन मुकर्रम की सरदारी में लश्कर को लेकर निकल रहा है लश्कर चल रहे हैं और अबूसुफ़ियान हैरान होकर देख रहे हैं।

इतने में आवाज़ आती है और सारी गर्दग़ुबार उठती है और वह कहने लगे यह क्या है? ﴿ما هذا﴾ यह क्या है? हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैंः

﴿هذا رسول الله بين المهاجرين والانصار﴾

यह अल्लाह के रसूल हैं जो मुहाजिरीन और अन्सार में आ रहे हैं। जब वह लश्कर सामने आता है तो एक आदमी की आवाज़ ﴿وله زغل﴾ इसमें कड़कदार आवाज़ है। अबूसुफ़ियान कहते हैं कि किसकी कड़कदार आवाज़ है? हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहतें हैं ख़त्ताब का बेटा उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) है। जिसकी तुम कड़करदार आवाज़ सुन रहे हो। उन्होंने कहा वाह! वाह!

﴿والله امر بنى كعب بن عدى بعد والله ذلت و قلت﴾

अरे अल्लाह की कसम यह बनू अदी ज़िल्लत और क़िल्लत के बाद आज बड़ी इज़्ज़त वाले हो गए।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे अबू सुफ़ियान! इज़्ज़त ज़िल्लत यहाँ क़बीलों पर नहीं, इज़्ज़त ज़िल्लत यहाँ इस्लाम पर है और इस्लाम ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ऊँचा किया है, उमर ऊँचा नहीं था इस्लाम ने उमर को ऊँचा किया है और फिर इस पर (अबू सुफ़ियान) कहने लगे ﴿كبر ملك ابن عمك﴾ तेरे भतीजे का मुल्क तो बहुत बड़ा हो गया।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा नहीं नहीं यह मुल्क

नहीं है ﴿انما هذه النبوة﴾ यह शाने नुबुव्वत है। बादशाह ऐसे नहीं हुआ करते। दस हज़ार का लश्कर है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का माथा ऊँटनी के पालान के साथ टिका हुआ है, सिर ऊँचा नहीं, झुका हुआ, पालान पर टिका हुआ और ज़बान पर बोल ﴿لا اله الا الله وحده﴾ का विर्द कि अल्लाह अकेला है तन्हे तन्हा ﴿لا اله الا الله وحده﴾ अकेला तन्हा किसी दस हज़ार पर नज़र नहीं आई अल्लाह की ज़ाते आली पर नज़र है।

मोमिन और काफ़िर के अन्दर की दुनिया में फ़र्क़ होना चाहिए

मेरे भाईयो! हमारे ज़हन को चीज़ों और दुनिया ने हलाक और बर्बाद कर दिया कि मुसलमान भी कहता है पैसा होगा तो काम चलेगा पैसा नहीं तो तेरा कोई रिश्तेदार नहीं, पेसा नहीं तो कोई तुझे सलाम करने वाला नहीं, पैसा नहीं तो तेरा कोई काम नहीं तो तेरी और काफ़िर की सोच में क्या फ़र्क है? मैं और काफ़िर एक तराज़ू में आज बैठे हुए हैं। मैं भी कहता हूँ पैसे से काम चलेगा, काफ़िर से पूछो तेरा काम कैसे चलेगा? कहता है पैसे से चलेगा। हम और काफ़िर एक पलड़े में बैठे हैं यक़ीन के एतिबार से। मैं नमाज़ भी पढ़ता हूँ, मैं रोज़ा भी रखता हूँ, मैं हज भी करता हूँ लेकिन मेरे अन्दर की दुनिया और काफ़िर के अन्दर की दुनिया एक हो चुकी है। मुसलमान यह नहीं कहता पैसा नहीं तो कोई रिश्तेदार नहीं, पैसा नहीं तो कोई जान पहचान नहीं है, पैसा नहीं है तो कोई सलाम नहीं करता। नहीं नहीं मुसलमान कहता है

अल्लाह साथ हो जाए तो सब काम बन जाएंगे। तक़्वा आ जाए तो सब काम बन जाएंगे, ज़ुहद आ जाए दुनिया से नफ़रत हो जाए तो सब काम बन जाएंगे, तवक्कुल आ जाए तो सब काम बन जाएंगे, नमाज़ पढ़नी आ जाए तो सब काम बन जाएंगे, नमाज़ हम सीख लें तो हमारे काम बन जाएंगे। हम पैसे के मोहताज नहीं, हम कपड़े के मोहताज नहीं, हम हुकूमत के मोताज नहीं, हमें हुकूमत की ज़रूरत नहीं, हम नमाज़ सीखने वाले बन जाएं, हम नमाज़ पढ़ने वाले बन जाएं। ऐसी नमाज़ सीख लें जो रब के ख़ज़ानों के दरवाज़े खुलवा दे तो हमारा काम बन जाएगा, अल्लाह मख़्लूक़ को झुका देगा, अल्लाह मख़्लूक़ को ताबे कर देगा ﴿لا الہ الا اللّٰہ وحدہ﴾ एक है तन्हे तन्हा अल्लह ﴿انجد وعدہٗ﴾ आज पूरा कर रहा है।

कामयाबी इम्तिहानों के बाद मिलती है

﴿ان الذی فرض علیك القران لر آدّك الٰی معادہ٥﴾

(سورة القصص ب.٢٩)

ऐ मेरे नबी! हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब हिजरत की है मक्का से मदीने को निकले हैं जब मेरे भाईयो क्या हुआ, मैं क्या कहूँ? यह दीन सस्ता नहीं है।

ام حسبتم ان تدخلوا الجنة ولما یاتیکم مثل الذی
خلوا من قبلکم مستھم الباسآء والضرآء وزلزلوا
حتٰی یقول الرسول والذین آمنوا معہ . (پارہ ٢)

आज़माइश आएगी, खरे खोटे को अलग-अलग कर दूँगा।

﴿ولیعلمن الذین صدقوا﴾

मैं देखूँगा कलिमे पर कौन सच्चा है, मैं तुम्हें आज़माइश में डालूँगा। आज़माइश आएगी मेरा कलिमा पढ़ने के बाद तुम्हें आज़माया जाएगा। एक तरफ़ दुनिया खड़ी कर दूँगा एक तरफ़ कलिमा खड़ा कर दूँगा। दुनिया कहेगी मेरे तक़ाज़े पूरे कर, कलिमा कहेगा मेरा तक़ाज़ा टूट जाएगा, बीवी कहेगी मेरे तक़ाज़े पूरे कर, अल्लाह का अम्र कहेगा मैं टूट जाऊँगा, बच्चों की ज़रूरत को अपने हुक्म के मुक़ाबले में खड़ा कर दूँगा, तेरी ज़रूरत को अपने हुक्म के मुक़ाबले में खड़ा कर दूँगा। मैं तेरी नफ़सानियत और अपना हुक्म मुक़ाबले में खड़ा कर दूँगा, मैं तेरी बीवी-बच्चों और तेरी तिजारत की और हुकूमत की ज़रूरतों को यूँ मुक़ाबले में टकरा दूँगा।

हुकूमत को देखता है तो मेरा हुक्म क़ुर्बान होता है, मेरे अम्र को लेता है तो हुकूमत क़ुर्बान होती है। तू कहाँ को जाएगा? अल्लाह तआला तंबीह के लिए फ़रमा रहे हैं:

الا وان رحی الاسلام دائرة فدوروا مع الکتاب حیث دار الکتاب
والسلطان سیفتر قال فلا تفارق الکتاب.

सुनो! आज इस्लाम गर्दिश में है, हरकत में है तुम भी इसके साथ हरकत में रहना, गर्दिश में रहना, हुकूमत के चक्कर में मत पड़ना, हुकूमत के पीछे मत पड़ना।

﴿فلا تفارق الکتاب﴾ मेरी किताब को पकड़ लेना।

आज़माइश डालूँगा अगर अल्लाह का अम्र लेना है ओहदा रह गया, सारी तिजारत की छुट्टी होती नज़र आती है अल्लाह के

अम्र को छोड़ता है तो सब कुछ नज़र आता है, मुक़ाबला डाल दिया है।

يا علي اعطيك خمسه آلاف اعلمك خمسة
كلمات تنضعك الدنيا والآخرة.

ऐ अली! बता क्या करता है, तुझे पाँच हज़ार बकरियाँ दूँ या तुझे पाँच कलिमे सिखाऊँ? यह मुक़ाबला क्यों डाला? दामाद है और ऐसे नवासों का बाप है जिनको आप कह रहे हैं ﴿ريحاناى﴾ मेरी टहनियाँ हज़रत हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। हरियाली को देखकर आँखे ठंडी होती हैं रेहाना कहते हैं तर व ताज़ा टहनी को जैसे इसको देखकर आँख ठंडी होती है हसन व हुसैन को देखकर मेरी आँखों को ठंडक मिलती है। इसलिए कहा ﴿ريحاناى﴾ और उनकी चीख़-पुकार की आवाज़ें कानों में आ रही हैं कि मेरे दोनों नवासे रो रहे हैं भूख की तेज़ी की वजह से और बेटी के गाल पिचके हुए हैं और आँखें अन्दर को धंसी हुई नज़र आ रही हैं कि मेरी बेटी फ़क़्र व फ़ाक़े का शिकार हो चुकी है और बीमार है। बेटी को पूछने आते हैं साथ में इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। बेटी अन्दर आ जाऊँ, मेरे साथ इमरान बिन हुसैन भी हैं? बेटी क्या कहती है?

﴿يا رسول الله ما عيت ما استر وجدهى.﴾

मेरे पास इतना भी कपड़ा नहीं है कि मैं चेहरे को छिपा सकूँ। यह घर में हाल है। चेहरा कितने कपड़े से छिप जाएगा। एक आधा गज़ कपड़ा घर में नहीं है कि जिससे फ़ातिमा अपने चेहरे को छिपा सके इमरान रज़ियल्लाहु अन्हु से। आप सल्लल्लहु अलैहि

वसल्लम ने मोंढे से चादर उठाई और अन्दर फेंक दी और कहा बेटा यह ओढ़ लो। चादर ओढ़ ली। आप अन्दर आए। बेटी क्या बात है? हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया ऐ अल्लाह के रसूल! ﴿حمراء اوجاع﴾ बीमारी, दर्द तकलीफ़ों, मुसीबतों, परेशानी ने कमर तोड़ दी और आँसू निकल पड़े। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी रोने लगे, कहा बेटी मत रो, तेरा बाप भी तीन दिन से भूखा है। बाप भी भूखा है और बेटी भी भूखी है और कहा ऐ बेटीः

عرض علیّ ربی لیجعل بطحاء مکة ذهبا فاتیت فقلت لا
یا رب اجوع وما اشبع یوماً واذا وجعت تبرّات الیك
وسألتك واذا شبعت حمدتك وشكرتك.

ऐ मेरे रब मुझे सोना चाँदी मत दे। मेरे रब ने कहा था बत्हा के पहाड़ सोना बना दूँ, मक्के के पहाड़ सोना बना दूँ? मैंने कहा या अल्लाह मुझे सोना चाँदी नहीं चाहिए। फ़रमाया

﴿یا صفراء یا بیضاء غری غیری﴾

ऐ सोना, ऐ चाँदी किसी और को धोका दे मुझे नहीं धोका दे सकते।

फ़ातिमा! तू राज़ी है कि जन्नत की औरतों की सरदार है

किसी और को धोका दें ऐ मेरी बेटी मैंने कहा नहीं। मैंने कहा ऐ मेरे अल्लाह मैं सोना चाँदी नहीं लेता। (मैं तो यह चाहता हूँ कि) एक दिन भूखा रहूँ तेरे सामने रोना-धोना करूँ, एक दिन

खाना खाऊँगा तेरा शुक्र अदा करूँगा और कहा ऐ फ़ातिमा! तू क्यों घबराती है तू ख़ुश हो जा!

﴿اما ترضین ان تکونی سیدة نساء اهل الجنة﴾

क्या तू इस बात पर ख़ुश नहीं है कि तुझे अल्लाह ने जन्नत की औरतों का सरदार बना दिया।

बस ख़ुश हो गयीं और गले से लगाया और जो फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा फूट-फूट कर रोयीं। ऊपर से अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उतार दिया कि तसल्ली दे दे फ़ातिमा को हमने जन्नत की औरतों की सरदार बना दिया और एक हदीस में आता है।

यह अली और फ़ातिमा की मुस्कराहट है

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का क़ौल है कि जन्नत में एक चमक उठेगी सूरज की तरह तो जन्नत वाले दारोग़ा रिज़वान से कहेंगे कि ऐ रिज़वान हमने तो सुना था कि जन्नत में सूरज की चमक नहीं है फिर यह चमक कैसी है? आवाज़ आएगी अली और फ़ातिमा मुस्करा रहे हैं। यह उनके दाँतों की चमक की रौशनी हो रही है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने मुक़ाबला कर डाला ऐ अली क्या लेना है? बेटी की भूख सामने है, अली रज़ियल्लाहु अन्हु की भूख सामने सख़्त सर्दी है आप घर से निकलते हैं। हज़रत अली परेशानी में टहल रहे हैं ﴿یا علیّ ما اخرجك﴾ ऐ अल्लाह के रसूल भूख ने घर से

निकाल दिया, बैठा नहीं जाता। तड़प भूख की।

ووسع لی خلقی فطیب کسبی وقنع لی بما رزقتنی ولا تذہب الی شیء طرحتہ عنی.

ये पाँच बोल तेरे लिए पाँच हज़ार बकरियों से बेहतर हैं। मुक़ाबला है यह और जो इस मुक़ाबले में उतरकर अल्लाह के अम्र को पकड़ लेगा दुनिया और आख़िरत में कामयाब हो जाएगा।

यह उम्मत अल्लाह की सफ़ीर है। दुकानें चलाने नहीं आए। हम मेरे भाईयो कारोबार चलाने नहीं आए, बीवी-बच्चों का पेट पालना हमारा मक़सद नहीं है, हुकूमतें विज़ारतें चलाना हमारा मक़सद नहीं है, अपनी ज़रूरतों को पूरा करना हमारा मक़सद नहीं है। हमारा मक़सद तो हर हाल में अल्लाह के अम्र को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर पूरा करना है।

उमर सानी रह० की ज़िन्दगी

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० का ज़माना है। यह वह उमर हैं उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ जब यह गली से गुज़रते थे तो उनकी ख़ुशबुओं से घरों में बैठे हुए लोगों को पता चल जाता था कि उमर गली से गुज़र रहे हैं। ऐसा हुस्न व जमाल था चेहरे पर आँखें नहीं टिकती थीं और ऐसी नख़रे वाली चाल थी जो देखता था वह दंग रह जाता और लम्बी चादर होती थी जो घसिटती हुई जाती थी। एक बुज़ुर्ग ने रास्ते में टोक दिया। ऐ उमर! देखो अपने टख़ने से कपड़ा ऊँचा करो। उन्होंने कहा अगर जान की ख़ैर है तो आइन्दा मुझे यह बात मत कहना वरना गर्दन उड़ा दी

जाएगी। एक वक़्त यह है और जब आए ख़िलाफ़त पर जो आदमी दुनिया की तलब में जो आदमी विज़ारत की तलब करने लगा और जो आदमी हुकूमत की तलब करेगा और जो आदमी माल की तलब करेगा जब उसके हाथ में माल आएगा तो फ़िरऔन बनेगा और जो आदमी इससे भागेगा और इससे जान छुड़ाएगा और इससे पल्ला बचाएगा जब उसके पास माल आएगा तो वह इसके ज़रिए से जन्नत कमाएगा।

सुलेमान मरने लगा तो रजा बिन हयात ने कहा कोई काम ऐसा कर जिससे तेरी आख़िरत बन जाए। कहा क्या करूं? कहा ख़िलाफ़त के लिए किसी नेक इन्सान का चुनाव कर।

सोच में पड़ गया। उसका इरादा था बेटे को ख़लीफ़ा बनाने का कहने लगा इन्शाअल्लाह ऐसा काम कर जाऊँगा कि जिसमें मेरे नफ़्स और शैतान का कोई हिस्सा नहीं होगा। कहा लिखो मैं उमर को ख़लीफ़ा बनाता हूँ और इसको लपेटा और माचिस की एक डिबिया में डाला, कहा जाओ इस पर लोगों से बै'त लो। जब रजा ने बै'त ली तो हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० दौड़कर आए और कहा ऐ रजा तुझे अल्लाह का वास्ता अगर इसमें मेरा नाम है तो इसे मिटा दे। मुझे ख़िलाफ़त नहीं चाहिए। उसने कहा जाओ जाओ मेरा सिर न खाओ, मुझे नहीं पता किसका नाम है। आगे हिश्शाम बिन अब्दुल मलिक मिला उसने कहा रजा अगर इसमें मेरा नाम नहीं तो इसमें लिख दे। एक कहता है मेरा नाम मिटा दे एक कहता है मेरा नाम लिख दे।

जब ख़िलाफ़त का बोझ आ पड़ा

जब डिबिया पर बै'त ली और खोला। उनको कहा आओ भाई ऐ उमर! तुम को ख़लीफ़ा बनाया जाता है तो उमर रह० खड़े नहीं हो सके, दो आदमियों ने सहारा देकर उठाया और लड़खड़ाते हुए मिम्बर पर आए और कहा मुझे ख़िलाफ़त नहीं चाहिए तुम अपने फ़ैसले से किसी और को बना दो। उन्होंने कहा नहीं अमीरुल मोमिनीन ने कह दिया। हिश्शाम की चीख़ निकली। एक शामी ने तलवार निकाली, आइन्दा तूने बात की तो तेरी गर्दन उड़ा दूँगा तू अमीरुल मोमिनीन के हुक्म के सामने आवाज़ निकालता है। जब आए तो यूँ कहा कि अब इससे आख़िरत को कमाकर दिखाऊँगा ताकि सारी दुनिया के इन्सानों को पता चल जाए कि बादशाहत में भी आख़िरत कमाई जा सकती है।

अमीरुल मोमिनीन के बच्चों की ईद

फिर वह वक़्त आया ईद का दिन। ईद के एक दो दिन पहले की बात वहीं छोटे-छोटे बच्चे रो रहे हैं कहने लगे क्यों रो रहे हैं? बीवी ने कहा बच्चे कह रहे हैं कि हमारे सारे दोस्तों ने नए-नए कपड़े बनवाए हैं ईद के लिए और हमारे बाप तो अमीरुल मोमिनीन हैं। हमारे कपड़े फटे हुए हैं हमें भी तो कपड़े लेकर दो। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने फ़रमाया मेरे पास तो पैसे नहीं कि मैं लेकर दूँ। वज़ीफ़ा लेते थे बैतुलमाल से जो तमाम मुसलमानों का था। रोटी का ख़र्च भी मुश्किल से पूरा होता था तो बीवी ने कहा अब क्या करें? बच्चों को कैसे समझाएं? खुद तो

सब्र कर सकते हैं बच्चे तो नहीं जानते। बच्चों पर आदमी ईमान बेचता है, हाँ फिर वह औलाद माँ-बाप की गुस्ताख़ बनती है। बाप से कहती है तूने हमारे लिए किया क्या है, क्या कमाया है हमारे लिए? क्योंकि उसकी जड़ों में हराम को डाला गया है। इसलिए यह कभी माँ-बाप की फ़रमांबरदार नहीं बनकर नहीं चलेगी।

यह माँ को भी जूते मारेगी और बाप को भी जूते मारेगी। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने कहा मैं कहाँ से दूँ? मेरे पास तो कोई पैसे नहीं हैं। उसने (बीवी ने) कहा क्या करें? इनको कैसे समझाएं। उन्होंने कहा तो फिर मैं कैसे समझाऊँ? बीवी ने कहा मुझे एक तर्कीब समझ में आई है आप अपना वज़ीफ़ा एक माह पेशगी ले लें जो महीने का वज़ीफ़ा मिलता है। हमारे बच्चों के कपड़े बन जाएंगे। हम सब्र कर लेंगे। उन्होंने कहा ठीक है। अपना ख़ादिम नहीं ग़ुलाम है ज़र-ख़रीद मुज़ाहिम, उसे बुलाया, ख़ज़ान्ची था। अरे मियाँ मुज़ाहिम हमें एक महीने का वज़ीफ़ा पेशगी दे दो। वह मुज़ाहिम फ़रमाने लगे:

अमीरुल मोमिनीन! एक बात अर्ज़ करूं, क्या आप मुझे ज़मानत देते हैं कि आप एक महीने ज़िन्दा रहेंगे जो आप मुसलमानों का माल लेना चाहते हैं? अगर आप एक महीने की ज़मानत दे सकते हैं तो आपकी गर्दन पकड़ी जाएगी। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की चीख़ निकली नहीं! नहीं!

﴿كم من مقبل يوما لا يكمله كم من مستقبل لغد يدركه﴾

हुज़ूर फ़रमा रहे हैं:

﴿كم من مقبل يوما لا يكمله﴾

कितने ही दिन देखने वाले जो सूरज का डूबना (यानी रात का आना) नहीं देख पाते और क़ब्रों में चले जाते हैं,

﴿كم من مستقبل لغد يدركه.﴾

और कितने ही हैं जो कल का इन्तिज़ार कर रहे हैं और कल का सूरज नहीं देख पाते और क़ब्रों में चले जाते हैं।

कहा बच्चों! सब्र कर लो जन्नत में जाकर ले लेना, मेरे पास इस वक़्त कुछ नहीं है। हुक्म को नहीं तोड़ा बच्चों की ख़्वाहिश को तोड़ दिया, अपने जज़्बात को तोड़ दिया। अल्लाह के अम्र को नहीं तोड़ा, ज़रूरत को क़ुर्बान कर दिया, अम्र-ए-इलाही को क़ुर्बान नहीं किया।

"ला इलाहा इलल्लाह" के हक़ीक़ी माईने

"ला इलाहा इलल्लाह" कि मैं अल्लाह का ग़ुलाम हूँ, मैं बिक चुका हूँ, मैं बीवी बच्चों का ग़ुलाम नहीं, कारोबारी नहीं हूँ, मैं ताजिर नहीं हूँ, मैं ज़मींदार नहीं हूँ, मैं जगींदार, हाकिम और वज़ीर नहीं हूँ, मैं अपने अल्लाह का ग़ुलाम हूँ। मुझे अल्लाह के अम्र को देखना है। मुझे यह नहीं देखना कि कौन क्या करता है। एक बार अमीरुल मोमिनीन घर में आए बेटियाँ मुँह पर कपड़ा क्यों रखती हो? फ़ातिमा ने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन! आज तेरी बेटियों ने कच्चे प्याज़ से रोटी खाई है, इसलिए उनके मुँह से बदबू आ रही है।

हाँ "अमीरुल मोमिनीन! जिसका अम्र तीन बर्रे आज़म पर चलता हो और अरबों मख़्लूक़ात उसके सामने गर्दन झुकाए खड़ी हों। दमिश्क़ से लेकर मिस्र तक, दमिश्क़ से लेकर चाड तक,

दमिश्क़ से लेकर उन्दलुस तक, पुर्तगाल और फ्राँस तक जिसका अम्र चल रहा हो उसकी बेटी कच्चे प्याज़ से रोटी खा रही है। आज तो हमारे छाबड़े वाले की भी बेटी कच्चे प्याज़ से रोटी नहीं खाती और इतनी बड़ी हुकूमत वाले की बेटियाँ प्याज़ से रोटियाँ खाती हैं। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० रोने लगे हाय! मेरी बेटी मैं तुम्हें अच्छे खाने खिला सकता था लेकिन तेरा बाप दोज़ख़ की आग बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरे सामने दो रास्ते हैं। तुम्हें हलाल हराम इकठ्ठा करके खिलाता तो ख़ुद दोज़ख़ में जाता। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।

मेरे बच्चों को हराम न खिलाएं

मौत का वक़्त आया। उनके बीवी के भाई मुसैलमा ने कहा अमीरुल मोमिनीन का लिबास तो बदल दो। मैला हो गया है। अपनी बहन से कहा। हज़रत फ़ातिमा (बीवी) ने कहा, ऐ मेरे भाई! अल्लाह की क़सम अमीरुल मोमिनीन के पास एक ही जोड़ा है। बदलूँ कहाँ से एक ही जोड़ा है। मुसैलमा ने कहा अमीरुल मोमिनीन ये आपके के बच्चे है। फ़क़्र व फ़ाक़े की हालत में आप इन्हें छोड़कर जा रहे हैं। मेरे से एक लाख रुपए ले लीजिए अपने बच्चों को दे दीजिए। मेरे भान्जे हैं।

फ़रमाया एक लाख वहाँ वापस कर दो जहाँ से तुम ने इसको ज़ुल्म व रिश्वत से कमाया है मेरे बच्चों को हराम नहीं चाहिए फिर बेटों को बुलाया और कहा मेरे बेटों मैं जहन्नुम तो सह नहीं सकता, मैंने तुम्हें अल्लाह से मांगना सिखा दिया, ज़रूरत पड़े तो उससे मांग लेना। वह तुम्हारा कफ़ील होगा। वह कहता है ﴿ومـــ

﴿يتولى الصالحين﴾ मैं हूँ नेक आदमियों का वाली।

जन्नत की बशारत

जब मौत आई और जनाज़ा उठा क़ब्रिस्तान पहुँचा और क़ब्र पर रखा गया तो आसमान से एक हवा चली। उसमें से एक काग़ज़ का पर्चा गिरा। उस काग़ज़ को उठाया गया। उस पर लिखा थाः

بسم الله الرحمٰن الرحيم برائة من الله لعمر ابن
عبد العزيز من النار.

और यह अल्लाह तआला की तरफ़ से उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के लिए आग से निजात का परवाना है, हम ने दोज़ख़ से निजात दे दी। सारी दुनिया को बता दिया कि सुन लो हमने उमर को दोज़ख़ से बचा लिया और इस परवाने समेत उमर बिन अब्दुल अज़ीज को क़ब्र में उतार दिया गया।

ग़ैबी शहादत

रोम के इलाक़े में एक मुसलमान क़ैद हुआ और वहाँ से भागकर निकलने में कामयाब हो गया और तीसरी रात है उनको रोम इलाक़े में चलते हुए और उनके आठ साथी क़त्ल हो चुके थे ये नवें बच गए थे। वहाँ से भागकर आ रहे थे तो पीछे से घोड़े के टापों की आवाज़ आई। समझे लगता है बस मैं तो पकड़ा गया हूँ। पीछे जो मुड़कर देखा एक ने आवाज़ दी हबीब! अरे यह मेरा नाम कैसे जानता है? क़रीब आए तो देखा वह साथी जो क़त्ल

हो गए थे घोड़े पर सवार, ﴿اليس قدقتلتم﴾ अरे! तुम तो सारे क़त्ल हो गए थे। फ़रमाया हाँ तुम्हें ख़बर है क्या हुआ कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० का इन्तिक़ाल हो चुका है और अल्लाह तआला ने सारे शहीदों से कहा है कि उनका जनाज़ा पढ़ो जाकर। हम सब वहाँ जा रहे हैं। तुमने घर जाना है? यह रोम है, घर जाना है? कहते हैं हाँ तो उसने कहा ﴿ناولنی﴾ हाथ पकड़ ﴿واردفنی﴾ और मुझे पीछे घोड़े पर बिठाया। उसका घोड़ा कुछ क़दम चला होगा ﴿خفقنی خفقه﴾ उसने मुझे ज़ोर से कोहनी मारी और मैं उलटकर गिरा तो घर के दरवाज़े के सामने पड़ा था। रोम से इराक़ यह इस्तिक़बाल हो रहा है।

تنزل عليهم الملائكة ان لا تخافوا ولا تحزنوا وابشروا
بالجنة التى كنتم توعدون نحن اوليائكم فى الحيوة
الدنيا وفى الآخرة ولكم فيها ما تشتهى انفسكم ولكم
فيها ما تدعون نزلا من غفور رحيم.

अल्लाह की तरफ़ से मेहमानी हो रही है फ़रिश्ते आ रहे हैं

जब मोमिन अल्लाह से मिलने चलता है

हज़रत उमर का जब विसाल होने लगा तो कहने लगे हट जाओ कुछ लोग आ रहे हैं जो न इन्सान हैं न जिन्नात हैं और ज़बान पर यह आयत आ गईः

تلك الدار الاخرة نجعلها للذين لا يريدون علوا فى الارض ولا فسادا٥

यह वह घर है हमने बनाया है उन बन्दों के लिए जो दुनिया में बड़ाई नहीं चाहते हैं, फ़साद नहीं चाहते।

जो बड़ाई चाहते हैं उन्हें पस्त किया जाता है जो बड़ाई नहीं चाहते उन्हें उठाया जाता है। फ़रिश्ते पाँव दबाते हैं, फ़रिश्ते हाथ दबाते हैं, हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम ख़ुशख़बरी देते हैं:

﴿يا يتها النفس الحمده كانت فی جسد الحميد.﴾

ऐ मुबारक रूह मुबारक जिस्म मुबारक जिस्म के अन्दर थी ﴿اخرجی﴾ बाहर आओ, अब आपके बाहर आने का वक़्त आ गया।

﴿ابشری بروح وريحان ورب راض عنك غير غضبان﴾

अब आप ख़ुश हो जाओ। जन्नत आपके लिए तैयार है और अल्लाह तआला आपसे राज़ी हो चुका है और जन्नत का दरवाज़ा खोलता है।

हमारा काम लोगों को अल्लाह की गुलामी में लाना है

मेरे भाईयो! मुसलमान अल्लाह का सफ़ीर है यह आख़िरत का दाअ़ई है, यह जन्नत का दाअ़ई है। मेरे भाईयो! जहन्नुम से डराने वाला, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों को वजूद देने वाला। रबी बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े होकर कह रहे हैं लोगों की गुलामी से निकालकर अपने मौला की गुलामी पर डालने के लिए आए हैं।

हम काश्तकार नहीं, ज़मींदार नहीं, हम ताजिर नहीं हैं, हम अल्लाह के दीन के दाअ़ई हैं। इस वक़्त मुसलमान से अल्लाह के दीन की दावत छूट चुकी है। दावत वाला काम छूटा है। मुसलमान दाअ़ई था। ओहो! इस मेहनत पर अल्लाह ने इस उम्मत को

मर्तबा दिया। इस दावत पर अल्लाह ने इस उम्मत को उठाया अगर यह उम्मत बैठती है अगर यह उम्मत नक़ल व हरकत में नहीं आती तो यह उम्मत अपने वज़ीफ़े को छोड़ चुकी है और जब कोई चीज़ अपने मक़सद से हट जाती है अपनी क़ीमत को खो देती है।

जब मुसलमान दाअ्ई था

यह मुसलमान जब दावत के मैदान में हरकत कर रहे थे और इसका एक-एक साँस अल्लाह के पाक दीन के लिए वक़्फ़ था और इसका एक-एक रुपया अल्लाह के दीन पर क़ुर्बान था और उसकी तमन्ना अल्लाह के नाम पर मरने की थी और अल्लाह के रास्ते में क़ब्र बनाने की थी तो मेरे भाईयो! इनकी दुआएं अर्श मुअल्लाह से टकरा रही थीं और इनका रोना फ़रिश्तों को रुला देता था जो एक नौजवान सहाबी नमाज़ पढ़ रहा था और नमाज़ में रोया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

﴿لقد ابكيت ملاء من الملائكة كثيرا﴾

आज तेरे रोने ने बेशुमार फ़रिश्तों को भी रुला दिया।

ऐसा जवान था, जब यह अल्लाह के दीन की मेहनत में उतर रहा था तो फ़रिश्ते इस पर फ़ख़्र कर रहे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐसी क़ीमती उम्मत है ﴿لولا شباب خشع﴾ अगर तेरे से बढ़ने वाले नौजवान न हों ﴿وشيوخ عقع﴾ और दीन में, बुढ़ापे में पहुँचकर कमरें झुक गयीं, माज़ूर हो गए अगर ऐसे बूढ़े न हों ﴿اطفال رضع﴾ दूध पीते बच्चे न हों ﴿والبهائم رقع﴾

और चरने वाले जानवर न हों ﴿صب عليكم العذاب صبا﴾ मैं वारिशों की तरह अज़ाब को बरसा दूँगा।

इस उम्मत का हर आदमी क़ीमती है

तो इस उम्मत का नौजवान ऐसा क़ीमती है कि अगर यह अल्लाह पाक की मानने पर आ जाता है तो मेरे भाईयो! उसके निकले हुए ख़ौफ़ के आँसू अल्लाह के अज़ाब को उड़ा देते हैं और इस उम्मत का बूढ़ा इतना क़ीमती है अगर यह झुकी हुई कमर के साथ क़दम उठाता है तो अल्लाह का अर्श भी हिलता है और आए हुए अज़ाब भी उठ जाते हैं। इस उम्मत के साथ अल्लाह का ख़ुसूसी मामला था।

﴿اذا بلغ عبدى خمسين سنة حاسبناه حسابا يسيرا﴾

जब यह मेरा बन्दा पचास बरस का हो जाए मेरे नबी का कलिमा पढ़ता तो मैं फिर उसका हिसाब आसान कर देता हूँ।

﴿اذا بلغ ستين سنة حببت اليهم انابا﴾

और जब यह साठ बरस का हो जाए तो मैं उसे अपनी मुहब्बत देना शुरू कर देता हूँ कि अब तू मेरे आने के क़रीब हो गया है, अब तू दुनिया से निकल, दुकान में बैठना जाएज़ नहीं है, अब तू निकल ﴿حببت اليهم انابا﴾ अब तो साठ बरस का हो गया। मेरी तरफ़ को आ, मैं अपनी तरफ़ रुजु देता हूँ।

﴿واذا بلغ سبعين سنة احب واهل السماء.﴾

जब सत्तर साल का हो जाता है अल्लाह तआला कहते हैं फिर

मैं भी और मेरे फ़रिश्ते भी मुहब्बत करते हैं कि सत्तर बरस का बूढ़ा हो गया है दाढ़ी सफ़ेद हो गई।

﴿واذا بلغ ثمانين سنة﴾

जब अस्सी बरस का हो जाता है तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

﴿ابناء الثمانين استحى ان اعذبهم بالنار﴾

अस्सी बरस के बूढ़े को दोज़ख़ का अज़ाब देते हुए मुझे वैसे ही शर्म आती है।

अल्लाहु-अकबर! मैं कैसे अज़ाब दूँ कि यह बूढ़ा हो गया ﴿كتبت حسناته والقيت سياته﴾ अल्लाह तआला कहता है भाई अब इसकी नेकियाँ ही लिखते रहो बस सठाया गया, बूढ़ा हो गया। फ़रज़ूक़ एक शायर गुज़रा है। शायर आज़ाद होते हैं आम तौर पर लेकिन उस ज़माने का आज़ाद से आज़ाद भी आज के क़ुतुब व ग़ौस से भी ऊँचा दर्जा रखता है।

हज्जाज बिन यूसुफ़ का ईमान

हज्जाज बिन यूसुफ़ इस उम्मत का ज़ालिम गिना जाता है। उसकी ज़िन्दगी में कभी तहज्जुद क़ज़ा नहीं हुई और हफ़्ते में उसका क़ुरआन ख़त्म होता था, हफ़्ते में क़ुरआन ख़त्म करता था, तीन दिन में, पाँच दिन में क़ुरआन ख़त्म करता था। कभी ज़िन्दगी में झूठ नहीं बोला मरते दम तक और यक़ीन ऐसा था कि एक दफ़ा उसकी बीवी पर कुछ असरात हुए। उसने किसी आमिल को बुलवाया और उसने दम करके लोहे की कील रख दी कि

इसको दफ़्न कर दो, उन्होंने कहा यह क्या चीज़ है? उन्होंने कहा तुम अपने हब्शी ग़ुलाम बुलाओ। दो हब्शी बुलाए कि लकड़ी डालकर इसको उठाओ। दो ग़ुलाम ज़ोर लगा रहे हैं, उठा रहे हैं। वह छोटा सा कील नहीं उठता फिर दो और लगाए चार फिर दो और छः फिर दो और आठ, दो और लगाए दस बारह ग़ुलाम लगाए। छः इस तरह छः इस तरह इस छोटे से कील को उठा रहे हैं उठता ही नहीं। उस (जादूगर ने) कहा देखी इसकी ताक़त यह है। इस हुज्जाज ने कहा पीछे हट जाओ अपनी छड़ी उठाई और आयत पढ़ीः

ان ربکم الله الذی خلق السمٰوٰت والارض فی ستة ایام ثم استویٰ علی العرش۔

यह आयत पढ़कर जो छड़ी डाली और कील हवा में उड़ता हुआ वह गया।

उन्होंने कहा भाग जाओ मैं तुम्हारे अमलों का मोहताज नहीं हूँ। यक़ीन की ताक़त ने उसके जादू को तोड़ दिया।

इस्लाम का बुढ़ापा

फ़रज़ूक़ एक शायर गुज़रा है। बीवी के जनाज़े में शरीक है। हज़रत हसन बसरी रह० भी आए हुए हैं। हज़रत हसन बसरी रह० ने कहा फ़रज़ूक़ लोग क्या कह रहे हैं? फ़रज़ूक़ ने कहा यूँ कह रहे हैं कि इस जनाज़े में (हसन बसरी) हमारे शहर का सबसे बेहतरीन इन्साना आया हुआ है और मेरी तरफ़ इशारा कर रहे हैं और लोग यूँ कह रहे हैं इस जनाज़े में हमारे शहर का सबसे

बदत्तरीन इन्सान आया हुआ है तो हज़रत हसन बसरी रह० ने कहा ﴿ماذا فعلت هذا اليوم﴾ तो फिर आज के दिन के लिए तूने क्या सामान तैयार रखा है

उन्होंने कहा हसन बसरी मेरे पास कुछ भी नहीं इतना है कि इस्लाम में बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे पास कुछ नहीं है। मेरे पास इस्लाम का बुढ़ापा है और कुछ नहीं। जब इन्तिकाल हुआ तो ख़्वाब में एक आदमी को मिला तो उसने पूछा तेरे साथ क्या सुलूक हुआ। कहा अल्लाह पाक ने मुझे अपने सामने खड़ा किया इर्शाद फ़रमाया ऐ फ़रज़ूक़ तूने हसन से क्या बात कही थी याद है? मैंने कहा या अल्लाह याद है। (अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया) दोहराओ मेरे सामने। मैंने कहा मेरे पास उस दिन के लिए कुछ अल्लाह के सामने (पेश करने के लिए) कुछ नहीं सिवाए इसके कि मैं इस्लाम में बूढ़ा हुआ हूँ तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैंने तुझे इस पर माफ़ कर दिया।

ऐ दाऊद! मेरी मुहब्बत नाफ़रमानों से भी है

मेरे भाईयो! इस उम्मत पर तो अल्लाह ऐसा मेहरबान है लेकिन हम कैसे बे वफ़ा निकले कि हमें दुकान ने अल्लाह से तोड़ दिया, मिट्टी की औरत ने अल्लाह से मोड़ दिया और इस औलाद ने अल्लाह से तोड़ दिया जो दुनिया में ही बे वफ़ा हो रही है और इस खेती की ख़ातिर हम अल्लाह के हुक्म को तोड़ रहे हैं और कुछ टकों की ख़ातिर हम अल्लाह के अम्र को तोड़ रहे हैं। मेरे भाईयो! ऐसी करीम ज़ात कहाँ से मिलेगी जो इन्तिज़ार में बैठा हुआ है, मैं अपने बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार कर रहा हूँ।

﴿يا داؤد لو يعلم المدبرون عنى ما عندى﴾

ऐ दाऊद! जो मेरे से ताल्लुक़ तोड़ चुके हैं अगर उन्हें पता चल जाए कि मैं उनसे कितनी मुहब्बत करता हूँ ﴿لتقطعت اوصالهم﴾ उनके मुहब्बत में टुकड़े टुकड़े हो जाएं अगर उन्हें पता चल जाए कि मैं उनसे कितनी मुहब्बत करता हूँ।

जब अपने नाफ़रमानों से मेरा यह हाल है तो ऐ दाऊद! ﴿فماذا تقول فى المقبلين على﴾ जो मेरी तरफ़ दौड़ रहे हैं उनसे मैं किनती मुहब्बत करता हूँगा तू सोच सकता है।

जब आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत खुलवाएंगे

मेरे भाईयो! हम बे वफ़ा निकले, हाँ इसलिए हम कह रहे हैं आज तबलीग़ में निकलकर अल्लाह से अहद व पैमान करो, हमारी नमाज़ें आज हमें अल्लाह से नहीं जोड़ रही हैं, हमारे हज आज हमें अल्लाह तआला से नहीं जोड़ रहे हैं, हमारे रोज़े आज हमें अल्लाह तआला से नहीं जोड़ रहे। इसलिए कि हमारा कलिमा कच्चा है। हमने कलिमे की दावत देना छोड़ दिया है। इस कलिमे वाली दावत लेकर यह उम्मत फिरने वाली बनेगी। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

ان الجنة حرمت على الانبياء حتى ادخلها وانها
لمحرمة على الامم حتى تدخلها امتى.

सारे नबियों पर जन्नत हराम है जब तक कि मेरा क़दम न पड़े और सारी उम्मतों पर जन्नत हराम है जब तक मेरी उम्मत

का क़दम जन्नत में न पड़े, क्योंकि हम नमाज़ें ज़्यादा पढ़ते हैं, हम ज़्याद माल ख़र्च करते हैं या हमारे पास कोई ज़्यादा इबादतें हैं। बनी इस्राइल का एक-एक आबिद अपने गिरजे में दाख़िल होता था और तीन-तीन सौ बरस बाहर निकलकर नहीं देखता था। बाहर क्या हो रहा है तो हमारी नमाज़ उसके मुक़ाबले में कैसे टक्कर खा सकती है।

यह उम्मत रब के नाम को लेकर फिरने वाली है, यह सफ़ीर है। आपको पता है है सफ़ीर का कितना लिहाज़ किया जाता है, सफ़ीर की कितनी रिआयत की जाती है, यह उम्मत सफ़ीर है इसलिए अल्लाह तआला ने फ़ैसला कर दिया कि जन्नत की शुरूआत मेरे नबी से होगी और मेरे नबी की उम्मत से होगी।

इस उम्मत का ईनाम

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से अल्लाह ने कहा मैंने शजरे तूबा दे दिया है इस उम्मत को। ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह ﴿وما طوبى﴾ वह तूबा क्या है ﴿غرستها بيدى﴾ तूबा वह पेड़ है जिसे मैंने अपने हाथ से लगाया है। इसका तना सोने का है ﴿من ذهب اسفلها اعلاها من جواهر﴾ नीचे सोना और ऊपर जवाहर ﴿مقلد بالدر والياقوت﴾ मोती याक़ूत इस पर टांके हैं ﴿سمغها زنجيل وعسل﴾ इसकी गदं शहद और ज़ंजील है ﴿اساتها سندس واستبرق﴾ इसके गुच्छों में से रेशम के जोड़े निकलते हैं, बारीक रेशम के जोड़े, और गाढ़े रेशम के जोड़े ﴿ويخرج من اصلها ثلثة عيون﴾ इसकी जड़ में से तीन चश्में निकाले हैं।

﴿كاس من معين لا يصدعون عنها ولا ينزفون﴾

मोईन का चश्मा उसे तू पीने वाला है, तुझे सुरूर तो होगा नशा नहीं होगा, तुझे लज़्ज़त तो आएगी सिर में दर्द नहीं होगा।

﴿والسلسبيل عينا فيها تسمّٰى سلسبيلا.﴾

जिसमें ज़ंजबील की मिलावट है।

﴿يسقون فيها كاسا كان مزاجها زنجبيلا﴾

सलसबील में ज़ंजबील है। इसके अन्दर से निकल रहा है।

﴿والرحيق يسقون من رحيق مختون ختامهٗ مسك.﴾

वह रहीक़ का चश्मा है जिसका ख़िताम मिस्क कस्तूरी है पियेगा, पीकर गिलास की तह में देखेगा कस्तूरी बैठी हुई है। इस पानी का एक क़तरा उंगली के पोरे पर लगाकर आसमान से दुनिया में नीचे टपका दें तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

सारी काएनात इस पानी के एक क़तरे से ख़ुशबूदार हो जाएगा जो चश्मों पर बैठकर पिएगा जिसका एक क़तरा सारे आलम को मौत्तर कर देगा।

जन्नती औरत का हुस्न व जमाल

जन्नत की औरत के बालों का गुच्छा अगर इस दुनिया में आ जाए तो सारी काएनात उसके बालों से रौशन हो जाए। उन बीवियों का जिनके पहलुओं में बैठकर अल्लाह की नेमतों से मज़ा हासिल करेगा। क्या ख़्याल है उन बीवियों के बारे में जिनकी उंगली का एक पोराः

﴿بنان من بننها بدء كتم الشمس كما كتم الشمس ضوء النجوم﴾

अगर उसकी उंगली का एक पोरा सूरज के सामने आ जाए तो सूरज ऐसा ग़ायब हो जाए जैसे तारे सूरज के सामने हो जाते हैं। उसके चेहरे का हुस्न व जमाल क्या हाल होगा। अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से कहा जाओ मेरी जन्नत को देखो। जिब्राईल अलैहिस्सलाम जन्नत में आए नूर की तजल्ली उठी जिब्राईल सज्दे में गए ﴿خر ساجدا﴾ क्या कहना है अल्लाह मुझे अपना दीदार करा रहा है। सज्दे में पड़े हैं अल्लाह के दीदार में खुश हो रहे हैं। आवाज़ आई ﴿ارفع راسك يا روح الامين﴾ ऐ रूहुल अमीन! किसे सज्दा कर रहे हो?

सिर उठाओ, सिर उठाकर देखा ﴿فاذا هو بحوراء﴾ एक जन्नत की हूर जो उनके सामने खड़ी है ﴿يتجلل وجهها نورا﴾ उसके चेहरे का नूर चमक रहा है। उसके चेहरे के नूर की चमक से जिब्राईल जैसा फ़रिश्ता जो सिदरतुल मुन्तहा पर रहा है वह भी धोका खा गया। कहने लगे अल्लाह को देख रहा हूँ। मेरे भाईयो! जिसकी वह बीवी बनेगी।

जिब्राईल को बीवी की जरूरत नहीं जिसकी वह बीवी बने उसका अन्दाज़ा लगाओ क्या हाल होगा, उसकी खुशियों का क्या हाला होगा, चालीस-चालीस बरस तो यूँ बीवी को देखता रहेगा, सिर्फ़ देखना ﴿نظرة واحدة﴾ एक नज़र चालीस बरस की, देखने में ही मज़ा आ रहा है। एक बार गले मिलना सत्तर साल का। जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैरान होकर कहने लगे ओहो! तुझे अल्लाह ने किस लिए पैदा किया है? तो वह जवाब में कहती है ﴿لمن اثر

﴿مرضات الله على هواه﴾ मुझे मेरे अल्लाह ने उनके लिए पैदा किया है जो अपनी ख़्वाहिशात को अल्लाह के हुक्म पर क़ुर्बान करते हैं, हाँ दुकान नहीं देखते, ख़्वाहिशात को नहीं देखते, बीवी-बच्चों की ज़रूरतों को नहीं देखते, अल्लाह के अम्र को देखते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों को देखते हैं, अल्लाह के नबी के तरीक़ों को देखते हैं।

ऐ ईसा! अभी नहीं

ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ अल्लाह वह पानी कैसा बेहतरीन है और पेड़ कैसा आला है ﴿اسقنى من ماء ها﴾ वह पानी मुझे भी पिला। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

ऐ मेरे नबी मेरी बात सुन ले ﴿حرام على الانبياء حتى يشرب منها احمد﴾ सारे नबियों पर वह पानी हराम है जब तक मेरा नबी अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसको न पी ले, ﴿وحرام على امم﴾ और सारी उम्मतों पर वह पानी हराम है जब तक मेरे नबी की उम्मत ना पी ले।

अरे मेरे भाईयो! हम अपनी क़द्र को पहचान लें, अरे मुसलामान नौजवान! तू अपनी जवानी को अय्याशी में बर्बाद करने के लिए नहीं आया, अरे तू अपनी जवानी को दुकान पर लगाने के लिए नहीं आया, अरे मुसलमान बूढ़े! तेरे बुढ़ापे का तर्जुबा दुनिया के लिए नहीं हे, तेरा बुढ़ापा रब के दीन को ज़िन्दा करने के लिए है और ऐ जवान! तेरी जवानी रब के नाम को ज़िन्दा करने के लिए है ﴿كتب الله اجر ثنتين وسبعين صديقا﴾ अल्लाह उसे बहत्तर सिद्दीक़ों के दर्जे अता फ़रमाएगा।

जब दीदारे इलाही होगा

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत क़ाज़ी शरीह से मरवी है अल्लाह उसे बहत्तर सिद्दीक़ों का दर्जा अता फ़रमाएगा। अरे मेरे भाईयो! इस उम्मत का नौजवान कितना क़ीमती था लेकिन आज यह कहाँ गल रहा है, सड़ रहा है। इसलिए हम कह रहे हैं निकलो घरों से, दुकानों से, तिजारतों से, फिरो अल्लाह के नाम पर, फिरने की आवाज़ लगाओ, कलिमे को सीखो।

मेरे भाईयो! आज न मैंने कलिमा सीखा है न आपने कलिमा सीखा है। इसको सारे आलम में फैलाओ। हम इसको फैलाने वाले हैं और हम ही इसको लेकर जाने वाले हैं। हमारे ही ज़िम्मे है इसको लेकर फिरना और चलना।

मेरे भाईयो! आज ज़रूरत है बेशक यह दिल गुर्दे का काम है घर को छोड़ना लेकिन मेरे भाईयो और दोस्तो! इस पर मिलेगा क्या? हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का पड़ौस मिलेगा और अल्लाह का दीदार मिलेगा और दिन में दो दफ़ा अल्लाह दो बार सीधे-सीधे बात करेगा। चेहरे से पर्दा हटाएगा, सामने आएगा और कहेगा ﴿سلام قولا من رب رحيم﴾ की आवाज़ आएगी। अल्लाह सामने है।

नेक औरत को हूरों से बढ़कर हुस्न व जमाल

यह उम्मत जब से बैठी इसकी सिफ़ात को ज़ंग लग गया है। इसकी नमाज़ें बेजान हो गयीं। इसके रोज़े बेजान हो गए, इसकी

सिफ़ात ज़ंग आलूद हो गयीं। जब उम्मत फिरेगी और दर-ब-दर ठोकरें खाएगी और इसके नौजवान भी फिरेंगे और औरतों का जज़्बा भी दीन ज़िन्दा करने को होगा। अल्लाह तआला इन नौजवानों को और बूढ़ों को जन्नतुल फ़िरदौस में जगह देगा और उनकी बीवियों को उन से पहले जन्नत में पहुँचाएगा और कहेगा जओ अपने ख़ाविन्दों का इस्तिक़बाल करने के लिए जन्नत में पहले चली जाओ।

अल्लाह तआला इस दुनिया की मोमिन औरत को जन्नत की औरत से सत्तर हज़ार गुना ज़्यादा ख़ूबसूरती अता फ़रमाएगा। एक किताब में मैंने पढ़ा जन्नत वाला जन्नती अपनी जन्नत की हूर के पास बैठा होगा कि ऊपर से रौशनी की चमक होगी। ऊपर देखेगा कि एक ख़ूबसूरत लड़की खड़ी है, कह रही है अभी मेरा नम्बर नहीं आया ﴿هل ما لنا منك نصيب﴾ अभी मेरा हिस्सा नहीं है तेरे अन्दर। कहेगा तू कौन है? कहेगी तेरी आँखों की ठंडक का सामान हूँ, छिपाकर रखा गया है। उसे छोड़कर यह इसके पास जाएगा। वह हुस्न व जमाल में उससे बढ़कर होगी। उसके पास रहेगा जब तक अल्लाह चाहेगा फिर इससे ऊँचा एक दर्जा नज़र आएगा जहाँ इससे ज़्यादा हसीन व जमील लड़की देख रही होगी जो कहेगी ﴿اما لك فينا من رغبة﴾ आपको मेरी ज़रूरत नहीं है? यह कहेगा तो कौन है? वह कहेगी मैं भी तेरी आँखों की ठंडक के लिए छिपाकर रखी गई हूँ। उसे छोड़कर इसके पास जाएगा और जब तक अल्लाह चाहेगा रहेगा।

○ ○ ○

अल्लाह की कुदरत और रहमते दो आलम

نحمد ونصلی علی رسوله الكريم اما بعد.

فاعوذ باالله من الشطن الرجيم

بسم الله الرحمٰن الرحيم.

ومن احسن قولا ممن دعا الى الله وعمل صالحا وقال اننی من المسلمين ولا تستوى الحسنة ولا السيئة ادفع بالتى هى احسن فاذا الذى بينك بينهٗ عدواة كانه ولى حميم٥ وما يلقّها الا الذين صبروا وما يقلقّها الا ذوحظ عظيم ٥

وقال النبى صلى الله عليه وسلم الطهور شطر الايمان والحمد لله تملا الميزان سبحان الله الصلوٰة تملآن اوقال ما تملأ ما بين السماء والارض الصلوٰة نور والصدقة برهان والصبر ضياء والقرآن حجة لك اوعليك واكما قال عليه والصلاة والسلام.

इज़्ज़त का सिर्फ़ एक रास्ता

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह जल्ले जलालुहू ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सारी काएनात की कामयाबियाँ

और इज़्ज़तें देकर भेजा और यह तय कर दिया ﴿وجعل الذلة والصغار على من خالف امری﴾ जो मेरे नबी के तरीके के ख़िलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा उसके लिए ज़िल्लत औ पस्ती मुक़द्दर कर दी गई है। दुनिया और आख़िरत की कामयाबियाँ लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया में तशरीफ़ लाए। अब सारे इन्सानों की कामयाबी का एक ही रास्ता है। बाक़ी सारे रास्ते बन्द हैं।

يا محمد لو استفتحوني كل باب وجاؤواني من كل
طريق لا افتح عليهم الا ان يدخلوا ورائك.

ऐ हमारे नबी हम ने तमाम रास्ते हमने तमाम दरवाज़े बन्द कर दिए हैं। एक ही रास्ता खुला रखा है एक दरवाज़ा छोड़ा है जो लोग मेरे तक आना चाहते हैं मेरे तक आने के लिए कोई रास्ता नहीं सिवाए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबा के। जो आपके तरीक़े पर चलकर आएगा मेरे तक पहुँचेगा और जो आपके तरीक़े से हट जाएगा वह ज़लील व ख़ुवार होगा।

﴿لو كان موسى حيا ما وسعه إلا اتباعي﴾

अगर आज मूसा अलैहिस्सलाम भी ज़िन्दा होते तो मेरे तरीक़े की इत्त्बिा किए बग़ैर उनको चारा नहीं होता।

अरब व अजम की हुक्मुरानी का रास्ता

मेरे भाईयो! दुनिया और आख़िरत के ख़ज़ानों को हासिल करने का एक ही रास्ता बाकी है, काफ़िर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से टकराए कि इसकी मानेंगे तो हमारी हुकमूतें चली जाएंगी, इसके पीछे चलेंगे तो हमारी इज़्ज़त चली जाएगी, हमारा

माल चला जाएगा, हमारा मुल्क चला जाएगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहाः

يا معشر قريش كلمة واحدة لو تعطونها دانت لك
العرب تؤدى لك العجم الجزية.

ऐ क़ुरैश की जमात! मैं तुम्हारी हुकूमतें लेने नहीं आया, मेरी मानोगे तो तुम्हारी हुकूमतें भी बढ़ जाएंगी, तुम्हारे माल भी बढ़ जाएंगे, अरब तुम्हारा कलिमा पढ़ेंगे, अजम तुम्हारे क़दमों में झुकेगा और किसरा की बेटियाँ तुम्हारे बिस्तर बिछाएंगी और किसरा के ख़ज़ाने तुम्हारी मस्जिद में आएंगे ओर तुम्हारी गलियों में आएंगे। मेरी बात मान लो, मैं दुनिया और आख़िरत की कामयाबियों को लेकर आया हूँ। मेरे भाईयो और दोस्तो! दुनिया और आख़िरत में इज़्ज़तें हासिल करने का अब और कोई रास्ता नहीं सिवाए *"ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"* के यह है बस कामयाबी की निशानी। अबू जहल कहने लगा ﴿وابيك عشر كلمات﴾ तेरे बाप की क़सम दस दफ़ा पढ़ने को तैयार हैं वह कौन सा बोल है? कहा यह कहोः

﴿لا اله الله وانى رسول الله﴾

इसको मानो। उन्होंने कहा यह हम नहीं मानते। जब इनसे मायूस हुए तो चचा से कहाः

﴿انت فقلها احاج لك بها عذر الله يوم القيمة﴾

ऐ चचा! तू क्यों यह कलिमा नहीं कहता, मैं तेरी क़यामत के दिन सिफ़ारिश करूँगा। एक दफ़ा तो कह दे।

तीन चीज़ें इन्सान की हलाकत का ज़रिया

मेरे भाईयो! तकब्बुर इन्सान को हलाक कर देता है, तकब्बुर इन्सान को बर्बाद कर देता है, दुनिया में सबसे पहला गुनाह तकब्बुर का हुआ जो शैतान ने किया।

﴿خلقتنى من نار وخلقته من طين.﴾

मुझे तूने आग से बनाया, इसे मिट्टी से बनाया, मैं इसे सज्दा नहीं करता। यह पहला गुनाह है इस काएनात में तकब्बुर का।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿المهلكة الثلاث﴾ तीन चीज़ें इन्सान को हलाक करने वाली हैं ﴿الكبر﴾ तकब्बुर ﴿حرض ابليس﴾ जिसने शैतान को उभारा कि सज्दा मत करो ﴿الحرص﴾ दूसरी चीज़ तमा जिसने आदम अलैहिस्सलाम को दाना खाने पर उभारा और जन्नत से निकाले गए ﴿الحسد﴾ तीसरी चीज़ हसद जिसने क़ाबील को तैयार किया हाबील के क़त्ल पर। ये तीन बड़े बड़े असबाब हैं जो सबसे पहले इस काएनात में वजूद में आए और इनमें सबसे बड़ा तकब्बुर है।

فاصدع بأمرك لم تصبك صبابة، ولقد صدقت وكنت قبل أمينا،
ولقد علمت بان دين محمد من خير اديان برية دينا، لو لا
الملامة أو حضار مصبّة، لوجدتني سمي بذاك مبينا.

भतीजे मुझे पता हे तू सच्चा हैं। खुलकर अपनी दावत दे, मुझे पता है तू सच्चा है और तेरा दीन भी सच्चा और सारे दीनों से बढ़कर तेरा दीन है लेकिन मैं तेरा कलिमा पढ़ूँ तो क़ुरैश की औरतें कहेंगी कि भतीजे का कलिमा पढ़ लिया था और सरदार होकर भतीजे के पीछे लग गया। ऐ मेरे भतीजे मुझे औरतों के

ताने मार देंगे इसलिए मैं तेरी कलिमा नहीं पढ़ता।

कलिमा तैय्यिबा का मफ़हूम

मेरे भाईयो! अब कामयाबी का एक ही रास्ता है और सब रास्ते बन्द हैं *"ला इलाहा इलल्लाह"* दिल में उतरा हुआ हो और *"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"* जिस्म में ज़ाहिर हो रहा हो। पता चले कि यह मुहम्मदी है।

"ला इलाहा इलल्लाह" दिल में जगह पकड़ता है *"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"* जिस्म पर जगह पकड़ता है, बाज़ारों में जगह पकड़ता है, घर में जगह पकड़ता है, बोलचाल, देखने उठने में जगह पकड़ता है।

यह मुहम्मदी है। अब इसका देखना अपना नहीं है अब इस को बोलना अपना नहीं है, यह कलिमे वाला है। इस वक़्त मेरे भाईयो और दोस्तो हमारा कलिमा पक्का नहीं है, नमाज़ी भी हम हैं, इल्म भी हमने पढ़ा हुआ है, क़ुरआन व हदीस को भी देखा हुआ है। कलिमा नहीं सीखा। तबलीग़ में भाई कलिमा पक्का किया जाता है कलिमा पक्का करने की ज़रूरत है कि एक अल्लाह पाक की ज़ाते आली पर निगाह जमकर सारी काएनात से हट जाए।

उसका इल्म कामिल और उसकी क़ुदरत क़ाहिर है ﴿ان بطش ربك لشديد﴾ उसकी पकड़ सब पर हावी हे जो चाहता है करके दिखाता है।

जब मुर्दे की हड्डियाँ ज़िन्दा होंगी

उमैय्या बिन ख़लफ़ आया, आस बिन वाइल आया, वलीद बिन

मुग़ैरह आया, तीन क़ौल हैं। हाथ में पुरानी हड्डी थी। उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिखाई फिर उसे मसला फिर हवा में उड़ा दिया कहने लगा:

﴿اتضح ان ربك يحي هذه وهي رميم.﴾

क्या कहता है तू ऐ मुहम्मद तेरा रब इसे भी ज़िन्दा करेगा हाँलाकि यह बिखर गई। अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उतारा,

وضرب لنا مثلا ونسي خلقه قال من يحي العظام وهي رميم قل
يحيها الذى انشاها اول مرة وهو بكل خلق عليم.

(سورة يٰسين، پ. ٢٣، ركوع ٤)

मेरे हाथ से पैदा हुआ मुझे मिसालें देता है और कहता है कि इस हड्डी को कौन ज़िन्दा करेगा? ऐ मेरे नबी! उसे कहो तू वह वक़्त याद कर जब तू कुछ नहीं था,

﴿هل اتى على الانسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا.﴾

(سورة الدهر. پ. ٢٩، آيت ١)

वह दिन याद कर जब तू कुछ भी नहीं था और मैंने तुम्हें अदम से वजूद बख़्शा।

﴿من نطفة﴾ एक नुत्फ़ा से ﴿من ماء مهين﴾ नापाक पानी से ﴿من نطفة امشاج﴾ मर्द व औरत के पानी से ﴿من سلالة طين﴾ खनकती हुई मिट्टी से।

जब मैंने तुम्हें अदम से वजूद दिया तो मैं तेरे ज़र्रों को भी जमा कर सकता हूँ और तुझे जमा करूँगा और खड़ा करूँगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सुन ले ऐ आस! अल्लाह इस हड्डी को भी जमा करेगा और उसे भी ज़िन्दा करेगा

और तुझे भी ज़िन्दा करेगा और तुझे जहन्नुम का अज़ाब चखाएगा।

मेरे भाईयो! अल्लाह पाक के इल्म का यक़ीन हो,

﴿ما يكون من نجوى ثلثة الا هو رابعهم﴾

तीन जब तुम बैठे हो तो अल्लाह फ़रमाते हैं कि चौथा मैं तुम्हें देख रहा हूँ कि क्या कह रहे हो?

﴿ولا خمسة الا هو سادسهم. (سورة المجادلة پ. ٢٨، ركوع ٢، آيت ٧)﴾

तुम पाँच जमा होते हो तो छठा मैं देखता हूँ। मेरी निगाह इतनी ज़बर्ददस्त है।

मेरा इल्म कामिल, क़ुदरत कामिल, बतिश कामिल, अता कामिल, अज़ाब कामिल, ज़िन्दा करना कामिल और मारना कामिल है।

सौ साल बाद ज़िन्दगी की क़ुरानी मिसाल

हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम का बैतुल मुक़द्दस से गुज़र हुआ जिसे बख़्त नसर ने तोड़ दिया था। ख़त्म हो चुका था। कहने लगे

﴿انى يحيى هذه الله بعد موتها.﴾

या अल्लाह यह भी ज़िन्दा होंगे? सब मिट चुके थे, शहर को आग लगा दी और सारा कुछ बर्बाद कर दिया। उन्होंने कहा या अल्लाह यह कैसे होगा? ﴿فاماته الله مائة عام﴾ सफ़र पर जा रहे हैं, गधे पर सवार हैं, खाना बंधा हुआ है। अल्लाह तआला ने आराम का तक़ाज़ा पैदा किया। पेड़ के नीचे गधे को बाँधा, खाने को

साथ रखा, लेटे तो अल्लाह ने जान को निकाल लिया। सौ बरस तक मौत दे दी। ﴿ثم بعثه﴾ फिर खड़ा किया सौ बरस बाद ﴿كم لبثت﴾ बताओ कितना ठहरे हो? ﴿يوما﴾ या अल्लाह एक दिन फिर सूरज को देखा ढलने वाला था कहा नहीं ﴿بعض يوم﴾ आधा दिन नहीं ﴿قال بل لبثت مائة عام﴾ एक सौ बरस तू यहाँ सोया है सोया नहीं बल्कि मरा है,

﴿فانظر الى طعامك وشرابك لم يتسنه.﴾

अपने खाने को देख लो, पानी को देख लो, खाना गर्म है, पानी ठंडा है। सौ बरस हो गए खाने को कोई चीज़ ख़राब नहीं कर सकी, अल्लाह का अम्र है। फ़्रिज के बग़ैर, बर्फ़ के बग़ैर पानी ठंडा हे और सारी दुनिया के असबाब सौ बरस पहले से चल रहे हैं लेकिन अल्लाह का अम्र उनके खाने को ढके हुए है।

मेरे भाईयो! सौ बरस में खाना ख़राब नहीं हुआ और गधे को देखो उसकी हड्डियाँ देखो उसका कुछ भी नहीं बचा। गधा जो टिकने वाली चीज़ है वह मिट्टी बन चुका है और खाना जो ख़राब होने वाली चीज़ है वह मौजूद पड़ा हुआ है। अल्लाह पाक ने कहा अब देखो!

﴿كيف ننشزها ثم نكسوها لحما. (سورة البقره پ.٣، آيت ٢٥٩)﴾

अब देखो मैं उसे कैसे ज़िन्दा करता हूँ। अब जो गधे पर अल्लाह का अम्र मुतवज्जेह हुआ। हड्डियाँ ज़मीन से उगती चली गयीं और खड़े होकर ढांचा बनता चला गया और उस पर गोश्त आता चला गया और चारों तरफ़ से जो खाल के ज़र्रात ज़मीन में ख़त्म हो चुके थे वे उड़ उड़कर उसके जिस्म पर लगने शुरू हो

गए। एक आन के आन में उज़ैर अलैहिस्सलाम के सामने सारा नक़्शा आ गया। गधा मिटा और मिटकर बना और बनकर उसमें रूह आई और वह दोबारा कान हिला रहा है ﴿فاذا هو ينطق﴾ और आवाज़ भी निकाल रहा है। अल्लाह तआला ने कहा अब जाओ उस बस्ती को देखो जिसको कहते थे यह कैसे ज़िन्दा होगी। अब आए तो देखा बैतुलमुक़द्दस आबाद था। सौ बरस गुज़र चुके थे।

एक यहूदी के तीन अजीब सवाल

एक यहूदी ने हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास सवाल लिखकर भेजे यह बताओ वह कौन दो भाई हैं जो एक दिन पैदा हुए, एक दिन वफ़ात पाई और एक सौ साल बड़ा है और एक सौ साल छोटा, पैदाइश का दिन एक, मौत का दिन एक लेकिन एक सौ साल बड़ा और एक सौ साल छोटा और वह कौन सी जगह है जहाँ एक दफ़ा उगा फिर कभी नहीं उगा?

उन्होंने कहा भाई इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाओ वही जवाब देगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया गया। उन्होंने फ़रमाया उज़ैर और उज़ैर जुड़वां भाई थे। उज़ैर को सौ बरस मौत आ गई उसकी ज़िन्दगी में से सौ बरस कट गए और फिर दोनों भाई एक दिन मरे, एक दिन पैदा हुए, एक दिन मरे। एक सौ बरस छोटा है एक सौ बरस बड़ा है और वह समुंद्र जिसे अल्लाह ने फाड़ा और फाड़कर ज़मीन के नीचे से निकाला। उस पर सूरज एक दफ़ा निकला और फिर पानी को मिलाया फिर कभी वहाँ ख़ुश्की न आई।

अल्लाह पाक ज़िन्दा करने वाला, मौत देने वाला, रिज़्क़ देने वाला, इज़्ज़त देने वाला, सारी काएनात उसके क़ब्ज़े में है। कुछ नौजवानों को घर से निकाला, नबियों को मानने वाले नौजवान होते हैं यह बात याद रखें।

उक़ाबी (जोशीली) रूह जब पैदा होती है ज़वानों में

नबियों की दावत को लेकर खड़े होने वाले नौजवान होते हैं,

﴿انهم فتية امنوا بربهم وزدنٰهم هدى.﴾

(سورة الكهف، ركوع ١٣، آيت ١٦)

पन्द्रह बरस से तीस बरस के ज़माने के नौजवान को "फित्ती" कहते हैं और तीस बरस से ऊपर चला जाता है तो शबाब कहते हैं।

अल्लाह पाक असहाबे कहफ़ का क़िस्सा सुना रहा है ﴿فتية﴾ नौजवान थे जिनकी नौजवानियाँ उठती थीं ﴿امنوا بربهم﴾ ईमान लाए ﴿وزدنٰهم هدى﴾ हमने उनके ईमान को और बढ़ाया अब एक तरफ़ माँ है, बाप है, दोस्त हैं, और एक तरफ़ *"ला इलाहा इलल्लाह"* बादशाह ने बुलाया और यूँ कहा या तो कलिमे पर बाक़ी रहो और या फिर मरने के लिए तैयार हो जाओ, या कलिमा होगा या तुम्हारी जान होगी अगर कलिमा पर रहना है तो मरना पड़ेगा और अगर कलिमे को छोड़ दोगे तो तुम्हें मैं छोड़ दूँगा नहीं तो तुम सबको क़त्ल कर दूँगा। एक रात की मोहलत देता हूँ और खुद कहीं चला गया। पीछे ये सारे नौजवान इकठ्ठे हुए उन्होंने कहा भाई ईमान बचाना सबसे ज़रूरी है न जान ज़रूरी है न माल ज़रूरी है न माँ-बाप ज़रूरी हैं न बीवी-बच्चे ईमान बचाना सबसे

ज़्यादा ज़रूरी है।

हमने ईमान नहीं सीखा, कलिमा नहीं सीखा हुआ, नमाज़ सीखी है, रोज़ा रखना भी सीखा है, कलिमा नहीं सीखा। इसलिए हमारी नमाज़ें कच्ची हैं, रोज़े कच्चे हैं।

नमाज़ से अल्लाह का ताल्लुक़ नहीं मिल रहा और बुराई से नहीं हट रहा, रोज़े से उसे तक़्वा नसीब नहीं हो रहा है, हज से ग़िना नसीब नहीं हो रहा है, ज़कात से उसके अन्दर सख़ावत का माद्दा पैदा नहीं हो रहा है, ज़कात देने से तकब्बुर पैदा हो रहा है हाँलाकि ज़कात देने से तवाज़े पैदा होती है इसलिए कि पीछे कलिमा कच्चा है कलिमा पक्का नहीं।

वे वहाँ से भागे उन्होंने कहा निकलो भाई जान बचाओ, रास्ते में चरवाहा मिला कहने लगा भाई कहा जा रहे हो? उन्होंने कहा भाई हम अल्लाह को मान चुके हैं और उस पर ईमान ला चुके हैं। ये बस्ती वाले हमें टिकने नहीं देते, हम जा रहे हैं। उसने कहा मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। बकरियाँ वहीं छोड़ दीं।

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु सबसे पहले क्यों?

मेरे भाईयो! ईमान पर सब कुछ क़ुर्बान किया जा सकता है, हर चीज़ पर ईमान मुक़द्दम है। इसी पर मेरी क़ीमत लगेगी, उस पर आपकी क़ीमत लगेगी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का दर्जा तुम्हारे अन्दर

﴿بكثرة صلوٰة وبصيامه﴾ अबूबक्र तुम में सबसे बेहतर इसलिए नहीं हैं नमाज़ें ज़्यादा हैं और रोज़े ज़्यादा हैं ﴿بل لما وقر فى قلبه من الايمان﴾ उसका दर्जा इस वजह से ज़्यादा हे कि उसके अन्दर में जो ईमान पेवस्त है तुम में से किसी के पास वह ईमान नहीं है। इसलिए उसका दर्जा ज़्यादा है, ईमान अन्दर में उतरा हुआ है, ईमान की ताक़त है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

﴿ان اللّٰہ یتجلی للناس عامة ولا بی بکر خاصة.﴾

अल्लाह तआला लोगों को अपना दीदारे आम कराएगा और अबूबक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) को दीदारे ख़ास कराएगा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

انی لا عرف رجلا باسمه وباسم ابيه وامه لا ياتی باب من ابواب الجنة الا قال مرحبا مرحبا ای تشريفا مبار كا.

मैं एक आदमी का नाम जानता हूँ जिसके माँ बाप को भी जानता हूँ वह जन्नत के जिस दरवाज़े से गुज़रेगा हर दरवाज़े की तमन्ना होगी कि मेरे में से यह इन्सान दाख़िल हो। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया ﴿هذا لمرتفع شانه يا رسول الله﴾ यह बड़ी शान वाला कौन है या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम? आपने फ़रमाया ﴿هو ابوبكر ابن ابی قحافة﴾ यह अबूबक्र है अबू क़हाफ़ा का बेटा। जिसे जन्नत का हर दरवाज़ा पुकारेगा।

और आप सल्लल्लाहु अलैहि ने फ़रमायाः

﴿اما انت يا ابا بكر فاول من يدخل من امتی.﴾

ऐ अबूबक्र! तू सबसे पहला है जो मेरी उम्मत में से जन्नत में दाख़िल होगा।

असहाबे कहफ़ पर क़ुदरत ख़ुदावन्दी का ज़ुहूर

ईमान को बचाने को निकले तो ग़ार आया, अल्लाह ने सुलाया, अब अपनी क़ुदरत को ज़ाहिर फ़रमा रहा है। एक साल, दो साल, दस साल नहीं सोए लगातार तीन सौ नौ बरस सोते रहे।

﴿ولبثوا في كهفهم ثلث مائة سنين.﴾

तीन सौ साल तक सोते रहे।

आदमी ज़्यादा से ज़्यादा आठ घंटे सोए, दस घंटे सोए, बेहोश है तो चौबीस घंटे सोए लेकिन आख़िर भूख ही उसे उठाएगी, भूख लगेगी उठेगा, प्यास लगेगी उठेगा, पड़े-पड़े थक जाएगा तो उठेगा, पेशाब का ज़ोर आएगा, हाजत का तक़ाज़ा ज़ोर से आएगा तो उठेगा, पसलियाँ दर्द करेंगी सोते-सोते तो उठ बैठेगा लेकिन अल्लाह अपनी क़ुदरत क़ाहिरा को दिखा रहा है। मैंने जान नहीं निकाली उनकी, उज़ैर की जान निकाली थी, इनकी जान नहीं निकाली, इनको सुलाया, तीन सौ बरस तक सोते रहे हैं।

﴿ونقلبهم ذات اليمين وذات الشمال.﴾

हम उनकी करवटें बदल रहे हैं कभी दाईं तरफ़ कभी बाईं तरफ़।

तीन सौ बरस में पेशाब नहीं आया, किसने पेशाब रोका? तीन सौ बरस में हाजत नहीं हुई, कौन है रोकने वाला? तीन सौ बरस

में भूख नहीं लगी, किसने भूख को मिटा दिया? तीन सौ बरस में पसलियाँ दर्द नहीं हुईं, किस ज़ात ने दर्द को हटा दिया? तीन सौ बरस में कोई कीड़ा, साँप बिच्छू उन्हें काटने नहीं आया, किस ज़ात ने उन्हें रोका? तीन सौ बरस में कोई शेर चीता उन्हें खाने नहीं आया, कौन सी क़ुदरत ने उन्हें पीछे धक्का दिया?

तीन सौ बरस में ज़मीन ने उन्हें नहीं खाया, ज़मीन खा जाती, ज़मीन निगल जाती। बड़ों-बड़ों को ज़मीन मिटा देती है, ज़मीन पर अम्र उतरा तुम इन्हें नहीं खाना, हवा पर अम्र उतरा तुम इन्हें जगाना नहीं, सूरज को हुक्म हुआ ऐ सूरज तेरी किरणें मेरे बन्दों पर सीधी नहीं पड़नी चाहिएं ﴾تقرضهم﴿ जब सूरज चलता है तो अल्लाह पाक का अम्र आता है कि जो सूरज की किरणों को उन से हटा देता है।

तीन सौ बरस के बाद फिर इनको उठाया ﴾ثلث مائة سنين﴿ तीन सौ बरस सो रहे हैं फिर उठाना ﴾قال قائل﴿ एक बोला ﴾كم لبثنا﴿ यार कितना अर्सा सोए, एक बोला ﴾يوما﴿ एक दिन, दूसरा बोला नहीं ﴾او بعض يوم﴿ आधा दिन, बाल नहीं बढ़े नाख़ुन नहीं बढ़े, कपड़े पुराने नहीं हुए, मैले नहीं हुए, फटे नहीं, थकावट नहीं और ﴾كلبهم باسط ذراعيه بالوصيد﴿ कुत्ता बाहर बैठा आराम से सो रहा है और वहाँ से फ़ौजें गुज़र रही हैं उनकी तलाश में, मुल्क का कोना कोना छान मार रहे हैं लेकिन अल्लाह तआला उनकी निगाहों पर पर्दा डाल रहे हैं, कुत्ता बाहर बैठा है वे अन्दर सो रहे हैं, फ़ौजें गुज़र रही हैं किसी को नज़र नहीं आ रहा है। अल्लाह पाक ने अन्धा कर दिया।

जो अल्लाह दिखाता है तो आँख देखती है जो अल्लाह आँखों से ओझल कर देता हैं उसे दुनिया की कोई ताक़त नहीं देख सकती।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सौ आदमियों के बीच घर से निकले यूँ मुठ्ठी भरकर फेंकी,

وجعلنا من بين ايديهم سدا ومن خلفهم سدا فاغشينهم فهم لا يبصرونO (سورة يٰسين ب. ٢٢، ركوع ١)

यानी बनाई हमने उनके आगे दीवार और उनके पीछे दीवार फिर ऊपर से ढाँप दिया सो उनको नहीं सूझता।

आयत पढ़ी और मिट्टी फेंकी, आँखें खुली, सोया कोई नहीं लेकिन अल्लाह तआला ने आँखों को अंधा कर दिया। आप सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम दर्मियान से गुज़र गए और किसी को ख़बर नहीं हुई।

जो अल्लाह दिखाएगा मैं देखूँगा, जिस पर अल्लाह पर्दा डाल देगा नहीं देख सकता। यहाँ इस वक़्त करोड़ों फ़रिश्ते हैं और ज़मीन से लेकर आसमान तक हैं और हमसे कसरत में हैं। मेरे भाईयो! हमें एक भी नज़र नहीं आ रहा है। जब अल्लाह (क़यामत के दिन) खोलेगा,

﴿فكشفنا عنك غطاءك فبصرك اليوم حديد. (سورة ق ب. ٢٦)﴾

आज हमने तेरी आँखों पर पर्दा हटा दिया। अब फ़रिश्ते भी नज़र आ रहे हैं, अब जिब्राईल भी नज़र आ रहे हैं, अब जन्नत भी नज़र आ रही है, जहन्नुम भी नज़र आ रही है, अर्श भी नज़र आ राहा है, लौह, क़लम, कुर्सी भी नज़र आ रही है।

अभी अल्लाह तआला ने आँख पर पर्दा डाला हुआ है। जो अल्लाह चाहते हैं वह दिखाई देता है जो अल्लाह नहीं चाहता वह नहीं देख सकता।

तीन सौ बरस के बाद उठाया, कितना अर्सा सोए? भाई आधा दिन सोए हैं, अच्छा भाई भूख लगी है अल्लाहु-अकबर तीन सौ बरस में तो उन्होंने भाई ऐसा करो जाना है और ﴿وليتلطف﴾ नर्मी से बात करना,

﴿ولا يشعرن بكم احدا. (سورة الكهف، پ.١٥)﴾

किसी को पता न चले, कहीं हम पकड़े गए तो मारे जाएंगे। उन्हें ख़बर नहीं कि बाहर तीन सौ बरस गुज़र चुके हैं।

हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला अल्लाह

मेरे भाईयो! हमने कलिमा नहीं सीखा, अल्लाह की क़ुदरत को नहीं पहचानते, कभी-कभी दिल में ख़्याल आता है कि अल्लाह तआला आजकल हैरान होते होंगे कि ये मेरे बन्दे कैसे हैं जो मेरी क़ुदरत को इनता कमज़ोर समझते हैं कि मैं दुकान के बग़ैर रोटी नहीं दे सकता और नौकरी के बग़ैर खाना नहीं खिला सकता।

﴿يا ابن آدم من أوصل إليك الغذآء وانت جنين فى بطن امك﴾

अरे मेरे बन्दे तू वह दिन याद कर ले जब तो माँ के पेट में था और मेरी रोज़ी तेरे पास आ रही थी। वहाँ कौन सा कारखाना था जो तुझे रोज़ी पहुँचा रहा था फिर मैंने तेरे में तदबीर को जारी किया, मेरी तदबीर चली, मैंने तुझे आहिस्ता- आहिस्ता परवान चढ़ाया। ﴿نطفة﴾ से ﴿مضغة﴾, ﴿مضغة﴾ से ﴿ثم خلقنا المضغة عظاما﴾

हड्डियाँ ﴿فكسونا العظام لحما﴾ फिर ऊपर गोश्त चढ़ाया ﴿انشأناه خلقا آخر﴾ ऊपर खाल चढ़ाई, खाल चढ़ाकर तुझे इन्सान बना दिया और तुझे परवान चढ़ाते चढ़ाते,

﴿اوحيت الى الملك المؤكل بالارحام.﴾

फ़रिश्ते को भेजा जाओ अब इस बन्दे को माँ के पेट से बाहर लाओ ﴿فاخرج قال عريشة من جناحه﴾ फ़रिश्ते ने अपने पर तुझे आलमे दुनिया में निकाला।

﴿لا لك سن نقطع﴾ तेरे मुँह में कोई दाँत नहीं कि किसी चीज़ को खा सके ﴿ولا لك يد تبطش﴾ तेरे हाथ में ताक़त नहीं कि किसी चीज़ को पकड़ सके।

﴿ولا لك رجل تمشى﴾ तेरे पाँव में ताक़त नहीं कि किसी चीज़ की तरफ़ चलकर जा सके। तू हक़ीर ज़ात थी। ऐसी हालत में ऐ मेरे बन्दे जब मैंने तुझे रोज़ी पहुँचाई तो तेरे बड़े होने पर भी मैं तेरा कफ़ील हूँ, कहाँ से रोज़ी आई? आसमान से माँ की छाती पर अम्र उतरा,

امرت لك عرقين رقيقين ينبعان لك لبنا خالصا وافعا فى الشتاء وباردا فى الصيف.

मैंने आसमान से अम्र उतारा और फ़रिश्ता तेरी माँ की छाती से दूध के चश्मे जारी कर गया जो तुझे गर्मियों में ठंडा दूध पिलाती है और सर्दियों में गर्म पिलाती है। अब मैं भूल सकता हूँ?

रहमते ख़ुदावन्दी और हमारी बेहिसी

﴿يا ابن آدم خلقت السموات والارض.﴾

ऐ मेरे बन्दे! मैंने सात आसमान बनाए और सात ज़मीने बनाई ﴿اولم يخلقهن﴾ और मैं ज़रा भी नहीं थका ﴿افيعيني عيش رغيف اسوقه اليك﴾ तुझे रोटी खिलाकर थक जाऊँगा? जब ज़मीन व आसमान बनाकर नहीं थका तो तुझे खाना खिलाकर भी नहीं थक सकता फिर तू क्यों सोचता है कि मेरी दुकान नहीं होगी तो रोज़ी कहाँ से आएगी? मेरी नौकरी नहीं होगी तो रोज़ी कहाँ से आएगी?

कल का रज़्ज़ाक भी अल्लाह

﴿يا ابن آدم لم اطالب كعمل غد فلا تسئلنى عن رزق غد﴾

मेरा एक दस्तूर सुन ले। मैंने तुझे कल का ज़िम्मेदार नहीं बनाया जो कुछ मेरा अम्र है आज है कल कोई नहीं। कल का तुझे पता ही नहीं। ﴿كم من مستقبل لغد لا يدركه﴾ आपने फ़रमाया कितने ही हैं कल के सूरज का इन्तिज़ार करने वाले जिनके मुक़द्दर में सूरज देखना लिखा ही नहीं है ﴿وكم من مستقبل ليوم لا يكمله﴾ और कितने हैं जो दिन को देख रहे हैं लेकिन उनके मुक़द्दर में आज के सूरज का छिपना नहीं लिखा हुआ है वे इससे पहले पहले यहाँ से निकल जाएंगे और कितने हैं जो कल का इन्तिज़ार कर रहे हैं लेकिन कल उनके ऊपर कभी नहीं आएगी और उन्हें क़ब्र में डाल दिया जाएगा। फ़रमाया तुझे कल का ज़िम्मेदार नहीं बनाया आज का ज़िम्मेदार है ﴿فلا تسئلنى عن رزق غد﴾ तू कल की रोज़ी की फ़िक्र न कर, कल की रोज़ी मेरे से मत मांग,

﴿فانى لم أنس من عصانى فكيف لمن اطاعنى.﴾

मेरे बन्दे! मैं तो नाफ़रमानों को नहीं भूलता, फ़रमांबरदारों को कैसे भूल सकता हूँ।

मेरे भाईयो! यह कलिमा सीखने की ज़रूरत है। अल्लाह पाक हर चीज़ का मालिक और ख़ालिक़ है और उसी के हाथ में सारी काएनात है और वह जिसे चाहे देता है और जिससे चाहता वापस ले लेता है। हर चीज़ पर उसका ग़लबा है। जवान की जवानी अल्लाह के हाथ में है।

बड़े बोल की सज़ा

नजरान में एक नौजवान था बड़ा ख़ूबसूरत, लम्बा चौड़ा क़द, मस्जिद में आया कोई बुज़ुर्ग बैठे थे। उन्होंने देखा और देखते रहे। कहने लगा क्या देखते हो? कहने लगे तुम्हारी जवानी को देखता हूँ, कैसी जवानी है। कहने लगा मेरी जवानी पर तो अल्लाह भी हैरान होता होगा। यह बोलना था कि वह छोटा होना शुरू हो गया, घटते-घटते एक बालिश्त रह गया। छः फ़िट का जवान छः इंच का हो गया। घर वाले आए और उसे हाथों में उठाकर ले गए जैसे मिट्टी को उठाकर लाते हैं। अल्लाह की ग़ैरत को जोश आया कि बदबख़्त मेरी दी हुई जवानी पर कहता है मैं हैरान होता हूँगा।

अल्लाह फ़रमाते हैं मेरी मख़्लूक़ ऐसी है रिवायत में आता है अगर मीकाईल के सिर पर सात समुंद्र का पानी डाल दिया जाए तो एक बूँद ज़मीन पर नहीं गिरेगा तो हमारी जवानी क्या हैसियत रखती है? इतने बड़े फ़रिश्ते अल्लाह तआला ने पैदा कर दिए।

﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية.﴾

(سورة الحاقه پ.۱۹، آیت ۱۷)

अर्श के थामने वाले आठ फ़रिश्ते हैं कान से लेकर यहाँ (हाथ से इशारा किया) का फ़ासला सात सौ बरस का है। अल्लाह के ख़ज़ानों में क्या कमी है।

मेरी क़दर कर लो

मेरे भाईयो! अल्लाह तआला फ़रमाते हैं मेरे बन्दों ने मेरी क़द्र नहीं की मुझे पहचाना नहीं।

कामयाबियों के ख़ज़ाने अल्लाह की मुठ्ठी में, मेरी और आपकी गर्दन अल्लाह के हाथ में, सारी दुनिया के बादशाहों की गर्दनें अल्लाह के हाथ में, ऐटम वालों के ऐटम अल्लाह के हाथ में, मुल्क वालों के मुल्क अल्लाह के हाथ में।

और सारी काएनात के ख़ज़ाने अन्दर व बाहर के आसमान के और दर्मियान के ऊपर के और तहतुस्सरा के, मादनियात के, समुंद्र के अन्दर, पहाड़ों के अन्दर, हवाओं के अन्दर, जन्नत और दोज़ख़ के ख़ज़ाने सारे के सारे अल्लाह पाक की दो उंगलियों के दर्मियान हैं वह जिधर को चाहे फ़ैसला करेगा।

एक हुक्म उतरेगा और सारा कुछ तोड़ कर दिखा देगा ﴿اذا السمآء انفطرت﴾ देखो आज आसमान कैसे टूट रहा है ﴿واذا الكواكب انتثرت﴾ आज देखो मैं सितारों को कैसे तोड़ रहा हूँ ﴿واذا القبور بعثرت﴾ आज देखो मैं क़ब्रों को कैसे उखाड़ रहा हूँ और ज़मीन कैसे टूट रही हे, पहाड़ों को देखो ﴿ينسفها ربی نسفا﴾ आज पहाड़ को देख जिनको देखकर तू हैरान होता था आज कैसे रूई के गालों की तरह उड़ते नज़र आते हैं जैसे बादल थे ऐसे अल्लाह हवा में

पहाड़ों को चला देगा। बड़े-बड़े फ़रिश्तों को हलाक कर दिया जाएगा और बड़ी-बड़ी मख़्लूक़ात को तोड़ दिया जाएगा और एक अकेले हुक्म के साथ सारे आसमान औ ज़मीनें टूट जाएंगी।

सिवाए जन्नत और दोज़ख़ के कि जन्नत और दोज़ख़ को अल्लाह इसलिए नहीं तोड़ेगा कि उसने उनको तोड़ने का फ़ैसला नहीं किया। जन्नत को बनाया हुक्म हो गया उसे तोड़ूंगा नहीं वरना तोड़ना चाहे तो सबको तोड़कर दिखा दे और फिर पैदा करना चाहे तो पैदा करके दिखा दे और सारी काएनात को समेट कर और तोड़कर और फ़ना करके फिर कहेगा ﴿لمن الملك يوم﴾ कौन है आज हाकिम? कोई भी नहीं अकेला है ख़ुद ही जवाब देगा ﴿لله الواحد القهار﴾ एक अकेला तन्हे तन्हा है। यह मेरे भाईयों दिल में उतर जाए।

सहाबा को कलिमे ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलाया

"ला इलाहा इलल्लाह" दिल में उतर जाए "मुहम्मुदर्रसूलुल्लाह" जिस्म में आ जाए कि अब मेरी ज़िन्दगी का हर तरीक़ा हुज़ूर पाक के तरीक़े पर होगा कि आप सारे ख़ज़ानों की कुंजियाँ लेकर आए ﴿نحش نحشة﴾ आप गोश्त खा रहे थे एक टुकड़ा मुँह में लिया ﴿سيد ولد آدم يوم القيمة ولا فخرا﴾ मैं हूँ सारी काएनात का सरदार क़यामत के दिन और इसमें कोई फ़ख़्र नहीं ﴿اول الناس خروجا من قبورهم إذا بعثوا﴾ जब तुम्हें क़ब्र से निकाला जाएगा तो सबसे पहले मेरे ऊपर से क़ब्र की मिट्टी हटेगी ओर मैं निकलूँगा दाईं तरफ़

अबूबक्र और बाईं तरफ़ उमर।

﴿هكذا نحشر يوم القيمة﴾

आप मस्जिद में तशरीफ़ लाए इधर अबूबक्र रज़ियल्लाह अन्हु थे उधर उमर रज़ियल्लाह अन्हु थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हाथ हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाह अन्हु के कन्धे पर रखा था और दूसरा हाथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के और चलते हुए आ रहे थे और ﴿هكذا نحشر يوم القيمة﴾ फ़रमाया इसी तरह हम तीनों क़यामत के दिन इकठ्ठे ज़िन्दा होंगे।

आपने फ़रमाया ﴿وزيرايا فى السماء﴾ मेरे आसमान में दो वज़ीर हैं ﴿جبرائيل وميكائل وزيرايا فى الدنيا﴾ और मेरे दुनिया में दो वज़ीर हैं अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा। आपने फ़रमाया ﴿سيدا كهول اهل الجنة ابوبكر و عمر﴾ जन्नत के अधेड़ लोगों के सरदार अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा। पचास से लेकर साठ सत्तर को "कहोल" कहते हैं। सत्तर के बाद बूढ़ा कहलाता है। ﴿سيد كهول اهل الجنة﴾ जन्नत के अधेड़ उम्र संजीदा लोगों के सरदार अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। ﴿سيد الشهداء حمزة﴾ और शहीदों के सरदार हम्ज़ा राज़ियल्लाहु अन्हु हैं, ﴿وسيد شباب اهل الجنة الحسن والحسين﴾ और जन्नत के नौजवानों के सरदार हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं, ﴿وسيدة نساء اهل الجنة فاطمة﴾ और जन्नत की औरतों की सरदार मेरी बेटी फ़ातिमा है।

कल कौन इज़्ज़त पाएगा?

कहा मैं सबसे पहले क़ब्र से निकलूँगा और ﴿بلال ينادى بالاذان﴾

﴿بين يديه﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बिलाल मेरे आगे अज़ान देता चल रहा होगा। आज बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की इज़्ज़त का पता चलेगा। आज मौज़्ज़िन की इज़्ज़त का पता चलेगा। हमारे यहाँ तो मोज़्ज़िन तनख़्वाहदार नौकर होता है लेकिन अल्लाह पाक के हाँ उसकी क़द्र और है, अल्लाह पाक समझते हैं कि मौज़्ज़िन कौन है और अल्लाह तआला समझते हैं कि ईमान वाला कौन है और तक़्वे वाला कौन है? अल्लाह के यहाँ क़द्र लगेगी। इन्सान क़द्र नहीं करता, अल्लाह क़द्र करता है। तक़्वे की बुनियाद पर क़ीमत लगेगी।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु आगे चले जा रहे हैं ﴿اول الناس خروجا﴾ सबसे पहले मैं निकलूँगा ﴿قائدهم اذا وفدوا﴾ और जब मैदाने हश्र में तुम्हें खींच खींचकर डाला जाएगा तो मैं तुम में सबसे पहले आगे चल रहा हूँगा। सारे इन्सान अल्लाह के रसूल के पीछे मैदाने हश्र को चल रहे होंगे। काफ़िर भी मुसलमान भी ﴿وخطيبهم اذا انصتوا﴾ और जब तुम्हारी ज़बानें बन्द हो जाएंगी और कोई बोल नहीं सकेगा ﴿شافعهم اذا حبسوا﴾ और जब तुम्हारे क़दम टिक जाएंगे और तुम्हें कदमों का चलाने की हिम्मत नहीं होगी ﴿عنت الوجوه للحى القيوم﴾ चेहरे ज़लील हो चुके होंगे।

जब जहन्नुम की चिंघाड़ सुनाई देगी

मेरे भाईयो! हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया जहन्नुमं एक चीख़ मारेगी। सारे फ़रिश्ते, सारे नबी, सारे वली, सारे सिद्दीक़, सारे शहीद, सारे इन्सान मुँह के बल ज़मीन पर गिर

जाएंगे और कहेंगे या अल्लाह बस अपनी ज़ात का सवाल है और कुछ नहीं मांगते, सिवाए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते गिरामी के कि ऐसे आलम में कहेंगे ﴿يا رب امتی امتی﴾ अल्लाह मेरी उम्मत को बचा ले।

हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया उस वक़्त जब जहन्नुम चीख़ मारेगी अगर तेरे पास सत्तर नबियों का भी अमल होगा तो तू कहेगा मेरी निजात आज नहीं हो सकती। ऐसे ख़ौफ़ का आलम अल्लाह ने बनाया है। फ़रमाया इस वक़्त मैं हूँ तुम्हारी सिफ़ारिश करने वाला ﴿وانا مبشرهم اذا ابسوا﴾ और जब जहन्नुम चीख़ मारेगी और चिंघाड़ेगी उस वक़्त मैं तुम्हारी सिफ़ारिश करने वाला हूँ।

ईमान क्या है और इस्लाम क्या है?

मेरे भाईयो! सारी दुनिया की इज़्ज़तें और कामयाबियाँ हुज़ूर वाले तरीक़े में हैं। ईमान जितना अन्दर में उतरेगा उतना इन्सान मुसलमान बनेगा। याद रखना मेरे भाईयो! ईमान के बक़द्र हम मुसलमान हैं और ईमान क़ुर्बानी के साथ अन्दर में उतरता है। इसलिए जब बद्दू आए और कहने लगे क़ुरआन में है ﴿قالت الاعراب امنا﴾ बद्दुओं ने कहा जी हम ईमान लाए, अल्लाह तआला ने कहा ईमान नहीं लाए कहो ﴿اسلمنا﴾ मुसलमान हुए हैं ﴿ولما يدخل الايمان فى قلوبكم﴾ अभी ईमान तुम्हारे अन्दर नहीं उतरा,

﴿وان تطيعوا الله ورسوله لا يلتكم من اعمالكم شيئا﴾

हाँ अगर तुम मानोगे अल्लाह और रसूल की तो तुम्हारे अमल

भी ख़राब नहीं होंगे लेकिन ईमान वाले वे हैं—

﴿الذین امنوا باللّٰہ ورسولہ ثم لم یرتابوا.﴾

जो अल्लाह और रसूल पर ईमान लाकर फिर जम गए। सारी काएनात की इज़्ज़तें लेकर हुज़र सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया में तशरीफ़ लाए। आपका हर-हर तरीक़ा सातों ज़मीन व आसमान से ज़्यादा क़ीमती है।

मेरे भाईयो और दोस्तो! हुज़र सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले तरीक़े पर ज़िन्दगी की क़ीमत लगेगी और आप ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तुम देखोगे कि मेरी सरदारी कैसी थी। सारे लोग दम साधे हैं कोई बोल नहीं सकता। आपकी ज़बाने मुबारक हिलेगी और महशर क़ायम होगा और हिसाब किताब शुरू होगा।

हुक्म होगा कि आने दो यह उम्मत है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सबसे पहले मेरी उम्मत होगी जिसे जन्नत में दाख़िल किया जाएगा और मेरी उम्मत होगी जिसे सबसे पहले पुले-सिरात से गुज़ारा जाएगा।

وسیق الذین اتقوا ربهم إلی الجنة زمرا، حتّٰی إذا جاؤها وفتحت
ابوبها وقال لهم خزنتها سلٰم علیکم طبتم فادخلوها خٰلدین.
(سورة الزمر پ. ٢٤، رکوع ٥، آیت ٧٣)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह अल्लाह तआला जो कह रहे हैं कि

हम वफ़्द बनाकर तक़्वे वालों को अपने पास बुलाएंगे तो वफ़्द तो सवारों को कहते हैं ﴿الوفد راكب﴾ वफ़्द होता है जो सवार होकर आए। आपने फ़रमाया ﴿والذي نفسي بيدي﴾ ऐ अली! उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है उनके लिए जन्नत की ऊँटनियाँ लाई जाएंगी जिनके पालान सोने के लगामें ज़मुर्रद की और उनके तसमें नूरानी जो चमक रहे होंगे। उनका एक-एक क़दम वहाँ जाएगा जहाँ आँख जाएगी और ये ऊँटनियाँ उनको उड़ाती हुई जन्नत के दरवाज़े तक पहुँच जाएंगी।

ये मुहम्मदी हैं, मुहम्मद रसूलुल्लाह के सांचे में ढल चुके हैं। उनके अन्दर का फ़िक्र भी, अन्दर का जज़्बा भी, अन्दर का ईमान भी, अन्दर का शौक़ भी हुज़ूर वाला बन गया।

बड़ाई सिर्फ़ अल्लाह की

मेरे भाईयो! अन्दर का जज़्बा यह भी हुज़र सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाला बन जाए और हुज़रे पाक का जज़्बा दुनिया कमाने का नहीं था, बड़ाई चाहने का नहीं था, अल्लाहु-अकबर!

एक बार आप तशरीफ़ ले जा रहे हैं सहाबा दाएं बाएं चल रहे हैं, आप बीच में चल रहे हैं ﴿فجلس﴾ वहीं बैठ गए। जब सारे चले गए फिर खड़े हुए। अजी यह क्या हुआ? कहा मेरे जी में बड़ाई की कोई चीज़ आ रही थी।

मेरे भाईयो! नबी में बड़ाई नहीं आया करती। नबी तो मासूम होता है लेकिन यह उम्मत को सिखाया जा रहा है। फ़रमाया कि मेरे अन्दर में कुछ बड़ाई आ रही थी, इसलिए बैठ गया कि ये

आगे चले जाएं। एक बार लिबास मंगवाया किसी ने हदिया दिया था। आप ने जब पहना तो बड़ा ख़ूबसूरत लग रहा था फ़ौरन उतार दिया। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपने क्यों उतार दिया? आपको तो बड़ा अच्छा लग रहा था। फ़रमाया ﴿انى اجد فى نفسى شيأ﴾ अरे मेरे नफ़्स में कोई चीज़ आ रही थी, मैंने उतार दिया।

अन्दर का जज़्बा भी हुज़ूरे पाक वाला हो जाए। आपने दुनिया को ठोकर मारी है। ऐ सोना चाँदी! किसी और को धोका दे। यह आपके अन्दर का जज़्बा है। यह जज़्बा भी अन्दर में बन जाए और ज़ाहिर भी ढल जाए और अन्दर भी ढल जाए, दुनिया से नफ़रत हो जाए, दुनिया की हिक़ारत दिल में उतर जाए। इस जज़्बे पर फ़ैसला होगा।

जन्नत कौन खोलेगा

जन्नती जन्नत के दरवाज़े की तरफ़ चल रहे हैं, दरवाज़ा बन्द है आज कोई खुलवाकर नहीं दिखा सकता। यहाँ पहचान होगी कि कौन मुहम्मदी है? हमारी तो पहचान ही मिट गई, जन्नत के दरवाज़े बन्द हैं, कोई नहीं खुलवा सकता, दरवाज़े के ऊपर याक़ूती कड़े लगे हुए हैं, उनको बजाते रहेंगे मस्त खड़े हुए हैं, दरवाज़ा नहीं खुलता। उसमें से एक सिर निकलेगा जो सारी जन्नत में फैलता चला जाएगा ﴿فيبلغ كل حوار﴾ जन्नत की हर औरत को पता चलेगा कि जन्नत वाले दरवाज़े पर आ चुके हैं ﴿فتستخف هل عجلة﴾ वह ख़ुशी से पागल होकर छलांग लगाएगी और अपने

नौकर को भेजेगी जाओ दरवाज़ा खोलो और दरवाज़ा खुलवाकर सारी जन्नत की हूरें दरवाज़ों पर खड़ी हुई अपने ख़ाविन्दों का इन्तिज़ार कर रही हैं लेकिन दरवाज़ा अभी बन्द है। उसके खुलने में अभी देर है। कौन खुलवाए? अब आएंगे आदम अलैहिस्सलाम के पास कि दरवाज़ा खुलवाइए। कहेंगे मैंने ही तो निकाला है मैं कैसे खुलवाऊँ? मैं नहीं खुलवा सकता।

सबसे ज़्यादा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सताया गया और सबसे ज़्यादा नाज़ुक हालात आए और सबसे ज़्यादा आपने तवाज़े अपनाई, लिबास भी ऐसा पहना कि जिसमें बड़ाई पैदा न हो, बैठने की शक्ल भी ऐसी बनाई कि जिसमें तवाज़े हो और बड़ाई पैदा न हो यहाँ तक कि कोई बाहर से आता तो आकर ﴿ايكم محمد﴾ तुम में से नबी कौन सा है जो दावा करता है नुबुव्वत का? इतना भी नहीं पता चलता कि उनमें नबी कौन है? अब अल्लाह ने उतना ही ऊँचा किया है।)

अब कोई नबी इतनी हिम्मत करता कि वह दरवाज़ा खुलवाए, सारे कहेंगे जी आप खुलवाएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाएंगे। सबसे पहले जन्नत के दरवाज़े को खट खटाऊँगा। जन्नत का दारोग़ा रिज़वान आएगा, कौन है? दरवाज़ा खुलने से पहले जन्नत के दरवाज़े पर दो चश्मे जारी हैं। एक चश्मे से अल्लाह तआला फ़रमाएंगे पानी पियो, एक से फ़रमाएंगे वुज़ू करो। जब पानी पिएंगे तो उनके अन्दर कोई गंदगी बाक़ी नहीं रहेगी, सीना गंदगी से पाक, अब यहाँ हसद पैदा नहीं होगा। हर आदमी अपनी-अपनी मंज़िल की तरफ़ जा रहा है और जन्नत की बीवियाँ जन्नत के दरवाज़े पर खड़ी हैं।

जब हूरें इस्तिक़बाल को आएंगी

﴿بأى بنان تعاطيه﴾ अरे अल्लाह के बन्दो! तुम्हें ख़बर है? जन्नत की औरतें किन हाथों से गले लगाएंगी ऐसे उनके हाथ हैं:

لو ان بنانا من بنانها بدالتمث ضوء الشمس كما تطلع
الشمس ضوء النجوم.

अगर उनकी उंगली का एक पोरा सूरज के सामने आ जाए तो सूरज ऐसे छिप जाए जैसे सूरज के सामने सितारे छिप जाते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया जब उसके पोरे का यह हाल है ﴿فما بدت وجهها﴾ तो उसके चेहरे का क्या हाल होगा?

अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से कहा जाओ मेरी जन्नत को देखो। एक बात याद रखें अल्लाह तआला ने जन्नतुल फ़िरदौस किसी को नहीं दिखाई। वह बन्द है, उस पर मोहर लगी हुई है। सारी जन्नतों की ज़मीन चाँदी की, जन्नतुल फ़िरदौस की ज़मीन सोने की, सारी जन्नतों के महल सोने चाँदी के और जन्नतुल फ़िरदोस के महल हैं,

﴿لبنة من لؤلؤ بيضاء﴾ एक ईंट सफ़ेद मोती की ﴿لبنة من ياقوته حمراء﴾ एक ईंट सुर्ख़ याक़ूत की, ﴿لبنة زمردة خضراء﴾ एक ईंट सब्ज़ ज़मुर्द की ﴿ملاطها المسك﴾ गारा कस्तूरी ﴿حصبها لؤلؤ﴾ कंकर मोती ﴿حشيشها الزعفران﴾ घास ज़ाफ़रानी ﴿سقفها عرش الرحمٰن﴾ उसकी छत अल्लाह पाक का अर्श है। वह अल्लाह तआला ने किसी को नहीं दिखाई।

दा'ई (दावत देने वाले) की जन्नत

हदीस में आता है इस (जन्नतुल-फ़िरदौस) में एक पेड़ है। उसके नीचे से निकलता है सुर्ख़ याक़ूत का घोड़ा और शाख़ों से निकलते हैं जोड़े, जब यहाँ जाएगा और उस सुर्ख़ याक़ूत के घोड़े पर सवार होकर और जोड़े पहनकर हवा में उड़ेगा तो उसके चेहरे का नूर सारी जन्नत में फैलता चला जाएगा और नीचे वाले उसकी शान को देखकर कहेंगे ﴿بم بلغ﴾ या अल्लाह इतना बड़ा दर्जा उसे क्यों दिया? तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे:

﴿لأنك تقعد عند اهلك فى البيت وهو يجاهد فى سبيل الله.﴾

तू अपने घर में बीवी के पास बैठता था और यह मेरे रास्ते में दर-ब-दर फिरता था। इसलिए मैंने इसको यह दर्जा दिया है। बैठने वाले और फिरने वाले बराबर नहीं हो सकते।

दा'ई के आमाल की क़द्र

एक आदमी आया,

﴿يا رسول الله كيف لى ان انفق من مالى.﴾

आप बताएं मैं अपना पैसा ख़र्च करना चाहता हूँ और जो आदमी अल्लाह के रास्ते में निकला हुआ है उसका अज्र हासिल करना चाहता हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तेरे पास कितने पैसे हैं? उसने कहा ﴿عندى ستة آلاف﴾ मेरे पास छः हज़ार हैं। आपने फ़रमाया तू सारा ख़र्च कर दे तो अल्लाह के रास्ते में जो सो रहा है उसकी नींद के अज्र को भी हासिल नहीं

कर सकता, सोने वाले का अज्र भी नहीं मिल सकता, आमाल का तो क्या पूछते हो।

एक हदीस में मैंने पढ़ा, जन्नत में लाखों हूरें इसके आसपास इकठ्ठा होंगी। एक को देखेगा वह कहेगी ﴿اتذكر يوم دعوت فلانا﴾ आपको याद है फ़लाँ दिन में आपने फ़लाँ आदमी को दावत दी थी। उस दावत के बदले में अल्लाह तआला ने मेरी आपसे शादी कर दी, फिर इधर देखेगा तो एक और खड़ी नज़र आएगी ﴿اتذكر يوم كذا﴾ आपको याद है फ़लाँ दिन जब आपने फ़लाँ आदमी को दावत दी थी उसके बदले में अल्लाह तआला ने मेरी आपसे शादी करी, इधर देखेगा तो एक और खड़ी है ﴿اتذكر يوم كذا﴾ आपको याद है फ़लाँ दिन एक आदमी को आपने बुराई से हटाया था उसके बदले में अल्लाह तआला ने मेरी आपसे शादी कर दी। उधर देखेगा एक और खड़ी है ﴿اتذكر يوم كذا﴾ वह दिन याद है आपने एक आदमी को बुराई से रोका था और उसे हटाया था हुस्ने सुलूक के साथ, यूँ नहीं रोकना अरे मत करो। यह हिमाक़त है औ यह ज़ुल्म है। अल्लाह की तरफ़ बुलाने के लिए हिकमते अमली फ़र्ज़ है।

﴿ادع الى سبيل ربك بالحكمة.﴾

अल्लाह की तरफ़ हिकमत से बुलाओ वरना लोगों को काफ़िर बना दोगे और यह हिकमत अल्लाह के रास्ते में निकलकर सीखनी पड़ेगी, तबलीग़ हिकमत के बग़ैर नहीं। वह कहेगी तुम्हें याद है कि तुमने फ़लाँ वक़्त फ़लाँ औरत को दावत दी थी। उसके बदले में अल्लाह ने मेरी तुम से शादी कर दी।

﴿وان فی الجنة حوراء﴾ और जन्नत में एक हूर है,

﴿اسمها وعن يسارها سبعون الف وصيف.﴾

उसके दाएं तरफ़ सत्तर हज़ार ख़ादिम हैं और उसके बाएं तरफ़ सत्तर हज़ार ख़ादिम हैं। एक लाख चालीस हज़ार ख़ादिमों में पुकार कहती है,

﴿اين الآمرون بالمعروف والناهون عن المنكر.﴾

कहाँ हैं भलाईयों को फैलाने वाले, बुराईयों को मिटाने वाले? ऐसी-ऐसी बीवियाँ अल्लाह तआला ने तैयार कर रखी हैं ﴿بای بنان تعاطیه﴾ किन हाथों से तुम्हें गले लगाएंगी। वे औरतें ऐसे हाथों से तुम्हें गले लगाएंगी कि उनकी उंगली का एक पोरा सूरज को ग़ाएब कर सकता है।

चार ख़ुशख़बरियाँ चार चीज़ों से पैदा होने वालियाँ

जब जन्नती दरवाज़े पर आएगा तो दौड़कर गले लगाएंगी और ख़ुशख़बरी देंगी।

الا ونحن الخالدات فلا نموت ابداء ونحن الراضيات فلا نسخط
ابداء ونحن المقيمات فلا ونحل ابداء ونحن الناعمات ابدا
طوبیٰ لمن كان لنا وكنا له.

सुनो! ऐ हमारे घर वालों चार ख़ुशख़बरियाँ अभी से ले लो—

हम हमेशा जवान हैं कभी बुढ़ापा नहीं आएगा, हम हमेशा राज़ी हैं कभी ग़ुस्सा नहीं आएगा, हम हमेशा तेरे पास हैं कभी छोड़कर नहीं जाएंगे

दुनिया में कहती हैं मैं जा रही हूँ तू संभाल अपने बच्चों को। हाँ यहाँ तो माँ-बाप का ज़ोर दिखाएगी। वहाँ नहीं होगा। वहाँ उनके माँ-बाप है ही नहीं।

अल्लाह तआला ने चार चीज़ों से पैदा किया, ﴿ومن المسك والعنبر والزعفران والكافور.﴾ चार चीज़ों से अल्लाह तआला ने उनको पैदा किया और वह पैदा करता रहता है और वे पैदा होती रहती हैं और वह देता रहता है और हमेशा देता रहेगा, ﴿وإن الرجل ليتخذ على سريرة سبعين سنة لا يتحول.﴾ एक एक मजलिस में सत्तर-सत्तर बरस तक बैठक है। देख रहा है, चारों तरफ़। पीछे से कोई कन्धे पर हाथ मारेगा, मुड़कर देखेगा लड़की नज़र आएगी। ऐसी हसीन के उसके गालों में अपना चेहरा नज़र आएगा।

जिनके चेहरों में मुँह दिखाई दे

मेरे भाईयो! अल्लाह तआला ने क़ुरआन में जन्नत की औरतों की तारीफ़ करके शौक़ दिलाया है। हमारे बीच से उनके तज़्किरे ही मिट गए। क्यों नहीं रोज़ाना लोग दुकानों को वक़्त दे रहे हैं? दुकानों पर क्यों वक़्त दे रहे हैं? कि जन्नत की औरत सामने नहीं और मिट्टी की औरत सामने है। दुकान में क्यों भागता है कि दुनिया की औरत सामने खड़ी है और जन्नत की औरत सामने नहीं हैं। उसकी रग़बतें ख़त्म, उसके तज़्किरे ख़त्म। उनका ज़िक्र ही निकल गया।

मेरे भाईयो! उस हूर के चेहरे में अपना चेहरा नज़र आएगा और सत्तर जोड़ों में उसके जिस्म पर होंगे जो झिलमिल चमक रहे होंगे और उसके ताज का अदना मोती पूरब व पच्छिम को

चमकता होगा और जो हँसेंगी तो उसके दाँतों के नूर से सारी जन्नत में रौशनी फैलगी। वह कहेगी ﴿اما لك لنا من رغبة﴾ हुज़ूर आपको हमारी ज़रूरत है? वह तो बेचारा वैसे ही हवास उड़ा हुआ है कहेगा कौन है? कहाँ से आई है? मेरी जन्नत में तो थी नहीं, कहाँ से आई है? कहेगी ﴿انا من المزيد﴾ मुझे मेरे रब ने भेजा है और कहा कि मैं भी हूँ और भी आ रही हैं।

ईमान सीखने की मेहनत

मेरे भाईयो! इस कलिमे को पक्का करने की ज़रूरत है। इसी पर दुनिया और आख़िरत की कामयाबी के फ़ैसले होंगे। इसकी मेहनत के लिए निकाला जा रहा है। साल-साल के लिए छः-छः महीने के लिए, चार-चार महीने के लिए। अन्दरून मुल्क के लिए बैरून मुल्क फिरने के लिए "ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" पक्का हो जाए और फिर सारे आलम को इसकी दावत देनी है और सारे आलम को इस पर खड़ा करना है। इसके लिए बताओ भाई कौन है मर्दे मैदान जो कूदकर इस मैदान में आए कि भाई ईमान हमने सीखना है। दुकानों से निगाह हट जाए, चीज़ों से निगाह हट जाए, असबाब से निगाह हट जाए, अल्लाह पाक की ज़ाते आली पर आ जाए और आख़िरत की नेमतें सामने हों और दुनिया की नेमतें नज़रों से ओझल होती चली जाएं और यह भाई बातों से तो होगा नहीं यह तो मेहनत से होगा ﴿من جد وجد﴾ इसके लिए इरादे फरमाएं भाई।

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال محمد كما تحب وترضى

○ ○ ○

यूरोप की तहज़ीब को आग लगा दो

الحمد للّٰہ الذی لم یتخذ صاحبة ولا ولدا ولم یکن لہٗ شریک فی الملك ولم یکن لہٗ ولیّ من الذل وکبّرہ تکبیرا ونقدرہ تقدیرا. واشھد ان لا الہ الا اللّٰہ وحدہ لا شریك لہٗ اشھد ان سیدنا ومولانا محمدا عبدہ ورسولہ ارسلہ بالحق بشیرا ونذیرا وداعیا إلی اللّٰہ باذنہ وسراجا منیرا صلی اللّٰہ تعالی علیہ الہٖ اصحابہٖ وبارك وسلم تسلیما کثیرا. اما بعد

فاعوذ باللّٰہ من الشیطان الرجیم.
بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم.

فاذا اردنا ان نھلك قریة امرنا مترفیھا ففسقوا فیھا فحق علیھا القول فدمرناھا تدمیرا○ وکم اھلکنا من القرون من بعد نوح وکفٰی بربّك بذنوب عبادہٖ خبیراً بصیرا○ من کان یرید العاجلة عجّلنا لہٗ فیھا ما نشاء لمن نرید ثم جعلنا جھنّم یصلٰھا مذموما مدحورا○ (سورہ بنی اسرائیل پ. ۱۵ آیت ۱۶ تا ۱۸)

قال النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ما رأیت مثل الجنة. مقالدھا وما رأیت مثل النار إتق النار ولو بشق بأمرہٖ إن اللّٰہ یعثنی کافة للناس رحمة.

मस्जिद में किसी के अदब में खड़ा होना नाजाएज़ है

पहले कई बार बताया जा चुका है मस्जिद में किसी के लिए खड़ा होना जाएज़ नहीं। यह अल्लाह का घर है। यह अल्लाह की ताज़ीम व अज़मत के लिए न कि इन्सान की ताज़ीम व अज़मत के लिए है। अल्लाह के नबी मस्जिद में आते थे तो कोई उनके लिए खड़ा नहीं होता था और न ही आप उसको पसन्द फ़रमाते थे बल्कि आप उनको बिठाते थे। हमारे यहाँ एक तो इल्म की कमी है दूसरे कोई तहक़ीक़ नहीं है। इस्लाम रिवाज बना हुआ है। मस्जिद अल्लाह की अज़मत का घर है यहाँ किसी इन्सान की ताज़ीम के लिए खड़ा होना जाएज़ नहीं, ताज़ीम अल्लाह के लिए है। खड़ा न हुआ करें मुनासिब नहीं है। हम यहाँ अल्लाह के सामने खड़े होते हैं मख़्लूक़ के सामने नहीं तो इसलिए यहाँ अल्लाह कहता है:

في بيوت اذن الله ان ترفع ويذكر فيها اسمه، يسبح له فيها بالغدو
والاصال، رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله واقام
الصلوة وايتاء الزكوة يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والابصار

(سورہ نور پ ١٨، آيت ٣٦ تا ٣٧)

यहाँ अदब बताया गया है। एहतियात करनी चाहिए। लोगों का एहतिराम अपनी जगह पर है, अज़मत अल्लाह की ज़ात के लिए है।

जाहिल कौन?

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! न जानने के दो दर्जे हैं। एक

आदमी जानता ही नहीं इसका नाम जिहालत है। एक आदमी ग़लत जानता है इसका नाम भी जिहालत है, नादानी है। किसी को पता ही नहीं कि घोड़ा क्या है तो कहेंगे भाई जाहिल है। घोड़े के बारे में भी नहीं जानता। एक आदमी गधे को घोड़ा कहे तो यह भी जाहिल है, ख़च्चर को घोड़ा समझे तो यह भी जाहिल है कुछ समझा तो है मगर बदक़िस्मती से ग़लत समझा। ऊँट को घोड़ा समझ बैठा, हाथी को गधा समझ बैठा तो पहले वाला जो जानता ही नहीं वह भी जाहिल है और यह दूसरा भी जाहिल है।

दूसरा जानता है मगर ग़लत जानता है यह भी जाहिल है तो इस जिहालत को जिहालत मुरक्कब कहते हैं। दो जिहालतें इकठ्ठी हो गयीं। दो जिहालतें न जानना जमा ग़लत जानना तो पहला जो दर्जा होता है उसे समझाना आसान होता है जो दूसरा दर्जा है उसे समझाना मुश्किल होता है कि वह ग़लत जानता है और उसे सही कह रहा है। जब किसी क़ौम का अमल ग़लत हो जाता है तो उन्हें वापस लाना आसान होता है लेकिन जब उनका इल्म बिगड़ता है और उनका इल्म जिहालत का शिकार हो जाए तो उन्हें वापस लाना मुश्किल हो जाता है। नामुमकिन तो नहीं है मुश्किल बहुत हो जाता है।

एक तख़्ती साफ़ है उस पर लिखना आसान है, एक तख़्ती पर लिखा हुआ है पहले उसे मिटाया जाएगा। मिटाने के बाद उसको दोबारा साफ़ किया जाएगा। बचपन में हम उस पर लिखा करते थे, साफ़ करते फिर उस पर दोबारा लिखा जाएगा तो कितने काम बढ़ गए ग़लत लिखे हुए को मिटाना फिर उसे साफ़ करना फिर उस पर दोबारा लेप करना फिर उस पर सही लिखना। काम

बढ़ गया, ज़्यादा हो गया। इस वक़्त हम अमल के लिहाज़ से भी बिगड़े हुए हैं और इल्म के लिहाज़ से बिगड़े हुए हैं। जब क़ौमों का इल्म ग़लत हो जाए फिर कुछ लोगों को इसके लिए फ़ना होना पड़ता है उनको वापस लाने के लिए अगर ऐसा कोई तब्क़ा तैयार न हो तो फिर सारी क़ौम डूबती है, किश्तियाँ डूबती हैं। बाक़ी रहने को नस्ल नहीं रहती खंडर होते हैं टूटे हुए, उजड़े हुए तय्याक़ होते हैं। गुज़रने वाले गुज़रते हैं और कहते हैं कि यहाँ कभी कोई रहा करता था, यहाँ भी कभी कोई आबादी थी। उस जगह को देखने के बाद यह समझ में आता है कि यक़ीनन यहाँ लोग रहा करते थे जो अब तो सिर्फ़ खंडर की शक्ल में रह गया है जो बाक़ी रहने वाले होते हैं वह मिट्टी की तह में चले जाते हैं। जो अल्लाह की पकड़ में आकर अपनी ग़लतियों की सज़ा भुगत रहे हैं।

पी०एच०डी० करने वाला आज क़ुरआन भी नहीं पढ़ सकता

हमें क़ुरआन से काटा गया है। मस्जिद भरी है मगर एक आदमी ऐसा नहीं जो अल्लाह के पैग़ाम को समझता हुआ उठता हो। हर मुल्क भरा है, इन्सान धंसे हुए हैं, आबादी की कसरत है लेकिन करोड़ों की आबादी में लाखों भी नज़र नहीं आते हैं जो अल्लाह का पैग़ाम समझते हों। उ ते हों उस पर लब्बैक कहते हों। कहने पर उठते हों, हटाने पर हटते हों। तब्क़ा ही कोई नीं कालेज भरे हुए, युनिवर्सिटियाँ भरी हुई हैं प्राइवेट स्कूल भरे हुए,

ख़ूब लगी हुई है एक क्लास के कितने सैक्शन, हर सैक्शन में कितने बच्चे करोड़ों बच्चे। एबीसी से शुरू करते हैं और पढ़े जाते हैं कोई पी०एच०डी० करते हैं, कोई मास्ट्रस करते हैं, कोई डाक्टर बनता है, कोई इन्जीनियर बनता है, कोई ताजिर बनता है, कोई सांइसदान बनता है, कोई सियासदान बनता है। कोई भी ज़िन्दगी के इस लम्बे सफ़र में एक लाईन भी क़ुरआन समझने वाला इल्म नहीं पढ़ता, मेरा अल्लाह मुझ से क्या चाहता है। क्योंकि मैं ख़ुद नहीं आया तो ख़ुद अपनी ज़िन्दगी की राहों को तय करने का भी हक़दार नहीं हूँ। ख़ुद मैं ख़ुद नहीं मरता मुझे कोई मारता है।

हलाकत वाले ग़लत रास्ते से बचो

मैं अपनी मंज़िल अपने आप तय करने का हक़दार नहीं हूँ। जिसने मुझे पैदा किया उसी ने मेरी ज़िन्दगी का मक़सद भी तय किया है और जिसने औरों को मौत दी है, उसी ने मेरी मंज़िल को तय किया है।

﴿وان هذا صراطی مستقیما فاتبعوه.﴾

यह मेरा रास्ता है मेरे बन्दो इस पर चलो ﴿ولا تتبعوا السبل﴾ दाएं बाएं के रास्तों से बचो, एक्सीडेंटों से बचो,

﴿فتفرق بکم عن سبیله. (سورة انعام پ. ٨، آیت ١٥٤)﴾

अगर तुम एक्सीडेंटों में खो गए तो फिर क्या होगा कि तुम असल सीधे रास्ते से हटोगे। कोई वीराने में मर जाएगा, कोई गढ़े में जा मरेगा, कोई भूखा मरेगा, कोई किसी घाटी में, कोई किसी वादी में, कोई सहरा में बेबसी की मौत मरेगा।

सीधा रास्ता क्या है?

﴿وان هذا صراطى مستقيما﴾

यह रास्ता है कौन सा रास्ता है? ﴿اهدنا الصراط المستقيم﴾ जो उसने हमें कहा हक मांगो अल्लाह हमें सिराते मुस्तक़ीम अता फ़रमा, सीधा रास्ता अता फ़रमा। सीधा रास्ता क्या है?

اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم نعمتى ورضيت لكم الاسلام دينا. (سورة مائده پ۶۰ آيت ۳)

उसे अल्लाह ने पूरा कर दिया, कामिल कर दिया, तमाम कर दिया। हिस्से भी पूरे सिफ़ात भी पूरी, रास्ता भी कामिल, मंज़िल तय, राहें रौशन हैं। इस रास्ते पर चलने वालों को अंधेरे का सामना नहीं करना पड़ा, इस रास्ते पर चलने वालों पर रास्ते में रात नहीं आती, शाम नहीं आती। मेरे और आपके नबी ने फ़रमायाः

﴿تركتكم على حجة بيضاء لياليها كنهارها﴾

मैं तुम्हें ऐसे रौशन रास्ते पर छोड़कर जा रहा हूँ जिस में रात आती ही नहीं। उसकी रात भी दिन की तरह रौशन है जैसे दिन रौशन वैसे रात रौशन। इससे न हटना जो इससे हटता है वह हलाक हो जाता है, वह बर्बाद हो जाता है, वह तबाह हो जाता है।

दुनिया का फ़रेब धोका है

भाईयो! हमारा इल्म ग़लत कर दिया गया। हाँ आज के दानिशवरों ने कहा पैसे से सब कुछ चलता है। क़ुरआन ने कहा

अल्लाह से सब कुछ होता है

आज का इल्म बोला दुनिया का इल्म असल इज़्ज़त है, अल्लाह का इल्म बोला दुनिया की ज़िन्दगी धोका है, आज के इल्म ने कहा दुनिया की ज़िल्लतों से बचो ये बड़ी मुसीबत है। अल्लाह के इल्म ने कहा दुनिया की ज़िल्लत भी फ़रेब दुनिया की इज़्ज़त भी फ़रेब। आज के इल्म ने कहा यहाँ की लज़्ज़त यहाँ की राहत, यहाँ के घर, यहाँ के बंगले, यहाँ की सदारत, यहाँ की वज़ारत, यहाँ का ओहदा, यहाँ की औरत, यहाँ की शराब, यहाँ की दौलत, यहाँ की धुन, यहाँ का सुर, यहाँ का साज़ यही सब कुछ है। इसी का नाम ज़िन्दगी है। इसी का नाम इज़्ज़त है और बुलन्दी है। हमारे साथ हमारी नस्ल को काट कर दख दिया गया। बेधार छुरी ज़िब्ह कर दिया गया। चार साल का बच्चा टाई लगाकर जाए और माँ-बाप ख़ुद उसके गले में टाई लगाएं तो बताओ भाईयो किस दीवार से आदमी सिर टकरा कर रोए और किस जगह आदमी सिर फोड़े कि जिस बदनसीब क़ौम को अपना लिबास पहनना नहीं आता वह दुनिया में अपना हक़ क्यों मांगती है? हम ज़लील हो गए, हम यह हो गए हम वह हो गए।

मग़रिबी तहज़ीब (वैस्र्टन कलचर) को आग लगा दो

ऐ मेरे भाईयो! हम तो अपने हाथों में ख़ुद ख़न्जर उठाए हुए हैं औरों ने नहीं। अमरीका को गालियाँ देते हो और यूरोप को गालियाँ देते हो, गाली देनी है तो अपने को गालियाँ दो, गाली

अपने ज़मीर को दो, अपने नफ़्स को दो। क्या ये अमरीका ने स्कूल खोले हुए हैं? ये जो गुलिस्तान कालोनी में खोले हैं और बाहर पाकिस्तानी फ़ौज खड़ी है जो हर हर बच्चे के माँ-बाप से कह रही है कि बच्चे के गले में टाई लगाओ। लड़की को फ़्रॉक पहनाकर भेजो, पिंडलियाँ नंगी करके भेजो, सिर से दुपट्टा उतारकर भेजो। जब चार साल की बच्ची इस हुलिए से जाए उसे बाद में कौन समझाएगा कि मुसलमान औरत पर्देदार होती है, उसे कौन बताएगा कि मुसलमान बेटी का बाल भी ज़ाहिर होना हराम है, उसकी आवाज़ भी बग़ैर शदीद ज़रूरत के पर्दा है। उसे यह बात कौन समझाएगा?

मैं सुबह सैर को निकला। स्कूल के सामने से गुज़रा कोई दस साल की बच्ची उतरी। पूरी पिंडलियाँ नंगी। छोटा फ़्रॉक यह उतरकर अन्दर जा रही है। उसको माँ ने ही तो तैयार किया है, बाप ने आँखों से जाते हुए देखा, अम्मा ने ख़ुद उसको फ़्रॉक पहनाया, गालियाँ अमरीका को, यहूदियों को, गालियाँ ईसाइयों को, गालियाँ बरतानिया को। अरे क्या उन्होंने आकर हमें फ़्रॉक पहनाए हैं? जब माँ ने ख़ुद यह पहनाए हैं, बाप ने ख़ुद पहनाए, किस ने यह पहनाए। हम ख़ुद अपने आप मुजरिम हैं

तू इधर उधर की न बात कर यह बता कि क़ाफ़िला क्यों लुटा
मुझे रहज़नों से गिला नहीं तेरी रहबरी का सवाल है

जब चरवाहा सो जाए तो भेड़ियों को लान-तान करना यह तो बड़े पागलपन की बात है। भेड़िये का काम तो हमला करना है। उसका काम बकरियों को उठाना है तो भेड़िये को गाली देने का क्या मक़सद? चरवाहे को कोसो जो कि सो गया, जो ग़ाफ़िल हो

गया।

भाईयो! ये स्कूल जाने वाले बच्चे अमरीका ने उन पर डंडा चढ़ाया हुआ है कि तुम पतलूनें पहनो, टाईयाँ पहनो, तुम फ्रॉक पहनो, तुम दुपट्टा उतारो। दुनिया की इज़्ज़त को इज़्ज़त समझा। यहाँ की ज़िल्लत को ज़िल्लत समझा, यहाँ की बड़ाई को बड़ाई समझा, यहाँ की छोटाई को छोटाई समझा, यहाँ की वादियों को दिल फरेब समझा, यहाँ के मुर्ग़गुज़ारों को पुरकशिश समझा, इसी को जन्नत समझा इसी को दोज़ख़ समझा।

ईमान का सौदा मत करो

इसी की दौड़ लगाई। इसी पर ईमान के सौदे किए, इसी पर ज़मीर के सौदे किए। माल की चमक, दौलत की खनक पर बिक गए। इस के सिवा कुछ न दिखाई दिया न सुनाई दिया। ज़मीर भी बिके, ज़बाने नहीं बिकीं। बकरा नहीं बकरे की सिरी बिकती है, ज़बानें बिक रही हैं, फेफड़े बिक रहे हैं, दिल बिक रहे हैं, कलेजा बिक रहा है, तिल्ली बिक रही है, रान बिक रही है। जाओ जाओ अदालतों में जाकर देखो दस्तार बिक रही है। आपके बाज़ारों में देखो ग़लत तोला जा रहा है। जैसे बकरे की ज़बान बिक गई, बकरे का भेजा बिक गया जाओ जाओ देखो माल के पुजारी अपना दिमाग़ बेच चुके हैं, ज़बाने बेच चुके हैं।

ग़फ़लत भरी ज़िन्दगी को छोड़ दो

न झूठ की तमीज़, न झूठ की परवाह, न अल्लाह का ख़्याल,

न मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत का एहसान, न जन्नत का शौक़ न जहन्नुम का ख़ौफ़, न क़ब्र के कीड़े याद, न क़ब्र के अंधेरे याद न मौत की सख़्तियाँ याद न मौत का धचका याद न मौत की तड़प याद। सिर्फ़ दुनिया और दुनिया यह हमारा इल्म ग़लत हो गया है।

भाईयो! बनाने वाला अल्लाह वह कह रहा है

﴿وما الحيوة الدنيا الا متاع الغرور. (سورة ال عمران:١٨٥)﴾

ये गुलशन, ये गुलज़ार, ये कोहसार, ये वादियाँ, ये दामन, ये झरने, ये चश्मे, ये दरिया, ये नदियाँ, ये आबशारें, ये समुंद्र, ये ख़ला, ये फ़िज़ा, ये हवा क्या है? क्या ये धोका है?

﴿لعب ولهو وزينة وتفاخر بينكم وتكاثر بالاموال والاولاد.﴾

फिर तमाशा बच्चे खेलते हैं। गुज़रने वाले कहते हैं कि खेल हो रहा है। मेरा अल्लाह कहता है फ़ैसलाबाद के आठों बाज़ारों में खेल हो रहा है, मिलों में फैक्टरियों में खेल खेला जा रहा है। अल्लाह कह रहा है फ़ैसलाबाद के बाज़ार पाकिस्तान के बाज़ार अमरीका, एशिया, अफ़्रीक़ा, आस्ट्रेलिया, हिन्दुस्तान के बाज़ार, यहाँ की वादियाँ, यहाँ की खेतियाँ, हुकूमत, दौलतें, यहाँ की सारी इज़्ज़तें, बुलन्दियाँ ये क्या हैं लईब व लहव खेल हैं तमाशा हैं। आज का दानिश्वर आज का पढ़ा लिखा हुआ पागल है।

दुनिया धोके का घर है

मेरे भाईयो! अनपढ़ों को समझाना आसान होता है। आजकल

के पढ़े हुए को समझाना मश्किल हो रहा है। क्योंकि इसके अन्दर ग़लत जा चुका है। अब उसके अन्दर से ग़लत को निकालना है, सही को डालना मुश्किल है। मेरे भाईयो! दुनिया धोके का घर, दुनिया मच्छर का पर, दुनिया मकड़ी का जाला। आख़िरत क्या है? लोगो! मेरा नबी कह रहा है दुनिया गिरी पड़ी चीज़ है नेक भी खाता है बुरा भी खाता है। सुनो! आख़िरत सच्चा वायदा है, दारुलक़रार आख़िरत, सच्ची ठहरने का घर, मक़ाम आ गया, मुक़ीम हो गया, क़रार आ गया। यह क़रार की जगह नहीं वह क़रार की जगह है। यह मिटने वाला घर है वह हमेशा रहने वाला घर, यह ख़त्म होने वाला घर वह बाक़ी रहने वाला घर, यह धोके का घर वह सच्चा घर। वहाँ जन्नत है तो हमेशा जहन्नुम है तो हमेशा, वहाँ इज़्ज़त मिली तो हमेशा की, वहाँ ज़िल्लत मिली तो हमेशा की। यहाँ इज़्ज़त भी छिन गई, यहाँ ज़िल्लत भी छिन गई, माल भी चला गया, यहाँ का घर भी चला गया, जवानी भी ढल गइ, जवानी भी रुख़्सत हो गई, सुबहें भी चली गयीं, शामें भी छिप गयीं, जैसे रुत बदली ऐसे ज़िन्दगी बदली, जैसे मौसम बदले ऐसे जवानी ढली यहाँ तक कि क़ब्र में पहुँच गया, कीड़े खा गए, करवट बदली हवाओं ने पकड़ा, ग़ुब्बार बनाकर उड़ा दिया और धरती में, फ़िज़ा में, ख़ला में ऐसे बिखेर दिया जैसे कभी न था। कभी न की तरह की अदम हो गया, कुछ न हो गया। फिर मेरा अल्लाह ज़र्रात को जमा करेगा, हड्डियों को जमा करेगा, गोश्त चढ़ाएगा, खाल चढ़ाएगा, आँख, नाक, पलक सही करेगा फिर रूह फूंकेगा। जिस्म में रूह दौड़ेगी, क़ब्र फटेगीं,

﴿فاذا هم من الاجداث الى ربهم ينسلون.﴾

क़ब्रें फटेंगी,

ان كانت الا صيحة واحدة... فانما هي زجرة واحدة فاذا هم بالساهرة.

आसमान फट गया, आसमान तड़तड़ा गया ﴿على ارجائها﴾ फ़रिश्ते कोनों पर चले गए ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية﴾ अल्लाह अपने अर्श के साथ सिरों पर आ गया।

﴿يومئذ تعرضون لا تخفى منكم خافية.﴾

डाक्टर भी आ गया, इन्जीनियर भी आ गया, मौलवी भी आ गए, अल्लामा भी आ गए, औरत भी आ गई, मर्द भी आ गए, शाह भी आ गए, वज़ीर भी आ गए, पाक दामन भी आई और इज़्ज़त को बेचने वाली भी आई, जुवा खेलने वाला भी आया, शराबी भी आया, रातों को रोने वाला भी आया और सूद खाने वाला भी आया, नाचने वाला भी आया, तड़पने वाला भी आया और अल्लाह की राह में फिरने वाला भी आया। आज सब मजमे में जमा हैं।

ख़ौफ़नाक दिन

﴿لقد احصاهم.﴾

मेरे रब ने उनको घेरे में लिया हुआ है ﴿وعدهم عدًا﴾ एक दाना गिना हुआ है ﴿يومئذ تعرضون﴾ आ गए हो ﴿لا تخفى منكم خافية﴾ आज छिपकर दिखाओ छिप नहीं सकते ﴿اين المفر﴾ आज भाग के दिखाओ, नहीं भाग सकते ﴿ففروا﴾ आज ताकत है तो पार निकलकर दिखाओ, नहीं निकल सकते। अब क्या होगा ﴿الى يومئذ المستقر﴾ आज अल्लाह तुझे पकड़ेगा तुझे बाँधेगा, तुझे खड़ा करेगा

फिर क्या होगा?

﴿ينبأ الانسان يومئذ بما قدم واخر.﴾

जो तूने देखा होगा, जो तूने किया, जो बैठे, जो चले, जो लेटे, जो सोए, जो खाया, जो पिया तो पढ़ो ﴿اقرا كتابك﴾ पढ़ो अपने किए हुए आमाल को। यही तो देख, वह मैं ही तो हूँ, क्या तेरा रब सोया हुआ था? क्या तेरा रब जाहिल था? क्या तेरा रब ग़ाफ़िल था? तेरा रब आजिज़ था? तेरा रब कमज़ोर था? तेरा रब किसी मुश्किल में था? ऐटमी ताक़तों ने उसे डराया था? लोहे के जहाज़ों ने उसके फ़रिश्तों को आजिज़ कर दिया था? देख तू ही है कोई और तो नहीं? कहेगा हाँ।

यह कैसा कंप्यूटर है?

﴿ما لهذا الكتاب لا يغادر صغيرة ولا كبيرة إلا احصاها.﴾

हाय! हाय! मैं मर गया, हाय! हाय! मैं मर गई। यह कैसी किताब है? यह कैसी कापी है? यह कैसा कंप्यूटर है? जिसने मेरी एक-एक चीज़ को उचक लिया है। न ख़िलवत छोड़ी न बोल छोड़ा, न इशारा छोड़ा, न दिल में उठने वाली धड़कनों की आवाज़ों को छोड़ा, न अन्दर में पनपने वाले जज़्बात को छोड़ा, कौल भी लिखा, अमल भी लिखा, जज़्बा भी लिखा, नियत भी लिखी, इरादा भी लिखा, बैठना भी लिखा, चलना भी लिखा ﴿اين المفر﴾ ओ मुझे कोई भागने की जगह बताओ ﴿لا تخفى منكم خافية﴾ मुझे कोई छिपने की जगह बताओ। नहीं नहीं दरवाज़े बन्द हैं।

﴿وجاء ربك والملك صفا صفا.﴾

आज पता चलेगा कि कौन घोड़े पर सवार था और कौन गधे पर?

आज अल्लाह आ चुका है। हाँ आज पता चलेगा कि पढ़ा लिखा कौन है? अनपढ़ कौन है? आज पता चलेगा रौशन ख़्याल कौन है और तारिक ख़्याल कौन है? आज पता चलेगा तरक़्क़ी याफ़्ता कौन है? आज पता चलेगा मुहज़्ज़ब कौन है? जाहिल गंवार कौन है? आज का तराज़ू बड़ा सच्चा है। यह इन्सानी तराज़ू नहीं है जो नाप-तोल में कमी करे। यह इन्सानी अदालत नहीं है जो क़ातिल को भी छोड़ दे जो मज़लूम को तार पर चढ़ा दे और क़ातिल दनदनाता फिरे। नहीं! नहीं! आज मेरा अल्लाह है।

यहूद व नसारा (ईसाई) की मुशाबिहत से बचो

﴿فامشوا فی منکبھا﴾

दुनिया में जाओ, कमाई करो लेकिन कैसी करो जैसे सुबह की सैर, न आगे बढ़ने का जज़्बा न पीछे रहने का ग़म। कोई सैर करने में आगे बढ़ जाए इन्हें परवाह नहीं, यह पीछे रह जाए इन्हें ग़म नहीं। जुमा की नमाज़ के बाद कहा ﴿فانتشروا فی الارض﴾ जाओ रिज़्क़ तलाश करो। इसाईयों की तरह रहबानियत नहीं, यहूदियों की तरह नफ़सानियत नहीं ﴿کان بین ذلک قواما﴾ मेरा दुनिया की मज़म्मत बयान करने से तुम्हें दुनिया छुड़वाना नहीं, दुनिया से हटाना नहीं है बल्कि दर्मियान में लाना है। सबको छोड़ोगे इसाईयों के मुशाबेह हो गए और पागलों की तरह लग गए जैसे आज लगे

हैं तो यहूदियों के मुशाबेह हो गए। हमारे नबी हमें दर्मियान में लाते हैं, अल्लाह हमें दर्मियान में लाता है,

﴿وكذلك جعلنكم امة وسطاً﴾

तुम मौतिदिल, दर्मियान में हो, न इधर न उधर, न रहबानियत न नफ़सानियत।

हराम कमाई बेसकूनी का ज़रिया

﴿وكان بين ذلك قواما﴾

बीच में चलते रहो, कैसे? ﴿فامشوا فى مناكبها﴾ हलाल कमाओ हराम से बचो, तंख़्वाह पर रहो, रिश्वत से बचो, सही तोलो ग़लत तोलने से बचो, झूठ से बचो, सच पर आओ, अबस से बचो, जुए से बचो, लाटरी से बचो। ये सारी जुए की क़िस्में हैं जो हमारी रग-रग में हराम उतारना चाहते हैं जो क़ौम हराम खाने की आदी हो जाए उनमें से नेकी के जज़्बे मर जाते हैं। उनके अन्दर नेकी पैदा नहीं हो सकती। हराम लुक़्मा जिस पेट में चला जाए उसमें फूल नहीं निकल सकते। सहराओं में बहार आ सकती है समुंद्र के पानी मीठे हो सकते हैं याद रखो जिस ख़ून में हराम रच गया, जिन नज़रों में हराम रच गया वह सीधे रास्ते पर बड़ी मुश्किल से आती है।

काफ़िरों की साज़िश

चार बरस का बच्चा नंगे सिर स्कूल जा रहा है तो बड़ा होकर वह सिर पर टोपी कैसे रखेगा, वह पगड़ी क्यों बाँधेगा? देखते नहीं

हो कि हमारे यह जो बड़े होटलों में गाड़ियों का दरवाज़ा खोलते हैं और गेट का दरवाज़ा खोलते हैं उनके सिर पर कलाह होता है, पगड़ी होती है। ये हमें समझा रहे हैं कि यह पगड़ियाँ बाँधना छोटे लोगों का काम है बड़े लोगों का काम नहीं, यह छोटे लोगों का काम है, बड़े लोगों का काम नंगे सिर फिरना है। चार साल के बच्चे ने टाई लगाई, पतलून पहनी, बच्ची ने फ्रॉक पहना, नंगे सिर गई। किसने यह ज़हर भरा? किसने उसको ज़हर पिलाया? मेरे भाईयो! इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से।

इत्तिबाए सुन्नत की तर्ग़ीब

तो अल्लाह तआला हमारा ज़हन बनाता है कि आख़िरत असल है। दुनिया गुज़रगाह है, आख़िरत को सामने रखकर चलो, अल्लाह की रज़ा को सामने रखकर चलो। हज़रत मुहम्मद रहबर बनकर आए, इन्सानों के लिए हादी बनकर आए, कामिल बनकर आए, सारी उम्मत के लिए रहमत का पैग़ाम बनकर आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी रोज़े रौशन की तरह खुली किताब की तरह पन्नों पर नहीं धरती के पन्नों पर, काएनात के पन्नों पर, ज़मीन व आसमान ख़लाओं के बीच, हवाओं पर, सूरज पर, चाँद पर, तारों पर, ज़मीन के चप्पे-चप्पे पर, पहाड़ों के एक-एक पत्थर पर अल्लाह ने महबूब की ज़िन्दगी को नक़्श करके साबित कर दिया। कोई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीज़ा ज़िन्दगी को छिपा नहीं सकता, मिटा नहीं सकता। मुसीबत यह है पहले मुहब्बत आती है फिर इताअत आती है। दिल मुहब्बत से ख़ाली माँ-बाप ने मुहब्बत बिठानी थी। उसको

पतलून पहना दी, टाई पहना दी, फ़्रॉक पहना दी, नंगे सिर कर दिया। पहला ज़ुल्म तो माँ-बाप ने किया, दूसरा ज़ुल्म स्कूल ने किया, तीसरा ज़ुल्म मास्टर ने किया। पर्दा ज़ुल्म नहीं है। आज की तालीम कोई मक़सद को सामने रखकर तो है नहीं। आज की तालीम तो पैसा कमाना है। स्कूल का मक़सद पैसा कमाना है।

ट्यूशन सैन्टर क्यों बने?

मैं जब आठवीं जमात में था। हमारे उस्ताद थे आसिम साहब मरहूम उर्दू के टीचर। मैं एक बात पूछने गया। फ़रमाने लगे वह बच्चा आया था मुझ से कह रहा था कि उस्ताद जी! आपसे ट्यूशन पढ़नी है तो मैंने कहा बेटा जो हुकूमत मुझे तंख़्वाह देती है उसमें मेरा गुज़ार अच्छी तरह हो जाता है तो अब मैं अपने इल्म को बेचा नहीं करता। तुम्हें जब पढ़ना हुआ करे आ जाया करो मैं पढ़ा दिया करूँगा। मुझे हुकूमत की तंख़्वाह काफ़ी है। वे उस्ताद तो क़ब्रों में चले गए। उनकी हड्डियाँ भी शायद गल-सड़ गई होंगी। अब तो ना कोई उस्ताद है ना कोई शार्गिद है। उस्ताद के सामने भी पैसा शार्गिद के सामने भी पैसा। वह तक़द्दुस ही चला गया, वह मंसब ही चला गया। ट्यूशन सैन्टर भी खुले, प्राइवेट स्कूल भी खुले। माँ-बाप की जेब से पैसा निकालना है।

बदज़बानी से बचो

तो मेरे भाईयो! खुद होश में आने की ज़रूरत है। किसी को गालियाँ न दो, अपना दामन संभालो, अपना घर संभालो, अपनी

नस्ल संभालो इससे पहले कि कोई ज़ाएक़ा भड़क उठे, इससे पहले कोई कोड़ा लपक जाए, इससे पहले कि कहीं आसमान से दरवाज़े खुल जाएं, इससे पहले कि उसके ज़लज़लों के रुख़ हमारी तरफ़ फिर जाएं, बिखरी मौजें हमारी तरफ़ को चल पड़ें, अल्लाह के अज़ाब के कोड़े बरस पड़ें, इससे पहले कि ये सब कुछ हो जाए क्योंकि हम जो कुछ कर रहे हैं उस पर यह होना चाहिए क्यों नहीं हो रहा है? यह मेरे अल्लाह की रहमत है, जो कुछ पाकिस्तान और छः बर्रे आज़मों में हो रहा है इस पर कब के कोड़े बरस जाते, दुआएं दो कमली वाले को जो दुनिया से जाते हुए मेरा आपका मस्अला हल करवा चुका है, दुआ दो मदीने वाले को। अब उसके पैग़ाम पहुँच रहे हैं, अब भी उसकी सदाएं जा रही हैं और अब भी वह ज़ख़्मी है, बेचैन है, बेक़रार है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो कि थका हुआ मुसाफ़िर, बरसों का सताया हुआ, भूख प्यास सहता हुआ, पेट पर पत्थर बाँधता हुआ अपनी मंज़िल पर आ रहा है। दर्द की तेज़ी से हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा रो पड़ीं। हाय मेरे अब्बा का दुख, मेरे अब्बा का दर्द तो आपने फ़रमाया मेरी बेटी! आज तेरे बाप का दर्द ख़त्म होने वाला है बस आज के बाद तेरे बाप पर दुख न आएगा। आप ने मलकुलमौत को इजाज़त दे दी तो जिब्राईल भी ग़मज़दा हो गए। कहा या रसूलुल्लाह! क्या आपने जाने का फ़ैसला कर लिया अगर आपने जाने का फ़ैसला कर लिया तो मेरा भी आज दुनिया में आख़िरी दिन है। आज के बाद मैं भी कभी "वही" लेकर नहीं आऊँगा। ख़त्म हाय! दुनिया बदनसीब महरूम हो गई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आख़िरी वसीयत

मेरी उम्मत नमाज़ न छोड़ना और ग़ुलामों नौकरों से नौकरानियों से अच्छा सुलूक करना, उसको सूली पर न लटका देना, टाँग न देना। पन्द्रह सौ रुपए देकर उनकी खाल उतार देते हो, तीन हज़ार रुपए देकर उनकी माँ बेटी नहीं छोड़ते। कभी देखा कि तुम अल्लाह के कितने वफ़ादार हो? अल्लाह से सौ फ़ीसद ग़द्दारी और नौकर से कहते हो मेरा वफ़ादार बन के चल। क्या देते हो। चार हज़ार, पाँच हज़ार, तीन हज़ार इसमें घर चल सकता है। आज के दौर में जब कि मंहगाई का दौर मुसल्लत हो चुका है। यह अज़ाब अल्लाह ने उतारा है, यह अज़ाब अल्लाह ही दूर करेगा। हुकूमतें यह अज़ाब दूर नहीं करेंगी। तौबा करो तो यह अज़ाब टलेगा। आसमान से फ़रिश्ता उतारता है सारे रेट तय करके जाता है। फ़लाँ मुल्क में फ़लाँ चीज़ इस भाव बिकेगी। जब वहाँ क़लम मंहगाई का चले तो हुकूमत क्या करे, डालर के अंबार लग जाएं चीज़ें सस्ती नहीं होंगी। जब तक मेरा अल्लाह फ़ैसला न करे और अल्लाह फ़ैसला जब उतारता है जब लोग तौबा करते हैं। तौबा का रिवाज ख़त्म, तौबा का एहसास ख़त्म, तौबा का ख़्याल ख़त्म, तौबा का ध्यान नहीं। चन्द टके देकर कहते हो कि एक टाँग पर खड़े हो जाओ, सौ फ़ीसद मेरे ग़ुलाम बन जाओ न चूँ करो न चाँ करो न उफ़ करो तो तुम अपने अल्लाह से कितना निभाते हो। अपने ग़रीबों पर ऐसा सुलूक न रखना कि कल अल्लाह के दरबार में पकड़े जाओ। अल्लाह को अपने बन्दों से

प्यार है। देखना कहीं माल के तकब्बुर में, कहीं सरदारी के तकब्बुर में, कहीं मालिक होने के तकब्बुर में आख़िरत बर्बाद न कर बैठना। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ऐ आएशा! ﴾احبی المساکین وقربیهم﴿ आएशा ग़रीबों से मुहब्बत कर और उन्हें अपने पास बिठा ﴾فان الله یقربك یوم القیامة﴿ अल्लाह तुझे अपना क़ुर्ब नसीब फ़रमाएगा।

न नमाज़ ही रही न ग़रीबों से सुलूक रहा। आप ने कहा जो खाते हो उन्हें खिलाओ जो पहनते हो उन्हें पहनाओ। यह दौलत ढलती छावं है। किसी के पास नहीं रही। बदलता निज़ाम है। कभी ग़रीब को हक़ीर न समझना। नहीं बनती फ़ारिग़ कर दो। इज़्ज़त को तार-तार करने की कोई इजाज़त नहीं है। सब्र करो नरमी करो।

जहन्नुम से जन्नत का सफ़र

एक आदमी क़यामत के दिन लाया जाएगा कोई नेकी नहीं है। उसके लिए जहन्नुम का फ़ैसला है। अल्लाह तआला कहेगा तेरे पास कोई है भी सही दिखाने को। कहेगा या अल्लाह और तो कुछ है नहीं जिस पर मेरा हक़ बनता था उस को कभी तंग नहीं किया करता था, बेइज़्ज़त नहीं करता था, ज़लील नहीं करता था। मिल गया तो ठीक है तो अल्लाह कहेगा अच्छा चल तू मेरे बन्दों पर नरमी करता रहा तो फिर मेरे लिए भी मुनासिब नहीं कि तेरे ऊपर सख़्ती करूँ। चल इसके तुफ़ैल मैंने तुझे जन्नत का वारिस बना दिया। प्याली टूट जाए नौकरानी से, झाड़ू में देर हो जाए अरे

सफ़ाई कराते कराते दिल की दुनिया और दाग़दार कर दी। बर्तन क्या टूटा तूने ईमान तोड़कर रख दिया। प्याले का बदल तो आ जाएगा लेकिन ज़बान से निकले हुए गंदे बोल उन्हें कहाँ से वापस करोगे? अरे बदबख़्त कभी बोल भी वापस हुए हैं। सीना तो ज़ख़्मी कर दिया, दिल तो छलनी कर दिया, दाग़ कर दिया, हड्डियों से धुँवा उठने लगा फिर कहता है अच्छा जी मैं अपने बोल वापस लेता हूँ। तू पहले ही क्यों न होश में आया? तुझे पहले ही क्यों न ख़्याल आया? बोलने से पहले क्यों न तोला? गोली तो निकल गई। गोली का ज़ख़्म तो भर जाता है गंदी गाली के बोल का ज़ख़्म कभी नहीं भरता। भाईयो! आओ तौबा करें अपने अल्लाह को मनाएं। अरे उस दोस्त का ख़्याल करो जो तुम्हारे लिए फ़िदा हो गया, क़ुर्बान हो गया।

शाने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

निकल जाओ अल्लाह की राहों में, तबलीग़ में, आज घरों में बैठने का वक़्त है पता नहीं कब निज़ाम बदल जाए? महबूब मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एहसानात को सामने रखो। आज किसी नबी की क़ब्र महफ़ूज़ नहीं। फ़लस्तीन में जो क़ब्रें हैं वे यक़ीनी नहीं, सिर्फ़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मौजिज़ा है कि आप दुनिया से जाने के बाद भी अपनी पूरी निशानियों के साथ मौजूद हैं, अपनी मस्जिद के साथ मौजूद हैं। सुबह होती है सत्तर हज़ार फ़रिश्ते क़ब्र पर आते हैं शाम तक दरूद पढ़ते रहते हैं पहला जाता है फिर शाम को सत्तर हज़ार

फ़रिश्ते आते हैं सुबह तक दरूद व सलाम पढ़ते रहते हैं। हम भी पढ़ते हैं फ़रिश्ते भी दरूद पढ़ते हैं। एक ज़माना आएगा कि सूरज मग़रिब से निकलेगा, मुसलमान मर जाएंगे, सिर्फ़ काफ़िर होंगे। इन्सानों में दरूद पढ़ने वाला कोई न बचेगा फिर फ़रिश्ते दरूद पढ़ेंगे और अल्लाह पढ़ेगा और मस्जिदे नबवी ख़त्म, रौज़-ए-अक़दस ख़त्म, बैतुल्लाह ख़त्म, मक्का ख़त्म, मदीना ख़त्म, मैदान होगा पर फ़रिश्ते दरूद पढ़ेंगे। फिर अल्लाह एक डंका बजाएगा क़यामत का। जिब्राईल भी मर जाएंगे मीकाईल भी इसराफ़ील भी, इज़राईल भी, अर्श के फ़रिश्ते भी मर जाएंगे सिर्फ़ अल्लाह, अल्लाह बाक़ी रह जाएगा। फिर क्या होगा कि अल्लाह खुद अकेला अपने नबी पर दरूद पढ़ता रहेगा ﴿يصلون﴾ का मतलब होता है तमाम ﴿ان الله وملائكته يصلون على النبي﴾ अल्लाह और फ़रिश्ते मुसलसल उसके नबी पर दरूद पढ़ते रहते हैं।

कुत्ते की वफ़ादारी से सबक़ सीखो

तो मेरे भाईयो! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मना लो उसकी ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी बना लो। उसके एहसानात का इतना बदला तो दो जितना कुत्ता अपने मालिक को देता है। देखते नहीं हो कि घर के बच्चे से मार खाता है, रोटी खाने के लिए बुलाओ भागकर आता है। हमारे वालिद को कुत्तों का शौक़ था जैसे कि ज़मींदारों को होता है। उनका भी एक कुत्ता हुआ करता था जैकी उसका नाम था। मेरी उम्र होगी छः सात साल तो वह कभी रोटी खा रहा होता

था। कभी दूध पी रहा होता था तो मेरे वालिद कहते जैकी दूसरी आवाज़ उनको देने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। वह रोटी छोड़कर, दूध छोड़कर भागा हुआ आता था और मेरे बाप के पैर पर चिमट पड़ता था। कुत्ता नापाक न उसका न उसका ख़ालिक़ न मालिक सिर्फ़ रोटी खिलाई, दूध पिलाया। तो बुलाने वाले अल्लाह जिसको बुलाया जा रहा है वह इन्सान। बुलाने वाला मालिक जिसको बुलाया जा रहा है वह ममलूक, बुलाने वाला ख़ालिक़ जिसको बुलाया जा रहा है वह मख़्लूक़, वह अल्लाह यह बन्दा। वह दिन में पाँच बार कहता है आओ न मेरे पास नमाज़ पढ़ने। ﴿حی علی الصلوة﴾ न जवान उठता है न बूढ़ा उठता है, न मर्द उठता है न औरत उठती है तो क्या हम जैकी से भी नीचे दर्जे पर चले गए है? इतनी तो वफ़ा कर दें। अल्लाह और उसके रसूल के साथ वफ़ा करने वाले चले गए।

तल्हा जन्नती कैसे बने?

ओहद की लड़ाई में हार हो गई। उम्मे अम्मारा सामने आ गयीं। इधर बेटा हबीब बिन ज़ैद उधर बेटा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद दो बेटों के साथ माँ सीना सिपर हो गई। कहा ऐ मेरे बेटों आज मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़ख़्म लगा। मरते दम तक तुम्हें माफ़ नहीं करूंगी और अब्दुल्लाह बिन शहसवार था जिसने आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वार किया है और कन्धे पर तलवार मारी जिसका ज़ख़्म एक महीने तक रहा। उस पर हमला करने वाली सिर्फ़ उम्मे अम्मारा थीं जिन्होंने आगे

बढ़कर उसके वार को रोका। वह शहज़ोर था यह बेज़ोर थीं, वह सवार ये पैदल, वह लोहे की ज़िरह में यह वैसे ही तो उन्होंने दो बार उस पर तलवार मारी लेकिन दोनों बार तलवार बेअसर गई लेकिन यह औरत तो जब वह बेबस हो गया तो जब उसकी तलवार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कन्धे पर पड़ी है और उसे भी तलवार मारी। जब तक गिरी नहीं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर किसी को चढ़ने नहीं दिया। अबू तल्हा अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ऐसे छा गए कि सारी कमर तीरों से भर गई लेकिन अल्लाह के नबी पर तीर नहीं आने दिया उनको खींचा गया तो तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु सामने आ गए। अपना हाथ आगे कर दिया। सीधे हाथ पर तीर सहते रहे। सारा हाथ सुन्न हो गया। सारा हाथ बेकार हो गया और काफ़िरों ने नरग़े में ले लिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ख़्म की वजह से बेहोश हो गए थे। कुछ बेहोशी थी कुछ होश था। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अकेले कुफ़्फ़ार के नरग़े को तोड़ा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उठाया और दौड़ लगाई तो आपने कहा, "तल्हा तेरे ऊपर जन्नत वाजिब हो गई।" फिर काफ़िर पीछे भागे फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को घेरे में ले लिया। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बिठाया और फिर तलवार लेकर बिफरे हुए शेर की तरह हमलावर हुए। फिर क़ुरैश को छानकर रख दिया। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उठाया फिर दौड़ लगाई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा तल्हा पर जन्नत वाजिब हो गई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मौजिज़ा

फिर इसी तरह क़ाफ़िरों ने घेर लिया फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बिठाकर उन पर हमला किया। इस तरह तीन बार हमला किया। दौड़ते हुए ओहद पहाड़ पर चढ़ें जबकि ख़ुद का सारा हाथ लहूलुहान हो चुका था, उठाया आख़िरकार एक ग़ार था उसके अन्दर जाकर लिटा दिया, दीवार से टेक लगवाई। जैसे ही आपकी कमर ओहद पहाड़ से लगी पता चला कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं उतना हिस्सा जो कमर मुबारक से लगा था वह स्पंच की तरह नरम तकिये में बदल गया। इससे पहले क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु थे जो तीर आए आगे हो जाएं, जो तीर आए आगे हो जाएं। एक तीर आया और सीधा क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख में लगा और आँख क़ीमा-क़ीमा होकर बाहर आ गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों में आँसू आ गए और फ़रमाया, "ऐ अल्लाह! क़तादा की आँख तेरे नबी की हिफ़ाज़त में ज़ाए हो गई।" आपने तीर को निकाला, सारी आँख बहार आ गई। आपने (उस आँख के) सारे के मल्बे को जमा किया और उठाकर आँख में रखा और ऊपर से अपना हाथ रखा और फ़रमाया ऐ अल्लाह क़तादा की आँख तेरे नबी की हिफ़ाज़त में ज़ाए हुई है ﴿اللهم اجعل احسن عينيه﴾ ऐ अल्लाह! इसकी आँख को दूसरी आँख से ज़्यादा ख़ूबसूरत कर दे।" यह कहकर हाथ फेरा। जब हाथ हटाया तो यह आँख दूसरी आँख से ज़्यादा ख़ूबसूरत हो चुकी थी। जगमग कर रही थी। हाय! हाय! उन्होंने सीने पर ज़ख़्म सहे हैं।

अल्लाह की मदद व नुसरत का हसूल कैसे?

पर हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सीने पर ज़ख़्म लगाए हैं। उन्होंने आने वाले तीरों को आँखों में लिया। तुमने उसी के तीर उसी सीने में चुका दिए। उन्होंने तलवारों के, नेज़ों के ज़ख़्म अपने जिस्मों पर सहे और हमने अपनी तलवार व तोपों का रुख़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सीने की तरफ़ कर दिया फिर भी हम कहते हैं हम ज़लील क्यों हैं? हमारी मदद क्यों नहीं हो रही है? अरे हम क्या कर रहे हैं? मैं क्या कर रहा हूँ? मेरी ख़िलवत क्या है, मेरी जलवत क्या है। तो मेरे भाईयो! अल्लाह को साथ लेना है तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम बनो।

﴿قل ان کنتم تحبون اللہ فاتبعونی یحببکم اللہ﴾

उसके पीछे चलो तो यह सीखना पड़ेगा। यह घर बैठे मिलने वाला सौदा नहीं है। इसलिए कह रहा हूँ तौबा करो।

मौलाना तारिक़ की तवाज़े

तबलीग़ में वक़्त लगाओ, यह घर बैठे मिलने की सौग़ात नहीं है, यह वह सरमाया नहीं है जो बाप के घर मिल जाएगा। तो भाईयो! निकलो। नफ़े की बात बता रहा हूँ। मैं अपनी ज़ात का दाऊई नहीं हूँ। मैं कोई पीर नहीं हूँ जो कहूँ के सुनकर मेरे मुरीद हो जाओ, मुझसे बैअ़त हो जाओ, अल्लाह से मिला दूँगा। मेरा कोई दावा नहीं है मैं तो ख़ुद अनपढ़, गँवार मैं तो ख़ुद इस तलाश

में हूँ कि मुझे मेरा अल्लाह मिल जाए। जिस राह पर चलकर अल्लाह मिलता है मैं वह रास्ता आपको बता रहा हूँ तो भाईयों इस पर चलो। मुझे डाकिया समझो, मुझे मैयार न बनाओ, मैं इन्सान हूँ इन्सान का मतलब है ख़ता का पुतला, मैं अपनी श्ख़सियत का दाअ़ई नहीं हूँ कि मुझ से बैअ़त हो जाओ अल्लाह से मिला दूँगा। अल्लाह की राह में निकलो अल्लाह तुम्हें खुद मिलेगा। वह इन्तिज़ार में है। वह खुद कहता है मैं तुझे याद रखता हूँ तू मुझे भूल जाता है।

मेरे भाईयो! आज का मुसलमान गुमराह हो चुका है। सैंकड़ो माबूद बना कर चल रहा है। हम तो रहम के काबिल हैं। इसके लिए दुआ करो, इसके लिए रोओ। बुरे को बुरा कहना आसान है। बुरे के पीछे फिर तौबा कराना नबियों का काम है तो भाई अच्छे की कदर बुरे से मुहब्बत करो। यह पता नहीं कब तौबा करके अल्लाह का क़रीबी बन जाए। अपनों से तौबा करवाओ, ग़ैरों को इस्लाम की दावत दो। यहाँ तबलीग़ का काम ज़िन्दा होगा। तुम यहाँ बहार खुद देख लोगे।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴾

○ ○ ○

मिसाली शादी

واصلوة والسلام علی رسوله الکریم وعلیٰ آله واصحابه اجمعین اما بعد.

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो!

अल्लाह तआला ने इन्सान को दुनिया में आज़ाद पैदा किया है लेकिन उसकी यह मुश्किल है कि यह जानता नहीं अपनी इस आज़ादी को कैसे इस्तेमाल करे कि ख़ुद भी चैन से ज़िन्दगी गुज़ार सके और दूसरे भी आराम और सकून से रह सकें। इन्सान के अलावा जितनी मख़्लूक़ात हैं वह अपना इल्म अपने साथ लेकर पैदा होती हैं।

﴿ ربنا الذی اعطیٰ کل شیء خلقه ثم هدیٰ... ﴾

हर मख़्लूक़ अपना इल्म अपने साथ लेकर पैदा होती है। उन्हें अपनी ज़रूरतों को पूरा करना और हर मौक़े पर उनको जो ज़रूरतें पेश आतीं हैं उसको पूरा करने का इल्म उनके अन्दर से निकलता है, उबलता है।

बच्चा मुर्ग़ी के अंडों में से निकलता है इक्कीस रोज़ के बाद तो अंडों से बाहर आता है, दाना चुगने लगता है। हमारा बच्चा इक्कीस महीने का हो जाए तो उसको खिलाना पड़ता है और यह चूज़ा जो आज निकला पाँच मिनट हुए उसके बाहर आए हुए न उसने माँ से पूछा कि मुझे खाने का तरीक़ा बताओ न यह पूछा

कि मैं ने क्या खाना है? मुज़िर क्या है? मुफ़ीद क्या है? मेरी ग़िज़ा क्या है? थोड़ी ताक़त आई अपने आप उसने दाना चुगना शुरू कर दिया।

भैंस का बच्चा पैदा होता है तो खुद उठकर थोड़ी देर बाद माँ के थनों की तरफ़ चला जाता है। कोई उसको भेजता नहीं खुद चला जाता है।

इन्सान के बच्चे को बड़ी मुश्किल से दूध पिलाया जाता है लेकिन भैंस जो अपनी ना समझी की वजह से मशहूर है यहाँ तक कि उसके बारे में कहावत मशहूर है "भैंस के आगे बीन बजाना" लेकिन उसका बच्चा फ़ौरन थनों की तरफ़ जाता है। मैं आपको मिसाले दे रहाहूँ बात साफ़ करने के लिए। हर मख़्लूक़ अपना इल्म लेकर पैदा होती है। लेकिन जब इन्सान पैदा होता है तो उसे पता नहीं होता किमुझे करना क्या है? उसको यह इल्म बाहर से मिलता है। इसका नाम इल्म-ए-वही है, इसका नाम इल्म-ए-क़ुरआन है। यह वह ज़िन्दगी का तरीक़ा है जिस पर चलकर दुनिया और आख़िरत में कामयाब हो जाए। उसका नाम अल्लाह तआला ने इस्लाम रखा है।

मुर्ग़ी का बच्चा अपने घर से बाहर निकला मगर बिल्ली पर नज़र पड़ते ही भागकर वापस आ गया। न उसको किसी ने बताया कि बिल्ली तेरी दुश्मन है। न अब्बा ने न अम्मा ने। पहली नज़र भाग कर वापस यह इल्म कहाँ से सीखा उसने?

मकड़ी अल्लाह की क़ुदरत का नमूना

मकड़ी जाला तानती है। वह स्वेटर बुनती है। वह पूरी

टैक्सटाइल मिल है। वह पूरी टैक्साटाइल इन्जीनियर है। टैक्सटाइल वालों को धागा ख़रीदना पड़ता है। हमसे कपास ख़रीदते हैं। कपास के काश्तकार हैं। हम क्या उसे काश्त करते हैं? आगे हम से टैक्सटाइल मिल वाले लेते हैं। फिर आगे बहुत माहिर लगते हैं वे इसका धागा बनाते हैं।

मकड़ी अपने अन्दर से ही कपास निकालती है। अन्दर से ही वह माद्दा निकालती है। अन्दर से ही धागा है, अन्धेरे में बनती है जबकि मील में लाईट्स मशीन और इन्सान मौजूद होते हैं।

फिर भी हर मशीन पर धागे टूट रहे हैं और ज़ाए हो रहे हैं लेकिन बिल्कुल रात होती है। हमारे टायलेट में घर के किसी कोने में मकड़ी जाला बुनती है, लाईट बन्द है, रात का घुप अंधेरा है लेकिन वह इस अंधेरे में ताना बाना बुनती है। सारा जाला बुनती है स्वेटर की तरह और वह इसमें इतनी मज़बूती से काम करती है कि मकड़ी के जाल में जो वह एक तार जो चलता है। इस तार की मोटाई के बराबर अगर लोहे की सलाख़ बनाई जाए तो इस लोहे की सलाख़ से जो यह मकड़ी का बनाया हुआ धागा है वह एक हज़ार गुना मज़बूत होता है दस गुना नहीं सौ गुना नहीं एक हज़ार गुना मज़बूत है।

﴿ربنا الذی اعطیٰ کل شیء خلقہ ثم ھدی.﴾

वह रब है जो हर चीज़ को पैदा करता है उसे ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा सिखाता है।

इन्सान को नहीं सिखाता बल्कि उसको सीखना पड़ता है। इन्सान कभी खुद कफ़ील नहीं हो सकता, इसके अलावा सारी

मख़्लूक खुद कफ़ील है। जिसके पास पैसा आ जाए हम कहते हैं यह खुद कफ़ील है तो क्या उसने घर खुद बनाया है, यह कुर्ता मैंने खुद सिया है? कपड़ा मैंने खुद बनाया है बल्कि कपड़ा मैंने किसी से ख़रीदा है और उसे कहीं सिलवाया है। इसे कपड़े वालों ने खुद कहीं से ख़रीदा है। इन्सान कभी खुद कफ़ील नहीं हो सकता बल्कि ज़्यादा से ज़्यादा यह कि वह खुशहाल हो सकता है। पैसे आ गए हैं हाँ घर बनाना है। मिस्तरी को बुलाओ, कपड़े सिलवाने हैं दर्ज़ी को बुलवाओ, खाना पकाना है बावर्ची को बुलवाओ। खुद तो सारे काम नहीं करता। जो किसी का मोहताज नहीं होता वह होता खुद कफ़ील। दुनिया में सबसे ज़्यादा मोहताज तो इन्सान है यह तो कभी खुद कफ़ील नहीं हो सकता।

खुद कफ़ील जो हैं बिल्ली व कुत्ते हैं, गधे हैं, आग है मच्छर है, मक्खी है, परवाना है, पतंगा है। ये सब खुद कफ़ील हैं। उनको कोई बल्ब नहीं लगाना, उसके अन्दर जेनेरेटर लगा हुआ है। दिन को बुझ जाता है रात को जलता है तो हम तो बत्तियाँ दिन में खुद बुझाते हैं, रात को खुद जलाते हैं। उसकी दिन में अल्लाह बुझाता है रात को जला देता है।

दीन पर मुकम्मिल अमल करो

तो इन्सान अपनी ज़रूरतों को पूरा कर ले। उसके लिए एक तरीका अक़्ल का है जो समझ में आए वैसे करो और एक तरीक़ा अल्लाह का बताया हुआ है। उस तरीक़े का नाम इस्लाम है।

﴿ان دين عند الله الاسلام.﴾

अल्लाह के नज़दीक एक दीन है और उसका नाम इस्लाम है और वह कामिल व मुकम्मिल है।

اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم نعمتى
ورضيت لكم الاسلام دينا.

हमने तुम्हारे लिए दीन को मुकम्मल कर दिया, कामिल कर दिया और हदीस पाक में आ गया,

﴿اللهم بكتاب هم الكتب ويدين هم الديان وبشريعتم الشعائر.﴾

हमने उनकी किताब पर किताबें ख़त्म कर दीं, दीन पर दीन ख़त्म कर दिए और उनकी शरियत ने सारी शरियतों को पूरा कर दिया।

तो कामिल और मुकम्मल तरीक़ा जो हमारी ज़रूरतों को पूरा करेगा अल्लाह ने हमें दिया वह इस्लाम है जो क़ुरआन की शक्ल में है और सीरते नबवी की शक्ल में आज भी हमारे पास महफ़ूज़ है तो इसमें अक़्ल से हटाकर "वही" के ताबे होकर ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा सिखाया है जिसमें एक नस्ल का मिलना, बढ़ना और जवान होने पर शादी का करना सब शामिल है।

रोटी खाना, पानी पीना, मकान बनाना, सवारियाँ ये सब भी इन्सानी ज़रूरत है। मेरे भाईयो अल्लाह तआला ने क़ुरआन में हुक्म दिया है।

फ़हश हरकात से बचो

﴿تنكحوا﴾ निकाह करो और उसके साथ यह भी हुक्म है

﴿لا تقربوا الزنا. (سورة بنى اسرائيل)﴾

ज़िना के क़रीब न जाना ﴿انہ کان فاحشۃ وساء سبیلا﴾ कि यह बहुत बेहयाई का काम है, बहुत बुरा रास्ता है, बहुत बदबख़्ती का काम है। जिस मुल्क में, जिस शहर में, गाँव में मौसिक़ी फैल जाएग वहाँ ज़िना ख़ुद-ब-ख़ुद फैल जाता है। मौसिक़ी और ज़िना में आपस में ऐसा जोड़ है जो सूरज और रौशनी में जोड़ है। सूरज निकलता है रौशनी आ जाती है। जिस नस्ल में मौसिक़ी फैल जाए उस नस्ल में ज़िना भी आ जाता है तो अल्लाह तआला ने कहा ﴿ولا تقربوا الفواحش﴾ फ़वाहिश के क़रीब न जाओ और कहा ﴿لا تقربوا الزنا﴾ ज़िना के क़रीब न जाओ ﴿انہ کان فاحشۃ﴾ बहुत बेहया चीज़ है।

यहाँ कहा फ़वाहिश के क़रीब न जाओ। फ़वाहिश से क्या मुराद है? हर वह अमल जो ज़िना की तरफ़ ले जाए, बेपर्दगी ज़िना तक पहुँचाती है, मर्द व औरत का आज़ादी के साथ मिलना जुलना यह ज़िना की तरफ़ ले जाता है।

गाना बजाना ज़िना की तरफ़ ले जाता है। हराम रिज़्क़ से इन्सान के अन्दर गंदे जज़्बे पैदा होते हैं, बेहयाई के जज़्बे पैदा होते हैं।

हर वह अमल जो ज़िना की तरफ़ ले जाने वाला हो फ़वाहिश। बेदपर्दगी, नज़रों की आवारगी, गाना-बजाना, नाच-गाने की महफ़िले, आज की टीवी, वी०सी०आर०, डिश, केबिल जहाँ ये चीज़े चलेंगी वहाँ अगला गुनाह ज़िना भी होगा तो अल्लाह तआला ने इससे रोका है और इसकी सज़ा रखी है संगसार करना। पत्थर मार मारकर उसे हलाक कर दिया जाए। इस्लाम दीने रहमत है लेकिन जो शादी-शुदा ज़िना करे पत्थर मार मारकर हलाक कर

दो। ग़ैर शादी-शुदा करे तो सौ कोड़े मारो। अल्लाह तआला ने इससे बचने के लिए निकाह का हुक्म दिया है कि निकाह करो, ज़िना न करो। ज़िना से नस्ल ख़राब हो जाती है। ख़ानदानी निज़ाम टूट कर रह जाता है, बिखर कर रह जाता है।

यूरोप की तहज़ीब तबाही के रास्ते पर

जैसे यूरोप में ख़ानदानी निज़ाम बिखर गया। सन् 1792 ई० में इंगलिस्तान में एक औरत थी उसका नाम था मेरी वास स्टोन क्राफ़्ट उसने एक किताब लिखी औरतों की आज़ादी की कि औरतों को आज़ादी दी जाए, औरतें क्यों कमरे में पाबन्द हों? ये बाहर आएं, मर्दों के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करें। उनको पूरी आज़ादी दो। इससे पहले यूरोप में भी कोई तसव्वुर नहीं था औरत के बेपर्दा होकर बाहर फिरने का। वहाँ का समाज भी हया पर क़ायम थी लेकिन पीछे शैतान ने खड़काया इधर अंग्रेज़ का राज था कि उसकी हुकूमत में सूरज नहीं डूबता था तो शैतान की ताक़त पीछे से हुकूमत की ताक़त, पीछे नफ़्स की ताक़त। अब मर्दों की भी ज़्यादा शहवत पूरी होनी लगी, औरतों की पूरी होने लगी तो बढ़ते-बढ़ते वह चिंगारी ऐसी है कि अब उनका सारा निज़ाम टूट गया।

अब सन् 2000 ई० में एक सर्वे किया गया उसी इंगलैंड का जहाँ सन् 1792 ई० में तहरीक चली थी कि औरतों को आज़ादी दी जाए तो औरतों से पूछा गया कि तुम वापस घर जाना चाहती हो या काम करना चाहती हो या इसी तरह आज़ाद रहना चाहती

हो तो अठ्ठानवें फ़ीसद औरतों ने कहा हम घर जाना चाहती हैं लेकिन हमें ख़ाविन्द नहीं मिलते, माँ-बाप नहीं मिलते। इस आज़ादी की कीमत औरतों को यह देनी पड़ी कि उसका माँ का रूप, बहन का रूप, बीवी का रूप ख़त्म हो गया। वह सिर्फ़ गर्ल-फ्रेंड है और इधर मर्दों के साथ क्या हुआ कि उनका भी बेटे का रूप ख़त्म, बाप की शक्ल ख़त्म, भाई की शक्ल ख़त्म, चाचा की शक्ल ख़त्म, दादा की शक्ल ख़त्म, ताया की शक्ल ख़त्म, ख़ाविन्द की शक्ल ख़त्म अब वह ब्वाय-फ्रेंड है। यह गर्ल-फ्रेंड है। जब तक इनका दिल लगा रहेगा एक दूसरे की तसकीन का सबब बनते रहेंगे अगर कभी एक का भी दिल भर जाएगा तो उसे ऐसे उठाकर फेंक देंगे जैसे टिशु पेपर को इस्तेमाल के बाद बाहर फेंक देते हैं। यह वहाँ की दर्दनाक ज़िन्दगी है।,

यूरोपियन लड़की की पुकार काश ऐसा मर्द मुझे मिलता

एक जमात ऐडमिरा गई। एक लड़की ने मस्जिद में मग़रिब की नमाज़ पढ़ने वाले से पूछा कि इंगलिश आती है? उसने कहा आती है। लड़की ने पूछा तुमने यह क्या किया है? उस आदमी ने कहा हमने अपनी इबादत की है। उस लड़की ने कहा आज तो इतवार नहीं है। नमाज़ पढ़ने वाले ने कहा हम दिन में पाँच बार अल्लाह की इबादत करते हैं। वह कहने लगी कि यह तो बहुत ज़्यादा है। फिर उसने उसको दीन की बात समझाई। कहने लगी अच्छा ठीक है फिर हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया तो उस

नौजवान ने कहा कि मैं अपना हाथ आपके हाथ को नहीं लगा सकता। उसने कहा क्यों? तो नौजवान ने कहा यह हाथ सिर्फ़ मेरी बीवी को छू सकता है। यह उसकी अमानत है। उसके सिवा किसी को नहीं छू सकता तो उस लड़की की चीख़ निकल गई और रोती हुई ज़मीन पर गिर गई और कहने लगी वह कितनी खुशकिस्मत औरत है जिसका तू ख़ाविन्द है। काश! यूरोप के मर्द भी ऐसे होते। तो इस आज़ादी की कीमत यह है और मुझे यह डर है कि हमारी जो नस्ल कहीं यह भी न बिगड़ जाए क्योंकि केबिल के आगे बैठते हैं, डिश के आगे बैठते हैं तो अगर हमने अपनी नस्ल को इस माहौल से न निकाला तो कहीं वह आवारगियाँ यहाँ खुलकर यहाँ भी बाहर न आ जाएं और काफ़िर को तो अल्लाह तआला ढील देता है मुसलमान को अल्लाह ज़्यादा ढील भी नहीं देता। यह अल्लाह का क़ानून है:

﴿ولنذيقنهم من العذاب الادنى دون العذاب الاكبر لعلهم يرجعون.﴾

हम तुम्हें अज़ाब देंगे नक़द दुनिया में छोटा बड़ा नहीं ताकि तुम तौबा करो।

﴿ذرهم ياكلون ويتمتعون.﴾

उनको छोड़ दो, नाचने कूदने दो कब तक?

﴿حتى يلقو يومهم الذى يوعدون.﴾

उस दिन तक जिस दिन तक उनका वायदा है। मर कर मेरे पास आएंगे। अगला पिछला बराबर हो जाएगा।

मज़लूम औरत

तो मेरे भाईयो और नौजवानो! बातिल की चाल को समझो। वह हमें आवारा करना चाहते हैं, हमारी बच्चियों को बाहर लाना

चाहते हैं, नौजवानों के हाथ में गिटार पकड़ाना चाहते हैं कि उन में भी वह कल्चर तरक़्क़ी पा जाए कि जब ज़्यादा बुराई हो जाएगी तो फिर यह अल्लाह के ग़ज़ब और अज़ाब का शिकार हो जाएंगे तो अल्लाह तआला इसके मुक़ाबले में हमें पाकीज़ा तरीक़ा अता फ़रमाया है निकाह का ﴿انكحوا﴾ निकाह करो और अल्लाह तआला ने हमें पाकीज़ा रहन-सहन अता फ़रमाया है। वहाँ की औरत मज़लूम है कि उसको ग्यारह साल की उम्र में अपना साथी तलाश करने की फ़िक्र होती है और चालीस बरस उसके गुज़र जाते हैं और उसको साथी कोई नहीं मिलता और यहाँ बच्ची माँ की गोद में परवरिश पाती है, बाप की तर्बियत के तले होती है, भाईयों की हिफ़ाज़त में होती है फिर उसको मजमे में इज़्ज़त के तरीक़े के साथ किसी नौजवान के साथ बाँधा जाता है और उसके साथ मेहर रखा जाता है। मेहर किस लिए है? यह कोई क़ीमत है कहीं-कहीं कोई किसी की बेटी की क़ीमत लगा नहीं सकता। सात ज़मीन व आसमान सोना बन जाएं तो भी यह क़ीमत नहीं बनती। ख़ून के रिश्तों की कोई क़ीमत नहीं होती तो फ़िर जो मेहर रखा जाता है यह किस लिए है? इसके बग़ैर निकाह नहीं हो सकता।

निकाह ज़िना बन जाता है। यह अस्ल में एक अलामती चीज़ है न कि किसी की क़ीमत है।

यह एक अलामत है कि यह लड़की बाज़ार नहीं जाएगी, नौकरी नहीं करेगी, काम नहीं करेगी। तेरे बच्चे की तर्बियत करेगी अगर अल्लाह ने औलाद दी है तो तेरे ज़िम्मे है और सारी ज़िन्दगी इसको कमाकर लाकर खिलाना फिर अल्लाह ने इस पर ऐसा अज्र

रख दिया सुब्हानल्लाह!

जो सुबह से लेकर शाम तक हलाल कमाने में थकता है और उस थकन के साथ शाम को घर लौटकर आता है तो उसके उस दिन के सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

निकाह करने पर अल्लाह का ईनाम

एक अल्लाह के नेक बन्दे थे। उन्होंने शादी नहीं की। उनके बहुत मुरीद थे। जब वह फ़ौत हुए तो ख़्वाब में किसी को नज़र आए। उसने पूछा क्या मामला हुआ? कहने लगे मेरी मग़फ़िरत हो गई लेकिन एक शादी-शुदा मुसलमान जो अपनी बीवी बच्चों को कमाकर खिलाता है और उस पर जो परेशानियाँ देखता है उन परेशानियों पर जो जन्नत उसके लिए बनाई है उस जन्नत की मुझे हवा भी नहीं हुई।

इस वाक़िए की ताइद होती है हदीसे पाक से। यह वाक़िया कच्चा पक्का भी हो सकता है। मैं हदीस में आपको सुनाता हूँ आपको ﴿ان فی الجنة الدرجة﴾ जन्नत में एक बहुत आलीशान दर्जा है ﴿لا ينالوها الا ثلث﴾ इसमें सिर्फ़ तीन क़िस्म के लोग जा सकते हैं। जन्नतुल फ़िरदौस में एक आली मक़ाम है जो सिर्फ़ तीन आदमियों के लिए हैः

एक आदिल हुक्मुरान, आदिल बादशाह, आदिल क़ाज़ी,

दूसरा सिलारहमी करने वाला जो अपने रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करे, अपने माँ-बाप की ख़िदमत करे। उनकी दुआएं ले और जो ख़ून के रिश्ते हैं उनसे अच्छा सुलूक करे अगर दूसरा न

करे यह फिर भी करे तो यह भी उस मक़ाम पर पहुँचेगा।

और अल्लाह ने एक आदमी को औलाद दी फिर रिज़्क़ थोड़ा दिया। अब वह हराम नहीं लेता, झूठ नहीं बोलता, डंडी नहीं मारता बल्कि उसी हलाल में रूखी सूखी ख़ुद भी खाता है और अपनी औलाद को भी खिलाता है। सब्र करता है तो जो इस तरह की ज़िन्दगी गुज़ार गया वह भी इस दर्जे में पहुँचेगा।

निकाह की अहमियत

तो अल्लाह तआला ने हमें पाकीज़ा शरियत अता फ़रमाई। हमें निकाह का हुक्म दिया है। ख़ुद हमारे नबी ने निकाह किए अपनी बेटियों की शादियाँ कीं। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के निकाह किए, उनके वलीमों में शरीक हुए। अपने वलीमे में उनको बुलाया तो हमें एक ज़िन्दगी का नमूना मिला।

हज़रत ईसा ने तो शादी ही नहीं तो उनकी उम्मत के सामने नबी की तरफ़ से कोई नमूना ही नहीं था कि क्या करना है? शादी भी नहीं की औलाद भी नहीं थी लेकिन अल्लाह तआला ने तो हमारे नबी की शादियाँ भी करवाईं, औलाद भी हुई, आपकी शादियों में भी अजीब बात नज़र आती है। सारी जवानी तो गुज़ार दी आपने हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ पन्द्रह बरस जवानी तो गुज़ार दी और उनके दो निकाह पहले हो चुके थे और हर निकाह से औलाद थी। एक से बेटी थी और एक से बरा था।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुस्ने मुबारक

अबि हाला रज़ियल्लाहु अन्हु मशहूर सहाबी हैं वह साफ़ुर्रसूल कहलाते हैं। यह अबू हाला रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पहले ख़ाविन्द से उनके बेटे हैं। ये अल्लाह के नबी का हुलिया बयान करने में बड़े मशहूर हैं तो चालीस बरस की औरत हैं और आप पच्चीस साल के हैं। ऐसे हसीन हैं हमारे नबी कि बस,

﴾واحسن منك لم ترقط عينى﴿

उन जैसा हसीन कोई है ही नहीं। आपके बारे में आता है ﴾طاهر الودع﴿ साफ़ सुथरे, चमकता चेहरा ﴾واسع الجبين﴿ पेशानी बड़ी कुशादा ﴾زجلشار﴿ बाल घुंघराले, सिर आपका बड़ा, आबरू आपके बड़े ख़ूबसूरत, पलकें बड़ी ﴾فى عيونه داعج﴿ आँखे बड़ी मोटी ओर उनकी पलकें ऊपर साएं की तरह दराज़ ﴾فى صوته سحر﴿ आपकी आवाज़ में एक जादू था, एक सहर था, एक अजीब मुहब्बत थी, कशिश थी, कभी जलाल भी था, कभी जमाल था, मुख़्तलिफ़ चीज़ें मिलती हैं, जो मिलता था दीवाना हो जाता था। गर्दन आपकी लम्बी ﴾فى لحيته كثاثا﴿ दाढ़ी मुबारक आपकी घनी थी, न लम्बे, न छोटे लेकिन मौजिज़ा था कि लम्बे से लम्बे क़द वाला आदमी भी हमारे नबी के पास खड़ा हो जाता तो हमारे नबी का क़द लम्बा नज़र आता, दूसरा आदमी छोटा नज़र आता। ऐसा कभी नहीं हुआ कि हमारे नबी किसी के पास खड़े होकर छोटे नज़र आ रहे हों।

सबसे ऊँची शान वाला नबी

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा है। उनका क़द इतना लम्बा था कि घोड़े पर बैठते तो पाँव ज़मीन पर लगते थे। दस फ़िट से कम उनका क़द नहीं था जब वह हमारे नबी के पास खड़े होते थे तो हमारे नबी ऊँचे नज़र आते और अब्बास छोटे नज़र आते। जिसको अल्लाह ने ऐसा हुस्न दिया हो वह चालीस साल की औरत से शादी क्यों करे? आप ऐसे मोटे नहीं थे कि भरे हुए हों।

आप ऐस पतले नहीं थे कि कमज़ोर नज़र आएं न ऐसे मोटे कि पेट इधर जा रहा हो खुद उधर जा रहे हों। बाज़े भाई चलते इधर हैं और पेट उधर होता है तो ऐसे भी नहीं थे कि दो चल रहे हों पेट मशरिक़ में जा रहा हो वह मग़रिब में जा रहे हों।

﴿سواء البدن وصدر﴾ सीना और पेट बराबर था ﴿بعين ما بين المنكبين﴾ छाती बड़ी चौड़ी थी और सीना कुशादा और जोड़ बड़े मज़बूत जो आपको देखता था देखता ही रह जाता था।

वसीम उसको कहते हैं जिसको देखने से दिल न भरता हो और क़ीम उसको कहते हैं जिसको जिधर से देखो हसीन नज़र आए।

ऊपर, नीचे, दाएं, बाएं, होंट, पलकें, नथने, गर्दन, सीना जिधर से देखो हसीन नज़र आऐ तो ऐसे नौजवान को चालीस साल की औरत से शादी की क्या ज़रूरत थी? वह तो बीस बरस की लड़की से शादी करे, अठ्ठारह बरस की लड़की से शादी करे। ऐसा हुस्न था कि लोग देखकर दीवाने हो जाते थे।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुस्न हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़बान से

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मिस्रकी औरतों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखकर हाथ काटे थे अगर मेरे महबूब को देखतीं तो सीना चीरकर बैठ जातीं। फिर आपकी पचास साल की उम्र हुई तो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल हुआ। इक्कयावन साल की उम्र में आपने हज़रत सौदा से शादी की और बावन बरस की उम्र में आपने हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की। फिर तिरेप्पन से तिरेसठ बाक़ी दस साल में आपने आठ निकाह किए तो बुढ़ापे में कोई शादी के शौक़ बढ़ते हैं?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कसरत से निकाह क्यों किए?

एक हदीस में और तिरेसठ साल और चार दिन की उम्र पाकर आप दुनिया से चले गए और अंग्रेज़ी लिहाज़ से इकसठ बरस दो महीने और तैंतीस दिन आपकी उम्र बनती है। बाईस हज़ार तीन सौ तीस दिन और छः घन्टे बनते हैं। नुबुव्वत के आठ हज़ार और एक सौ छब्बीस दिन बनते हैं।

तो आपने निकाह किए, मदीने में आकर सादा भी किए दर्मियानी भी किए, कुछ तकल्लुफ वाले ताकि तीनों तब्क़ात के

लिए आसानी हो जाए। ग़रीब भी कर सके, बीचे के लोग भी कर सकें, मालदार भी कर सकें और ये आपकी शादियाँ थीं यह ज़रूरत की थीं। क्या ज़रूरत थी? कि औरतों में दीन जाए। दिन में आप मर्दों में घिरे होते कभी मैदाने जंगों में तो कभी मस्जिद में। निकाह की जो क़सरत हुई वह इसलिए हुइ कि औरतों में अल्लाह का दीन पहुँचाया जाए। अपने घरों में हैं, अपनी बीवियों को बता रहे हैं। बस एक घर में हैं बाक़ी घर ख़ाली हैं अगर आपकी एक बीवी होती तो आप परेशान हो जाते। हर वक़्त औरतें पूछने के लिए आ रही हैं। हर वक़्त आप पर्दे में जा रहे हैं। उस ज़माने में कोई इतने पर्दे घर में नहीं हुए थे। पर्दा कैसे कराते तो आप एक बीवी के पास आते दस बीवियाँ फ़ारिग़ बैठीं थीं। किसी के पास एक, किसी के पास पाँच, किसी के पास चार तो हर वक़्त एक सीखने सिखाने का निज़ाम चल रहा होता।

सादगी वाला निकाह

हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह ऐसे हुआ। फ़रमाया कि अपनी-अपनी रोटी लेकर मेरे दस्तरख़्वान पर आ जाओ तो हर आदमी अपना-अपना खाना लेकर आया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्तरख़्वान पर सब ने मिलकर खाया। यह निकाह हुआ फ़तेह ख़ैबर के मौक़े पर। ग़रीब से ग़रीब हमारे समाज में अगर इस्लामी रहन सहन हो तो अपने बच्चे का निकाह इस तरह कर सकता है। दूसर ज़रा तकल्लुफ़ वाला वलीमा था।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के वलीमे में आपने सबको दूध पिलाया तो यह हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से आपका निकाह हुआ फिर आपने पुर तकल्लुफ़ भी किया है। जब आपका हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह हुआ। ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा अकेली औरत हैं जिनका निकाह आसमानों पर अल्लाह तआला ने किया।

﴿فلما قضا زيد منها وطرا زوجنكها.﴾

इस ख़ुशी में वलीमे का एहतिमाम हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने ख़ुद किया। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! इन्तिज़ाम मैं ख़ुद करूँगी तो हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने गाय ज़िब्ह की। सारा मदीना इस वलीमे में शरीक हुआ। मर्द भी औरतें भी तो अगर कोई मालदार आदमी वलीमे में वुसअत करना चाहे तो इसकी भी गुंजाइशहै। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बदतरीन वलीमा वह है जिसमें ग़रीबों को न बुलाया जाए।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़सती का मंज़र

मेरे भाईयो! अगर हम अपनी शादी में सादगी ले आएंगे तो शादी आसान हो जाएगी। ज़िना मुश्किल हो जाएगा और अगर हम अपनी शादी की शर्तें पूरी कर देंगे तो शादी मुश्किल और ज़िना आसान हो जाएगा।

ऐसे ही हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह मस्जिद

में हुआ, दो चार महीने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! रुख़्सती हो जाए तो आपने फ़रमाया ठीक है करवा देते हैं तो आप मग़रिब की नमाज़ पढ़कर घर आए तो आप ने फ़रमाया उम्मे ऐमन को बुलाओ। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं घर में काम कर रही थी कि मुझे आवाज़ आई कि उम्मे ऐमन को बुलाओ। उम्मे ऐमन आ गई तो आपने फ़रमाया फ़ातिमा को अली के घर छोड़कर आ जाओ। उनसे कहो में इशा की नमाज़ पढ़कर आऊँगा तुम मेरा इन्तिज़ार करना। अब यह दो जहान के सरकार की बेटी हैं। उनकी रुख़्सती यूँ हो रही है कि बाप भी साथ छोड़ने नहीं गया और दुल्हा लेने नहीं आया, बाप छोड़ने नहीं गया। उम्मे ऐमन जो बाँदी हैं उनके साथ भेज दिया दोनों औरतें चलकर आईं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर दस्तक दी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर निकले तो उम्मे ऐमन ने कहा भाई अपनी अमानत संभाल लो और अल्लाह के नबी का फ़रमान है कि मैं इशा के बाद आऊँगा। इतनी सादगी से रुख़्सती हो गई।

हमारे अमीर थे भाई शब्बीर साहब रह०। उन्होंने बेटी का निकाह किया था। रुख़्सती बाक़ी थी तो सारे रिश्तेदार तो एक ज़हन के नहीं होते तो उन्होंने कहा भाई आप लोग दो चार अफ़राद आ जाओ। लड़की ले जाओ। उन्होंने कहा नहीं भाई हम तो देहाती लोग हैं, हम बारात लाएंगे। अब उनको समझाना भी मुश्किल था। उन्होंने कहा ठीक है बहुत अच्छा तो शादी वाला दिन जो था उससे एक दिन पहले अपनी बेटी को, बेटों को, बीवी को लिया और सीधे बहाव लंगर पहुँचे और कहा लो भाई हम

अपनी अमानत ख़ुद छोड़ने आ गए और यह काम उन्होंने उस वक़्त किया जब पूरे पाकिस्तान के टेलीफ़ोन के डायरेक्टर जर्नल थे। दुनियवी ओहदा इतना बड़ा था और काम ऐसा किया कि आज का चपरासी भी वह काम न करे। तो भाई सादगी अपनाओ और दूसरी बात यह है कि हमेशा ज़िन्दगी जो ख़ुशगवार गुज़रती है वह अच्छे अख़्लाक़ से गुज़रती है। यह सोना, यह चाँदी, यह मेहर इनसे घर आबाद नहीं होते। मियाँ-बीवी के अख़्लाक़ अच्छे हों, एक दूसरे की सह सके तो वह घर आबाद हो सकता है और इसमें लड़की वालों की ज़िम्मेदारी ज़्यादा है कि माँ-बाप अपनी लड़की को पालते हैं। अपने हाथों से उठाकर डोली में बिठाकर पराए घर भेज देते हैं।

बीवी को इतनी मुहब्बत दो कि उसे अपना घर याद ही न आए

एक लड़की ने पन्द्रह बरस, अठ्ठारह बरस एक घर में गुज़ारे, चार दीवारी में गुज़ारे, मानूस फ़िज़ा में गुज़रे। माँ भी ख़िदमत कर रही है, बाप भी लेकर आ रहे हैं, भाई भी नाज़ उठा रहा है, कोई उस पर हुक्म चलाने वाला नहीं है और वह चारों तरफ़ से मुहब्बत की फ़िज़ा देखती है तो भाई को छोड़कर गई, बाप को छोड़कर गई, माँ को छोड़कर गई, अपना घर छोड़कर गई, सब कुछ छोड़ा। अब लड़के वालों के ज़िम्मे है कि उसको इतनी मुहब्बत दें कि वह अपना घर भूल जाए।

सास और बीवी के झगड़े और उनका हल

हमारे यहाँ होता क्या है? पहुँचते ही ख़ाविन्द कहता है कि अब तू मेरी बीवी है और मैं तेरा ख़ाविन्द हूँ, तेरा हाकिम हूँ। अब जो मैं कहूँगा वह होगा। तूने मेरी माँ की भी ख़िदमत करनी है, मेरे बाप की भी ख़िदमत करनी है, तू ने मेरी बहनों की भी ख़िदमत करनी है, तू ने उनके सामने चूँ नहीं करनी है। उसके ज़िम्मे शरियत ने तो ख़ाविन्द की रोटी पकाना भी नहीं लगाया। यह कहता है कि मेरी माँ की रोटी पकाओ, मेरी बहनों की रोटी पकाओ, अगर नहीं पकाती तो (कहता है) तू ऐसी ग़ुस्ताख़, ऐसी बदतमीज़, तुझे माँ-बाप ने कुछ नहीं सिखाया। सास अपना अलग हुक्म चलाती है, नन्दें अपना अलग हुक्म चलाती हैं, ससुर अपना अलग हुक्म चलाता है क्योंकि हमारे समाज में इस्लाम नहीं है, इबादतों का इस्लाम मौजूद है, रहन-सहन का इस्लाम हमारे अन्दर नहीं है। इसलिए शादी के बाद अक्सर बेटी वालों को रोते ही देखा है। कोई होता है लाखों में एक जो कहता है कि शुक्र है अल्लाह का कि अच्छे लोग मिल गए। वजह क्या है कि बेटे की तर्बियत कोई नहीं की कि इसको किसी की ज़िन्दगी को साथ लेकर चलना है।

निकाह में दीनदारी देखो मालदारी मत देखो

हमारे यहाँ शादी का पैमाना इतना है, कारोबारी हो, पैसे वाला हो तो शादी कर दो। हमारी एक बुज़ुर्ग ख़ातून औरत थीं तो वह अपनी भतीजी के रिश्ते की बात कर रही थीं। दूसरी औरत को

बता रही थीं। हमारे यहाँ क्योंकि ज़मींदार हैं तो कारोबार के बजाए ज़मीन देखते हैं कि ज़मीन कितनी है? तो अब वह दूसरे को कह रही हैं कि उसके चौदह मरब्बे हैं, उसकी पेपर मिल है। मैंने बीच में पूछा कि मासी वह लड़का कैसा है? जवाब दिया कि उसके चौदह मरब्बे हैं, पेपर मिल है। मैंने दोबारा पूछा कि वह लड़का कैसा है? फिर वही जवाब दिया कि उसके चौदह मरब्बे हैं, पेपर मिल है। मैंने तीसरी बार पूछा कि वह लड़का कैसा है? तो उसने फिर यही कहा कि उसके चौदह मरब्बे हैं, उसकी पेपर मिल है। उसको समझ नहीं आया कि मैं क्या पूछ रहा हूँ। मैं पूछ रहा हूँ वह कैसा है? वह कह रही है उसके चौदह मरब्बे हैं। एक साल के बाद तलाक़ हो गई।

अख़्लाक़ से घर बनते हैं

तो भाईयो! इस वक़्त बहुत बड़ा गिरावट है समाजी ज़िन्दगी में कि हम हदें नहीं जानते और इस्लामी रहन-सहन नहीं जानते। दस हज़ार गाड़ियाँ जा रही हैं लाईन में तो ट्रैफ़िक नहीं रुकेगा। दस गाड़ियाँ लाईन तोड़ दें तो ट्रैफ़िक नहीं जाएगी। ख़ाविन्द की हद है, बीवी की हद है, सास की हद है, ससुर की हद है, नन्दों की हद है। उसके अन्दर अगर सारा घर चले तो सारा घर खुश खुर्रम रहेगा लेकिन जब हदें तोड़ी जाएंगी। जब सास हद तोड़कर आगे बढ़ेगी, ख़ाविन्द हद तोड़कर आगे बढ़ेगा, बीवी हद तोड़ेगी, नन्द हद तोड़ेगी तो फिर वह घर संगमरमर का होकर भी काँटेदार सहरा बन जाएगा। जगमगाते घर अंधेरे हो जाएंगे। ख़ूबसूरत

ख़्वाबगाहें पहली सदी के ग़ार नज़र आएंगे। जब अख़्लाक़ अच्छे हो जाते हैं तो भाईयो अंधेरे घरों में चौदहवीं के चाँद नज़र आते हैं और ठंडे चूल्हों में शबे बरात रोज़ होती है और रोटी खाकर पुलाव ज़र्दे के मज़े पाते हैं और पुरानी खाट पर सोकर वे आलीशान ख़्वाबगाहों के मज़े उठाते हैं। यह उस वक़्त है जब अख़्लाक़ अच्छे होते हैं।

अख़्लाक़ बिगड़ जाएं तो दिल पारा-पारा हो जाते हैं। ज़िन्दगी अजीरन और वीरान हो जाती है। जब आपके काँटा चुभा हुआ हो तो न आपको बिस्तर पर नींद आएगी न ज़मीन पर नींद आएगी न घर में नींद आएगी, न बाहर नींद आएगी। र्दद उठ जाए तो किसी पल चैन नहीं आता और जब वह दर्द दिल में उठ जाए तो फिर कैसा होगा?

अपनी ज़बान पर ताला लगा दो

बदअख़्लाकी से दिल ज़ख़्मी हो जाते हैं और दिल है शीशे की तरह और शीशा एक ऐसी धात है जो टूट जाए तो कभी नहीं जुड़ता। दिल भी ऐसी बला है जो टूट जाए तो जुड़ता नहीं है और इसको तोड़ने वाली चीज़ ज़बान है। यह ढाई इचं की ज़बान है जो दिल को सबसे ज़्यादा ज़ख़्मी करती है।

अल्लाह तआला ने इस पर बत्तीस ताले लगाएं हैं। ऊपर मेन गेट लगाया है। यह इतनी ज़ालिम है कि सारे ताले तोड़कर, गेट तोड़कर बाहर आ जाती है। चोरों से एक ताला तोड़ना मुश्किल होता है। यह बत्तीस ताले तोड़कएक दम बाहर आती है तो भाईयो लड़ाईयाँ तो होती हैं ज़बान से। ज़बान का बोल मीठा कर लो।

बदमाश धोबन की कहानी

हमारी धोबन थी। कपड़े धोने वाली। वह थी लड़ाका। वह आ गई मेरी बहन के पास। उनसे अपनी बहुओं की शिकायत कर रही है कि मेरी बहुएं मुझसे बहुत लड़ती हैं। मुझे कोई ऐसा तावीज़ दे कि वे मेरी ग़ुलाम हो जाएं। उन्होंने कहा बहुत अच्छा। उन्होंने एक काग़ज़ पर लिखा। उल्टा सीधा उसको बन्द किया और कहा मासी जब तेरी बहुएं लड़ने लगें तो यह तावीज़ दाँतों के नीचे दबा लेना। दाँत नहीं खोलना, तू एक हफ़्ता इस पर अमल कर। सारी बहुएं तेरी ग़ुलाम हो जाएंगी। अब वह आठवें दिन बड़ी बड़ी ख़ुशी-ख़ुशी आई कि बीबी मेरी सारी लड़ाई ख़त्म हो गई।

अब सारी लड़ाई ख़त्म क्योंकि तावीज़ ज़बान के नीचे है। हमारे यहाँ रिवाज है तावीज़ गंडे का ज़्यादा तो अब वह समझी जाने क्या है इसमें हाँलाकि उसकी ज़बान रोकी थी उस तावीज़ से।

मीठे बोल का जादू

मेरे अज़ीज़ो! घर बर्बाद हो जाते हैं अगर ज़बान तेज़ हो तो लड़की के ज़िम्मे भी है कि पराए घर में जाकर अच्छे अख़्लाक़ पेश करे कि सारा घर उसका गिरविदा हो जाए लेकिन इससे ज़्यादा लड़के वालों के ज़िम्मे है क्योंकि वे पराई लड़की को लेकर आ रहे हैं। उसके लिए पूरा माहौल अजनबी है, सारा माहौल अजनबी है, उसके लिए शक्लें बेगानी हैं और यह एक पक्की बात है कि सास माँ नहीं बन सकती और ससुर बाप नहीं बन सकता। इसीलिए अल्लाह तआला ने हदें क़ायम की हैं कि हद के अन्दर हो ताकि

लड़ाई न हो झगड़ा न हो। सबसे बड़ी दौलत जो किसी के घर को आबाद करने के लिए है वह मीठा बोल है और अच्छे अख़्लाक़ हैं। इल्म से घर नहीं चलते। ये जो मौलवी होते हैं वे वैसे ही बड़ी जल्दी लड़ाई करते हैं। जिन्होंने पढ़ा होता है वह फ़तवे जल्दी जल्दी सुनाते हैं।

आपके मिसाली अख़्लाक़ का अनोखा वाक़िया

अरे यह हराम है, यह हराम है, तो बड़ी जल्दी खिलौने की तरह घर तोड़ने बैठ जाते हैं। अरे यह सब्र का काम है। इसलिए शादी से पहले अपने नबी की मआशरत के पाठ पढ़ो। जिसकी भी शादी हो तो पहले वह पढ़े। अल्लाह का नबी अपनी बीवियों के साथ कैसा शफ़ीक़ था? आप अन्दाज़ा लगाएं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो उमर-तुल-कज़ा के लिए तशरीफ़ लाए। सन् 6 हिजरी में उसमें आपने मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह किया था। आप सल्ल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँख खुली, पेशाब का तक़ाज़ा हुआ तो उठकर बाहर चले गए। हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की आँख खुली तो देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ायब हैं तो उनको चक्कर आ गए। वह जो सौकनपन है वह ज़ाहिर हुआ। ओहो! मुझे छोड़कर किसी और बीवी के पास चले गए। उन्होंने अन्दर से कुंडी लगा दी। थोड़ी देर के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस्तक दी। कहा दरवाज़ा खोलो। बोलीं नहीं खोलूंगी। पूछा क्या हुआ? कहने लगीं मुझे छोड़कर औरों के पास जाते हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहने

लगे अल्लाह की बन्दी मैं अल्लाह का नबी हूँ ख़्यानत नहीं करता। फिर उनको एकदम ख़्याल आया कि यह तो बात सही है नबी तो ख़्यानत नहीं कर सकता। फिर उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया। आप अल्लाह के नबी दरवाज़ा खोलते ही जूती उठाकर पिटाई शुरू कर देता कि तू ऐसी बदतमीज़, तू ऐसी गुस्ताख़। आप मुस्कराते हुए चारपाई पर जाकर सो गए।

अख़्लाक़ सीखो और सिखाओ

तो भाईयो! अपने अख़्लाक़ बनाओ। अपनी औलाद को अख़्लाक़ सिखाओ, अपनी बेटियों को सब्र सिखाओ कि आज का समाज आने वाली बेटी को नौकर ही बनाकर रखता है। बहुत कम लोग होते हैं जो किसी की बेटी को अपनी बेटी समझते हैं वरना तो हर एक के हाथ में नये से नया हरबा होता है नए से नया ज़ख़्म लगाने के लिए और ऊपर से छिड़कने के लिए नमक होता है। कोई भी घर आबाद करना हो तो अख़्लाक़ सीखो सिखाओ। यह उन लड़कों के ज़िम्मे हैं कि वे अपनी बीवियों को मुहब्बत दें, माँ-बाप के ज़िम्मे है कि वह उनको (लड़कियों को) वक़्त दें फिर वे ख़ुद काम करेंगी और कहेंगी कि आप छोड़ें मैं करूंगी। लड़का कहता है मेरी माँ की ख़िदमत कर, मेरे बाप की ख़िदमत कर, मेरी बहनों की ख़िदमत कर। अरे उसके ज़िम्मे तो अपने ख़ाविन्द की रोटी पकाना भी नहीं है, कपड़े धोना भी उसके ज़िम्मे नहीं। शरअन ऐसे मर्द के ज़िम्मे उसका दवा-दारू नहीं बल्कि पैसे दे दे। तो अल्लाह के नबी अपने कपड़े ख़ुद धोते थे,

अपना आटा खुद गूंधते थे। घर में आटा गूंध रहे हैं; बर्तन धो रहे हैं, झाड़ू दे रहे हैं। अपने घर के काम खुद कर रहे हैं।

औरत नाज़ुक शीशे की तरह है

तो मेरे भाईयो! अज़ीज़ो अपने-अपने घरों को अच्छे अख़्लाक़ से लैस करो। अल्लाह के नबी ने औरतों को शीशे से मिसाल दी है। और शीशे टूट जाते हैं तो जुड़ते नहीं। अगर हमने अपनी बदअख़्लाक़ी से दिल तोड़ दिया तो फिर वह कभी नहीं जुड़ेगा। एक दिल तो वैसे ही नाज़ुक है फिर साथ में औरत भी हो जाए तो दो चीज़ें एक साथ बिगड़ जाएं तो सारी उम्र कढ़वाहट के साथ गुज़रती है। मुहब्बत देना सीखो तो सारी ज़िन्दगी राज करोगे। आर्डरबाज़ी से रहोगे तो सारी ज़िन्दगी कढ़वाहटें चलती रहेंगी। नफ़रतें बढ़ती रहेंगी। मुहब्बत से जो दिल जीते जाते हैं वह न दौलत से न जवाहर से न हुकूमत की लाठी से जीते जाते हैं। दिल वही जीत सकता है जो चुप रहना जानता हो, सिर झुकाना जानता हो, जो दरगुज़र करना जानता हो, जो ग़ल्ती पर ख़ामोश रहना जानता हो, ग़ल्ती पकड़ना न जानता हो।

बदअख़्लाक़ी से घर बर्बाद होते हैं

तो मेरे भाईयो! अख़्लाक़ बनाने के लिए जिस दर्जे का ईमान चाहिए वह नहीं है। जिस दर्जे की मेहनत चाहिए वह नहीं। तबलीग़ में चिल्ले भी देते हैं, साल भी लगाते हैं लेकिन अख़्लाक़ नहीं बनते। कुछ क़ुर्बानी का जज़्बा बन जाता है, तहज्जुदगुज़ार

बन जाते हैं, नमाज़ी हो जाते हैं, दावत देने वाले बन जाते हैं, गश्तें करने वाले हो जाते हैं लेकिन अख़्लाक़ की बुलन्दियों तक पहुँचने के लिए, जिस अख़्लाक़ की ज़रूरत है वह इससे नहीं बनता और क़ुर्बानी देनी पड़ती है।

एक हदीस में आता है अल्लाह तआला ने सही यक़ीन और अच्छे अख़्लाक़ बहुत थोड़े तक़सीम किए हैं तो जो चीज़ बाज़ार में थोड़ी हो उसकी क़ीमत बढ़ जाती है। इसलिए भाईयो! अगर अपने घरों को आबाद करना है तो अख़्लाक़ बनाओ। अच्छे अख़्लाक़ सीखो। अल्लाह के नबी ने अख़्लाक़ तीन चीज़ों में बताए हैं:

﴿صل من قطعك﴾ जो नाता तोड़े उससे जोड़ो।

﴿واعف عمن ظلمك﴾ जो तुम पर ज़्यादती करे उसे माफ़ कर दो।

﴿وتطع من حرمك﴾ जो रोके उसे दो।

यह तीन बुनियादें हैं अच्छे अख़्लाक़ की। इस पर जो घराना चलेगा वह जन्नत में जाएगा जो बदअख़्लाक़ हो उसके लिए इबादत की ज़्यादती के बावजूद जहन्नम की धमकी है। इसलिए बदअख़्लाकी से बचो।

जहन्नम से डरो

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में जहन्नमियों का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमायाः

﴿لهم من جهنم مهاد﴾ अंगारों के बिस्तर पर उनकी चादरें हैं।

﴿ومن فوقهم غواش﴾ उनके ऊपर आग की चादरें और,

﴿لهم من فوقهم ظلل من النار ومن تحتهم ظلل﴾ उनके ऊपर भी आग के पर्दे और उनके नीचे आग के पर्दे।

﴿يا عباد فاتقون﴾ अल्लाह पाक कह रहे हैं ऐ फ़ैसलाबाद वालों! ऐ गुलिस्तान वालो! अरे तुम्हें क्या हो गया? दीवानों, पागलों किस चीज़ से डरते हो? जहन्नम से नहीं डरते हो और दुनिया के फ़क़्र व फ़ाक़े से डरते हो। यहाँ की भूख प्यास से डरते हो।

ऐ पूरी दुनिया के इन्सानों! ऐ मेरे बन्दो! उस आग से बचो, उस आग से डरो, उस जहन्नम से डरो जिसको अल्लाह ने भड़काया हे।

﴿كلما زدناهم سعيرا﴾ जब वह ठंडी होती है तो अल्लाह तआला और भड़का देता है।

उसकी एक चिंगारी पूरे-पूरे बड़-बड़े महल के बराबर हवाओं में उड़ती चली जाती हैं। उसका एक क़तरा सारी दुनिया के पानी को कढ़वा कर देगा, उसका एक लोटा पानी समुंद्रों का खौला देगा, बर्फ़ को पिघला देगा। जन्नत का एक क़तरा दुनिया को मीठा कर दे, उसका एक झोंका जहान को मौत्तर कर दे।

हुस्न हो तो ऐसा

जन्नत की लड़की अपना दुपट्टा हवा में लहरा दे तो सारी काएनात रौशन हो जाए, मौत्तर हो जाए, ख़ुशबूदार हो जाए, ज़िन्दों को झलक दिखा दे तो कलेजे फट जाएं, मर्दों से बात करे

तो उनमें रूह दौड़ जाए, समुंद्रों में थूक डाले तो समुंद्र मीटे हो जाएं। ख़ाविन्द की तरफ़ चलकर आए तो एक क़दम में एक लाख के नाज़ व अन्दाज़ दिखाए, मुस्कराए तो दाँतों का नूर सारी जन्नत का चमका कर रख दे। सिर के बाल चोटी से पाँव की ऐढ़ी तक बिखरे हुए फैले हुए। उसके एक बाल में सूरज चमकता हुआ दिखाई देता है। गुलाब चहकते हुए मंहसूस होते हैं।

मेरे भाईयो! एक अन्जाम यह है जो अल्लाह तआला ने बनाया है कि उस दिन अल्लाह तआला ज़मीन को ज़िन्दा कर रहा है। इधर मुजरिम आ गए, उधर मोहतरम आ गए।

﴿ولمن خاف مقام ربه جنتٰن.﴾

आ जाओ इधर का अंजाम भी देखो ये वे हैं जिन्होंने अल्लाह को राज़ी किया। उसके महबूब के तरीक़ों को अपनी ज़िन्दगी बनाया। उसकी ग़ुलामी को अपनी इज़्ज़त समझा, अपना फ़ख़्र समझा। यह कैसी ख़ूबसूरत जन्नत है। उसमें क्या है?

﴿فيهما عينان تجريان﴾ उसमें चश्मे हैं बहते हुए,

﴿فيهما من كل فاكهة زوجان﴾ हर फल के बेशुमार क़िस्में-क़िस्में जोड़े हैं।

﴿بطائنها من استبرق﴾ ऊपर चमकदार ग़लीचे बिछाए जा चुके हैं। उनके फ़र्श बिछे हुए हैं और उस पर रहमान है।

﴿وجنى الجنتين دان﴾ सिरों के ऊपर जन्नत के फल झुके हुए हैं। छिपे हुए फल और फैले हुए साए और उड़ते हुए परिन्दे और बहते हुए पानी और बिछे हुए तख़्त और भरे हुए जाम और भरी हुई सुराहियाँ, सजे हुए दस्तरख़्वान।

﴿فيهن قاصرات الطرف﴾ दाएं और बांए नज़रें झुकाई हुई जन्नत की लड़कियाँ।

﴿كأنهن الياقوت والمرجان . لم يطمثهن انس قبلهم ولا جان.﴾

जिन्हें इन्सान ने नहीं छुआ, जिन्न ने नहीं छुआ याक़ूत व मरजान की तरह और हया में कामिल हुस्न व जमाल में कामिल।

अल्लाह तआला ने उनको आग, मिट्टी, पानी, हवा से नहीं बनाया। मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान, काफ़ूर से बनाया। पाँव के अंगूठे से लेकर घुटने तक अंबर व ज़ाफ़रान से, घुटने से लेकर छाती तक मुश्क से, छाती से लेकर गर्दन तक अंबर से और गर्दन से लेकर सिर तक काफ़ूर से बनी हुई हूरें और फिर अल्लाह तआला ने आबे हयात डाला फिर सबसे आला चीज़ अल्लाह ने उनमें अपने नूर में से नूर डाला, वे चमक गईं वे दुल्हन बन गईं, मुकम्मल हो गई शबाब कामिल, जवानी कामिल, पेशाब से पाक, पाख़ाने से पाक, वे बुढ़ापे से पाक, वे हैज़ से पाक, वे निफ़ास से पाक, वे हमल से पाक, वे मौत से पाक, वे बेवफ़ाई से पाक, गाली-गलौच से पाक, वे बदअख़्लाक़ी से पाक, जूंए पड़ने से पाक, बूढ़े होने से पाक, हर ऐब से पाक है। *"ताहिरात"*, *"तय्यबात"*, *"कामिलात"*, *"कासियात"*, *"नाईमात"*, *"राज़ियात"*, *"मुक़ीमात"*, ये सारी सिफ़ात है जो नबी बताता चला जा रहा है।

वे कामिल, वह अकमल, वह पाक, वह पाकीज़ा, वह मुज़य्यन, वह मरसअ, वह आला, वह हसीन, वह जमील, वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाली, हमेशा जवान रहने वाली, हमेशा ख़ुश रहने वाली, हमेशा साथ रहने वाली, हमेशा साथ देने वाली, हमेशा ख़ुशबूदार रहने वाली। उनका मैकअप करने वाला अल्लाह ख़ुद है, उनका

लिबास पहनाने वाला अल्लाह ख़ुद है, उनको ज़ेवर पहनाने वाला अल्लाह ख़ुद है, उनके मेल नफ़ूस, उनकी नोक-पलक सवांरने वाला अल्लाह ख़ुद है, उसकी आँखों को मोटाई दी, और अजली को स्याही, अल्लाह तआला ने उसके हुस्न में नूरानियत भरी।

मरने वालों से सीख लिया करो

अल्लाह तआला ने उसको हर किस्म की गंदगियों से पाक फ़रमाया ﴿ولمن خاف مقام ربه جنتان﴾ आ जाओ फ़ैसलाबाद में अल्लाह से डर कर ज़िन्दगी गुज़ारो, दिलेर न बनो, ज़ालिम न बनो, बाप के नाफ़रमान न बनो, शराब से बचो, सूद से बचो, झूठ से बचो, ज़ुल्म से बचो, रिश्वत से बचो, माँ-बाप को दुख देने से बचो, जूए से बचो, गाने बजाने से बचो, अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफ़रमानी से बचो, झूठी गवाही से बचो। ये जो कबीरा गुनाह हो रहे हैं उनसे बचो, अपने आपको हराम कमाइयों से बचाओ। हराम कामों से किस-किस पाप को रोऊँ? ईनामी बांड ख़रीदने से बचो फिर नफ़िल पढ़ते हैं कि हमारा नम्बर निकल जाए। ओ अल्लाह के बन्दो तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हें कैस समझाऊँ कि तुम जुआ खेलकर अल्लाह से दुआएं करते हो जो अल्लाह कह रहा है ऐ मेरे बन्दो! जुआ छोड़ दो, अरे शराब छोड़ दो और तुम्हें क्या हो गया कि तुम जुए का कारोबार करके दुआएं करते हो कि या अल्लाह बरकत दे दे और यह पागल दीवानी दुनिया कहती है कि यह मुसलमान कहाँ से आ गए। मुसलमान जो बांडख़रीदकर कहते हैं या अल्लाह! मेरा बांड निकाल दे और ऊपर से दुआएं भी करवाते हैं, मेरा मुकद्दर संवर जाए।

अरे ज़ालिम! तू क्या कह गया है। तू हराम पैसे से मुकद्दर संवारता है। मैं कहाँ से बोल लाऊँ और तुम्हें समझाऊँ अपने भाईयो को। मेरे भाईयो मुझे माफ़ करना। मुझे समझ नहीं आता कि मैं कैसे दिल चीरकर अन्दर में बात उतारूं कि जिसको इतने बड़े रब का सामना करना है। वह उसकी नाफ़रमानी करके ललकारता है। न उसे जन्नत याद न उसे दोज़ख़ याद, न उसे अल्लाह याद, न मौत याद, न क़ब्र याद, न तन्हाईयाँ याद, न वहशतें याद। इस गंदी दुनिया के पीछे पड़े हो जिसे छोड़कर मर जाते हो। क्या कहा था नज़ीर अकबराबादी नेः

तू हिर्स हवस को छोड़ मियाँ मत देस बदेस फिरे मारा
क़ज़्ज़ाक अजल का लूटे है दिन रात बजाकर नक़्क़ारा
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

सूदी बैंकों में पैसे रखे हैं इस गंदी दुनिया की ख़ातिर, जुवा खेला इस गंदी दुनिया की ख़ातिर। अरे उठते जनाज़े देखा करो। रोने वालियों का विलाप सुना करो। घरों की वीरानियाँ देखो। क़िले में जाकर देखो। सैर करने नहीं इबरत की नज़र से जाओः

वह देख रावी के किनारे एक टूटा सा मकां है
दिन को भी यहाँ शब की स्याही का समां है
कहते हैं कि यह आरामगहे नूर जहाँ है

दुनिया की दौड़ लगाने वालों का अंजाम

जाओ! जाओ! उसकी क़ब्र से पूछो कि तेरे नाम का तो डंका बजता था। तेरे सामने तो जहांगीर पाँव में पड़ गया था। आज तू

क्यों ज़मीने के नीचे सो गई? यह मकड़ियों ने क्यों जाले तन दिए? तू तो गुलाब के अर्क़ में नहाने वाली औरत थी। आज तेरी हड्डियाँ बोसीदा हैं। क़ब्र तेरी वीरान। फिर ऊपर आने वाला कोई नहीं है। कोई हाथ उठाकर नहीं आता कि फ़ातेहा पढ़ दूँ। जाते हैं तो सैर करने जाते हैं। इन इबरतकदों को देखकर मेरे भाईयो इबरत लो। क़ब्रिस्तान जाओ देखो! ये लोग थे जिन्होंने दुनिया की दौड़ें लगायीं, जिन्होंने झूठ बोले, सूद खाए, रिश्वतें खायीं, ज़ुल्म किए, क़त्ल किए, ज़िना किए, शराबें पीं, गाने सुने, नाच की महफ़िलें सजायीं। जाओ क़ब्रिस्तान फ़ैसलाबाद का बड़ा क़ब्रिस्तान तंग हुआ पड़ा है।

क़ब्र पर क़ब्र चढ़ी हुई है। यह अपने क़रीब का क़ब्रिस्तान देखो. क़ब्र पर क़ब्र चढ़ी हुई है। एक दिन यही मिट्टी होगी और हम होंगे।

काएनात आबाद होगी। दिन चढ़ता होगा। घर आबाद रहेंगे। काम चलते रहेंगे। कारोबार होते रहेंगे। औलादें माँ को भूल जाएेंगी। कोई थी जो मेरे लिए रातों को तड़पा करती थी और बाप को भूल जाएंगे कोई था जो मेरे लिए सारा-सारा दिन बाज़ार में झुलसा देने वाली गर्म हवाएं सहता हुआ मेरे लिए कमाता था। याद रखना कोई किसी को याद नहीं रखता। यह सब बेवफ़ा हस्तियाँ हैं।

क़यामत का ख़ौफ़नाक दिन

वफ़ादार एक अल्लाह और एक उसका रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। बाक़ी सब बेवफ़ा हैं। सब! सब! सब! सब! बेवफ़ा

हैं। उस नबी को दुआएं दो तेईस बरस आपके लिए रोया। तेईस बरस आपके लिए तड़पा। उम्मत! उम्मत! कहता दुनिया से रुख़्सत हुआ। उस नबी को दुआएं दो जो तुम्हें जाने से पहले सलाम पेश कर गया।

वफ़ात से एक हफ़्ता पहले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और साथी आए। आपकी आँखों में आँसू आ गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जाने का वक़्त क़रीब आ चुका है। मेरा तुम्हें आख़िरी सलाम हो और तुम्हारे बाद जो मेरी उम्मत आए तो उनको भी कह देना कि तुम्हारा नबी तुम्हें सलाम कह गया था।

अरे मैं तुम्हें कहाँ से समझाऊँ? किससे वफ़ा कर रहे हो और किस से बेवफ़ाई कर रहे हो? वह जिसकी जुदाई को बेजान महसूस कर उठे और हाय-हाय पुकार उठे। मस्जिदे नबवी में एक खजूर का तना था जिस पर टेक लगाकर अल्लाह के नबी ख़ुत्बा देते थे। मजमा बढ़ गया मिम्बर बनाया गया। क़रीब मेरे नबी का घर था। आज आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से निकले और मिम्बर की जानिब बढ़े। खजूर के तने ने जब यह देखा कि आप मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं तो उसकी भी हाय निकली।

वह प्यारा नबी पैग़ाम दे रहा है। सिर्फ़ सहाबा को नहीं पैग़ाम दे रहा है। वह कह रहा है मेरे बाद जो मेरी उम्मत आए उन्हें भी कहना कि तुम्हारा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हें सलाम पेश कर गया था और क़यामत का दिन आएगा और दोज़ख़ को मैदाने हश्र में घसीटकर लाया जाएगा और वह एक चीख़ मारेगी। बड़े-बड़े अबदाल और औलिया, बड़े-बड़े मुजाहिद, शहीद, उलमा।

क्या फ़ासिक़ क्या फ़ाजिर ज़मीन पर जा गिरेंगे। क्या अंबिया, क्या फ़रिश्ते सब ज़मीन पर जा गिरेंगे और सब कहेंगे या रब्बी नफ़्सी-नफ़्सी।

और फ़रिश्तों ने तो दोज़ख़ में नहीं जाना मगर वह डर के मारे ज़मीन पर जा गिरेंगे और सारे इन्सान पुकार उठेंगे नफ़्सी-नफ़्सी। सारे नबी पुकार उठेंगे नफ़्सी-नफ़्सी। क्या आदम अलैहिस्सलाम, क्या नूह अलैहिस्सलाम, क्या इदरीस अलैहिस्सलाम, क्या इब्राहीम अलैहिस्सलाम, क्या मूसा अलैहिस्सलाम, क्या हारून अलैहिस्सलाम, क्या याक़ूब अलैहिस्सलाम, क्या इस्हाक़ अलैहिस्सलाम, क्या यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, क्या इस्माईल अलैहिस्सलाम, क्या दाऊद अलैहिस्सलाम, क्या सुलेमान अलैहिस्सलाम, क्या याहया अलैहिस्सलाम, क्या ज़क्रिया अलैहिस्सलाम, क्या यूनुस अलैहिस्सलाम, क्या ईसा अलैहिस्सलाम।

सारे नबियों की पुकार नफ़्सी-नफ़्सी। सुनो इब्राहीम अलैहिस्सलाम कह रहे हैं या अल्लाह! मैं तुझसे अपने बाप का भी सवाल नहीं करता। मेरी जान बचा ले और ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे या अल्लाह! मैं आज अपनी माँ मरियम का सवाल नहीं करता मेरी जान बचा ले। वे नबी होकर कहेंगे मेरी जान बचा ले।

हम नमाज़ें छोड़ें, रोज़े छोड़ें, सूद खाकर, माँओं को गालियाँ देकर, बाप को धक्के देकर, भाईयों के हक़ मारकर, शराबें पीकर, गाने सुनकर, झूठी गवाहियाँ देकर, ज़मीन दबाकर, नाप-तोल ग़लत करके, जुए के कारोबार करके हम मीठी नींद सो जाते हैं कि जैसे हमने कुछ किया ही नहीं।

आज ख़लीलुल्लाह को देखो कह रहा है मेरी जान बचा,

आज कलीमुल्लाह मेरी जान बचा,

आज ज़बीहउल्लाह को देखो! कह रहा है या अल्लाह! मेरी जान बचा,

आज ुल्लाह को देखो! कह रहा है या अल्लाह! मेरी जान बचा।

ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे मैं माँ मरियम का भी सवाल नहीं करता बस या अल्लाम मेरी जान बचा।

जब नबी भूल जाएंगे तो बीवी कब याद करेगी? बाप कब याद करेगा? ख़ाविन्द कब बीवियों को याद करेंगे? इधर देखो इस महशर के मैदान में एक नबी है जिसका नौहा सबसे जुदा है, जिसकी फ़रियाद सबसे निराली है, जिसका रोना सबसे अनोखा है, जिसकी दुआ सबसे अलग है। उसकी झोली फैली हुई है हाथ उठ रहे हैं। वह नफ़्सी-नफ़्सी नहीं कह रहा है। वह कह रहा है या रब्बी उम्मती-उम्मती। या अल्लाह मेरी उम्मत को बचा ले! या अल्लाह मेरी उम्मत को बचा ले। वाह! ऐसा आलीशान नबी पाकर फिर उम्मत उसकी सुन्नतों पर छुरियाँ चलाए, उसकी सुन्नतों को ज़िब्ह करे।

जैसे मेरा नबी यतीम पैदा हुआ था कोई दाया उसको लेने को तैयार नहीं थी। आज मेरे नबी का दीन यतीम हो गया। नौजवान लेने को तैयार नहीं। उन्हें नाच-गाने से इश्क़ हो चुका है। ताजिर लेने को तैयार नहीं। वह कहता है मेरा नफ़ा कट जाएगा, मेरा कारोबार टूट जाएगा। ज़मींदार लेने को तैयार नहीं। वह कहता है

कि हमारी खेतियाँ उजड़ जाएंगी। सियासदान लेने को तैयार नहीं वह कहता है कि हमारी सियासत चली जाएगी। हुक्मुरान लेने को तैयार नहीं। अदालत का क़ाज़ी लेने को तैयार नहीं। चैम्बर का वकील लेने को तैयार नहीं।

मैं उनको क्या रोऊँ। यहाँ रेढ़ी पर बैठकर केले बेचने वाला, आम बेचने वाले, ग़रीब, मज़दूर ये सब भी आज़ अल्लाह के नबी के तरीक़ों को लेने को तैयार नहीं जैसे मेरे नबी को हर दाया छोड़कर चली जाती थी। आज मेरे नबी का दीन भी हराम हो गया। हाय! हाय! आज इसका कोई लेने वाला नहीं रहा। नफ़्स के ग़ुलाम, चीज़ों के ग़ुलाम, झोपड़ी और रोटी के ग़ुलाम, चटख़ारे और मज़ों के ग़ुलाम, कपड़े के ग़ुलाम, मकानों के ग़ुलाम होकर रह गए, नौकरियों के ग़ुलाम और मेरे भाईयो! वह तो तुम्हें हश्र में भी नहीं भूला। कह रहा है या अल्लाह! उम्मती-उम्मती।

देहाती के नदामत भरे शे'र

इब्ने कसीर और इमाम नुव्वी रह० ने इस वाक़िये को नक़ल किया है कि अतबी रह० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र पर बैठे हुए थे। एक बद्दू आया, देहाती। कहने लगाः

﴿السلام عليك يا رسول الله﴾

फिर कहने लगा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपके रब का फ़रमान सुना हैः

ولو انهم اذظلموا انفسهم جاؤك فاستغفر الله واستغفر لهم
الرسول لوجد الله توابا الرحيما.

आपका रब कह रहा है कि अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत अपनी जानों पर ज़ुल्म करके गुनाहों का बोझ उठाकर आपके दरबार में आ जाए और अल्लाह से माफ़ी मांगे और आप भी अल्लाह से माफ़ी मांगे तो मैं उनको माफ़ कर दूँगा। फिर कहने लगा'

يا رسول الله مستشفعا بك الى ربى يا رسول الله...الخ.

मैं आपके पास आया हूँ अपने गुनाहों का इक़रार करके और आपको अल्लाह के दरबार में वसीला बनाकर आपके अल्लाह से यह मांगता हूँ कि आपकी शफ़ाअत से मेरा अल्लाह मुझे माफ़ कर दे। फिर उसने चार शे'र कहे। दो शे'र आज भी रौज़ा-ए-मुबारक पर लिखे हुए हैं। आज भी जब सलाम करने के लिए खड़े होते हैं तो दो सफ़ेद सुतूनों पर जो दांए-बाएं जानिब हैं जाली के उस पर वे दो शे'र आज भी लिखे हुए हैं दो और हैं जो किताब में हैं। फिर उसे शे'र पढ़ा। क्या कहा?

يا خير من دفنت فى البقاء اعظمه
فتاب من القاب والحكم

ऐ वह ज़ात! जो इस ज़मीन में जाकर छिप गई। उसकी बरकत से ज़मीन का अन्दर भी बाबरकत हो गया, बाहर भी बाबरकत हो गया। अन्दर भी ख़ुशबुएं फैल गयीं, वादियाँ और पहाड़ भी ख़ुशबूदार हो गए।

نفس الفداء لقبر انت ساكنه.

मैं क़ुर्बान इस कब्र पर जिसमें आप आराम कर रहे हैं।

فيه العفاف وفيه الجود والكرم.

सिर्फ आप ही इस क़ब्र में नहीं सो रहे हैं बल्कि आपके साथ आपकी सख़ावत भी, आपका माफ़ करना भी, आपका दरगुज़र करना भी, आपकी मेहरबानियाँ भी, आपकी अताएं भी आपके साथ यहीं मौजूद हैं। ये दो शे'र तो रौज़े पर हैं और दो उसने आगे कहे:

انت الشفيع الذی ترجی شفاعته
علی الصراط ما زالت قدم

पुले-सिरात कोई घाटी नहीं है? अरे मेरे भाईयो! जिस चीज़ को अल्लाह बड़ी ﴿بل الساعة ادهى وامر﴾ मेरे बन्दो! आख़िरत बड़ी है, भयानक है, ख़ौफ़नाक है, आख़िरत बड़ा कड़वा मस्अला है। उसकी तैयारी करो।

हमें शैतान ने कहा कि दुनिया बड़ा मस्अला है, दुनिया बड़ी अहम है, उसके पीछे दौड़ लगाओ। हम अल्लाह और उसके रसूल को भूल गए। चार दिन की चाँदनी में हम बिक गए, फ़रोख़्त हो गए। तो वह पुल सिरात भी राह में है। जहाँ वही पार लगेगा जिसे अल्लाह चाहेगा। तीन हज़ार बरस का सफ़र है तीन हज़ार बरस का, अंधेरा है रौशनी नहीं, बारीक है चौड़ा नहीं है, तेज़ धार है नरम नहीं है। उस पर वही पार होंगे जिसे अल्लाह चाहेगा तो बद्दू कहने लगा ﴿انت الشفيع الذی ترجی شفاعته﴾ हमारे पास तो कुछ है नहीं जिस पर पुलसिरात को पार कर सकें। सिर्फ आपकी शफ़ाअत होगी।

जिसके तुफ़ैल अल्लाह हमें पार लगाएगा अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत नसीब न हुई तो फिर पुलसिरात से कोई पार नहीं निकलता। जब उम्मत पुलसिरात पर आएगी तो

अल्लाह का नबी पुलसिरात का पाया पकड़कर खड़े हो जाएंगे और कहेंगे ﴿يارب سلم سلم﴾ ऐ अल्लाह मेरी उम्मत को पार लगा दे-पार लगा दे।

﴿وصاحبا كلا ان ساعتها ابدا امتى السلام عليكم ما صر االقدم﴾

मैं अबूबक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भी नहीं भूल सकता। जब तक क़लम वाले का क़लम चले, कातिब की किताबत चले, अदीब का अदब चले, लिखने वाले का क़लम लिखता रहे। ऐ मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा आप पर और आपके साथियों पर सलाम पहुँचता रहे। ये शे'र पढ़ा और अपने गिले सुनाए और उठकर चला गया। अत्बी को नींद आ गई और सो गए। अचानक हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़्वाब में आ गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उठ अत्बी! मेरे उम्मती को जाकर पकड़ो और उसे ख़ुशख़बरी दो कि तेरे रब ने तेरी बख़्शिश कर दी और जो दुनिया से जाकर भी अपनी रहमतें नहीं भूला। तुम गुलिस्तान वाले कितने ज़ालिम हो, तुम फ़ैसलाबाद वाले कितने ज़ालिम हो? मैं भी आपके साथ एक ज़ालिम हूँ। मैं और आप हम कैसे ज़ालिम हैं, यह पूरी उम्मत कैसी ज़ालिम है जो ऐसे नबी के तरीक़ों को छोड़कर पता नहीं कहाँ जा रहे हैं और क्यों जा रहे हैं जबकि क़यामत का डंका नहीं बजने को आ चुका है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था जब देखो माँओं से औलाद नौकरों की तरह सुलूक करे और अरब लम्बी लम्बी बिल्डिंगें बनाएं तो समझना क़यामत आने को है। अब

क़यामत आने को है। अब क़यामत सिर पर आ चुकी है। देखो यह नौजवान अपनी माँओं के साथ क्या सुलूक करते हैं? कैसे बदतमीज़ी के साथ बोलते हैं? वह देखो दुबई में और इमारात में सऊदिया में अरबों ने कितनी लम्बी लम्बी बिल्डिंगे खड़ी रक दी हैं। बात दूर नहीं है शाम हो चुकी है, दिल ढल चुका है, सूरज मग़रिब के किनारे तक पहुँच चुका है पीला नहीं पड़ा, सुर्ख़ हो चुका है।

आजकल यह कहानी ख़त्म होने वाली है।

﴿من مات فقد قامت قيامته﴾

बाक़ी जो मर गया उसकी तो क़यामत आ ही गई।

अल्लाह का खाकर उसी के बाग़ी मत बनो

मेरे भाईयो! लिहाज़ा उसके लिए तैयारी करो। मेरे पास कोई मज़मून नहीं है मैं एक ही फ़रियाद हर जुमा को करता हूँ तौबा कर लो तुम्हें अल्लाह का वास्ता तौबा कर लो। अपने अल्लाह को मना लो उस ख़ालिक़ मालिक उस मोहसिन व राज़िक़, उस लतीफ़ ख़बीर, उस हन्नान व मन्नान, उस रहीम व करीम के बाग़ी न बनो और उस कमली वाले के बाग़ी न बनो। वह जिस नबी ने पेट पर पत्थर बाँधे तुम्हें खिलाने के लिए, जो खजूर की शाखों के घरों में जिन्दगी गुज़ार गया तुम्हें अच्छे घरों में बिठाने के लिए, जो अपनी औलाद को दुख-दर्द की भट्टी में धक्का दे गया अपनी उम्मत की औलाद को सुख देने के लिए, कोई नहीं है जो औलाद के लिए दुआ करता हो तंग दस्ती की हमें रोका तंग दस्ती न

मांगना, फ़क़्र व फ़ाक़ा मांगना, शुक्र मांगना, फ़राख़ी मांगना और अपनी औलाद के लिए दखो क्या कह गया।

﴿اللهم اجعل رزقها لمحمد قوتا﴾ ऐ अल्लाह! आले मुहम्मद की रोज़ी थोड़ी कर दे।

जन्नत के सरदारों की फ़ाक़ा भरी ज़िन्दगी

जिससे बेहतर कोई आल नहीं जिससे बेहतर कोई घर नहीं वह ऐसे अहले बैत वे ऐसे रसूल हैं जिनके लिए अल्लाह तआला ने जन्नत के वह दर्जात मुक़र्रर किए कि हुज़ूर की बीवियों को हमारी माँएं बना दिया, औलाद को जन्नत का सरदार बना दिया। हसन रज़ियल्लाहु अन्हु, हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत के नौजवानों के सरदार, फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जन्नत की औरतों की सरदार, अली रज़ियल्लाहु अन्हु का घर नबी के घर के सामने इतने बड़े घर के लिए कह रहा है या अल्लाह उनकी रोज़ी तंग कर दे, गुज़ारे की कर दे, क्यों! क्यों! क्यों! ताकि मेरी उम्मत यह न कह सके कि अपनी औलाद के तो मज़े करवाए (और) हमें देखो धक्के दे गया।

और उसने अपनी औलाद को दुखों के हवाले कर दिया। मासूम बच्चों के गले कट गए। हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर नेज़े पर चढ़ गया। हाय! हाय! यह करबला ऐसे नहीं हुई। यह आपको तसल्ली देने के लिए हुई है कि रोटी पर बिक न जाना, हुकूमतों पर बिक न जाना, घरों पर बिक न जाना, यह ज़र-ज़मीन पर बिक न जाना। देखो! देखो! मेरी औलाद कैसे नेज़ों पर चढ़

गई बिके नहीं। उनके जिस्मों को घोड़ों से रौंदा गया पर वे बिके नहीं। वे जान की बाज़ी हारकर आख़िरत की बाज़ी जीत गए। वह सिर नेज़ों पर चढ़ाकर अल्लाह के अर्शों में अपना नाम, आसमानों पर अपना नाम, हमेशा के लिए लिखवा गए तो देखना देखना पैसे के ग़ुलाम न बनना। चीज़ों के ग़ुलाम न बनना। इस मिट जाने वाली दुनिया के पीछे अपने मालिक को नाराज़ न कर देना।

रूठे हुए आक़ा को मना लो

इसलिए मेरे भाईयो! मेरे पास तो कोई मज़मून नहीं। मैंतो हर बात यहीं पर ख़त्म करता हूँ। अरे तौबा कर लो भाईयो! तौबार कर लो! अपने अल्लाह को मना लो। वह ऐसा करीम है एक साल नहीं हज़ार सला नहीं कराड़ों साल, दस करोड़ साल अगर गुनाह कर भी लोगे, आसमान गुनाहों को पहुँचा दोगे फिर एक दफ़ा कह दो या अल्लाह! आ गया हूँ माफ़ी मांगने, माफ़ कर दे तो अल्लाह तआला कहता है जाओ मैं ने माफ़ कर दिया।

माँ नाराज़ हो तो उसको मनाने जाओ तो वह मुँह इधर-उधर करके बैठ जाती है कि मेरी अच्छी तरह मिन्नतें करे, बाप को मनाने जाओ तो वह मुँह दूसरी तरफ़ फेरकर बैठ जाता है, पाँव पकड़वाता हे कि मेरी अच्छी तरह मिन्नतें करें औ.र भाई को मनाने जाओ तो वह उठकर चल देता है कि मेरे पीछे आकर मनाओ, पड़ौसी को मनाने जाओ कुंडा नहीं खोलता, दरवाज़ा नहीं खोलता और अल्लाह को मनाने जाओ तो अल्ला क्या करता है? अल्लाह की अज़मत जिसको न नबियों की ज़रूरत न फ़रिश्तों की ज़रूरत,

न अर्श की ज़रूरत, न ज़मीन व आसमान की ज़रूरत, न जन्नत की ज़रूरत, न जहन्नम की ज़रूरत, न काएनात की ज़रूरत।

वह मौजूद था, मौजूद है और मौजूद रहेगा। शुरूआत से पाक, आख़िर से पाक, ग़नी, समद, अहद, ﴿الله الصمد لم يلد ولم يولد ولم يكن له كفوا احد﴾ जिस रब की यह सिफ़त हो।

उसको एक बन्दा मनाने जा रहा है। सारी ज़िन्दगी गुनाह करके धरती को काला कर दिया है। आज वह अल्लाह को मनाने जा रहा है तो अल्लाह तो ज़्यादा दरवाज़े बन्द करता, अर्शों से और ऊपर चला जाता, मुँह फेरकर बैठ जाता।

मनाओ लम्बे-लम्बे सज्दे कर तुमने पचास साल नाफ़रमानी की, दस साल नाक रगड़ों तब तुझे माफ़ करूंगा। अल्लह यह किया करता। यह मनाने जा रही है अल्लाह की बन्दी सारी ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़ारकर आज अल्लाह को मनाने जा रही है यह अल्लाह का बन्दा गुनाहों में लिथड़ा हुआ गुनाहों की गंदगी में लिथड़ा हुआ आज अल्लह को मनाने जा रहा है तो अल्लाह तआला क्या कहते हैं?

﴿من تقرب الى تلقيته من بعيد.﴾

जो मेरी तरफ़ बढ़कर आता है तौबा को आता है, मैं अर्शों से नीचे उतरकर आगे बढ़कर उसका इस्तिक़बाल करता हूँ। आज तौबा कर लो। अल्लाह आगे बढ़कर तुम्हारा इस्तिक़बाल करेगा और जो मनाने न आए उसके पास भी कभी कोई गया कि मुझे मनाओ? कभी बाप औलाद को कहता है कि मुझे मनाओ, कभी माँ कहती है कि बच्चों मुझे मनाओ और अल्लाह क्या कहता है

﴿من اعرض عني نادته عن قريب﴾ और जो मुझे मनाने नहीं आता मैं उसके पास ख़ुद चला जाता हूँ।

मेरे बन्दे क्या मेरे सिवा तेरा कोई और रब है? क्या मेरे सिवा तेरा कोई और मालिक है? मेरे बन्दे तू कहाँ जा रहा है? देख तो मैं आ गया, मैंने उसे अपनी बांहों में ले लिया। अपनी रहमत की चादर में ले लिया, तू कहाँ जा रहा है? क्या मेरे सिवा कोई और रब है तुझे पनाह देने वाला? मेरे जैसा कोई नहीं कि एक नेकी को दस गुना करके दूँ और जितना चाहे बढ़ा दूँ जबकि तेरे गुनाह को एक ही लिखकर जब चाहूँ माफ़ कर दूँ। क्या ऐसा रब तुम्हें कोई मिलेगा?

चौबीस घंटे अल्लाह की नाफ़रमानी करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती

तो मेरे भाईयो! सब अल्लाह के दरबार में तौबा करो। आज अल्लाह हम से रूठा हुआ है। रातों को रोने वाले चले गए। रातों को गाने सुनने वालों से जग भरा हुआ है, सारी रात केबिल चलता है और गंदे नंगे नाच देखे जाते हैं। हाय! इस क़ौम को ऐटम बम मारने की ज़रूरत नहीं हे यह तो मरे पड़े हैं। जिस क़ौम का नौजवान सारी रात नंगे नाच देखे उन्हें मारने की क्या ज़रूरत है वे तो पहले ही मरे पड़े हैं। उन्हें बेचने की क्या ज़रूरत है वे तो पहले ही बिके पड़े हैं। तो मेरे भाईयो! अल्लाह के दरबार में तौबा करो। आज उसको मनाकर उठना, ऐसे न चले जाना, राज़ी करके उठना। तौबा में पक्कापन होगा जब अल्लाह की राहों में फिरोगे,

फ़ैसलाबाद छोड़ोगे, निकलो तबलीग़ में। इससे बड़ा कोई काम नहीं हो रहा है। इस वक़्त में किसी अक़ीदत की वजह से नहीं कह रहा हूँ कि मैं तबलीग़ की वजह से मिम्बर पर पहुँचा हूँ। मैं आपको बसीरत से कह रहा हूँ। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ तौबा करो और इस रास्ते में निकलो ऐसा न हो कि ग़फ़लत में रहें और लेने वाला आए और लेकर चला जाए और पीछे हम अफ़सोस में हाथ मलते रह जाएं। फिर कोई अफ़सोस फ़ायदा न देगा। इससे पहले ज़िन्दगी की बाज़ी पलट जाए तौबा कर लो। भाईयो! तौबा करो, अपने रब को मनाओ। वह तो पूछता भी नहीं कि आइन्दा तो नहीं करोगे। वह कहता है जाओ माफ़ कर दिया फिर वल्लाह! अल्लाह के रास्ते में इससे ज़्यादा इस वक़्त अल्लाह के क़रीब तक पहुँचाने वाला कोई रास्ता नहीं, कोई काम नहीं है।

तौबा कर लो! यह न हो वह अज़ाब का कोड़ा बरसा दे

मेरे भाईयो! इन्सानों को भी हिदायत मिल जाएगी। इसलिए अपनी ज़िन्दगियों को खपाओ। आज घरों में बैठने का वक़्त नहीं रहा। मैं आसमान के तेवर बदले हुए देख रहा हूँ, ज़मीन की गर्दिश को मैं पलटता हुआ देख रहा हूँ। लगता है कि जैसे अल्लाह का घेरा तंग हो रहा है। यह ज़मीन बहुत रो चुकी है।

या अल्लाह! अब मैं और ज़िना नहीं सह सकती, और सूद नहीं सह सकती, अपने ऊपर और ज़ुल्म सितम नहीं सह सकती, और माँ-बाप की नाफ़रमानियाँ, गाने-बजाने नाचघर, हर जगह

नाचघर बन गई। जहाँ केबिल है चल रहा है वह नाचघर नहीं तो और क्या है। यह ज़मीन की फ़रियाद जल्दी ही सुनी जाएगी। इसका रोना जल्दी सुना जाएगा, इन हवाओं का रोना अल्लाह तआला जल्दी ही सुनेगा।

यह धरती अल्लाह की है। इसे अल्लाह ने पाक बनाया है। काएनात का ऐटमी ताक़त बन जाना। उसके लिए ऐटम राकेट पत्थर बराबर, आज और कल बराबर, गुज़रा और मौजूद बराबर आने वाला बराबर। उसके लिए जिब्राईल और च्युंटी बराबर, उसके लिए इज़राईल पतंगा बराबर, उसके लिए अर्श और पत्थर बराबर। वह अल्लाह अल्लाह है। अगर यह धरती अल्लाह की है तो इसके पाक होने का वक़्त आ चुका है, अगर यह हवाएं अल्लाह की हैं तो उनके धुलने का वक़्त आ चुका है, अगर यह फ़िज़ा अल्लाह की है तो उसके साफ़ होने का वक़्त आ चुका है। इससे पहले कि अल्लाह के नक़्क़ारे पर चोट पड़े और अज़ाब का कोड़ा घूमे ﴿فصب عليهم ربك سوط عذاب﴾ इससे पहले कि अल्लाह के अज़ाब के कोड़े निकलने लगें और उसकी तलवार मियान से बाहर आए भाईयो होशियार हो जाओ। अल्लाह के अज़ाब का शिकंजा हमारी तरफ़ बढ़ रहा है। इससे पहले कि यह हो लौट जाओ! लौट जाओ! लौट जाओ! तौबा कर लो! अपने रब को मना लो। मेरे पास इसके सिवा कोई पैग़ाम नहीं है। न मुझे सियासत का पता है, न मुझे बाज़ार का पता है। मुझे इतना पता है कि मैं और आप नुक़सान में हैं। हम अल्लाह को नाराज़ करके जो जी रहे हैं यह ज़िन्दगी कोई ज़िन्दगी नहीं है। यह जीना कोई जीना नहीं है जिसमें न अल्लाह का ख़्याल हो न उसके नबी का

ख़्याल हो।

मेरे भाईयो! तौबा करो अपने अल्लाह को राज़ी करो। करते रहो। यह नहीं कि एक दफ़ा तो कह दो या अल्लाह मुझे माफ़ कर दो और उसके बाद छुट्टी। अक्सर नौजवान बैठे हैं। यह तुम्हारी उम्र है तौबा करने की और ऐसे रहो कि तुम्हारे दामन पर गुनाहों की स्याही का एक छींटा बाक़ी न रहे। एक धब्बा न रहे और अल्लाह खुश होकर अर्श पर ऐलान कर दें कि मेरे बन्दे ने तौबा कर ली और मैंने उसे माफ़ कर दिया।

﴿وآخر دعونا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

O O O

पॉप सिंगरों से ख़िताब

الحمد لله رب العالمين. والصلوة والسلام علىٰ رسوله الكريم
وعلىٰ آله واصحابه اجمعين امابعد.

तौबा करो

यह सारे महल मिट्टी के खंडर हैं और टाइलें लगी हुई हैं। संगमरमर के ऊपर ग्रेनाइट लगा हुआ है। वह भी तो मिट्टी है। मिट्टी पालिश करके नाईट बनाया और फिर कुछ साल बाद जनाज़ा उठा और ख़ुद जाकर क़ब्र के देस में, अंधेरे की काल कोठरी में, शहरे ख़ामोशां का शहरी बनकर मिट्टी की चादर ओढ़कर हमेशा के लिए सो गया और वह घर वालों के लिए छोड़ गया और पीछे औलादों में लड़ाईयाँ शुरू हो गयीं। यह हिस्सा मेरा, यह हिस्सा मेरा।

﴿كل بيت من قالت سلامته يوم ستبدلون.﴾

कोई घर कितना सलामत रहे। एक दिन ऐसा आता है कि मकड़ियों के जालों के सिवा कुछ नहीं बचता और हवाओं की संसनाहट के सिवा कुछ नहीं बचता और अल्लाह के घर में एक ईंट सोने की एक ईंट चाँदी की, एक ईंट ज़मुर्रद की, एक ईंट याक़ूत की, एक मोती की, मुश्क का गारा, ज़ाफ़रान की घास और

अल्लाह तआला ने कुछ महल ऐसे बनाए हैं जो हवाओं में उड़ते रहते हैं। पूरा महल हवा में उड़ रहा है जैसे बादल।

जन्नत में मछली और बैल का मुक़ाबला

मेरा एक दफ़ा बयान हुआ पहलवानों में। उनकी अक्ल वैसे ही कमज़ोर हो जाती है। दवाएं और ग़िज़ाएं खा खाकर। मैंने सोचा क्या बयान करूं? बड़ा परेशान हुआ। अल्लाह मैं इनको क्या सुनाऊँ। जैसे ही मैं मिम्बर पर बैठा अल्लाह अचानक एक हदीस याद दिला दी कि जन्नत में जब अल्लाह पाक दाख़िल करेगा उससे पहले सारे जन्नत वालों को बैल और मछली की कुश्ती दिखाएगा। यह बैल यहाँ का नहीं। यह वह मछली नहीं जो दुनिया के बाज़ार में पड़ी है और बदबू फैल रही है। यह वह नहीं। सिर्फ़ नाम अल्लाह तआला ने इस्तेमाल किए हैं वरना हक़ीक़तें उनकी कुछ और ही हैं। फिर उनकी कुश्ती होगी फिर अल्लाह उनके कबाब बनाकर तमाम जन्नत वालों को नाश्ता करवाएगा। फिर उसके बाद कहेगा कि अपनी-अपनी जन्नत में चले जाओ। मुझे वह हदीस याद आ गई। मैंने कहा भाई जन्नत में जाने का सबसे ज़्यादा मज़ा तुमको आएगा। वे सारे मुझे देखने लगे जैसे आँखों से सवाल कर रहे हों कि वह कैसे? मैंने कहा जो सबसे पहला काम जन्नत में होगा वह कुश्ती है।

वह तुम जानते हो हम तो जानते नहीं दाँव क्या है? पेच क्या है? पटख़ा क्या है? जब कोई मछली दाँव लगाएगी तो सबसे ज़्यादा तुम कुर्सियों से उछल उछलकर दाद दोगे वाह! वाह! तुमने

लाहौर के सारे अखाड़े याद आ जाएंगे और जो कोई बैल दाँव लगाएगा तो सबसे ज़्यादा जन्नत का मज़ा तुम्हें आएगा और सबसे ज़्यादा लुत्फ़ कुश्ती का तुम उठाओगे। हमें इसका कुछ पता नहीं तो अल्लाह जन्नत के दाख़िले पर उनके कबाब खिलाकर कहेगा जाओ और आज के बाद भूख भी ख़त्म, प्यास भी ख़त्म। हज़ारों साल हों कोई हर्ज नहीं। खाओ तो लाखों साल खाओ। कोई परवाह नहीं खाओ।

बन्दों के हक़ अदा करने में कोताही से बचो

आज इस मज्लिस से तौबा करके उठो जैसे भाई अकबर ने की। तुम भी तौबा करो। यह दर व दीवार को गवाह बनाओ कि या अल्लाह आज से वह होगा जो तू कहेगा। या अल्लाह मेरी तौबा। नियत करते हो सब इसकी। एक बार सब कहो या अल्लाह मेरी तौबा। एक दफ़ा और कह दो या अल्लाह मेरी तौबा। यह दर व दीवार गवाह बन गए, यह माहौल गवाह बन गया और अगर यह तौबा सच्ची है तो आपको मुबारक हो। अल्लाह की कसम! आप अब ऐसे बैठे हो जैसे माँ के पेट से निकले। सारे गुनाह माफ़ हो गए। हक़ बाक़ी रह गया। हक़ तलफ़ी माफ़ हो गई। नमाज़ छोड़ी तो गुनाह माफ़ हो गया मगर क़ज़ा बाक़ी है। किसी का हक़ मारा था गुनाह माफ़ हो गया मगर हक़ की अदाएगी बाक़ी रह गई।

भाईयो! जिस तरह इस फ़िज़ा ने गुनाह देखे इसी तरह इस फ़िज़ा को तौबा दिखाओ। फ़रिश्तों को ख़ुश कर दो। या अल्लाह!

हम तेरे दरबार में तौबा करते हैं। हाँ मिलादुन्नबी का चश्न मनाएं।

तौबा के साथ हम मिलादुन्नबी को ज़िन्दा करें। तौबा के साथ और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सांचे में ढलने के साथ और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत को ज़िन्दा करने के साथ और आप सिर्फ़ स्टेज पर बयान करने के लिए तशरीफ़ नहीं लाए थे, आप सिर्फ़ किताबों में लिखे जाने के लिए तशरीफ़ नहीं लाए थे, आप सिर्फ़ मौज़ू सुख़न बनने के लिए तशरीफ़ नहीं लाए थे बल्कि आप इन्सानियत के धारे को अल्लाह की तरफ़ मोड़ने के लिए आए हैं।

हम आज के बाद वह करेंगे जो अल्लाह का महबूब चाहता है। तबलीग़ इसको सीखने की मेहनत है। यह वह मुबारक मेहनत है जिसको अल्लाह ने सदियों के बाद ज़िन्दा किया और अल्लाह ने आहिस्ता आहिस्ता इसे फैलाकर उम्मत के जितने तब्क़े हैं दुनिया के छः बर्रे आज़म के मुसलानों को मुतवज्जेह क़िया और इस उम्मत को शान दी तो इसी काम का वजह से दी। देखो! हमारी उम्र थोड़ी मगर सवाब ज़्यादा है।

एक आदमी काम ज़्यादा करे उसे तंख़्वाह कम मिले, एक आदमी काम कम करे उसे तंख़्वाह ज़्यादा मिले। काम भी वही हो तो हमारी डयूटी घटा दी, उम्र घटा दी, इबादत को उनसे कम कर दिया। पहले वालों को कहा तुम तीन सौ साल इबादत करो फिर तुम्हारा फ़ैसला करूंगा, चार सौ साल करो, दो सौ साल करो फिर उनको मौत आई। फिर फ़ैसला करूंगा। हमारे लिए फ़ैसला जल्दी कर देते हैं। पचास साल, साठ साल, बीस साल।

क़ौमे आद की बुढ़िया का शिकवा

क़ौमे आद में एक बूढ़ी अम्मा थी। उसका बेटा मर गया। उसकी उम्र तीन सौ साल थी। सिरहाने बैठे हाय बच्चा! हाय बच्चा! न खाया न पिया न तूने जहान देखा न तूने दुनिया देखी। हाय! हाय! तू ऐसे ही दुनिया छोड़ गया। एक ने कहा अम्मा एक उम्मत आने वाली है। जिसकी कुल उम्र साठ सत्तर साल होगी। वह हैरान होकर बोली क्या वे घर बनाएंगे? कहा हाँ वे घर बनाएंगे बल्कि कालोनियाँ बनाएंगे। वह कहने लगी अगर मेरी उम्र इतनी होती तो मैं एक सज्दे में गुज़ार देती। अब बन्दगी उनकी ज़्यादा हमारी थोड़ी सी, डयुटी उनकी ज़्यादा हमारी थोड़ी सी, अज्र हमारा ज़्यादा मर्तबा हमारा, मक़ाम जन्नत में हम पहले जाएंगे। दरवाज़े से हम पहले गुज़रेगें, हमारे बग़ैर कोई उम्मत जन्नत में नहीं जा सकती। इस बुलन्दी की वजह यह तबलीग़ का काम है।

यह काम किसी उम्मत को नहीं मिला। हमें मिला। किसी क़ौम को नहीं मिला हमें मिला।

﴿كنتم خير امة﴾ तुम सबसे बेहतरीन उम्मत हो। शाब्बाश अल्लाह दे रहा है। किस बात पर? ﴿اخرجت للناس﴾ तुम निकाले गए हो। क्यों? ﴿للناس﴾ लोगों को नफ़ा पहुँचाने के लिए। कौन सा नफ़ा? ﴿تامرون بالمعروف﴾ भलाईयों को फैलाते हो ﴿تنهون عن المنكر﴾ और बुराईयों को रोकते हो ﴿وتومنون بالله﴾ और उसका सिला सिर्फ़ अल्लाह से लेते हो। इसका सिला किसी और से नहीं लेते।

इस काम पर अल्लाह ने इसी उम्मत के कई दर्जे बुलन्द किए।

एक तो यह कि हमको सबसे आख़िर में और जन्नत तक इन्तेज़ार थोड़ा होगा और दूसरे हमें थोड़ा वक़्त दिया उनको ज़्यादा वक़्त दिया और (हमारा) बदला ज़्यादा कर दिया और तीसरा एहसान यह किया कि दूसरी उम्मतों की कमियाँ हमें बतायीं।

फ़िरऔन ने यह किया, शद्दाद, क़ारून, हामान, नमरूद ने, क़ौमे सबा ने, क़ौमे शुऐब ने, क़ौमे लूत ने, क़ौमे सालेह ने, क़ौमे आद ने और क़ौमे समूद ने, क़ौमे नूह ने। उन्होंने यह यह किया और मैंने उन्हें ऐसे मारा।

उनको मर्दों की बुराईयाँ बतायीं उनकी औरतों की। लेकिन जब हमारा नम्बर आया तो हमारे ऊपर चादर डाल दी कि हमारे गुनाह बताए कोई नहीं। हमारे बाद कोई नहीं है और क़यामत के दिन हमारे नबी कहेंगे या अल्लाह मेरी उम्मत का हिसाब मुझे दे दे।

तो अल्लाह फ़रमाएगा क्यों? आप लेंगे तो आपको उनके गुनाहों की वजह से शर्म आएगी। मैं आपको भी नहीं देता। मैं चादर के अन्दर इनका हिसाब लेता हूँ। कमाल है भाई! कमज़ोरियाँ और दरगुज़र क्यों? किस वजह से? जब जो नौकर अच्छा काम करता है तो हम उसकी ज़ाती बुराईयों से दरगुज़र कर जाते हैं। जब नौकर मालिक के साथ वफ़ादार होता है तो मालिक उसकी ज़ाती कमियाँ दरगुज़र कर देता है।

इस उम्मत पर अल्लाह तआला ने काम नबियों वाला डाल दिया। बोझ नबियों वाला, जाओ मेरे पैग़ाम को दुनिया में फैलाओ तो उनकी ज़ाती ग़लतियों से अल्लाह तआला ने ऐसे दरगुज़र किया कि अल्लाह तआला ने क़यामत के दिन भी उनके गुनाहों

पर पर्दा डाल दिया और इस उम्मत के नख़रे उठाए। दूसरी उम्मतों का मुजरिम तौबा करता है तो अल्लाह कहता है क़त्ल करो अगर पकड़ा जाऐ तो क़त्ल करो। इस उम्मत का मुजरिम कहता है या अल्लाह मेरी तौबा। अल्लाह कहता है जाओ माफ़ कर दिया।

पहली उम्मतों के लिए कपड़े गंदे हो जाते तो काट दो, खाल पर लग जाए तो खुर्चो-खुर्चो पानी से पाक नहीं होगा। इस उम्मत को पानी भी नहीं मिला तो फ़रमाया मिट्टी मुँह पर मलकर पाक हो जावे। तैय्यमुम क्या है? मिट्टी पर हाथ मारो फिर हाथ मारो और चल भाई यह किसी उम्मत को अल्लाह ने नहीं दिया।

हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़ुस्ल की हाजत हो गई। सोच में पड़ गए कि वुज़ू तो यूँ होता है मगर तैय्यमुम का मालूम नहीं था। उन्होंने ग़ुस्ल के तैय्यमुम के लिए यह किया है कि कपड़े उतारकर रेत में लोट-पोट होते रहे। जब मदीने पहुँचे तो फ़रमाया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे ग़ुस्ल की हाजत हो गई तो मैंने यह किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ग़ुस्ल के लिए भी दो ज़र्बे ही काफ़ी थीं। एक मुँह पर और एक हाथ पर। तो तू पाक था। कभी कोई मुँह पर मिट्टी मलकर पाक हुआ? तुम मुँह पर मिट्टी मलो मैं तुम्हें पाक करता हूँ।

दुनिया की तारीख़ का अनोखा वाक़िआ

एक बद्दू आया, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं हलाक हो गया। आपने फ़रमाया क्या हुआ? उसने कहा रोज़े की

हालत में बीवी के क़रीब चला गया, मेरा क्या बनेगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू ग़ुलाम आज़ाद कर कफ़्फ़ारा दे। अर्ज़ किया मैं सिर्फ़ इस गर्दन का मालिक हूँ आज़ाद कैसे करूं? मेरे पास कुछ नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया साठ ग़रीबों को खाना खिला। उसने कहा मुझसे ज़्यादा ग़रीब मदीने में है कोई नहीं मैं कहाँ से लाऊँ? फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया साठ रोज़े रख। उसने कहा एक रोज़े में चाँद चढ़ाया है साठ रोज़ों को मैं कैसे रखूँगा? कहा बैठ जा तेरा इन्तेज़ाम करता हूँ। वह बैठ गया। इतने में एक अन्सारी आया। वह थैला लेकर आया कि या रसूलुल्लाह! खजूरें सदक़े की हैं। हाँ भाई तुम बैठे हो? फ़रमाया जी हाँ। फ़रमाया ले जाओ और मदीने के साठ फ़क़ीरों में बाँट दो। यह मुजरिम है यह जुर्माना है और यह तरीक़ा। वह कहता है या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा की क़सम मदीने में मुझसे ज़्यादा ग़रीब कोई नहीं है। यह जुर्माना मुझे ही दे दो। तो हमारे नबी मुस्कराकर फ़रमाते हैं जा तू ही ले जा लेकिन यह रिआयत तेरे लिए है किसी और के लिए नहीं।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की दीन के लिए क़ुर्बानी

दुनिया की तारीख़ में ऐसा नहीं हुआ कि मुजरिम को जुर्माना मिल गया हो। यह इस उम्मत के अल्लाह ने लाड उठाए हैं। इस उम्मत के नख़रे उठाए हैं। क्यों? इसलिए कि यह उम्मत वह काम

करेगी जो किसी नहीं किया। यह उम्मत अल्लाह के पैग़ाम को लेकर दुनिया के आख़िर किनारे तक पहुँचाएगी। बयास्सी साल की मुद्दत में यह पैग़ाम मदीने से मुलतान तक पहुँच गया। नेपाल और कश्मीर तक पहुँच गया। इस रास्ते में असफ़ेहान में हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिक़ाल हुआ। यह हुआ है। कितने ऐसे सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं जिनके हम नाम नहीं जानते। जिन्हें गुज़रे ज़माने के अंधेरे निगल गए। अल्लाह ही बेहतर जानते हैं कि वे कितने थे?

यह ऐसा नक़्शा बनता है इससे इस्लाम के पौधे निकलते चले गए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महबूब सहाबा में चन्द हज़ार सहाबा अरब की मुक़द्दस ज़मीन में दफ़न हुए बाक़ी सब बिखरते चले गए जैसे फूल की पत्तियाँ बिखरती चली जाती हैं तो हवा के झोंके महकते हैं तो इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महबूब सहाबा की क़ब्रें फूल की पत्तियों की तरह बिखरीं सारी काएनात के फूल में तौहीद का रस घुल गया। तौहीद की ख़ूबसूरत फ़िज़ा क़ायम हुई और महकती हुई हवा चली और अंधेरों में उजाला हुआ। गुमराही में हिदायत का निज़ाम चला। यह इस उम्मत की ख़ास शान है कि यह अल्लाह के पैग़ामे हक़ को लेकर चलते हैं। आपने मिना की वादी में कहा था—

﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾

मेरा पैग़ाम आगे पहुँचा दो।

भाईयो! भलाईयों का फैलाना बुराईयों से रोकना, मुहब्बत से चलना। एक ज़माना था जिसमें लोगों को सख़्ती से रोकते थे। सख़्ती से रोकने वाले को बुज़दिल कहते है। किसी को क़रीब

करने के लिए पहले दिल तो दो।

जुनैद जमशैद का ढाई करोड़ रुपया ठुकरा देने का वाक़िआ

जुनैद जमशैद किस स्टेज का आदमी है? छः साल सिर्फ़ उसको सलाम करते रहे हैं। वह हराम कर रहा है, हमारे सामने गा रहा है लेकिन ताक़त, हज़्म की ताक़त नहीं, छः साल चलते-चलते उसने चार महीने लगाए। चार महीने के बाद क्या हुआ? पेप्सी वालों ने ढाई करोड़ की पेशकश कर दी। दाढ़ी मुंढा दी, लबनान पहुँच गया। लबनान में एक लड़की थी नवाल। उसने कहा था मैं गाना गाऊँगी सिर्फ़ जमशैद के साथ। पेप्सी वालों ने दाना डाला और इन्सान कमज़ोर है फिसल गया। ज़रा माथे पर शिकन नहीं आने दिया औरतों की तरह।

भाई बात सुनो! बात सुनो! पता चला वह गया है। मैंने हाजत की नमाज़ पढ़ी, मैंने पचास नफ़ल पढ़े कि या अल्लाह उसे बचा ले! या अल्लाह उसे बचा ले! उसे बचा दे। पता नहीं उसके अन्दर क्या आग लगी? लबनान होते हुए फिर उसने बैग उठाया और कराची वापस। फिर टेलीफ़ोन करके राएविन्ड बुलाया तो कहा मैंने दाढ़ी मुंढा दी है। तो मैंने कहा तो क्या हुआ? तुम आ जाओ इन्सान ही तो है। बहादुर ही तो गिरते हैं मैदान में।

दीन डंडे से नहीं फैला

हमारे पास जादू की पुड़िया तो नहीं है कि सब को खिला दी

जाए अगर मैं आप सबको कहूँ कि कल तक आप सब आलिम बन जाओ वरना सबको लटका दूँगा तो क्या यह मुमकिन है? अगर आप सबको कहूँ कल तक आप सब डाक्टर बन जाओ वरना मैं सबको लटका दूँगा क्या यह मुमकिन है? मुमकिन नहीं। क्योंकि डाक्टरी एक लेबल नहीं एक मेहनत है। इसी तरह मैं कहूँ कि कल तक तमाम फ़ैसलाबाद वाले ठीक हो जाएं वरना मैं सबको लटका दूँगा। यह नामुमकिन है। तक़्वा इतना सस्ता नहीं है, दीन इतना सस्ता नहीं कि डंडे से आ जाएगा।

यह चलने से आता है। रुकने से नहीं जान-माल को खपाने से अल्लाह दिल में ईमान की शमा रौशन करता है। फिर दिल में ईमान की शमा रौशन होती है तो उसे दुनिया के तेज़ व तंद तूफ़ान भी बुझा नहीं सकता। अन्दर रौशन न हुआ तो उसे बाहर की कोई ताक़त रौशन नहीं कर सकती तो जब कोई कुछ करता है तो बहुत से बेदीन लोग दीनदारों से नफ़रत करते हैं।

लोगों के ऐबों को छिपाओ ज़ाहिर न करो

एक सहाबी आकर कहता है या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैंने ज़िना किया है। मुँह से इक़रार करता है लेकिन आपने दूसरी तरफ़ मुँह इधर फेर लिया तूने ज़िना नहीं किया। वह इक़रारी मुजरिम पर आप चादर डालने वाले और हम दूसरों के ऐबों को तलाश करें। यह तबलीग़ी क्या करते है? ये मौलवी क्या करते हैं? ये मदरसे वाले क्या करते हैं? भाईयों तुम बर्बाद हो जाओगे अगर तुम किसी ज़ानी, शराबी को भी हक़ीर समझकर मर

गए तो सारी नेकियाँ बर्बाद हो जाएंगी। इस स्टेज पर नाचने वाली लड़की को भी हक़ीर समझा तो तुम अल्लाह की निगाह में गिर जाओगे। हिक़ारत कबीरा गुनाह है। यह नेक लोगों के गुनाह बता रहा हूँ। हिक़ारत तकब्बुर को साथ लाती है। हिक़ारत और तकब्बुर बहन भाई हैं अगर मैं किसी को हक़ीर समझूंगा तो यक़ीनन मैं तकब्बुर में मुब्तिला हो जाऊँगा।

एक बार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम गुज़र रहे थे। उनके दो साथी भी थे। इतने में उनमें से एक ने हिक़ारत से पीछे देखा तो इसने मुँह यूँ फेरा और बोला बड़े आए नेक लोग नेक पाक बड़े लोगों का इस्तिक़बाल करते हैं। तूने सिर्फ़ यह कहा था तो अल्लाह ने फ़ौरन जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा और "वही" आ गई। तेरे भेजे दो आदमी आ रहे हैं एक साथी है तेरा और एक दुश्मन मुजरिम है। इस मुजरिम से कहो मैंने सारे गुनाह माफ़ कर दिए अमल कर और तेरे साथी को कह कि मैंने तेरी सारी नेकियाँ ख़त्म कर दीं तू देखता है नए सिरे से आमाल कर तू क्या ठेकेदार है? मेरे बन्दों को हक़ीर नज़रों से मत देखो, मुहब्बत दो।

मौलवियों की क़ुर्बानी

भाईयो!' धक्के देना आसान है लेकिन इन्सानियत नहीं है। धक्का देना कौन सा मुश्किल काम है? कोई थोड़ा फुके चाहे तबलीग़ी हो या मौलवी अगर यह इल्म वाले न होते तो तुम न तो आज मुसलमान होते और न क़ुरआन सीनों में होता तो क्या हम मुसलमान हैं? तो दुआ क़ारियों को जिनकी तंख़्वाह तीन हज़ार

होती है। दवाई ले सकता है? बेटी की शादी नहीं करनी? तो तीन हज़ार में शादी हो सकती है। इतनी मामूली तंख़्वाह होने पर ज़िल्लत अलग, रगड़े अलग। मौलवी आप तो बड़े लालची हो। तंख़्वाह बढ़ाने को कहो तो कहा जाता है आपको अल्लाह पर तवक्कुल नहीं।

एक डाक्टर का मौलवी पर ऐतिराज़

यह आज पन्द्रह साल पहले की बात है। हम एक दावत में थे। हमारे साथ एक डाक्टर साहब थे। उन्होंने कहा कोई इमाम साहब को समझाए। हमने उनकी तंख़्वाह पन्द्रह सौ की है। वह कहते हैं कि मेरा गुज़ारा नहीं हो रहा है। मेरी तंख़्वाह बढ़ा दें। वह कहने लगे एक साथी क़रीब ही थे कि डाक्टर साहब आपके एक दिन के नाश्ते का ख़र्च पन्द्रह सौ है। वह डाक्टर साहब इस हक़ीक़त के पर्दा उठने पर ऐसे चुप हो गए कि फिर चूँ भी न की। अगर ये लोग न होते तो दीन भी मुश्किल से मिलता। समाज में कोई मक़ाम देने को तैयार नहीं।

इंजीनियर का इश्काल

एक दफ़ा मैं अपने डेरे में बैठा था। एक इंजीनियर आ गया और कहने लगा तबलीग़ वाले ऐसे और तबलीग़ वाले वैसे। जब सारी बात पूरी हो गई तो मैंने कहा भाई बात सुनो। यह हुकूमते पाकिस्तान बड़ी ज़ालिम है लेकिन फिर भी वह इतनी रहम दिल है अपने बच्चों के लिए कि अगर कोई बच्च सौ में से तैंतीस नम्बर

लेकर आए और सरसठ नम्बर ज़ाए कर दे तो उसको भी पास कर देते हैं। मैंने कहा मेरा मामला अल्लाह के साथ है अगर दस बारह नम्बर ले गया तो मैं अल्लाह से कहूँगा ऐ अल्लाह मेरी ज़ालिम हुकूमत पाकिस्तान भी अपने बच्चों को पास कर देती है और मेरा मामला तो रहमान व रहीम अल्लाह के साथ है।

कयामत के दिन एक आदमी की एक नेकी कम पड़ जाएगी। अल्लाह कहेगा कि तेरी एक नेकी कम पड़ गई है। वह कहेगा मुबारक है तुझे मेरे पास एक ही नेकी है, दोज़ख़ में वैसे ही जाना है यह नेकी भी तुम ले लो। वह लेकर अल्लह के पास जाएगा खुशी-खुशी कि या अल्लाह मेरा काम बन गया। अल्लाह कहेगा किस तरह? वह कहेगा फ़लां ने मुझे एक नेकी दे दी।

हुस्ने अख़्लाक़ की करामत

एक आदमी इस्लामाबाद में मेरे पास आया। दाढ़ी मुंढी हुई, आँखें झुकी हुई, उठाए न। मैंने कहा क्यों घबरा रहे हो? मैंने कहा खाना लाओ भाई, चाय लाओ भाई। अल्लाह तआला ने कुछ महीनों के बाद ऐसा जमाया कि अल्लाह के फ़ज़ल व करम से हज की जमात में दो महीने लगाए। चिल्ला लगाया, मुझ से बड़ी दाढ़ी है, मुझ से बड़ी पगड़ी है, पहले नहीं थी।

मैं फ़ाहिशा से सहाबिया कैसे बनी?

एक दफ़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाना खा रहे थे।

एक फ़ाहिशा औरत गुज़र रही थी। उसने देखा तो कहा औरों को पूछता नहीं कैसी बदतमीज़ी है। आपने कहा आ जा तू भी खा ले। वह आकर बैठ गई। उसने कहा नहीं-नहीं जो तेरे मुँह में है वह मुझे खिला। उसका नसीब ख़ूब है कि आपके मुँह से निकलवाकर खाएगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुँह का निवाला यूँ मुँह में डाल दिया। उसके साथ ईमान भी उसके अन्दर चला गया। एकदम ईमान की दौलत मिल गई और इस तरह कहते कि ओ बदतमीज़ औरत तू मुझसे इस तरह बात करती है तो उसकी क़िस्मत में दोज़ख़ थी। निवाला मुँह में गया और वह सहाबिया बन गई। फ़ाहिशा से सहाबिया बन गई। एक और शख़्स आप कह रहे हैं कलिमा पढ़ लो, कहते हैं नहीं पढ़ता, कहा कलिमा पढ़ लो, कहते हैं नहीं पढ़ता। सहाबा फ़रमाते हैं छोड़ो गर्दन उड़ा दो और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं इसको छोड़ दो। फिर वहाँ से भागे-भागे गए। ग़ुस्ल करके आए और कहा *"ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।"*

हाँ जहाँ तलवार नहीं चलती वहाँ अख़्लाक़ चलते हैं। मैं तलवार के डर से मुसलमान नहीं हूँ। यह बताना चाहता था कि मेरे क़त्ल का हुक्म हो रहा था मैं मुसलमान नहीं हुआ। मैं बताना चाहता था कि मुझे तलवार ने नहीं जीता इस कमली वाले के अख़्लाक़ ने जीता है। तो यह शफ़क़त और सोहबत, इस तरह मेहनत हुई तो उनके दिल खिंचे चले आए। क़रीब आ, क़रीब आ तो मेरे भाईयो! अल्लाह ने हमें यह मुबारक मेहनत दी है। पूरी दुनिया में इसको फैला दो।

सत्ताईस साल से अल्लाह की नाफ़रमानी करने वाले की तौबा का वाक़िआ

हम इंगलैंड गए एक आदमी से मिलने। अन्दर आकर बैठे उसकी बीवी अंग्रेज़ थी। उसने कहो हैलो! तो हमने हाथ यूँ कर लिए (पीछे कर लिए) तो वह आदमी हमसे इतना नाराज़ हुआ कि उसने हमें इतनी गालियाँ दीं कि अल्लाह की पनाह कि मेरी बीवी की तौहीन कर दी कि तुमने उससे हाथ नहीं मिलाया। हम उसे कैसे समझाएं कि पागल हमने तेरी बीवी की इज़्ज़ती की है यह तौहीन नहीं थी। उसने हमारी कोई बात नहीं सुनी। सिर्फ़ रगड़ा देता रहा। कौन हो कहाँ से आए हो? ज़्यादा पैसा है इधर बरतानिया में बेरोज़गारी है मैं लोगों को बाँट दूँ कि किसी का भला हो जाए। मुँह उठाकर चले आते हैं। एक घंटे तक बातें सुनाता रहा। हम चुप करके सुनते रहे।

एक बुज़ुर्ग हमारे साथ थे। मैंने कहा एक मुश्किल मुलाक़ात के लिए जा रहा हूँ क्या करूं? फ़रमाया रउफ़ुर्रहीम पढ़ते रहें। एक घंटे बाद उसका ग़ुस्सा ठंडा हुआ तो मैंने कहा मस्जिद की तरफ़ चलते हैं तो उसने कहा नहीं। मैंने कहा कोई बात नहीं आज नहीं तो कल। फिर टेलीफ़ोन किया पूछा क्या ख़्याल है आएंगे? आ जाएंगे तो बड़ी मेहरबानी होगी। उसने कहा आकर ले जाओ तो आजाऊँगा। मैं जब उसको मस्जिद लेकर आया तो उसने कहा आज सत्ताईस साल के बाद मस्जिद में आया हूँ। वह लाहौर का था। जुमा कोई नहीं, ईद कोई नहीं, सत्ताईस साल तक कोई नमाज़ नहीं पढ़ी। अगर हम उसकी बदतमीज़ी पर कि हमें गालियाँ

दे रहा है छोड़ कर आ जाते तो वह जहन्नम में जाता। तीन चार मुलाक़ातों में तीन दिन दिए तो रो रोकर मेरे क़दमों पर गिरा कि मेरी माँ मरी मैं न रोया, मेरा बाप मरा मैं न रोया। मेरी ज़िन्दगी के सारे आँसू निकल गए हैं और आज इस बात को बाईस बरस हो गए हैं उसकी तहज्जुद क़ज़ा नहीं होती। मालदार आदमी था। उसका अजीब शौक़ था। पन्द्रह लाख की सिर्फ़ अंगूठी पहनता था, सोने की ज़ंजीर पहनता था। सत्ताईस लाख रुपए की ज़कात एक हफ़्ते में पाकिस्तान आकर रिश्तेदारों में बाँटकर चला गया। वह दिन है आज का दिन है न नमाज़ क़ज़ा नहीं हुई, न रोज़ा क़ज़ा हुआ, न तहज्जुद कज़ा हुई तो मेरे भाईयो यह मुहब्बत से लोगों को क़रीब करना है। ज़िन्दगी में बदलाव लाना है, तबलीग़ में मुहब्बत है, हिकमत है, बुज़दिली नहीं है जिससे ये नक़्शे वजूद में आ रहे हैं।

तबलीग़ की मेहनत के नतीजे

मेरे भाईयो! ज़िन्दगी में पलटा खा रही तो भाईयो! मुबारक मेहनत को ग़नीमत समझो। अल्लाह तआला ने इसको हमारे देस में शुरू कर दिया।

हम कुवैत से वापस आ रहे थे। फ़ैसलाबाद के साथियों की जमात थी। फ़लाईट एक घंटा लेट हो गई। हमने कहा फ़लाईट क्यों लेट हो गई? तो उन्होंने कहा कनाडा से कुछ पाकिस्तानी आ रहे हैं उनकी वजह से लेट हो गई। हम अगली सीटों पर बैठे हुए थे तो कुछ लोग आए नौजवान बीस-पच्चीस साल की उम्र के एक

दो नहीं तीस नौजवान।

टोपियाँ पहनी हुई थीं कहा कि यह सब कहाँ से आ रहे हैं? कनाडा की वजह से हमारे ज़हन में सूट-बूट, पैंट, कोट टाईयाँ। तो ये सब कहाँ से आए? तो हमने कहा जान-पहचान हो जाए। मैंने कहा पता करो लगता है ये सब राइविन्ड जा रहे हैं। फिर मालूम किया तो मालूम हुआ कि यह सब राइविन्ड जा रहे हैं। छुट्टियाँ थीं और जमात में वक़्त लगाने जा रहे हैं।

तो मेरे भाईयो! अल्लाह तआला ने एक माहौल बना दिया है। सारी दुनिया के पलटने का रुख़ बन गया है।

तो मेरे भाईयो! आज हम सब यह नियत करें कि अल्लाह तआला की राहों में निकलकर वक़्त फ़ारिग़ करें। ये तबलीग़ी जमात को वक़्त नहीं दे रहे हैं और हम अल्लाह और उसके रसूल को वक़्त दे रहे हैं। अल्लाह तआला ने इस उम्मत की तबलीग़ में इसी के मक़सद को रखा है।

तबलीग़ में ख़ामोश इन्क़िलाब आ रहा हैं दिल पलट रहे हैं। इस स्टेज में काम हो रहा है। लाहौर में छः स्टेज हैं, पहले तालीम होती है फिर इन्टरवल में तालीम होती है। पाँच स्टेज ऐसे हैं जहाँ लड़के लड़कियों का हल्क़ा तालीम अलग-अलग लगता है। जमात के साथ नमाज़ होती है। यह ख़ालिद डार जो है ना वह मेरा स्कूल फैला है। उस वक़्त जान पहचान नहीं थी लेकिन तबलीग़ की वजह से मुलाक़ात हो गई। एक वक़्त वह था की ड्रामा से फ़ारिग़ होकर शराब और लड़की की तलाश होती थी और अब यह दौर आ गया हे कि लोटे मुसल्ले की तलाश होती है, नमाज़ पढ़नी है।

उनकी जमात निकलती है तीन रोज़ की बाक़ायदा कसूर, शेख़ोपूरा, गुजरात के बीच में चलते हैं। रात तक तबलीग़ करते हैं फिर इशा करते हैं फिर इशा के बाद ड्रामें करते हैं फिर आकर मस्जिद में सो जाते हैं।

फ़नकारा की तौबा का वाक़िआ

एक लड़की के बारे में बताया हमारे साथी ने फ़ैसलाबाद से थे। ड्रामे के लिए उसे लाहौर लाते। ड्रामा करके वापस ले जाते तो दो दिन तो गाने लगाए चौथे दिन तुम्हारे बयान की कैसेट लगाई तो उसने कहा यह क्या लगाया है? तो मैंने कहा अगर अच्छा न लगे तो बंद कर दूँ? दस मिनट के बाद मैंने बंद कर दिया तो कहा सुनाओ। फ़ैसलाबाद तुम्हारा बयान चलता रहा। वापस जाने लगे तो अपनी माँ से कहने लगी माँ मैं ड्रामा नहीं करूंगी आज के बाद। माँ ने कहा तो खाएगी की कहाँ से?

उसने कहा मैं भूखी मर जाऊँगी लेकिन आज के बाद ड्रामा नहीं करूंगी। हमारे साथी ने बताया कि वह लड़की कभी स्टेज पर नहीं आई। एक को ऐसे ही क़रीब किया। वह आहिस्ता-आहिस्ता पीछे हटना शुरू हुई। पहले असमत फ़रोशी को छोड़ा फिर बेपर्दगी को छोड़ा, फिर सिर्फ़ ड्रामे पर रह गई, पर्दा शुरू कर दिया, नमाज़ शुरू कर दी और फिर ड्रामा भी छोड़ दिया। फिर एक दिन उसका फ़ोन आया कि आज मेरे घर में फ़ाक़ा है लेकिन मैंने क़सम खाई है।

मैं आज भूखी मर जाऊँगी लेकिन दरवाज़े से बाहर मेरे क़दम नहीं जाएंगे। यह ख़ामोश इन्क़िलाब दिल को पलट रहा है तो मेरे

भाईयो! यह मुबारक काम करते रहो। दुनिया भी बनेगी और आख़िरत भी।

जुनैद जमशेद की तौबा को वाक़िआ

जुनैद जमशेद ख़ानेवाल में मेरे साथ था जो मेरा ज़िला है तो एक जगह उसे बयान के लिए भेजा। वहाँ उसने गाने-बजाने के दौर में गाने गाए थे। आज वह दाढ़ी लकड़ी के साथ। तो उनको कहने लगा आप कहते हैं कि संगीत गाना रूह की ग़िज़ा है अगर गाना बजाना रूह की ग़िज़ा होती है तो मैं कभी न छोड़ता, यह रूह की ग़िज़ा नहीं है, यह रूह को ज़ख़्मी कर देता है, यह रूह का टुकड़े-टुकड़े कर देता है। यह दूधारी तेज़ ख़न्जर है जो रूह को ज़ख़्मी कर देता हैं अगर गाना बजाना रूही की ग़िज़ा होती तो जुनैद कभी न छोड़ता, नहीं यह शैतान का जादू है। जिस पर वह जादू करता है और इन्सानियत को बेहयाई की आग में धकेल देता है और बेहयाई के हौज़ में नंगा कर देता है। फिर नंगापन तहज़ीब बन जाता है। चादर से बाहर आना तहज़ीब बन जाता है और घुंघरुओं की छन-छन और पायल की झंकार कानों की मौत का सामान बन जाता है।

शैतानी ज़िन्दगी को छोड़ दो

मेरे भाईयो! इन पर बैठकर रोना चाहिए। वह हमारी बेटियाँ हैं, हमारी बहनें हैं। वह ग़लत हाथों में परवान चढ़ीं, ग़लत हाथों में परवरिश पाई है। उनको किसी ने बताया ही नहीं कि यह न कर। फ़ातिमा बेटी थी, ज़ैनब बेटी थी। आएशा एक माँ थी।

ख़दीजा भी माँ थी।

उन्हें बताया ही किसी ने नहीं अगर इनको पता चल जाता है तो उनके सिर के बाल कोई न देखता बजाए इसके कि मंज़रे आम पर अपने जिस्म को सरेआम नचाकर इसकी दावत दें। अगर इनको पता चल जाता फ़ातिमा कौन थी? रुक़ैय्या कौन थी? ज़ैनब कौन थी? सुमैय्या कौन थी? ख़दीजा कौन थी? तो तुम उनके बाल भी नहीं देख सकते थे। कैसा ज़ुल्म है अपनी बेटियों को नचाकर लज़्ज़त हासिल करना फिर कोई मुसीबत आए तो अमरीका को गालियाँ देना शुरू हो जाते हैं। कोई मुसीबत आए बरतानियाँ को गालियाँ शुरू हो जाती हैं। कोई दुख आए यहूदियों को गालियाँ, इसाईयों को गालियाँ। ठीक हे वह हमारे दुश्मन हैं, शुरू से दुश्मन हैं, साँप का काम डसना है। यह कोई नई बात नहीं है। तुम अपना बचाओ करो। बिच्छू का काम डंक मारना है।

मेरे भाईयो कोई हमारी नस्ल नाचने में लग जाए क्यों?

हमारे कारोबार सूद पर होने लगे क्यों?

हमारी बेटी के सिर का दुपट्टा उतर गया क्यों?

नौजवानों के हाथों में गिटार आ गए, क़ुरआन क्यों नहीं आया?

ताजिर पैसे के पुजारी बन गए, सट्टा, झूठ, कारोबार बन गए क्यों? दयानतदार अफ़सर को लान-तान पड़ने लगी। जो दयानतादार है उस अफ़सर का तबादला होने लगा। कभी बच्चे को दवाई दिलानी है। पैसा कोई नहीं, हराम खाने वाले के एकाउंट भरे पड़े हैं। अल्लाह नहीं है? क्या सो गया है? क्या फ़ैसला नहीं

करेगा? क़यामत नहीं आएगी? हश्र क़ायम नहीं होगा? क्या जन्नत नहीं रही? क्या जहन्नम नहीं भड़क रही? तौबा करो।

तन्हाइयों में जहन्नम का मुराक़बा करो

मेरे भाईयो! एक गर्म निवाले ने मुझे चार दिन से तड़पाया हुआ है। जहन्नम में ऐसा पानी पीने के लिए दिया जाएगा कि जिसका एक लोटा समुंद्र में डाला जाए तो सात समुंद्र उबलने लग जाएं। हम कहाँ जा रहे हैं? ऐसा खाना खाने को दिया जाएगा जो हलक़ में फंस जाएगा। अरे मैं कैसे समझाऊँ और कैसे बताऊँ कि हम किधर जा रहे हैं?

मेरे भाईयो साल शुरू हो चुका है, महीना ख़तम होने वाला है। आज सत्ताइस तारीख़ हो गई तीन दिन बाक़ी हैं नया साल शुरू होने में। तौबा करें। अल्लाह पर क़ुर्बान होना सीखो, अल्लाह पर मिटना सीखो। अल्लाह की इताअत में ज़िन्दगी गुज़ारो और जो पीछे गुज़री है अल्लाह से माफ़ी मांग लो। मेरे नबी ने फ़रमाया सबसे थोड़ा अज़ाब किसको होगा जिसके पाँव में जूता होगा, टख़ने उसके अन्दर होंगे, आग का जूता होगा जिसकी वजह से उसका दिमाग़ आग की तरह से खौलेगा तो वह कहेगा कि मुझे दोज़ख़ में सबसे ज़्यादा अज़ाब हो रहा है हाँलाकि उसे सबसे थोड़ा अज़ाब हो रहा होगा तो दर्दनाक अज़ाब वाले तो ख़ून के आँसू रोएंगे। मर्द-औरत सूद खाते हैं, माँ-बाप को तड़पाते, शराबें पीते, ज़िना करते, क़त्ल करते, नाच-गाने के रसिया होकर, गाली-गलोच करके जहन्नम में गए। आख़िरी ठिकाना है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मत के ग़म में रोना

इसमें जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आकर कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम "हाविया" में मुनाफ़िक़, "हुतमा" में इसाई और "जहन्नम" कहकर चुप हो गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बोलते नहीं हो। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जहन्नम में आपकी उम्मत के गुनाहगार होंगे। वे गुनाहगार जो तौबा के बग़ैर मर गए। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़श खाकर गिर गए। वह जहन्नम आँसू शुरू, रोना शुरू, खाना छोड़ दिया, बोलना छोड़ दिया और नमाज़ पढ़ाने आते तो रोते हुए आते और रोते हुए जाते। तीन दिन गुज़र गए न बात करें न कलाम।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़िदमत अक़दस में हाज़िर होकर दस्तक दी। इजाज़त चाही। इजाज़त नहीं दी। सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु गए इजाज़त मांगी। इजाज़त नहीं दी। हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गए। बेटी अल्लाह के नबी का यह हाल है तू जा तुझे ज़रूर इजाज़त मिल जाएगी।

पूछ तो सही हुआ क्या है? हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा दौड़ी हुई गयीं। दरवाज़े पर दस्तक दी। पूछा कौन है? कहा फ़ातिमा। कहा अन्दर आ जाओ। जब अन्दर दाख़िल हुए तो देखा कि हमारे नबी ज़ार व क़तार रो रहे हैं। क्या हुआ या रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरी जान आप पर क़ुर्बान क्या हुआ या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्यों रो रहे हैं? आपने कहा फ़ातिमा मुझे जिब्राईल ने बताया कि मेरी उम्मत के मर्द व औरत जो बग़ैर तौबा के मर गए उनको जहन्नम में फेंका जाएगा कितने नौ नौजवान होंगे जिनको फ़रिश्ते पकड़ेंगे। वह कहेंगे हाय!

अल्लाह को प्यारी है क़ुर्बानी

हाय! मेरी जवानी पर रहम करो। कितने बूढ़े होंगे जिनको फ़रिश्ते पकड़ेंगे तो वह कहेंगे हाय हमारे बुढ़ापे पर रहम करो। कितनी औरतें होंगी जिनको नंगा करके जब फ़रिश्ते घसीटेगें तो कहेंगे हाय हमारी बेपर्दगी पर रहम करो लेकिन उनसे कहा जाएगा जब रहमान ने रहम नहीं किया तो हम कहाँ से करें।

साल का शुरू है। या अल्लाह! सारे जहान के मालिक हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर कट गया और इब्ने ज़ियाद का तख़्त जम गया। शिमर ने झंडे लहराए और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासे के टुकड़े-टुकड़े हुए। पलीद शिमर कामयाब हो गया देखिए, पलीद इब्ने ज़ियाद कामयाब हो गया और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी आल-औलाद समेत क़ुर्बान हो गए। ज़रा इधर देखो। इधर रसूलुल्लाह इस्तिक़बाल में हैं, अली रज़ियल्लाहु अन्हु इस्तिक़बाल में हैं, हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु इस्तिक़बाल के लिए आए हैं, माँ फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बाहें फैलाए खड़ी हैं, जन्नत सजी हुई है। जन्नत के सरदार तो आज आए हैं। सरदार के साथ तो महफ़िल सजती

है। आज जन्नत इन्तिज़ार कर रही है। एक दूल्हा तो आ चुका है। आज दूसरा दूल्हा भी आ रहा है। देखने वालों को नज़र आ रहा है।

हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर बुलन्द हुआ। उसका झंडा लहराया। वह तो खुद आज शिमर से सिर ऊँचा है। उसका सिर झंडे पर नहीं है। उसका सिर तो नेज़े पर है। उसका सिर खुद ऐलान कर रहा है।

ख़ौला जब हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर लेकर आया और रात को अपने तख़्त के नीचे रखकर बीवी को कहा,

"आज एक बड़ी चीज़ लेकर आया हूँ।"

बीवी ने कहा, "क्या लेकर आए हो?"

हुसैन का सिर लेकर आया हूँ। कहा तेरा बेड़ा गरक़ हो जाए। लोग तो सोना-चाँदी लेकर घर आते हैं।

करबला के क़िस्से को गा गाकर मत सुनाया करो

तू आले रसूल में हुसैन का सिर लेकर मेरे घर आया है। मेरे और तेरे बीच हमेशा के लिए जुदाई है। अब यह छत मुझे कभी तेरे बग़ल में लेटे हुए नहीं देखेगी। रूठकर निकल गई और पड़ौस की औरत को बुलाया कि तू मेरे साथ सो। उसने कहा मैंने देखा आसमान से एक नूर आया था जो उसके कमरे में दाख़िल हो रहा था और सफ़ेद परिन्दे उस कमरे का तवाफ़ कर रहे थे। चारों तरफ़ वे परिन्दे घूम रहे थे। कभी-कभी अल्लाह तआला ग़ैब से पर्दे हटा देता है।

फिर कुछ दिनों के बाद अबी ज़ियाद का भी सिर कटकर आया था तो देखने वालों ने देखा कि नूर नहीं आया था। एक साँप आया जो इब्ने ज़ियाद के मुँह में दाख़िल हुआ और नाक से निकल गया। तीन बार मुँह में घुसा और नाक से निकल गया। अभी क़ब्र में जाने से पहले देखा गया। अभी वह मरदूद क़ब्र में नहीं गया तो उसके साथ क़ब्र में क्या हुआ होगा?

आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ून से दामन रंगीन करने वालों को अल्लाह तआला ऐसे तो नहीं छोड़ देगा। काएनात का मुक़द्दसतरीन ख़ून बहाया गया।

और एक कहानी लिखी गई। इसलिए करबला का क़िस्सा नहीं सुनाता। पैग़ाम सुनाता हूँ पैग़ाम। मुझ से क़िस्सा वैसे भी नहीं सुनाया जाता। न मेरी हिम्मत है न मेरे पास अलफ़ाज़ हैं न मेरे पास सब्र का इतना मज़बूत बंद है कि इसको संभाल कर मैं उसे सारा क़िस्सा सुनाऊँ? इससे बड़ा इबरत का क़िस्सा कोई नहीं है। इस क़िस्से को दस बार भी सुनकर किसी ने सूद छोड़ा? किसी ने गाना छोड़ा? किसी ने दाढ़ी मुढंवानी छोड़ी? किसी बेपर्दा ने पर्दा किया? किसी नाफ़रमान ने माँ के क़दम चूमे, किसी ने बाप के सामने हाथ जोड़े हों? किसी ने भाई से सुलह कर ली हो? किसी हराम खाने वाले ने हराम खाना छोड़ा हो कि कोई तो तौबा करता। कहानी बन गया, क़िस्सा बन गया, अफ़साना बन गया और गा गाकर सुना दिया और रोने वालों ने कुछ दिन रो लिया लेकिन फिर वही रविश, वही सुबह वही शाम।

मैं क़िस्सा नहीं कहता हूँ। मैं पैग़ाम कहता हूँ। क़िस्सा नहीं सुनाता। यह जन्नत का राही है। जन्नत मुन्तज़िर थी, जन्नत का

दूल्हा था। जन्नत में गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने, अली के साथ, हसन के साथ, फ़ातिमा के साथ, जाफ़र के साथ और हमज़ा शहीदों के सरदार के साथ (रज़ियल्लाहु अन्हुम अजइमईन)। ऊपर इस्तिक़बाल हो रहें हैं नीचे मातम हो रहे हैं। नीचे नाकामी की दास्तान, ऊपर कामयाबी की दास्तान। पैग़ाम यह है कि अल्लाह पर मर मिटो। पैसे के ग़ुलाम न बनो, बीवी-बच्चों के ग़ुलाम न बनो, दरहम और दीनार के ग़ुलाम न बनो, हुकूमत नौकरी चाकरी के ग़ुलाम न बनो। वह करो जो अल्लाह चाहता है। वह न करो जो अल्लाह नापसन्द करता है।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

पत्थर दिल इन्सान

الحمد لله الذى لم يتخذ صاحبة ولا ولدا ولم يكن له شريك فى
الملك ولم يكن لهٗ ولى من الذل كبره تكبيرا ونقدره تقديرا
واشهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك له واشهد ان سيدنا
ومولانا محمدا عبده ورسولهٗ ارسله بالحق بشيرا ونذيرا وداعيا
الى الله باذنه وسراجا منيرا صلى الله تعالٰى عليه وعلٰى اله
واصحابه وبارك وسلم تسليما كثيرا.

اما بعد فاعوذ بالله من الشيطان الرجيم. بسم الله الرحمٰن
الرحيم. من كان يريدا العاجلة عجلنا لهٗ فيها ما نشاء لمن نريد ثم
جعلنا لهٗ جهنم يصلٰها مذموما مدحورا.

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! हम सबसे एक इज्तिमाई जुर्म हुआ है, क़ुसूर हुआ है। इस जुर्म का एहसास भी मिटा। अल्लाह तआला ने इस उम्मत को पैग़ामे हक़ पहुँचाने की ज़िम्मेदारी अता फ़रमाई थी। जितने यहाँ बैठे हुए हैं। अल्लाह का शुक्र है। सब नौजवान नज़र आ रहे हैं। एक दिन भी किसी का तबलीग़ में नहीं लगा। तलबीग़ तो छोड़ो नमाज़ का एक सज्दा भी कभी नहीं किया।

अल्लाह करे ऐसा कोई न हो? मगर क्या करें। हक़ाएक़ ऐसे हैं कि नज़र चुराना भी चाहें तो नहीं चुरा सकते। जब मस्जिदों को वीरान देखते हैं। बाज़ारों को आबाद देखते हैं और जवानों के

क़दमों को नाच-गाने की महफ़िलों की तरफ़ उठता हुआ देखते हैं तो अपनी आँखों को झुठलाना चाहते हैं लेकिन वे मानती नहीं। कितने ही ज़िना कर लिए लेकिन सज्दा ज़िन्दगी भर नहीं किया। मोमिन माँओं ने जना, मुसलमान माँओं की छातियों से दूध पिया, मुसलमान बापों की पुश्त से निकले। एक सज्दा भी ज़िन्दगी में नहीं किया। कितने हैं जो सिर्फ़ जुमा पढ़ते हैं जो सिर्फ़ ईद पढ़ते हैं, सारा साल छुट्टी।

अहकमुल हाकिमीन अल्लाह, रब्बुल आलमीन अल्लाह दिन में पाँच बार कहता है। इसमें दो बार कहता है ﴿حی علی الصلوة﴾ आ जाओ ﴿حی علی الفلاح﴾ पाँच अज़ानें दीं और हम तो अल्लाह को नहीं देख रहे। वह क़रीब है देख रहा है। हमारे इतने क़रीब है ﴿اقرب الیه من حبل الورید﴾ ज़िन्दगी की रग से ज़्यादा क़रीब है।

लोगो! मेरे सामने मुझे कहता है आओ ना मेरे पास और बन्दा ऐसा बैठा हुआ है। कोई कैरम खेल रहा है, कोई ताश खेल रहा है, कोई टीवी देख रहा है, कोई गाना सुन रहा है, कोई नाप-तौल कर रहा है, कोई फ़ाईल लिख रहा है, कोई खाना खा रहा है, कोई चाय पी रहा है।

आओ ना मेरे बन्दे! जो दस बार बुलाने पर भी न आए तो उससे बड़ा घमंडी और कौन होगा? नहीं भाई हम तो मिसकीन हैं। कहाँ मिसकीन हो? तुमने रब की पुकार पर लब्बैक न कहा। तुम से बड़ा घमंडी कौन है? तो मैंने यह कह दिया था कि चाहे उसने ज़िन्दगी भर एक सज्दा भी न किया उसको भी अल्लाह तआला ने चुना है और छांटा है। कभी अपने बारे में भी सोचा करो।

मैंने तुम्हें नबियों वाले काम के लिए चुना है

ये जो इलैक्शन में जीत जाते हैं उसे लोग वोट देते हैं। वह अपने को बड़ा महसूस करता है कि मुझे लोगों ने मेरा चुनाव किया है तो जिसको अल्लाह चुने वह कैसा होगा? लोगों का चुनना तो ग़लत भी हो सकता है मगर अल्लाह का चुनाव ग़लत नहीं हो सकता। तो अल्लाह मेरे बारे में आपके बारे में, सारी उम्मते मुहम्मदिया के बारे में, फ़रमाबरदार, नाफ़रमान, किरदार वाले, आवारा सब मर्दों और औरतों के बारे में अल्लाह तआला कह रहा है ﴿هو اجتبكم﴾ मैंने तुम्हें बिना मुक़ाबले चुना है और ﴿اجتبى﴾ "अजतबा" का मतलब वाज़ेह होगा एक मिसाल से। आप फल की दुकान में जाते हैं। सेब का एक-एक दाना उठाकर देखते हैं जो पसन्द आता है उसे डलवाते हैं जो पसन्द नहीं आता उसे वापस टोकरी में डाल देते हैं। जो अच्छा लगा उसे डाल लिया। जो बुरा लगा उसे वापस कर दिया। मुमकिन है मेरी नज़र ख़ता खा जाए। मेरी छांट ग़लत हो जाए कि मुमकिन है कि मैं सही की बजाए कोई ख़राब दाना डाल दूँ। तो यह सबकी टोकरी से दाना दाना देखता है, परखता है, छांटता है फिर उसे तराज़ू में डालता है। वह दुकानदार कहता है कि आपने तो मेरी क्रेट की जान निकाल दी। तो आप कहते हैं कि अपनी मर्ज़ी का रेट लगा लो मगर चीज़ अपनी पसन्द की लूँगा। यह एक मिसाल है।

अब अल्लाह इस से पाक है मगर हम समझने समझाने के लिए, बात वाज़ेह करने के लिए मिसाले लाते हैं। मैं यह कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की नस्ल के

सारे दाने अपने सामने खड़े कर दिए। फिर एक-एक रूह को उठाया। उसे सिर से लेकर पाँव तक देखा, नर की भी, मादा की भी, मर्द की भी, औरत की भी सिर से लेकर पाँव तक जो उसकी नज़रों में जचा उसे अपने महबूब की उम्मत में डाल दिया जो नज़र में नहीं जचा उसे दूसरी उम्मतों में डाल दिया।

मूसा अलैहिस्सलाम को दे, ईसा अलैहिस्सलाम को दे, इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दे, दाऊद अलैहिस्सलाम को दे, यूशा अलैहिस्सलाम को दे दो, हारून अलैहिस्सलाम को दे दो।

जो पसन्द आया उसी के बारे में कहा इसे मेरे महबूब की उम्मत में डाल दो। माशाअल्लाह हज़ारों हज़ारों का मजमा है। कभी हमने अल्लाह से कहा था कि हमें अपने महबूब का उम्मती बना दे। तो हम चुने हुए हैं। हुकूमत के नुमाइन्दे की बेइज़्ज़ती की जाए तो हुकूमत उसे पकड़ती है, गिरफ़्तार करती है कि यह हुकूमत की तौहीन है। मेरे भाईयो इसीलिए जब मुसलमान किसी मुसलमान की तौहीन करता है, ज़लील करता है, माँ-बहन की गाली देता है, ग़ीबत करता है, चुग़ली करता है तो अल्लाह अपनी तौहीन समझता है कि मेरे इन्तिख़ाब में नुक़्ताचीनी करता है, ऐब लगाता है, मेरे इन्तिख़ाब में कमी निकालता है।

चाहे वह नाचने वाला हो, नाचने वाली हो। चुना उसे अल्लाह ही ने है। उसकी ताक़त में न था कि वह "ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" का बोल लेकर पैदा होता या होती। इसलिए ग़ीबत का गुनाह ज़िना से भी ज़्यादा शदीद है कि ज़िना इन्सान शहवत से मजबूर होकर करता है और ग़ीबत अल्लाह की छांट पर ऐतिराज़ करना है।

तो मेरे भाईयो! हमें अल्लाह ने चुना है, छांटा है, मुन्तख़ब किया है। ﴿هو اجتبٰكم﴾ तुम्हें चुन लिया है। क्यों चुना है? कि एक नबुव्वत का सिलसिला आ रहा था। उसे लाकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़त्म कर दिया और पूरी दुनिया के इन्सानों को बता दिया कि इनके बाद कोई नबी नहीं है। यह आख़िरी नबी हैं तो सारी दुनिया के इन्सानों को गुमराही की राहों से निकालकर जन्नत की राहों पर डालना इसके लिए ऐसी उम्मत चाहिए थी जिसमें नबियों जैसी सिफ़ात हों। नबी तो न हों, नबियों जैसी सिफ़ात हों।

वह इस ज़िम्मेदारी को उठाए तो इस बुनियाद पर अल्लाह तआला ने इस उम्मत का चुनाव फ़रमाया।

सारी उम्मतों में नबी आए ﴿لكل قوم هاد﴾ हर क़बीले में नबी आए। हर क़ौम में नबी आए। जब हमारे नबी आए तो अल्लाह तआला ने क़ानून बदला।

﴿تبارك الذى نزل الفرقان على عبده ليكون للعالمين نذيرا.﴾

कि यह मेरा नबी आ रहा है। इस पर क़ुरआन को उतारा है।

अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से मिला दो

यह सारी काएनात नज़र आने वाली और पोशीदा सब उसी के लिए है। अब रसूल बनकर आया है। इस क़ानून का तक़ाज़ा था कि आप आज मौजूद होते। कम से कम नूह अलैहिस्सलाम की उम्र तो मिल ही जाती तो हम भी सहाबी हो जाते मगर अभी सवा चौदह सौ साल शुरू हो रहे हैं। पच्चीसवाँ साल अब शुरू हो रहा है और नूह अलैहिस्सलाम ज़िन्दा रहे साढ़े चौदह सौ बरस तो

हम में से बहुत से सहाबी हो जाते। अल्लाह तआला ने इतनी थोड़ी उम्र दी सारी नबियों में और काम इतना लम्बा दिया कि पूरब से पच्छिम और उत्तर से दखिखन जितने मर्द व औरत हैं उनमें तुझे पैग़ाम पहुँचाना है, जितने जिन्नात हैं उनको तुझे पैग़ाम पहुँचाना है।

कयामत के नक्कारे पर चोट पड़ने तक जितनी इन्सानियत है तू ही उनका रसूल है तो नूह अलैहिस्सलाम की उम्र, सुलेमान अलैहिस्सलाम का तख़्त और ज़ुलक़रनैन का लश्कर देता। आप खुद अपने लश्करों के साथ सुलेमान अलैहिस्सलाम के तख़्त के साथ, तख़्ते सुलेमान के साथ ज़ुलक़रनैनी लश्करों के साथ नूह अलैहिस्सलाम की उम्र के साथ अमरीका, अफ़्रीक़ा, आस्ट्रेलिया में खुद फिरते फिराते लेकिन कितनी थोड़ी उम्र मिली। तिरेसठ साल पाँच दिन और यह उम्र चाँद के हिसाब से है और अंग्रेज़ी महीनों के हिसाब से इकसठ साल दो महीने और तेईस दिन। और घट गए। अंग्रेज़ी में दस दिन घट जाते हैं। और इकसठ साल दो महीने और तेईस दिन इसको दिनों में तक़सीम करें तो बाईस हज़ार तीन सौ तीस दिन और छः घंटे दुनिया में आपकी बक़ा का वक़्त है। इसमें जो आपको हुक्म मिला कि उठो। नबी तो नबी पैदाईशी होता है। उसका ज़हूर बाद में होता है और हमारे नबी का मामला तो और भी अलग है।

आपको नबुव्वत कब मिली?

अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा कि या रसूलुल्लाह! आपको

नबुव्वत कब मिली थी? तो जवाब यह था कि चालीस साल की उम्र में, ग़ारे हिरा में, रमज़ान के महीने में मिली थी लेकिन आपने यह जवाब दिया कि

﴿كنت نبيا آدم بين الروح والجسد﴾

अभी आदम अलैहिस्सलाम की कहानी शुरू भी नहीं हुई थी और मेरा रब मुझे नबी बना चुका था।

तो इसलिए पता नहीं कब कि कब बनाया था? शुरूआत तो है क्योंकि मख़्लूक़ लामहदूद नहीं होती वरना ख़ालिक़ और मख़्लूक़ में फ़र्क़ मिट जाता। फिर वह शुरूआत है कहाँ से? इसे अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता। तो नबुव्वत का ज़हूर हुआ चालीस साल की उम्र में। इक्तालिसवें साल में दाख़िल हो चुके थे और रमज़ान का महीना था और ग़ारे हिरा में हैं और पीर का दिन है।

जब नामूस-ए-आज़म ज़ाहिर हुए जिब्राईल अलैहिस्सलाम तो उस दिन से लेकर दुनिया से जाने तक हुए तेईस बरस वह बनते हैं आठ हज़ार और एक सौ छप्पन दिन। आठ हज़ार एक सौ छप्पन दिनों में सात बर्रे आज़मों को कवर करना है। सातों बर्रे आज़म के उस वक़्त के लोग और क़यामत तक आने वाले लोगों के लिए ईमान और हक़ और दीन के पहुँचाने का निज़ाम बनाया है। इतना लम्बा चौड़ा काम देकर ऐसे फ़क़र की हालत में पैदा किया कि दूध पिलाने वालियाँ मुँह फेरकर गुज़र गयीं कि ग़रीब है, यतीम है, क्या मिलेगा? हमें नहीं चाहिए। वह तो हलीमा का नसीब जागा कि उसकी ऊँटनी भी कमज़ोर थी, उसकी गधी भी कमज़ोर थी कि पहुँचते-पहुँचते देर हो गई और उसकी ख़ानदान

की और औरतें तेज़ सवारियों पर पहले पहुँची और सारे (बच्चे) ले लिए।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूरानी बचपन

दस बच्चे थे उस वक़्त। ग्यारहवें हमारे नबी। सब चले गए, हलीमा भी छोड़कर चली गयीं कि क्या करूं लेकर यह यतीम, ग़रीब, कुछ नहीं मिलेगा। फिर खाली झोली फिरीं और मक्के में कोई बच्चा नहीं। उनके ख़ाविन्द ने कहा ख़ाली क्यों जाती हो? चलो इसको ले लो। यतीम का ले लो तो फिर दोबारा लौटकर आयीं। जिसको दाया दूध पिलाने को तैयार न उसके सिर पर दो जहानों की सरदारी का ताज सजाया जा रहा है। जब आप पैदा हुए वह शान जो सबसे निराली है। पूरे हमल के दौरान हज़रत आमना ने आपका वज़न महसूस नहीं किया। कोई हमल की तकलीफ़ महसूस नहीं की और हर रात नूर ही नूर आसमान से उतरते हुए नज़र आते थे और बारह रबिउल अव्वल आम-उल-फ़ील पीर के दिन बाइस अप्रैल सन् 571 ई० सुबह चार बजकर पैंतालीस मिनट पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए।

मौजिज़ात ही मौजिज़ात

बच्चा जब पैदा होता है तो उसकी नाफ़ माँ की आँत से जुड़ी होती है। उसको काटा जाता है। हमारे नबी जब पैदा हुए तो

आपकी नाफ़ माँ की आँत से जुदा थी। बच्चे का ख़त्ना बाहर किया जाता है। हमारे नबी माँ के पेट से ही ख़त्ना करवाकर आए। आपका ख़त्ना नहीं हुआ। ख़त्ना के साथ पैदा हुए। बच्चे को नहलाया जाता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए तो आपके जिस्म मुबारक पर माँ के पेट की गंदगी का एक ज़र्रा न था। धुले धुलाए पाक और जैसे ही आपको रखा गया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ौरन सज्दे में सिर रखा और फिर यूँ सिर उठाया तो सारा कमरा रौशन हो गया और हज़रत आमना ने सारा जहाँ अपनी आँखों से देखा। दुनिया सिमटकर सामने आ गई। गोद में लिया परेशान हो गयीं कैस बच्चा है? माँ है, औरत है कितने बच्चों को पैदा होते देखा, अपना पैदा हुआ तो हैरान परेशान कि यह कैसे है? गोद में लिया, छत ऐसे लगा कि जैसे फट गयी है और उसमें एक अबर, धुआँ, बादल कमरे में आता गया। सारा कमरा भर गया और एक लम्हे के लिए ऐसा महसूस हुआ कि बच्चा गोद से निकल चुका है और बादल के अन्दर से आवाज़ आईः

﴿طوفوا به مشارق الارض ومغاربها ليعرفوا باسمه ونعته وصورته.﴾

इस बच्चे को पूरब से पच्छिम और उत्तर से दखिवन तक फिरा ताकि पूरी दुनिया देख ले कि यह वह सरदार है, यह वह दुल्हा है, जिसका बारात को इन्तिज़ार था। यह वह जिसके लिए यह बिसात बिछाई गयी थी।

وعطوه خلق آدم ومعرفت شيث شجاعة نوح مرحلة ابراهيم

وفصاحة صالح وحكمة لوط ورضا اسحق وبشرى يعقوب

وجمال يوسف وشدة موسىٰ وجهاد يوشع وحب دانيال ووقار
الياس وقلب ايوب وطاعة يونس وعصمة يحيىٰ وزهد عيسىٰ من
اخلاق النبيين.

यह एक दूसरी निदा है। इस बच्चे को आदम अलैहिस्सलाम के अख़्लाक़, शीश अलैहिस्सलाम की मारिफ़त, इब्राहीम व इस्माईल अलैहास्सलाम की क़ुर्बानी दो, सालेह अलैहिस्सलाम की फ़साहत दो, लूत अलैहिस्सलाम की हिकमत दो, इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की रज़ा दो, याक़ूब अलैहिस्सलाम की बशारत दो, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का हुस्न व जमाल दो, मूसा अलैहिस्सलाम की शिद्दत दो, यूशा अलैहिस्सलाम की जिहाद दो, दानियाल अलैहिस्सलाम की मुहब्बत दो, इलयास अलैहिस्सलाम का विक़ार दो, अय्यूब अलैहिस्सलाम का दिल दो, दाऊद अलैहिस्सलाम की शीरीं मीठी सुरीली ज़बान दो, यूनुस अलैहिस्सलाम का ज़ुहद और तमाम सवा लाख अलैहिमुस्सलाम के अख़्लाक़ के सांचे के अन्दर उतार दो।

पैदा होते ही इतना कुछ मिला तो तिरेसठ साल चार दिन में जो परवाज़, बुलन्दियाँ रहीं तो उसका मक़ाम कौन बयान करे? कैसे बयान करे, कहाँ से इल्म आए, कहाँ से अलफ़ाज़ आएं।

अठ्ठाइस हरुफ़ मिलने से जुमला बनता है। इससे इबारत बनती है। उससे मज़मून बनता है। मेरे पास अठ्ठाइस हज़ार हरुफ़ होते तो भी अल्लाह की क़सम आपका मक़ाम बयान नहीं किया जा सकता था तो अल्लाह तआला ने आपको सब से निराला ताज पहनाया नबुव्वत का। सारे आलम का नबी बनाया, सारे ज़मानों का नबी बनाया और फिर आख़िरी बनाया। पहले मुकम्मिल नहीं

था हज में मुकम्मिल फ़रमाया। फिर इस उम्मत को ज़िम्मेदारी सोंपी गई। हमने इस ज़िम्मेदारी को भुला दिया है।

ख़ंजर लगे किसी को तड़पते हैं हम अमीर

यह एक बड़ा जुर्म है। अगर हम इस ज़िम्मेदारी को निभाने वाले होते जुनैद जैसे सब तौबा कर चुके होते और उन राहों पर चलते ही न। मैंने आते-आते उसकी कारगुज़ारी सुनी। मैं बहुत थका हुआ था।

रात से बहुत ज़्यादा बोझ था। मैंनें कहा चलो तुम थोड़ा मेरा हाथ बटाओ। फिर थोड़ी मैं बात कर लूँगा। मिल जुलकर काम हो जाए। न मुझ से बैठा जा रहा है न बोला जा रहा है। तो मुझे रास्ते में यह ख़्याल आया कि अगर यह उम्मत यह काम करती तो सिर्फ़ यह नहीं कि अपनी हिदायत पर बाक़ी रहती बल्कि सारे आलम के इन्सानों के लिए हिदायत के दरवाज़े खुल जाते। और हम तो भाईयो भूलना भी भूल गए। एक होता है भूलना कि आदमी कहता है एक बात भूल गया पता नहीं क्या थी। तो एक वक़्त आता है कि वह यह भी भूल जाता है कि मैं भूला हुआ हूँ। दुनिया के लिए रहबर बनकर चलना इस उम्मत के लिए इज़्ज़त और अज़मत है।

उन्हें नापाकियों से निकालना। उन्हें ज़िनाकारियों से निकालकर पाकदामनी का चोला पहनाना हैं, उन्हें गाने बजाने की महफ़िलों से निकालकर क़ुरआन के नग़मात से आशना करना, उन्हें तबले की थाप पर नाचने के बजाए मुसल्ले पर बैठ कर माही दे।

आपकी तरह तड़पना, मुर्गे बिस्मिल की तरह तड़पना इस उम्मत का काम था। यह इस उम्मत का काम था। उनको सिखाना। उन्हें हा-हा, हो-हो, ही-ही के बजाए रातों को उठकर रोना और तड़पना और उसके लिए उन्हें बेक़रारियाँ सिखाना, यह इस उम्मत का काम था।

मुसलमान जाग जाओ वरना!

लेकिन भाईयो! हम ऐसा सोए, हम ऐसा सोए, हम ऐसा भूले कि फिर भूलना भी भूल गए। अब क्या कह रहे हैं कि यहूदियों ने हमारे साथ यह कर दिया, अमरीका ने यह कर दिया, सारी साज़िश यहूदियों की है, यह सारी साज़िश अमरीका की है, यह सब साज़िश हिन्दुओं की है, सब साज़िश फ़लॉ की है।

भाईयो! मैं उनका कोई वकीले सफ़ाई नहीं हूँ अगर दीवार खड़ी-खड़ी गिर जाए तो मिस्तरी से भी पूछा जाएगा कि यह दीवार कैसे गिर गई? बनाई तूने थी। जब बाग़ सूखता है तो मालिक नौकरों से नहीं पूछता वह मैनेजर से नहीं पूछता कि यह बीमारी क्यों है? क्या इस पर स्प्रे नहीं किया था। वह कहे सन्डी खा गई। अरे सन्डी का तो काम ही खाना है, उसका काम ही हमला करना है तू कहाँ सो गया था। अमरीका ने यह कर दिया, यहूदी ने यह कर दिया, इसाईयों ने यह कर दिया, हिन्दुओं ने यह कर दिया तो क्या पहले से नहीं कर रहे? क्या पहले से हमारे बड़े दोस्त थे। वह तो पहले से ही यही कुछ कर रहे थे।

आज क्यों वार चल गए, आज क्यों डाके डल गए, आज क्यों

इज़्ज़तें लुट गयीं।

मैं यह कहता हूँ कि पहले भी नुक़सान हुए पर वे बड़े थोड़े थे। पहले जानें क़ुर्बान होती थीं और जान की क़ुर्बानी तो मतलूब है।

मौत से मुहब्बत करने वाले

कूफ़े वालों ने कहा ना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा जब वे आख़िरी ख़ुत्बा दे रहे थे। लोग कहने लगे कि हम अभी तुझे, तेरे सारे ख़ानदान को तलवार के नीचे कर देंगे। तो उन्होंने मुस्कराते हुए फ़रमायाः

अरे पागलो! मुझे मौत से डराते हो। मुझे तुम मौत से डरा रहे हो?

उन्हीं के बहत्तर साथियों में एक का नाम है युसैब बिन ख़ुबैब वह कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! हमारे और हूरों के बीच सिर्फ़ इतना फ़ासला बाक़ी रह गया कि ये आएं और हमें क़त्ल कर दें तो उनको मारने से क्या होगा वह मरने के लिए तैयार रहते हैं। क्या कहा लोगों तुम गवाह रहो न कभी जवानी में मेरा दामन दाग़दार हुआ और अब तो मैं बुढ़ापे में दाख़िल हो चुका हूँ। न कभी बुढ़ापे में मैंने अपने रब को नाराज़ किया। मैं आज तुम सबको गवाह बनाकर कहता हूँ कि मैंने हमेशा अल्लाह को चाहा और उसकी नाफ़रमानी से बचा। ग़म न करो हमारे और जन्नत की हूरों के बीच सिर्फ़ इतना फ़ासला बाक़ी रह गया है कि ये बदबख़्त आकर हमें क़त्ल कर दें तो उनका मारना कौन सी नाकामी है उनकी। वे तो मरने को तैयार बैठे हैं। यह हमारी कोई नाकामी नहीं हमारे मुल्कों पर क़ब्ज़े हो गए और हमारी

नस्लें तबाह हो गयीं। अरे इधर तबाह हुए उधर जन्नत में चले गए। हमारी नाकामी यह है कि हमारे ईमान पर हमले हुए और हमलावर होने में पहले हम हैं। पहले मुसलमान ने मुसलमान की बेटी से ज़िना किया फिर हिन्दू ने, यहूदी ने, फिर इसाई ने किया। पहले मुसलमान ने मुसलमान को क़त्ल करके उसकी जान को बेक़ीमत किया फिर काफ़िर का ख़न्जर धारदार होकर चलना शुरू हुआ। पहले मुसलमान ने मुसलमान के माल को लूटा। यह जंग और नवाऐ वक़्त में पढ़ो ख़बरें, ये जो लूटमार क़त्ल व ग़ारत के क़िस्से हैं क्या हिन्दू कर रहे हैं? पहले मुसलमान ने मुसलमान को बेक़ीमत किया है फिर औरों ने भी कर दिया। मुसलमान ने गाने बजाने की महफ़िलों को सजाया, मुसलमानों ने शराबों के ठेके लिए।

शरीफ़ की बातें

मैं तुम्हें क्या बताऊँ? मैं बंगलादेश से आ रहा था तो एक गोरा मेरे पास बैठा था तो मैंने उसको दावत देना शुरू की। तो वह गोरा ऐसे बैठकर मेरी बातें सुनता रहा कोई आधा पौना घंटा हो गया बात करते-करते तो पता नहीं मेरे मुँह से कैसे निकल गया अभी मुझे न याद है कि मज़मून का सियाक़ व सबाक़ क्या था? शराब का क़िस्सा छिड़ गया। मैंने कहा हमारा मज़हब बहुत पाकीज़ा है। उसमें शराब हराम है। यह इन्सान को बेअक़्ल कर देती है। वह ऐसे बैठा सुन रहा था। जब मैंने कहा शराब हराम है तो वह कहने लगा यह उसका अन्दाज़ था। मैंने कहा क्या हुआ। वह गार्मेन्टस का ताजिर था। सारी दुनिया में फिरता था। कहने

लगा मैं सारी दुनिया में फिरता हूँ अपनी तिजारत में। सबसे अच्छी शराब मैं कराची में आकर पीता हूँ। हाय अरे भाईयो! उनको दोष न दो अपने अन्दर ढूंढो। क़ाफ़िले के ज़िम्मेदार से पूछा जाता है:—

तू इधर उधर की न बात कर यह बता क़ाफ़िला क्यों लुटा
मुझे रहज़नों से गिला नहीं तेरी रहबरी का सवाल है

तू "ला इलाहा इलल्लाह" का झंडा लेकर उठा था तो क्यों इज़्ज़तें नीलमा हो गयीं? क्यों मुसलमान के बच्चे गिटार लेकर उछलने लगे, कूदने लगे? क्यों मुसलमान बेटियाँ सरेआम नाचने लगीं? क्यों सरे बाज़ार बाजों की सरतान ने दिल की दुनिया को बर्बाद कर दिया।

मेरे अज़ीज़ो! दुनिया में कोई ऐसा है जो दिल के तारों को छेड़ सके। दुनिया की कोई आवाज़, कोई साज़, कोई सुर ऐसा नहीं है जो दिल के तारों को छेड़ ले, जो रूह का बेक़रार करे। यह एक अल्लाह के पहरे में है।

यहाँ न गाना-बजाना आ सकता है न औरत आ सकती है न शराब आ सकती है। पैसे की खनक सिर्फ़ कानों तक है। मौसिक़ी की धमक कानों तक है, नज़र का चस्का सिर्फ़ नज़र के थोड़े से कटोरे तक है। मेरे रब की क़सम! इनमें कोई चीज़ भी नहीं है जो दिल की दुनिया में जाकर आराईश पैदा करे, बेक़रारी पैदा करे। सिर्फ़ क़ुरआन का नग़मा है, "ला इलाहा इलल्लाह" कितना बढ़िया गीत है जो दिल के तारों में जाकर बजता है। यह वह है जब तारों पर जाकर गिरता है तो सारी रूह सिर से लेकर पाँव तक सरापा आवाज़ बन जाती है, सरापा सोज़ व साज़ बन जाती है और उसके अन्दर वह तासीर हैं कि सात समुंद्रों की मौजें भी उनके

सामने हाथ जोड़कर खड़े हो जाती और उसमें वह परवाज़ है कि बड़े-बड़े राकेट भी उसके सामने आजिज़ हो जाते हैं। यह सीधा जाता है और अपने रब के दरबार में जा पहुँचता है। यह वह नग़मा है, यह वह कलाम है जो दिल के तारों को छेड़ता है। दीवानी दुनिया, पागल दानिशवर जो कहते हैं कि संगीत रूह की ग़िज़ा है। उनका दिमाग़ ख़राब है। वह अल्लाह का चैलेंज है। सुनो! सुनो! सुनो! ऐ धरती के इन्सानों सुनो। चैन-सकून के लिए दौड़ो जितना दौड़ सकते हो। बर्फ़पोश, स्याहपोश, सब्ज़पोश, फ़लकपोश चोटियों पर बैठकर नज़ारों को दावत दो कि तुम्हारे दिल लुभाएं, नग़मों को दावत दो कि तुम्हारे सीने की बेकरारी को सुकून में बदलें। तुम्हारे दिल को चैन मिला तो मुझे रब मानना। मेरा ऐलान है ﴿الا بذكر الله تطمئن القلوب﴾ दिलों को सुकून सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम्हारे रब की याद में है। भाईयो! बड़ा जुर्म हुआ अल्लाह की क़सम:

मुद्दत हुई सैय्याद ने छोड़ा भी तो क्या
ताबे परवाज़ नहीं राहे चमन याद नहीं

हम भूलना भी भूले। परिन्दे का मासूम बच्चा, शिकारी की नज़र पड़ी, घोंसले से उठाकर लाया। पिंजरे में लाकर बन्द किया। उसने आँख खोली तो पिंजरा देखा। सुबह की तो पिंजरा देखा, शाम हुई तो पिंजरा देखा।

सुबहें आयीं, रुत बदली, मौसम बदले। उसी में परवान चढ़ा, उसी को उसने जहान समझा, उसी को उसने आशियाँ समझा, उसी को उसने बुलन्दियाँ समझा, उसके दर व दीवार से वह मानूस हुआ, एक दिन आया उड़ना भी भूला, परवाज़ भी भूला, चमन भी

भूला, आशियाँ भी भूला। शिकारी को रहम आया। उसने आकर खोला कि जा अपने चमन को उड़ जा तो आगे यह बड़ी सादगी से कहता है मुझे उड़ना भी नहीं आता, अगर मैं उड़ा तो मुझे तो पता नहीं कि किस चमन से पकड़कर लाए थे? मुझे याद नहीं किस डाली पर मेरा आशियाना था? मुझे याद नहीं मेरे घर को कौन सी राहें जाती हैं? मुझे नहीं पता कौन सी शाख़ पर किस पेड़ पर मैं पैदा हुआ था? मुझे बताओ तो सही, मुझे बताओ तो सही। आज मेरा और ख़ानेवाल के मुसलमानों का हाल और पूरी उम्मत के मुसलमानों का हाल इसी पिंजरे में कैद पंछी का है जिसे कुछ याद नहीं। ऐसे ही मुझे और आपको कुछ याद नहीं है। हमें सिर्फ़ कमाने का पता है, खाने का पता है, पहनने का पता है, घर का पता है, दुनिया की चमक नज़र आती है, पैसे की खनक सुनाई देती है। इसके सिवा हमें न कुछ पता रहा न होश रहा। अब एक आवाज़ आती है लोगों इसलिए नहीं आए हो। तुम अल्लाह के पैग़ाम को दुनिया में पहुँचाने आए हो, तुम रहबर हो तुम राही नहीं हो। तुम रहबर हो तुम पीछे चलने वाले नहीं हो तुम क़ायद होः

हम ख़ुद तराशते हैं मंज़िल के संगे मील
हम वह नहीं जिनको ज़माना बना गया

तो आगे कहते हैं उड़ने की ताब नहीं, चमन का रास्ता याद नहीं। हमें तो सिर्फ़ दफ़्तर का रास्ता आता है, हमें तो सिर्फ़ दुकान का रास्ता पता है, हमें सिर्फ़ आम के बाग़, कपास के खेत तक पता है। आगे हमें कुछ पता नहीं। हम इसीलिए आए हैं। नहीं नहीं भाईयो!

एक दर्द है, एक ग़म है कि हमने एक इज्तिमाई क़ुसूर किया है कि दुनियाए इन्सानियत को पैग़ामे हक़ सुनाना छोड़ दिया। उनको जन्नत की राहें बताना छोड़ दिया।

वह उलझ गए छोट-छोटे माबूदों में, बन्दों में उलझ गए, पत्थरों में उलझ गए, गाने में उलझ गए, मूर्तियों में उलझ गए, सूरतों के सामने गिर पड़े, क़ब्रों पर जा गिरे। क़ब्रों पर जाकर ख़ाक चाटने लगे। हमने कितना बड़ा ज़ुल्म किया कि अल्लाह जैसी हसीन हस्ती का उन्हें पता नहीं बताया।

दुनिया को हुस्न देने वाला ख़ुद कैसा होगा?

﴿الله نور السموات والارض مثل نوره كمشكوة.﴾

उसका नूर तो चप्पे-चप्पे में फैला हुआ है। पत्ता-पत्ता नूरानी उसके नूर से, ज़र्रा-ज़र्रा नूरानी उसके नूर से, सूरज का नूर उसके नूर से, तारों की झिलमिलाहट उसके नूर से, चाँद की चाँदनी उसके नूर से और पेड़ों की हरियाली उसके नूर से, पानी की रवानी उसके नूर से, हवाओं का नसीम बनना उसके नूर से, सबा बनना उसके नूर से।

मेरे भाईयो! जो इतना साफ़ हो कि मेरे बन्दे मैं तुम्हें चप्पे-चप्पे अपने आपको दिखा दूँगा। आसमान को छूती हुई चोटियाँ बताती हैं कि अल्लाह है, ऊँचाइयों पर उड़ता हुआ उक़ाब, बे ख़ता लपकता उक़ाब, बल खाता हुआ साँप यह बताता है कि अल्लाह है, रोज़ जगह बदलते टीले और खड़े हुए पहाड़, कभी न जगह बदलने

वाले चोटियों की झालरों से उछलता हुआ गाता हुआ पानी और खिलती हुई कलियाँ और महकते हुए फूल, ख़ुद सुबह-सुबह मशरिक़ जब सफ़ेद जोड़ा पहन कर दुल्हा बनता है और शाम को जब मग़रिब सुर्ख़ जोड़ा पहनकर दुल्हन बनती है ऊपर आफ़ताब चमकता है और तारों की बारात लेकर चलता है। ये सब कुछ बताता है कि अल्लाह है जिसने दुनिया को इतना हसीन बनाया है वह मेहमानख़ाना कैसा हसीन होगा? इन्सान कमज़ोर है। उसे क़वी का सहारा चाहिए। इन्सान कमज़ोर है उसे ताक़तवर का सहारा चाहिए। यह इसके बग़ैर रह ही नहीं सकता। तो अल्लाह से कोई ताक़तवर है नहीं।

﴿الذی خلقهم هو اشرفهم قوة.﴾

अल्लाह तआला के सिवा क़वी बादशाह कोई नहीं।

﴿ان القوة لله جميعا﴾ हुकूमत में कोई शरीक नहीं,

﴿ان الامر كله لله﴾ हुकूमत की शुरूआत व आख़िर कोई नहीं।

अल्लाह की तख़्लीक़ के शाहकार

उसकी हुकूमत में जो शुरू नहीं हुई। बग़ैर शुरू के शुरू। बिला इब्तिदा हुकूमत बिला इन्तिहा हुकूमत पानी और ख़ुश्की, अर्श व फ़र्श में हर एक बिला शराकत वाहदहु ला शरीक हुक्मुरान,

﴿والخلق امر والليل والنهار وما سكن فيهما الله وحده.﴾

मख़्लूक़ उसकी, अम्र उसका, रात उसकी, दिन उसका, राही, मुसाफ़िर, मुक़ीम उसके, सदफ़ में पानी मोती की शक्ल में बदलने में उसके हुक्म का मोहताज, शहद की मक्खी में फूल का रस

शहद की शक्ल में बदलने में, साँप के मुँह में पानी ज़हर में बदलने में उसी के अम्र का मुन्तज़िर है, शेर के पंजे उसी के हुक्म से बने, उसके बड़े-बड़े दाँत उसी रब की तख़्लीक़ का शाहकार है, उसका फाड़ना उसी की तख़्लीक़ का शाहकार है, हिरन का छलांगे मारते चले जाना मेरे रब की तख़्लीक़ का शाहकार है, बुलबलु का ख़ूबसूरत नग़मे सुनाना मेरे रब की तख़्लीक़ का शाहकार है, कोयल की सुबह की "को-को" मेरे रब की तख़्लीक़ का शाहकार है, बुगलों का क़तार बनाकर चलना उसी की तख़्लीक़ का शाहकार है, फूलों का लाल होकर महकना, सफ़ेद होकर महकना और कई रंगों का होकर महकना और मोर का फ़ख़्र से नाचना और लाखों क़िस्म के रंग लेकर माँ के अंडे से निकलना और सिर पर ताज सजाना ये सब मेरे रब की क़ुदरत का शाहकार है।

किसने मोर को नाचना सिखाया? कौन सी फ़ैक्टरी में मोर का पिरहन बना? किस रंगसाज़ ने यह रंग लगाया? किस रंगरेज़ ने यह पेंट किया और किस पेन्टर ने इसको यह पेंट अता फ़रमाया?

अजाएबात ही अजाएबात

यह मेरा अल्लाह है, मेरा अल्लाह है जो एक ही वक़्त में एक अंडे से बदसूरत कव्वे को निकाल रह है और दूसरे अंडे से हसीन मोर को निकाल रहा है और तीसरे अंडे से झपटने वाले उक़ाब को निकाल रहा है और चौथे अंडे से मासूम कबूतर को निकाल रहा है और पाँचवे अंड से वह कछवे को निकाल रहा है और छठे अंडे से वह मगरमछ को निकाल रहा है और सातवें अंडे से वह मुर्ग़ी को निकाल रहा है और आठवे अंडे से वह चिड़िया को निकाल रहा है

और नवे अंडे से वह फ़ाख़्ता को निकाल रहा है। छोटे-छोट नज़र न आने वाले अंडो से मच्छर को निकाल रहा है, मक्खी को निकाल रहा है, च्युंटियों को निकाल रहा है, पतंगे निकाल रहा है, परवाने निकाल रहा है और ये बेशुमार निज़ाम एक वक़्त में खरबों चीज़ें बना रहा है, खरबों चीज़ें मिटा रहा है, खरबों चीज़ों को वजूद दे रहा है।

इस सारे निज़ाम में कभी तो मेरा रब ख़ला करता तो फिर वह रब कहाँ रहता तो उसने चैलेंज किया ﴿وما كان ربك نسيا لا يضل ربى ولا ينسى﴾ मैं वह रब हूँ जो न कभी भूलता हूँ, न थकता हूँ न चूकता हूँ। एक पल में, एक वक़्त में एक फ़ैक्टरी में, एक मील में बन रहा है उसमें भी यह ग़लत हो गया, इसे वापस करो। यह ख़राब हो गया उसे दोबारा लाओ, यह कन्डम हो गया चलो इसे कचरे में डालो। हाय! ऊपर निगाहें, दांए बांए मज़दूर, इन्जीनियर फिर भी ग़लतियाँ और हर वक़्त निगाहें फिर भी यह ग़लत, वह ग़लत और एक चीज़ बन रही है, एक कपड़ा बन रहा है, एक पेंट हो रहा है और एक सेकंड में मेरा रब, मेरा आक़ा, मेरा मालिक, मेरा मौला इन सब कामों का, बहर व बर, अर्श व फ़र्श, पूरब व पच्छिम, उत्तर व दख्खिन का वाहदहु बिला शरीक अल्लाह बिला शिरकत ग़ैर मालिक है।

ला शरीक अल्लाह, अहद व समद अल्लाह, वाजिद व माजिद अल्लाह, हय्यु क़य्यूम अल्लाह, क़ुद्दूस व सलाम अल्लाह, रहमान व रहीम अल्लाह, क़ह्हार व जब्बार अल्लाह, मालिक व मुल्क अल्लाह, ज़ुल जलाल वल इकराम अल्लाह, ग़नी व मुग़नी अल्लाह, वकील अल्लाह।

तबलीग़ भूला हुआ सबक़

सारी दुनिया के इन्सानों को अल्लाह से जोड़ना यह सिर्फ़ तबलीग़ी जमात का काम नहीं। अगर यह तबलीग़ जमात होती, फ़िरक़ा होता तो ऐसा मजमा बग़ैर इश्तिहार के न आता। ऐसे लाउडस्पीकरों में यह इश्तिहार हों, इश्तिहार छपें, मस्जिदों में ऐलान हों, पता नहीं क्या-क्या हो फिर भी आने वाले न आएं। यहाँ बुलाया भी न जाए फिर भी खिंचे चले आएं, दौड़े, भागे चले आएं। यह कोई तहरीक नहीं है, यह कोई जमात नहीं, यह तो भूला हुआ सबक़ है जो दिल के पर्दों में था, सीने के अन्दर था, रग-रग में था, ख़ून में था, रूह में था, बोटी-बोटी में था, रेश-रेशे में था, खाल व बाल में था, रोंए-रोंए में था। यूँ लगा जैसे मेरा अपना सबक़ है जो मुझे याद आ रहा है। खिंचती चली गई इन्सानियत, कितने नौजवान बैठे नज़र आ रहे हैं। एक ज़माना था मस्जिद में बूढ़ों के सिवा कोई नज़र न आता था। बात सुनने के लिए दाँत टूटे हुए लोगों के सिवा कोई आने वाला न था। मुझे बीस-पच्चीस साल के बीच के लोग 98वें फ़ीसद नज़र आ रहे हैं। यह वह है:—

लौट पीछे की तरफ़ ऐ गर्दिशे अय्याम तू

अल्लाह का तार्रूफ़ कराना हमारा काम है

यह हमारा सबक़ है भाईयो! हमने अपने अल्लाह का तार्रूफ़ करवाना है। अपने मालिक से लोगों को मिलाना है, उनको पैग़ाम सुनाना है कि पूरी दुनिया के इन्सानों के मसाइल का हल अल्लाह

के हाथ में है। अल्लाह जैसा करीम कोई नहीं। उस जैसा मेहरबान कोई नहीं। आओ भाई उससे सुलह कर लें, आओ भाई उसको मना लें। इस पर कोई सौदा नहीं, हर चीज़ उस पर क़ुर्बान की जा सक़ती है, अल्लाह को नहीं छोड़ सकते, जान क़ुर्बान हो सकती है। अल्लाह को नहीं छोड़ सकते। अल्लाह मेरा है तो सब कुछ मेरा है। मेरा अल्लाह मुझे न मिला मुझे कुछ न मिला। धरती गवाह, ज़मीन गवाह, तारीख़ का पन्ना-पन्ना गवाह, लाईन-लाईन, लफ़्ज़-लफ़्ज़, हरुफ़-हरुफ़ गवाह अल्लाह को पाने वाले कभी नाकाम नहीं हुए और अल्लाह को खो देने वाले कभी कामयाब नहीं हुए।

हमारा तो साल। देखो साल शुरू हुआ है। मुहर्रम शुरू हुआ सन् 1425 हिजरी हमारा साल मुहर्रम से शुरू होता है। जनवरी भी अल्लाह का, मुहर्रम भी अल्लाह का क्योंकि सूरज भी अल्लाह का चाँद भी अल्लाह का तो जो सूरज से निज़ाम चला वह भी अल्लाह का, चाँद से निज़ाम चला वह भी अल्लाह ही का है।

उम्मते मुहम्मदिया की फ़ज़ीलत

और एक चीज़ जो अल्लाह को पसन्द है वह हमें दे दी है जो ज़्यादा पसन्द है। वह औरों को दे दी। अल्लाह तआला ने सारी उम्मतों को कहा कि मुझे एक दिन पसन्द है। तुम ढूंढ लो तो यहूदियों ने कहा हमें हफ़्ता चाहिए, ले लो। इसाईयों से कहा मुझे एक दिन पसन्द है यह बतौर हदीस नहीं बल्कि बज़बाने हाल है। एक दिन तेरे रब को पसन्द है। एक दिन तेरे रब को पसन्द है।

ढूंढ लो। इसाईयों ने इतवार ले लिया।

अब हमारी बारी आई तो अल्लाह तआला ने कहा कहीं ये ढूंढते-ढूंढते ग़ाफ़िल न हो जाएं, ढूंढते हुए ख़ता न खा जाएं तो अल्लाह तआला ने ढूंढने से पहले ही कहा मेरे महबूब मैंने तुझे और तेरी उम्मत के लिए जुमा दे दिया। मुझे यही पसन्द है अपनी पसन्द मैंने खुद ही बता दी है कि मुझे यह दिन पसन्द है। यह तुम्हारे लिए हो गया। आओ ईद मनाओ। हमारी हर हफ़्ते ईद होती है। कोई ऐसी नमाज़ है? फ़रमाया कि जो तीन जुमे जानबूझकर छोड़ दे मेरी मिल्लत से बाहर होकर काफ़िर हो जाता है।

शहादते हुसैन मुहर्रम में क्यों?

ख़ानेवाल भरा हुआ है ऐसे लोगों से जिन्होंने तीन नहीं तीन-तीन सौ जुमे छोड़े हुए हैं। देहात भरे पड़े हैं।

तो हफ़्ता भी अल्लाह का, इतवार भी अल्लाह का, जुमा भी अल्लाह का तो जुमा था जुमा हमें दे दिया।

जनवरी भी अल्लाह का, मुहर्रम भी अल्लाह का। पसन्द मुहर्रम है तो कहा साल यहाँ से शुरू करो। यह साल एक अहद व पैमान की याद दिलाता है कि हम अल्लाह के लिए हर चीज़ छोड़ सकते हैं और अल्लाह को नहीं छोड़ सकते।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत ज़िक़ादा में भी हो सकता थी, सफ़र में भी हो सकती थी और रजब में भी हो सकती थी, रमज़ान में भी हो सकती थी। नहीं-नहीं यह मुहर्रम को चुना गया, जुमा का चुनाव किया गया कि जैसे ही नया साल शुरू हो

सारी उम्मत के कान खड़े हो जाएं। हाँ-हाँ अल्लाह पर सब चीज़ क़ुर्बान हो सकती है पर अल्लाह को नहीं छोड़ सकते।

अरे जाएं कहाँ? क़ुर्बान करोगे? मैं कहता हूँ हराम छोड़ दो। अपनी फैक्टी सूद पर मत चलाओ तो कहता है फिर मेरी फ़ैक्टरी कैसे चलेगी तो क्या अल्लाह पाक की बात इतनी सस्ती है कि एक फ़ैक्टरी पर बेच दें। अरे तुम रिश्वत मत लो तो कहता है बच्चों को रोटी कहाँ से खिलाऊँ? अरे तराज़ू में सही तोल, वकील साहब किसी ज़ानी को बचाने के लिए क़लम को मत चलाना, किसी क़ातिल को बचाने के लिए क़लम मत चलाना। बहुत से लोगों ने झूठे केस दर्ज करवाए हुए हैं। पुलिस भी शामिल, वकील भी शामिल, अरे यह काम न करना। कहता है तो फिर बच्चों को रोटी कहाँ से खिलाऊँ, बच्चों को खाना कहाँ से खिलाऊँ? उनकी फ़ीस कहाँ से भरुं? उनके स्कूल आने-जाने का ख़र्चा, बिजली का बिल कहाँ से भरूं? बैंकों के चक्कर में सूद में न फँस जाना, अश्रूर अदा करो, ओ जी गुज़ारा ही नहीं होता। इन सारे सवालों का जवाब है दस मुहर्रम, इन सारे सवालों का जवाब करबला है।

इन सारे सवालों का जवाब है हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जैसी हस्ती का सिर कट जाना। दुनिया में उस वक़्त उनसे अफ़ज़ल कोई इन्सान नहीं था और सोलह अफ़राद आले रसूल में से शहीद हुए। उनसे अफ़ज़ल फ़र्द न था। बाक़ी तो साथी थे। अब्बास, अब्दुल्लाह, मुहम्मद, उस्मान और जाफ़र ये तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे हैं। हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई दूसरी माँ से थे।

ख़ून ही ख़ून

तो सीधे-सीधे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की नस्ल पर सीधी तलवार चल रही है। फिर हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु थे अबूबक्र और अली और अब्दुल्लाह और हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ासिम और अब्दुल्लाह और मुहम्मद और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र थे और मुहम्मद, मुस्लिम बिन अक़ील, अब्दुर्रहमान और अब्दुल्लाह और मुहम्मद यह वह चिराग़ थे जिनके बुझने पर दुनिया अंधेरी हो गई। सबसे छोटा बच्चा अब्दुल्लाह गोद में है। आख़िर में बाप और बेटा रह गए। कहानी ख़त्म हो रही है। शमा बुझने को है और यह वह शमा है जो बुझकर सूरज की तरह चमकने लगेगी। अल्लाह के नाम पर मरने वाला मरा नहीं करते। वह यज़ीद मर गया। इब्ने ज़ियाद मर गया। शिमर पलीद मर गया। आख़िरी बच्चा अब्दुल्लाह है गोद में है।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की सबसे ज़्यादा महबूब बीवी थीं और सबसे ज़्यादा उनसे प्यार था। जब कभी वह मैके चली जातीं तो कहते आज तो रात लम्बी हो गई। हज़रत अली ने दो बहनों एक सलमा एक रुबाबा एक का निकाह हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से किया और एक हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से किया। दो बरस का बच्चा अगर काफ़िर का भी हो तो प्यारा लगता है। हिन्दू व सिख का भी हो प्यारा लगता है। यह तो आले रसूल हैं, प्यास से लबे दम है मुर्ग़ बिस्मिल है। उसको लेकर ऐसे दिलासा दे रहे हैं और उसको चूम रहे हैं और उसे तसल्ली दे रहे हैं। इतने में एक तीर आया और तीन मारने वाला था इब्ने अल-मौकफ़ और

आकर गले के पार हो गया। यहाँ आकर जाम छलक पड़ा। आँसू तो फिर भी नहीं बहे लेकिन उसके ख़ून को हाथों में लिया लप भर लिए और यूँ आसमान की तरफ़ उठा दिया कि ऐ मौला! अगर तूने अपनी मदद को रोक लिया है तो फिर भी मैं तुझसे राज़ी हूँ। तू उनसे इन्तिक़ाम लेना।

इन सोलह में क़ासिम सबसे हसीन थे। हज़रत हसन के बेटे क़ासिम सबसे हसीन। जब वह क़त्ल हुए तो क़ातिल की आँखों में भी आँसू आ गए। मारने वाले रो रहे हैं। हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमा रहे हैं मेरे बेटे आज तेरे चचा के दुश्मन ज़्यादा हो गए और दोस्त थोड़े हैं। आज तेरा चचा बड़ा आजिज़ है कि तेरी आवाज़ पर लब्बैक न कह सका। वह क्या दिन होगा जब तेरा मुद्दई बनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आएगा? मैं वाक़िआ नहीं सुना रहा हूँ। वाक़िआ मुझसे सुनाया भी नहीं जाता। पता नहीं लोग कैसे गा-गाकर सुना देते हैं, अल्लाह ही जाने। पैग़ाम सुना रहा हूँ। पैग़ाम साल की शुरूआत है भाई। आओ इस पैग़ाम को सीने से लगाएं कि अल्लाह को राज़ी करते हुए हर चीज़ क़ुर्बान की जा सकती है। अल्लाह को क़ुर्बान नहीं कर सकते।

तेरा रब बड़ा ही मेहरबान है

मेरा अल्लाह मेरी माँ से ज़्यादा मुझ पर मेहरबान है, मेरे बाप से ज़्यादा मुझ पर शफ़ीक़ है। मेरे लिए ज़मीन का फ़र्श बिछाया ﴿والارض فرشنها﴾ मैं चलता कहाँ? मेरे ऊपर आसमान की छत को

मेरे रब ने ताना ﴿والسماء بنينها بايد وان لموسعون﴾ सूरज का तन्दूर मेरे अल्लाह ने मुझ पर धहकाया वरना मेरे गेहूँ कौन पकाता? ﴿وجعلنا سراجا وهاجا﴾ आसमान से पानी मेरे रब ने बरसाया ﴿انا صببنا الماء صبا﴾ वरना मेरी ज़मीन उपजाऊ कहाँ से होती? मेरे माँ-बाप के दिल में मुहब्बत डाली वरना मेरा पेशाब कौन धोता? मेरा पाख़ाना कौन धोता? मुझे डाक्टरों के पास कौन लिए फिरता? मेरी एक मुस्कराहट देखने के लिए मेरा बाप सारा दिन रेढ़ी चला रहा है, बूट पालिश कर रहा है, लोगों की गालियाँ सुन रहा है, लोगों की गाड़ियों को धो रहा है और पैसे जेब में डाल रहा है। शाम के लिए बच्चों की रोटी बन गई शुक्र है। यह सब कौन कर रहा है? क्या बाप अपनी ताक़त से माँ अपनी ताक़त से? नहीं, नहीं मेरा अल्लाह कर रहा है। मेरे बन्दे मैं तेरा रब हूँ जिसने तेरी माँ के दिल में तेरा प्यार डाला, तेरे बाप के दिल में तेरी शफ़क़त को डाला। अगर मैं यह काम न करता तो न माँ तेरे लिए तड़पती, न बाप तेरे लिए ख़ानेवाल के बाज़ारों में धक्के खाता, रेढ़िया लगाता, बूट पालिश करता। यह मैं तेरा रब हूँ जो उन्हें ऐसा बेक़रार कर देता हूँ कि तू खाए नहीं तो वे खा नहीं सकते, तू सोए नहीं तो वे सो नहीं सकते। ऐसे रब का बाग़ी बनता है, ऐसे हसीन रब का बाग़ी बन जाना, ऐसे मेहरबान अल्लाह को सज्दा न करना, ऐसे प्यारे अल्लाह की रोकी हुई चीज़ों पर दिलेर हो जाना। वह कहता है गाना न सुनना, यह कहता है इसमें क्या हर्ज है, वह कहता सूद न लेना, यह कहता है फिर कारोबार कैसे होगा?

ऐ मेरे प्यारे नबी की उम्मत की बेटियों! पर्दे में आ जाओ। कहती हैं लोग क्या कहेंगे पर्दे में हो गए, पिछड़ापन पसन्द करने लगे? अरे ताजिर ख़्यानत न करना धोका न देना। बच्चों को रोटी कैसे खिलाएं? मेरे ऐसे शफ़ीक़ अल्लाह की बग़ावत, मेरे ऐसे मेहरबान अल्लाह की बग़ावत जब मैं नुत्फ़ा था तो उसकी मुझ पर नज़र थी, मैं अलक़ा था तो वह मुझे देख रहा था और सिर्फ़ मैं ही नहीं था बल्कि करोड़ों माँओं के पेट में उस वक़्त नुत्फ़ा ठहरा हुआ था, करोड़ों अंडों में तख़्लीक़ का अमल चल रहा था, करोड़ों मादा जानवरों के पेटों में तख़्लीक़ का अमल जारी था, घोड़ियाँ, बकरियाँ, क्या शेरनियाँ, क्या बिल्लियाँ, क्या फ़ाख़्ताएं तसव्वुर करो। परिन्दों की मादा, चौपायों की मादा, दोपायों की मादा, तैरने वालों की मादाएं, रेंगने वालों की मादाएं, पेड़ों में नर व मादा, फूलों में नर व मादा और ज़मीन व पानी में कितनी मादाएं हैं जिनके अन्दर तख़्लीक़ का अमल जारी था। उसमें मैं भी बन रहा था। मेरा रब अगर एक सैकेंड के करोड़वें हिस्से मेरी तख़्लीक़ से ग़ाफ़िल होता तो मेरी आँखें माथे से निकलकर मेरे पाँव में जा लगतीं। मैं क़ुर्बान जाऊँ उस रब के जिसने माँ के तीन अंधेरों में मुझे देखा, मुझे चाहा, मुझे परवान चढ़ाया, मुझे नुत्फ़े से अलक़ा बनाया, अलक़ा से मुज़ग़ा बनाया, मुज़ग़ा से इज़ामा बनाया, इज़ाम पर लहम लगाया, लहम पर खाल को चढ़ाया, मेरी आँखें बनाईं, मेरी पलकें बनाईं, मेरे होंट बनाए, मेरी ज़बान बनाई, मेरे बाल बनाए, मेरे कान बनाए, मेरे हाथ बनाए, मेरी उंगलियाँ बनायीं, हथेली को बग़ैर बालों के बनाया, हथेली के ऊपर बालों को पैदा फ़रमाया, मेरे पाँव के तलवों को कैसा बनाया। यहाँ बाल न होने

दिये वरना मेरा बन्दा चल न सकेगा, ऊपर बाल बनाए नीचे ख़ाली रखी और अल्लाह तआला ने घुटनों के बीच में जोड़ बनाए जो मेरे रब की तख़्लीक़ की खुली निशानी है। ये आपस में फंसी हुई दो हड्डियाँ नहीं यूँ दो हड्डियों के ऊपर दो हड्डियाँ खड़ी हुई हैं। यह कौन है जो दोनों को आपस में मिलने नहीं देता, टकराने भी नहीं देता, मोड़ता है और चलाता भी है, पीछे भी चलाता है आगे भी चलाता है, सिकुड़ने की ताक़त भी देता है, फैलाने की ताक़त भी देता है। यह मेरा अल्लाह है। मैं बना तो वह ग़ाफ़िल न हुआ, मेरी आँख बनी तो उसने ख़्याल किया कि उसकी आँखों का रंग किसी और का न बन जाए, कहीं हमशक्ल होने की वजह से शुब्हा न हो जाए, मेरी शक्ल बनने लगी तो उसने ख़्याल रखा कि मेरी शक्ल किसी और से न मिल जाए कि माँओं को धोका न लग जाए। मेरी आवाज़ बनाने लगा तो उसने ख़्याल रखा कि मेरी आवाज़ किसी और के मुशाबेह न हो जाए, मेरे फिंगर प्रिन्ट बनाने लगा तो उसने ख़्याल रखा कि उंगली का निशान और उस पर बना हुआ प्रिन्ट और उस पर छपा हुआ छापा किसी और का न हो वह उसी का हो। मेरी नाक का नथना बनाया तो सबसे जुदा किया, मेरे छोटे से कान बनाए तो सबसे जुदा बनाए तो धरती में ऐसे होंट किसी के न बनने दिए, मेरे दाँत बनाए तो धरती में किसी के दाँत ऐसे न बनने दिए, मेरी पलकें बनायीं तो किसी और को ऐसी पलकें नहीं दीं, मेरी उंगलियाँ बनायीं तो काएनात में किसी को ऐसी उंगली नहीं दीं, मेरे नाख़ून बनाए तो किसी के ऐसे नाख़ून नहीं बनाए, मेरा मिज़ाज बनाया तो किसी का ऐसा मिज़ाज नहीं बनाया, अंधेरे में चलता हुआ आ रहा है तो तारिक़ जमील

आ रहा है। अंधेरे में कैसे पता चला? चाल से पता चला वह आ रहा है।

मेरा रब और हम उससे बाग़ी हो गए। अरे बग़ावत करनी थी तो अपने आप से करते, अपने ख़िलाफ़ बग़ावत करते, अरे जुलूस निकालना था तो हुकूमत के ख़िलाफ़ क्यों निकालते हो जैसे हम वैसे वे, हम छोटे चोर वे बड़े चोर।

अपने लिए भी दुआ करो, उनके लिए भी दुआ करो। उनको गालियाँ न दो। यह सही नहीं है कि हुक्मुरानों को गालियाँ देनी शुरू कर दो। फ़ौज वालों को गालियाँ देनी शुरू कर दो। नहीं-नहीं इस किश्ती के डूबने में मैं भी ज़िम्मेदार हूँ।

दुनिया इम्तिहान की जगह है सज़ा की जगह नहीं

आप भी ज़िम्मेदार हैं। चपरासी भी ज़िम्मेदार है बादशाह भी ज़िम्मेदार है। कोई भी ज़िम्मेदारी से बरी नहीं है। माँ को गालियाँ देने वाले, बाप का गिरेबान पकड़ने वाले, बाज़ार में बैठकर जुआ खेलने वाले, केबिल डिश चलाने वाले हम सब इसके ज़िम्मेदार हैं। ब्याज पर फ़ैक्टरियाँ चलाने वाले, नौकरों को, ड्राइवरों को माँ-बहन की गालियाँ देने वाले क्या ये ज़िम्मेदारी से बरी हैं? अरे मेरे भाईयो! अल्लाह की क़सम! बैतुल्लाह को तोड़ना छोटा गुनाह है और मुसलमान को माँ-बहन की गालियाँ देना बड़ा गुनाह है।

तंख़्वाह कम देते हो। तीन हज़ार। तीन हज़ार कौन देता है? हमारे देहातों में पन्द्रह सौ, बारह सौ, एक हज़ार और ज़रा सी उसने कमी की तो तेरी माँ, तेरी बहन। हाय! हाय! आसमान क्यों

न टूट पड़ा? ज़मीन क्यों न फट गई? समुंद्र क्यों न बिखर गया? हवाएं पागल होकर बेलगाम क्यों न हों गयीं? कि अल्लाह तआला ने दुनिया को जज़ा सज़ा की जगह नहीं बनाया। अगर यह जज़ा सज़ा की जगह होती तो माँ-बहन की गालियाँ देने वाले वहीं मसख़ होकर ख़त्म हो जाते। माँ-बहन इतने बड़े तक़द्दुस को पामाल कर दिया कि तू पानी वक़्त पर क्यों नहीं लाया। इतनी सी बात पर इतना सस्ता है यह तक़द्दुस?

आज अल्लाह को मना लो

तो मेरे भाईयो! ऐसे मजमे कम मिलते हैं। अहबाब जमा हैं। मैं हाथ जोड़ता हूँ साल की शुरूआत है आओ हम तौबा करें। आओ आज हम अपने अल्लाह को मनाएं। पता नहीं कहाँ-कहाँ से आए हो? मुझे यह राहत तो हो रही है कि इनमें अक्सर नौजवान नज़र आ रहे हैं। नई नस्ल नज़र आ रही है। यह बहुत बड़े हौसले की बात है कि बातिल जितनी मर्ज़ी चालें चल जाए मगर सुबह हो रही है। रात के आख़िरे हिस्से में चाँद भी थककर डूब जाता है। तारे भी जाग-जाग कर आँखें मूंद लेते हैं और यूँ लगता है कि अब कभी अंधेरों में से रौशनी नहीं निलकेगी। अचानक पूरब से रौशनियाँ फूटती हैं और सारी काएनात उजाले का लिबास पहनती है। रात भागती है फन सिकोड़ते हुए, बाल समेटती हुई दीवानों की तरह उसे जगह नहीं मिलती, भागती है।

आज रात काली है, तारीक है। मुसलमान बच्चे भी नाच रहे हैं, मुसलमान बेटी भी सरे बाज़ार घुंघरू की छन-छन और पायल

की झंकार से सरेबाज़ार नज़ारे की दावत दे रही है मगर इसके साथ-साथ सुबह भी हो रही है।

तो मेरे अज़ीज़ो! मेरे भाईयो! आज हम तौबा करें। अपने अल्लाह को मनाएं। हमसे अल्लाह हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जैसी क़ुर्बानी नहीं लेगा। वह उन्हीं के लिए थीं। वह बड़े थे और बड़ों के साथ तो बड़े इम्तिहान होते हैं। मुझे पता है हम कमज़ोर हैं। अरे हम हराम छोड़ दें हमारे लिए यही करबला है।

हम झूठ छोड़ दें, माँओं के गिरेबान पकड़ना छोड़ दें, बाप पर गुर्राना छोड़ दें, बहनों से लड़ना छोड़ दें, पड़ौसी को सताना छोड़ दें, तराज़ू की नाप-तोल में कमी करना छोड़ दें, सूद के सेविंग एकाउन्ट से पैसा निकालकर करंट एकाउन्ट में रख दें, अपनी फैक्टरी के कारोबार को सूद से निकालो, नज़रें झुकाना सीखो और गानों की कैसिटें तोड़ दो, क़ुरआन सुनो। उसी में जियो उसी में मरो। हमारी यही करबला बन जाएगी। अल्लाह जानता है कि ये वे लोग नहीं हैं जिन्हें मैं आज़माऊँ। ये वे लोग नहीं हैं जिन्हें उस तरह आज़माया जाए जैसे पहलों को आज़माया गया था।

मेरे ग़ैर की मुहब्बत को न बसाओ

याक़ूब अलेहिस्सलाम चालीस साल तक रोए। अल्लाह तआला ने मिलाया फिर फ़रमाया बताओ याक़ूब क्यों जुदा किया था? कहा बताओ क्यों जुदा किया था? कहा तुम नमाज़ पढ़ रहे थे यूसुफ़ बराबर में सो रहा था। एकदम तड़पकर रोया तो नमाज़ के दर्मियान तेरी नज़र यूसुफ़ पर चली गई क्योंकि मुहब्बत थी याक़ूब

अलैहिस्सलाम बेक़रारी की मुहब्बत थी। तो तेरी नज़र यूँ गई कि यूसुफ़ क्यों रोया? यूसुफ़ क्यों रोया? तो बस यहीं पर मैंने कह दिया कि मेरा रसूल हो, मेरा नबी हो और नमाज़ में मेरे ग़ैर को सोचे जिन आँखों से देखा है वे आँखें वापस ले लूँगा और जिसको देखा है उसको जुदा कर दूँगा। चालीस बरस तक। हम तो बग़ैर किसी वजह के नमाज़ में इधर-उधर देख रहे होते हैं। हमारे साथ तो यह नहीं करेगा, उसे पता है कि ये छोटे लोग हैं। कम अमल पर शबाश, ज़्यादा बज़ारी लोग हैं।

अमल कम शबाश ज़्यादा

मेरा छोटा बच्चा तीन चार साल का है। वह कापी पर ऐसे उल्टी सीधी लकीरें मारकर मुझे दिखाता है बाबा कैसा लिखा है? मैं कहता हूँ माशाअल्लाह बेटा आपने बहुत ज़बर्दस्त लिखा है। कुछ किया तो शाबाश मिली। अल्लाह की क़सम हम इस बच्चे की तरह हैं। हमारे पास कोई अमल भी अल्लाह के लायक़ नहीं है। है ही नहीं जिसका दावा कर सकें।

अरे कुछ करो तो सही, (चाहे) ग़लत करो। करो तो सही। मस्जिद को आओ तो सही, सिर झुकाओ तो सही, आँसू बहाओ तो सही, अपनी माँ के क़दमों में बैठो तो सही, उनकी दुआएं लेना शुरू करो तो सही, अपने तराज़ू तो ठीक करो।

हम कितने ही बुलन्द हो जाएं फिर भी उस बच्चे की उल्टी सीधी लकीरों के सिवा हमारे पास कुछ नहीं है। मैं जब बाप होकर अपने बेटे की उल्टी लकीरों को कहता हूँ शबाश बेटा तूने

बहुत अच्छा लिखा है तो मेरा रब तो ऐसा है कि काएनात में उस जैसा कोई मुहब्बत करने वाला नहीं। मैं कहूँगा अल्लाह बस यही किया तो अल्लाह कहेगा शबाश! शाबाश! चल जा।

नाचने वाला और मुसल्ले पर खड़ा होने वाला बराबर नहीं हो सकते

देखो भाईयो! अगर मुजरिम और आबिद बराबर हो जाएं, रात का शराबी और नमाज़ी अगर एक बराबर हो जाए, रात का नाचने वाला और रात का मुसल्ले पर तड़पने वाला एक जैसा हो जाए, रात का गाने वाला और तहज्जुद में क़ुरआन पढ़ने वाला अगर दोनों के लिए क़ानून एक जैसा हो जाए तो पागल था हुसैन रज़ियल्लहु अन्हु का क़ाफ़िला जो ऐसे ही अपनी जानें लुटा गया। अगर हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और इब्ने ज़ियाद को एक तराज़ू में रखना था, अगर शिमर लईन, इब्ने ज़ियाद और हुसैन व अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा और क़ासिम को एक ही तराज़ू में रखना था तो इतनी दर्दनाक कहानी वजूद में लाने की ज़रूरत क्या थी? अगर रिश्वत वाला और सिर्फ़ तंख़्वाह पर गुज़ारा करने वाला पैसे ख़त्म हैं बच्चा बीमार है, दवाई चाहिए, पैसा कोई नहीं, बच्चा तड़प रहा है, आँसू छलक रहे हैं और दवा के पैसे नहीं। वह सब्र कर रहा है कि बच्चे को हराम नहीं खिलाऊँगा चाहे तू भी मर जाए और मैं भी मर जाऊँ अगर इसको और रिश्वत लेने वाले को अल्लाह ने एक ही तराज़ू में तोलना है तो मेरा रब ऐसा नहीं है। किस किताब में लिखा हुआ है?

ख़ानदाने नबुव्वत के बहत्तर शहीद

मेरे बन्दो! बताओ, अल्लाह कह रहा है किस किताब में लिखा हुआ है कि रात के मुजरिम और महरम को मैं एक जैसा कर दूँगा? अल्लाह बहुत ग़फ़ूरुर्रहीम है।

जब काफ़िला चला। बच्चियों का, बेटियों का और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने पीछे मुड़कर देखा तो बहत्तर धड़ पड़े थे। सिर कटे हुए थे और उसमें मासूम अब्दुल्लाह का सिर भी कटा पड़ा था। अरे ज़ालिमों इसका सिर काट कर क्या लेना था। तो उनके मुँह से निकला था।

जितना रोईं उतना दुश्मन भी रोए कि आजा ऐ मुहम्मद मुस्तुफ़ा तुझ पर अल्लाह का दरूद व सलाम हो। तुझ पर आसमान के फ़रिश्तों का दरूद सलाम हो। आ! हुसैन को देख तो सही। आज बारात का दूल्हा बना हुआ है। उसने जोड़ा पहना है। बड़ा हसीन जो उसके अपने ख़ून से तैयार हुआ है। उसका ताना-बाना उसके ख़ून के क़तरों से है।

आज सेहरा बांधकर और दूल्हा बनकर नेज़े के ऊपर चल चुका है। आज उसे आज़ा कट चुके हैं। जिस्म फट चुका है। घोड़ों की टापों तले रौंदा जा चुका है। आज तेरी बेटियाँ क़ैद हैं, तेरी औलाद क़त्ल हो चुकी है। उनको किसी ने कफ़न न दिया तो हवाओं ने आगे बढ़कर ग़ुबार की चादर में कफ़न दे दिया।

इस कहानी को क्यों वजूद मिला? अगर सूद पर कारोबार करने वाले और हलाल कारोबार करने वाला एक ही तरह तोल दिए जाएंगे तो ये क़िस्से क्यों वजूद में आए?

अल्लाह बड़ा ही क़द्रदान है

मेरे भाईयो! अल्लाह हमारा क़द्रदान है। हमारी एक नेकी को दस गुना लिखता है। फिर उसको सात सौ गुना करता है फिर उसको बग़ैर हिसाब कर देता है तो आ जाओ भाईयों हम अल्लाह से सुलह कर लें और तौबा कर लें। इस पैग़ाम का नग़मा सीखो। इस पैग़ाम को फैलाने वाली धुन सीखा। क़ुरआन की धुन हो, रहमान का नग़मा हो फिर इसको लेकर फिरो। महबूबे ख़ुदा की ज़िन्दगी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत सीखो और नबुव्वत वाले अख़्लाक़ की थाली में उसे सजाकर ज़रा बाज़ार में आओ तो सही। इतने ख़रीदार मिलेंगे कि सिर न खुजा सकोगे। धोखा खा गए हम काग़ज़ के फूलों को गुलाब बताया गया। प्लास्टिक के पेड़ों को चमन बताया गया, रबड़ के फलों को हमें असली फल बताया गया। धोखा खा गए हम। कोई बाज़ार में असली तो फल लाए, कोई बाज़ार में असली फूल तो लाए, कोई बाज़ार में सही आवाज़ तो लगाए, कोई तौहीद का नग़मा तो सुनाए, कोइ रिसालत का गीत तो गाए।

दास्ताने ग़म

मेरे रब की क़सम गाने वालों को सुनने वाले नहीं मिलेंगे। नाचने वालियों को देखने वाले नहीं मिलेंगे पर कोई बाज़ार में तो आए—

बड़े शौक़ से सुन रहा था ज़माना
हम ही सो गए दास्तां कहते कहते

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीज़ा मुबारक, अतहर, मुतहर, अनवर, आज़म, अशरफ़, अकमल, आला और मुबारक प्यारी ज़िन्दगी को लेकर सारी दुनिया में फिरना यह हमारा काम है।

आँसुओं की करामात

आओ तौबा करें, अकेले भी सब मिलकर भी। साल की शुरूआत है। पिछला साल गया। बड़ी काली-काली स्याहियाँ हमारे दामन पर लगीं। देखता रहा, धब्बे देखता रहा फिर चुप करके अपनी बिसात को लपेटा पिटारी को उठाया और चल दिया। तो आओ आज ऐसी तौबा करें सिर्फ़ पिछला साल नहीं बल्कि पिछली ज़िन्दगी के जितने गुनाह हैं सबको अल्लाह से माफ़ करवा लें कि उसके नज़दीक तो एक हाय एक आँसू सत्तर बरस के गुनाहों, सत्तर हज़ार बरस के हों आँसू के क़तरे पर माफ़ कर देता है। तो आज भाईयो! तौबा करो।

तबलीग़ तबलीग़ी जमात का काम नहीं है। तबलीग़ उम्मते मुहम्मदिया का काम है। नमाज़ बूढ़ों का काम नहीं हर कलिमा पढ़ने वाले के माथे का झूमर है। सज्दे का मेहराब हमारे माथे का झूमर है। सज्दे की मेहराब हमारे पाँ की पाज़ेब है। अत्तहिय्यात में बैठने से जो पाँ में निशान पड़ते हैं।

रौशन पेशानियाँ

यह हमारी पाज़ेब है। देखना क़यामत के दिन कैसा रौशन

होगा? माथा और वह जगहें जिन पर सज्दों और नमाज़ पढ़ने में निशान पड़े। कयामत के दिन सूरज की तरह रौशनी उनसे खिल रही होगी। तो भाईयो तौबा करते हो? अल्लाह बड़ा करीम है।

हमारा काम तो बड़ा आसान है। ऊपर अल्लाह बड़ा मेहरबान नीचे रसूल बड़ा मेहरबान है। वह ऊपर रऊफ़ुर्रहीम है, यह नीचे रऊफ़ुर्रहीम है। हम दो रऊफ़ुर्रहीम हस्तियों के बीच हैं। काम बड़ा आसान है कि बस तौबा कर लें।

अल्लामा असफ़ेहानी रह० फ़रमाते हैं कि मैं क़ब्र मुबारक पर बैठा पढ़ रहा था। यह वह दौर था जब गुंबद न था, रौज़ा न था। दूसरी सदी या तीसरी सदी का दौर है। कहीं ज़माना देखा न ही किसी किताब में पढ़ा। अन्दाज़ा बता रहा हूँ।

देहाती के दर्द भरे अशआर

एक बद्दू आया और आकर कहने लगा ﴿اسلام علیك یا رسول الله﴾ सलाम पेश किया फिर कहने लगा आपके रब का फ़रमान है ﴿ولو انهم .... جاؤا رحیما﴾ तक कि मेरे महबूब अगर तेरी उम्मत गुनाह करके तेरे पास आ जाए और मुझ से माफ़ी मांगे और तौबा करे और साथ में तू भी सिफ़ारिश करे तो मैं उनको माफ़ कर दूँगा। यह क़ुरआन की आयत है। तो कहने लगा मैं आपके पास आया हूँ गुनाहों का इक़रार करके तौबा करके माफ़ी मांग के और आपको सिफ़ारिशी बनाता हूँ। आप अपने रब के दरबार में सिफ़ारिश करें कि मेरे गुनाह माफ़ कर दे। इसके बाद उसने चार शे'र पढ़े। इनमें दो शे'र आज भी जाली मुबारक के जो दो सतून

हैं दांए बाएं इन पर आज भी लिखे हुए हैं। और अल्लामा नुव्वी की किताब मजमुआ में लिखे हुए हैं। ये दोनों बड़ी मज़बूत किताबें हैं। उनमें यह वाक़िया लिखा हुआ है तो उसने शे'र पढ़ा—

ऐ वह हस्ती! ऐ वह मुबारक ज़ात! जिसके क़ब्र में जाने की बरकत से ज़मीन का अन्दर भी मौत्तर हो गया और ज़मीन का बाहर भी मौत्तर हो गया। वादियाँ भी ख़ुशगवार हो गयीं, चोटियाँ भी ख़ुशगवार हो गयीं। मेरी जान क़ुर्बान हो इस क़ब्र पर जिस पर आप आराम फ़रमा रहे हैं कि आपके साथ आपकी सख़ावत भी मौजूद है, आपकी बरकत भी मौजूद है, आपका दरगुज़र करना भी मौजूद है, आपका आला ज़रफ़ भी मौजूद।

ये दो शे'र और भी लिखे हुए हैं।

जब पुलसिरात पर क़दम डगमगा रहे होंगे और पत्ते पानी हो रहे होंगे। उस वक़्त आपकी शफ़ाअत का आसरा है कि हम पार हो सकेगें। हमारे पास कोई अमल नहीं जिस पर भरोसा करके उसको पार भेज सकें। जब उम्मते मुहम्मदिया पुलसिरात पर आएगी तो मेरा नबी कहेगाः—

﴿یا ربی سلم سلم﴾

ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत को पार लगा दे। अरे मेरे भाईयो जो पुलसिरात पर न भूला, जो दुनिया से जाने के बाद न भूला, जो दुनिया से जाते वक़्त न भूला उसकी सुन्नतों को ज़िब्ह कर दिया हमने। कौन सी शादी है जिसमें ढोल नहीं बजता, नाच नहीं होता। अरे भाई क्या कर हो? अरे बच्चें हैं ज़रा ख़ुशी कर रहे हैं। हाय तुमने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी ख़ुश करने का सोच लिया होता। तुमने अपने बच्चों को तो ख़ुश किया मगर उस

महबूब को नाराज़ कर लिया जो तुम्हारे लिए आँसू बहाता गया।

आपकी नसीहत मुलाज़िमों से अच्छा सुलूक करना

हमारी मुहब्बत मतलब की है। बीवी बात न माने तो सारी मुहब्बत नफ़रत में बदल जाती है। औलादें नफ़रत करतीं हैं और जिन औलादों को पाला है वे ग़ुर्राने लगीं तो माँ-बाप नफ़रत करने लग जाते हैं। हमारी सारी मुहब्बतें मतलब की हैं। मेरे महबूब को मेरे प्यारे नबी को उम्मत से प्यार बग़ैर लालच के था। सिर्फ़ सहाबा से नहीं था। जाने से एक हफ़्ता पहले अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हाज़िरे ख़िदमत हुए। आँखों में आँसू आ गए। आपने फ़रमाया वक़्त आ चुका है। मेरा तुम्हें आख़िरी सलाम हो। मेरे बाद मेरी उम्मत आए उन्हें भी कहना कि तुम्हारा नबी तुम्हें सलाम कह गया था।

ग़ुलाम, मुसलमान, ड्राइवर, बावर्ची, घर के काम करने वालों से अच्छा सुलूक करना। कितने हैं जो नौकरों का एहतिराम करते हैं? कितने हैं जो ग़ुस्से में अपने को गाली से बचाते हैं? आख़िरी वसीयत भी पारा-पारा कर दी।

दोज़ख़ की चीख़

और पुलसिरात आ चुका है। जहन्नम आ चुकी है, जन्नत आ चुकी है और काएनात थर-थर काँप रही है, अर्श सिर पर आ चुका है, फ़रिश्ते तराज़ू थाम चुके हैं। वह हिल रहा है और सबके दम घुट रहे हैं। एकदम दोज़ख़ एक चीख़ मारेगी। इस चीख़ पर बड़े-बड़े इन्सान मुँह के बल गिरेंगे, फ़रिश्ते गिरेंगे और सालेह

अमल रखने वाला इन्सान भी एक वक़्त यूँ कहेगा कि आज मेरी निजात नहीं। बेसाख़्ता नबी पुकार उठेंगे

अंबिया और जहन्नम का ख़ौफ़

आदम अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

शीश अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

नूह अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

इदरीस अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

सालेह अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

हूद अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

शुऐब अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

इब्राहीम अलैहिस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

लूत अलैहिस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

हारून, मूसा, यूशा अलैहिमुस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

याह्या ज़करिया अलैहास्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

दाऊद, सुलेमान अलैहास्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

दानियाल अलैहिस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

ईसा अलैहिस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी या अल्लाह मैं अपनी माँ मरयम का भी सवाल नहीं करता। मेरी जान बचा। मैं और आप किसको याद करेंगे?

और इधर देखो, इसकी सुनो जो इस सारे मजमे में, सारे महश्र में, इन सारे मर्दों में, इन सारी औरतों में, नबियों में, रसूलों में, फ़रिश्तों में एक हस्ती है जिसकी धुन निराली है, जिसकी आहें निराली हैं, जिसकी सोज़ और है, जिसकी दुआ और है, जिसकी पुकार और है, उसके हाथ अर्श की तरफ़ उठे हुए हैं और नफ़्सी-नफ़्सी नहीं कह रहा है। वह कह रहा हैः

"या रब्बी उम्मती-उम्मती", "या रब्बी उम्मती-उम्मती"

मेरे मौला मेरी उम्मत बचा, मेरे मौला मेरी उम्मत बचा।

नहीं बचाना फिर भी बचा ले। मेरी उम्मत को माफ़ कर दे। नहीं करना है फिर भी माफ़ कर दे। मैंने क्या बदला दिया? मैंने तेज़ धार का ख़ंजर उठाया और उसकी सीरत पर भी वार किया और उसकी सूरत पर भी वार किया। उसे टुकड़े-टुकड़े करके बखेर दिया।

हाय ऐसे वफ़ा करने वाले से जफ़ा कर गए। पुलसिरात पर से गुज़र रहें हैं और कह रहे हैं ﴿یا رب سلم سلم﴾ अल्लाह मेरी उम्मत को पार लगा दे। तो वह बद्दू कह रहा है आपके तुफ़ैल ही से तो पुलसिरात पार होगा।

या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं अबूबक्र, उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भी नहीं भूल सकता। उनका भी उम्मत पर एहसान है। मेरा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर सलाम हो और होता रहे और पहुँचता रहे और चलता रहे जब तक लिखने वाले का क़लम लिखता रहे, अदीब का अदब शहपारे बखेरता रहे, जब

तक कागज़ कलम चलते रहें, कापियाँ दफ़्तर स्याह होते रहें या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरा आपको सलाम पहुँचता रहे। आज भी उस बद्दू का सलाम हुज़ूर को जा रहा है कि क़लम चल रहे हैं, कापियाँ ख़त्म हो रही हैं और रजिस्टर काले हो रहे हैं।

शराब के जाम

अल्लाह तआला ने ऐसा हुस्न व जमाल उनको बख़्शा है कि एक हाथ में जाम दूसरे हाथ में सुराही होगी। कहेंगी कि यह ले तूने अपने आपको हराम से बचाया। आज हम पिला रहे हैं। एक इससे ऊपर का दर्जा है वह तो साक़ी भी निराला है और महफ़िल भी निराली है और आलम भी दोबाला वाह! वाह! क्या होगा?

﴿وسقاهم ربهم شرابا طهورا.﴾

वहाँ अल्लाह ख़ुद डाल कर पिला रहा होगा। आ जाओ मैं पिलाता हूँ। वाह! वाह! साक़ी अल्लाह जाम तसनीम हो। तसनीम जन्नतुलफ़िरदौस की शराब है जो दूसरे जन्नतियों को नहीं मिलेगी। सिर्फ़ जन्नतुलफ़िरदौस वाले पिएंगे। थोड़ी सी मिलावट करके बाक़ी जन्नतियों को दी जाएगी लेकिन फ़िरदौस वालों को ख़ालिस पिलाई जाएगी।

﴿مزاجه من تسنيم عينا يشرب بها المقربون.﴾

नीचे वालों को मिलावट करके ऊपर वालों का ख़ालेस दी जाएगी।

वहाँ शराब तसनीम है, जाम फ़िरदौसी है, साक़ी अल्लाह है। अब मैं इसको कैसे बयान करूं? और आप कैसे समझें? तो जब अल्लाह कहता है यह न करो तो मुफ़्त में नहीं कह रहा है बहुत कुछ दे रहा है। कहा ज़िना न करो मुफ़्त में नहीं कह रहा है मैं तेरी शादी करूंगा

जन्नत की हूर "लाएबा" का हुस्न

﴿زوجهم بحور عين﴾ मैं तेरी शादी करूंगा जन्नत की हसीन लड़कियों के साथ। जन्नत में एक हूर है जिसका नाम "लाएबा" है। वह ऐसी हसीन है जिस पर ख़ुद जन्नत की हूरें आशिक़ हैं। मुश्क ज़ाफ़रान, अंबर, काफ़ूर से बनी है। और जन्नत की हूरें अगर हमें उसका हुस्न पता चल जाए तो कुछ तेरे लिए क़ुर्बान कर दें। पर मुश्किल यह है कि वह नज़र नहीं आ सकतीं अगर नज़र आ जाएं तो हम सह नहीं सकते, मर जाएं। लाएबा खेलने वाली अपने ख़ाविन्द से लाड करने वाली। उसके माथे पर लिखा हुआ है।

﴿ما احب ان يكون له مثلى فليعمل برضاء ربى﴾

जो मुझ से शादी करना चाहता है। मेरे रब को राज़ी करे। मुझे राज़ी करे। जो मेरे रब को राज़ी करे मैं उसकी हूँगी। जन्नत की औरतें पैदा नहीं होतीं जैसे दुनिया की औरत का बच्चा, बच्ची पैदा होती है। वह ढकी हुई है। उसके अन्दर मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान, काफ़ूर मिलता है जैसे आटा गूंधा जाता है मशीन में यूँ चलता है। एकदम से अल्लाह का नूर आकर उसमें पड़ता है तो

उसमें से जन्नत की हूर तैयार होकर बाहर निकलकर आती है। अल्लाह तआला ने उसे सौ-सौ जोड़े पहनाए, उसके चेहरे पर अपने नूर की तजल्ली डाली। अब अरबों खरबों साल भी उसका हुस्न मांद नहीं पड़ेगा, दमकता जाएगा, चमकता जाएगा, महकती जाएगी न हुस्न में कमी न नाज़ व अन्दाज़ में कमी आएगी और हर नज़र में पहले से बहत्तर गुना हसीन हो जाएगी। जब यह निकलकर बाहर आती है तो उनको ख़ेमों में बिठाया जाता है। फिर ये मिलकर गाने लगती हैं।

सत्तर साल तक गाना सुनने वाले कौन?

एक दफ़ा जुनैद जमशेद कहने लगा कि हमारा गाना होता है साढ़े तीन मिनट का। लोग ख़ुश होते हैं तो हम एक गाना गाते हैं तो दस मिनट आख़िरी हद है। मैंने कहा तुम्हारा लम्बे से लम्बा गाना दस मिनट का और जन्नत का छोटे से छोटा गाना सत्तर साल और कौन सुनेगा? अल्लाह पाक ऐलान करेगा मेरे वह बन्दे कहाँ हैं जो ख़ानेवाल में गाना नहीं सुनते जो दुनिया में गाना नहीं सुनते थे?

कहाँ हैं वह बन्दे जो दुनिया में गाना नहीं सुनते थे। आओ आओ आज सुनो! अपने रहमान की जन्नत में और एक आदमी ऐसा बैठा होगा, यूँ लेटा होगा, यह उसका हाथ होगा। दो लड़कियाँ ऐसे बैठी होंगी और दो सिरहाने में फिर उनसे कहेगा मैं ख़ानेवाल में गाना नहीं सुनता था अल्लाह ने हराम किया हुआ था। वे कहेंगी तुम ने किस गंदी चीज़ का नाम लिया आओ हम

तुम्हें जन्नत के गीत सुनाते हैं। वह ऐसे ही बैठा होगा और दूसरी तरफ़ दो पाँव की तरफ़ बैठी होंगी। वह एकदम सिर उठाएंगी, उसके साथ पेड़ साज़ बन जाएगा, हवा मौसिक़ार होगी, पेड़ साज़ होगा, हूर की आवाज़ होगी। ये तीन मिलकर शुरू होंगे तो सत्तर बरस तक गाएंगी।

जन्नत के ख़ूबसूरत परिन्दे

और वह आदमी यहाँ से न सो सकेगा। इसी में मस्त पड़ा हुआ है। वह जब चुप होंगी, यह नहीं कहेगा चुप हो। जिस चीज़ से अल्लाह ने रोका है आगे उसकी क़ीमत लगाई है। मुफ़्त में नहीं रोका। करो तो सही, हराम न खाना, क्यों खाने तैयार हैं तेरे लिए।

﴿ولحم طير فاكهة مما يشتهون.﴾

फल आ रहे हैं, झुके हुए, पके हुए, लटके हुए, सजाए हुए, छिलका कोई नहीं। खाओ पाख़ाना नहीं, पियो पेशाब नहीं। परिन्दे उड़ते हुए आ रहे हैं, जानवर भागे हुए आ रहे हैं। हमें आप खाएंगे? परिन्दे आ रहे हैं, हमें आप खाएंगे? परिन्दों में मुक़ाबला हो रहा है। यह कहेगा मुझे खाओ, वह कहेगा मुझे खाओ, तीसरा कहेगा मुझे खाओ, चौथा कहेगा मुझे खाओ। एक कहेगा मुझे खाओ मैं जन्नतुलफ़िरदौस की घास खाकर आया हूँ, सलसबील के चश्मे से पानी पीकर आया हूँ। एक तरफ़ से कबाब खिलाऊँगा। मुझे खाओ। अपने फ़ज़ाईल खुद बता रहा है। मुझे खाओ क्योंकि उन्हें पता है कि मरना कोई नहीं। यहाँ तो अपने घर में मुर्ग़ी उसके अंडे से बच्चा निकला, उसको दाना खिलाकर परवान

चढ़ाया। अब उसे ज़िब्ह करने के लिए ले गए।

जन्नत के लज़ीज़ खाने

और यहाँ बड़े मज़े हैं। वह खुद आर रहे हैं। आप हमें खाएं, आप हमें खाएं। उन्हें पता है कि खाने के बाद हम खुद ज़िन्दा हो जाएंगे। मौत नहीं है। फिर जब कहेंगा खिलाओ तो अपने पर फैला देगा। सत्तर हज़ार होंगे फिर उनको ऐसे-ऐसे करेगा तो हर पर से खाने की एक क़िस्म गिरेंगी। सत्तर हज़ार क़िस्में खाने की एक परिन्दे की खाएगा। खा रहा है, खा रहा है, खा रहा है। हर लुक़मे की लज़्ज़त पहले से बढ़ जाएगी। अब वह ज़माना नहीं कि दाँत टूट गए। बनावटी दाँत अब वह ज़माना गया। खाओ अब हर लुक़मा की लज़्ज़त पहले से बढ़ रही है। मुँह में रोटी रखी, ख़्याल आया चावल का तो चावल मंगाने नहीं पड़ेंगे। वही लुक़मा चावल बन गया।

ख़्याल बोटी का आया तो बोटी की तरफ़ हाथ बढ़ाने की ज़रूरत नहीं। वही लुक़मा बोटी बन जाएगा। उसे खाते-खाते ख़्याल आया मछली के कबाब का तो वही लुक़मा मछली का कबाब बन जाएगा। उसी के खाते-खाते ख़्याल आया केले का तो वह केला बन जाएगा, आम का तो आम बन जाएगा, अमरूद का तो अमरूद बन जाएगा, अनार का तो अनार बन जाएगा, पिस्ते का तो पिस्ता बन जाएगा। एक लु:5में में नियतें बदलता जाए वह वह होता जाएगा। मिठाई का ख़्याल आया तो मिठाई हलवे का ख़्याल आया तो हलवा बना, खीर का तो खीर बना, आलू का

ख़्याल आया तो आलू बना, कबाब का ख़्याल आया तो कबाब बना।

﴿ولكم فيها ما تشتهي انفسكم ولكم فيها ما تدعون.﴾

जो चाहोगे अल्लाह से तो मुफ़्त कोई चीज़ नहीं है। बड़ी क़ीमत लगेगी, बड़ी क़ीमत लगेगी। मेरे भाई दुनिया को गुज़रगाह बनाओ।

आख़िरत की तैयारी कर लो

जन्नत के आमाल को ज़ख़ीरा बनाओ आख़िरत के लिए। एक दिन यक़ीनन ऐसा आएगा कि हम में से एक भी धरती पर ज़िन्दा न होगा और एक दिन यक़ीनन ऐसा आएगा कि हमारे नाम के जानने वाले भी मर जाएंगे और फिर हमारे तज़्किरे भी मिट जाएंगे और हमारी क़ब्रें भी मिट जाएंगी और बेनिशान हो जाएंगे। एक अकेला वह रह जाएगा। तन्हे तन्हा वाहिद अल्लाह। तो जन्नत का शौक़ रखो। दोज़ख़ का ख़ौफ़ रखो तो इस जहान में भी मज़े हैं।

आख़िरत में भी मज़े। अल्लाह हिम्मत दे तो चार-चार महीने जल्दी लगा लें। हिम्मत करो चार महीने जल्दी लगाओ और अपने अख़्लाक़ अच्छे कर लो। नुस्ख़ा बताता हूँ जन्नतुलफ़िरदौस में घर बनाने का अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा मैं ज़ामिन हूँ तुम अख़्लाक़ अच्छे करो, मैं जन्नतुलफ़िरदौस में घर लेकर दूँगा।

अच्छे अख़्लाक़ पैदा करो

अच्छे अख़्लाक़ किसे कहते हैं? जो तोड़े उससे जोड़ो, जो गाली दे उसे दुआ दो, जो तुम्हारे ऐब उछाले तुम उसके ऐब छिपाओ, जो तुम्हारा हक़ छीने तुम उसका हक़ अदा करो तो इन अख़्लाक़ पर अल्लाह जन्नतुलफ़िरदौस में घर देगा।

बड़े-बड़े तहज्जुदगुज़ार इबादतगुज़ार, नीचे होंगे और अच्छे अख़्लाक़ वाले ऊपर होंगे। तो मेरे नबी ने फ़रमाया कि जो अपनी सारी ज़िन्दगी सारी रात तहज्जुद पढ़े, सारी ज़िन्दगी सारे दिन रोज़ा रखे इतना बड़ा अमल लेकर आए मगर अच्छे अख़्लाक़ वाला उससे भी ऊँचे मक़ाम पर होगा। भाई गुस्सा पीना सीखो, निकालना न सीखो, पीना सीखो। मुहब्बतें परवान चढ़ जाएंगी, अदावतें वीरान हो जाएंगी। इन्साफ़ ज़िन्दा हो जाएगा। और बेटियों को जाएदाद में से हिस्सा दो। अरे हम यहाँ ज़मींदार लोग अपनी बच्चियों का ज़मीन में से हिस्सा नहीं देते। यह ज़ुल्मे अज़ीम है, जुर्मे अज़ीम है। जिस पुश्त के पानी से बच्चा बना उसी से बच्ची बनी और बेटियों का हक़ खा जाना, बहनों का हक़ न देना हर साल हज नहीं रोज़ाना अगर अरफ़ात बन जाए और तुम रोज़ाना हज करो, रोज़ाना रमज़ान बन जाए तुम सारी ज़िन्दगी रोज़े रखो फिर भी अल्लाह की पकड़ से नहीं बच सकोगे। अगर बेटियों और बहनों का हक़ खा लिया तो हम ही ज़मींदारों में कोई दस्तूर नहीं, बेटियों को ज़मीन नहीं देते कि हमारी ज़मीन पराई न हो जाए मगर बहुत बड़ी क़ीमत देनी पड़ेगी। इसका पता नहीं ताजिर क्या करते हैं? ज़मींदार तो नहीं देते। सबसे पहले इस

इलाक़े में मेरे बाप ने बेटियों को हिस्सा दिया था।

मेरा ताया लड़ पड़ा था। बजाए शाबाश देने के सबने लान-तान किया मेरे बाप को। यह हिन्दू धर्म में बेटियों का कोई हिस्सा नहीं। अपनी बेटियों को हिस्सा दो। विरासत मौत के बाद है मगर अपने बाद ऐसा इन्तिज़ाम करके जाओ कि तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारे बेटे बहनों का हक़ न खाएं वरना आप भी पकड़े जाएंगे। अल्लाह पाक ने अपने नबी को बेटियाँ दीं। बेटे दिए तो उठा लिए। अल्लाह तआला जिसको दो बेटियाँ दें या दो बहनें दे और वह उन पर ख़र्च करता रहा, पालता रहा फिर शादी की डोली में बिठाया, पिया घर पहुँचाया फिर उनकी शादी के बाद भी उन पर ख़र्च करता करता मर गया तो उस पर जन्नत वाजिब हो गई। कोई बहन दुखी हो, माँ-बाप न हों, भाई देने को तैयार नहीं होते।

अरे ये हमारे अपने बच्चे हैं, इन्हें देखना है तो भाई अपनी बहनों का हक़ दो।

मौलाना जमशेद मद्देज़िल्लहु का ख़ौफ़े ख़ुदा

मैं एक दफ़ा राएविन्ड गया अपने घर से शहद लेकर गया। मेरे उस्ताद हैं मौलाना जमशेद साहब मैंने उनसे तफ़सीर पढ़ी है। मैंने उनकी ख़िदमत में पेश किया तो पूछने लगे कहाँ से लाए हो? अपने बाग़ से? कहने लगे तेरे बाप ने अपनी ज़मीन में से बहनों को हिस्सा दिया था? यह नहीं कहा माशाअल्लाह जज़ाकअल्लाह। जिनहोंने आख़िरत को सामने रखा होता है उनके अन्दाज़ भी सुन लो। मुझसे कहने लगे कहाँ से लाए? मैंने कहा अपने बाग़ से। तेरे बाप ने अपनी ज़मीन में से अपनी बहनों का हिस्सा दिया था?

मैंने कहा मेरे बाप की बहन नहीं थी सिर्फ़ दो भाई थे। अच्छा तेरे दादा ने ज़मीन में से अपनी बहनों को हिस्सा दिया था? मैंने कहा मेरे पैदा होने से पहले के सवाल न करो। मुझे नहीं पता। हंसने लगे कहने लगे अच्छा ठीक है रख दो। बाज़ार का आम नहीं खाते मैं भेजता हूँ वह खाते हैं। कहते हैं कि ये जितने ज़मींदार हैं हराम तरीक़े से बाग़ का सौदा करते हैं कि बाग़ आमतौर से पत्तों पर बिक जाते हैं। अभी बाग़ काटा गया अभी आगे बेच दिया। हलाल रोटी हराम करना ख़ालिस हलाल रिज़्क़ को हलाल कर दिया। अरे चार दिन सब्र कर लो फल ज़ाहिर होने दो फिर बेच लेना। फल अभी नहीं आता और बेच देते हैं। मेरे बारे में उनको पता है सही करता है। मैं जब भेजता हूँ बस वह खाते हैं। तो भाईयो उलमा से पूछो रिज़्क़ कैसे कमाया जाता है?

तो मेरे भाईयो! आओ हम तौबा करें। अपने रब को मनाएं, उसके हुक्मों पर आएं। उसको लेकर दुनिया में फिरें। यही तबलीग़ का काम है। इसमें अख़्लाक़ के साथ मुहब्बतें फैलाओ, नफ़रतें न फैलाओ। ऐ मेरे भाईयो ग़ीबत के लिए होंट सी लो।

ग़ीबत ज़िना से बड़ा गुनाह है

मेरे रब की क़सम एक हज़ार तसबीह से ज़्यादा मुक़द्दस अमल और अफ़ज़ल अमल है किसी की ग़ीबत से ज़बान को बन्द कर लेना। सैकड़ों और हज़ारों नफ़्लों से भारी है किसी की चुग़ली से मुँह को सी लेना, किसी को ताना देने से होंट सी लेना। किसी की ग़ीबत करने से अपने आपको बचा लेना, लगाई बुझाई से अपने आपको बचा लेना। मेरे भाईयो ज़बान को रोको। यह जो

चलना शुरू होती है तो माँओं से भी नौकरों जैसा सुलूक हुआ।

मासूम बच्ची के मोटे मोटे आँसू

अभी कुछ दिन पहले की बात है मैं एक बच्ची को सुन रहा था अपनी माँ से कह रही है भूख नहीं और उसके मोटे-मोटे आँसू गिर रहे थे। माँ के आँसू गिर रहे थे अर्शे इलाही हिल रहा है, धरती थरथरा रही है, कपकपा रही है और गालियाँ हुकूमत को दे रहे हैं, फ़ौज बड़ी गंदी है, हुकूमत बड़ी गंदी है, पुलिस बड़ी गंदी है।

माँ की आँखों की ठंडक बनो

अरे उस बेटे ने, उस बेटी ने धरती को आग लगा दी जिसने बाप का गिरेबान पकड़ा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के सामने किसी ने माँ को कंधे पर बिठाकर तवाफ़ कराया। आकर कहने लगा क्या ख़्याल है मैंने माँ का हक़ अदा कर दिया? हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया तेरी माँ ने तुझे पालते हुए पता नहीं कितने साँस लम्बे-लम्बे लिए होंगे उनमें से एक साँस का भी हक़ अदा नहीं हुआ। माँओं की आँखों की ठंडक बनो, बाप की दुआएं लो। हाँ फ़रमाबरदारी के अन्दर नाफ़रमानी में नहीं। बाप कहे दाढ़ी मुंढा दो। यहाँ बाप की इताअत जाएज़ नहीं है। माँ कहे हराम कमाकर ला इसमें माँ की इताअत जाएज़ नहीं है और मेरे भाईयो! माँ-बाप को जन्नत बनाओ वे तुम्हारी जन्नत हैं, वह तुम्हारी दोज़ख़ हैं।

उनकी मानकर उनको ख़ुश करो जन्नत है उनकी नाफ़रमानी करो जहन्नम है।

माँ का नाफ़रमान जहन्नम में जाएगा

सहाबी सब जन्नती। कोई सहाबी दोज़ख़ में नहीं जा सकता। सब सहाबा जन्नती हैं और जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने मर गए और आपने जनाज़े पढ़ाए वे हज़ार फ़ीसद जन्नती हैं। आपकी ज़िन्दगी में एक सहाबी मर रहे हैं। भागे हुए लोग आ रहे हैं।

या रसूलुल्लाह! आपका गुलाम कलिमा नहीं पढ़ रहा है। आप बेक़रार होकर उठे। देखा किस गुनाह ने कलिमे से रोक दिया है। उनकी माँ को बुलाया। माँ आयीं। कहा अम्मा! अपने बेटे को माफ़ कर दे। कहा या रसूलुल्लाह! इसने मुझे बड़ा तंग किया है मैं माफ़ नहीं करूंगी। आपने कहा फिर मैं इसको आग लगा दूँ? हमेशा औलाद ही गुस्ताख़ हुआ करती है। माँ-बाप नहीं छोड़ते औलाद को औलाद ही माँ-बाप को छोड़ देती हैं। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! मैं यह तो सह नहीं सकती कि आग लगा दें। कहा अगर तूने माफ़ नहीं किया तो सीधा दोज़ख़ की आग में जाएगा। सहाबी होना भी उसे बचा नहीं सकता। उसने कहा मैं माफ़ करती हूँ। उसने इधर कहा माफ़ करती हूँ उधर उसने कहा "ला इलाहा इलल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" और साथ जान निकल गई।

बेहयाई को आग लगा दो

तो मेरे भाईयो! आओ तौबा करें, नया साल है, नई ज़िन्दगी

की बुनियादें रखें। सुबहें होने वाली हैं, इन्शाअल्लाह बातिल ज़ुल्म व सितम, बेहयाई इन सबकी आग ख़त्म होती है और हो रही है दिन ढल नहीं चुका बल्कि मग़रिब के उफ़क तक पहुँच चुका है अगर यह काएनात अल्लाह की है तो यह होकर रहेगा। तौबा करते हो सारे? एक दफ़ा मुँह से कह दो या अल्लाह मेरी तौबा जिन्होंने की है सच्ची तौबा, मेरे कहने पर नहीं, सच्ची तौबा की है उनको मुबारक हो। अल्लाह की क़सम उनके सब गुनाह माफ़ हो गए और अल्लाह उनका अर्शों पर नाम लेकर कह रहा है, फ़लाँ बिन फ़लाँ ने तौबा की फ़रिशतों तुम गवाह हो मैंने माफ़ कर दिया। हक़ तलफ़ियाँ माफ़ हो गयीं, हक़ बाक़ी रह गए। नमाज़ नहीं पढ़ता था, बहुत बड़ा गुनाह किया, माफ़ हो गया लेकिन नमाज़ की क़ज़ा बाक़ी है ज़मीन दबा ली थी, दबाए रखी। बहुत बड़ा जुर्म किया, माफ़ हो गया लेकिन ज़मीन की वापसी बाक़ी रह गई। यह मतलब है माफ़ होने का कि फ़राईज़ व हक़ूक़ तलफ़ी का गुनाह माफ़ हो गया।

तबलीग़ को अपना मक़सदे ज़िन्दगी बना लो

तो मेरे भाईयो! सारी उम्मत से तौबा कराना, सारी नस्लों से तौबा कराना, सारी दुनिया के इन्सानों को पैग़ामे हक़ सुनाकर उनके कुफ़्र से तौबा कराना यह हमारा काम है। यह हमारी मेहनत है। इसी के लिए घरों को छोड़ना, मुल्क-मुल्क फिरना, दर-दर फिरना इसके लिए हम वक़्त मांगते रहे हैं। इसलिए बोलो भाई तौबा तो कर ली। सब ने तौबा पक्की कर ली। अब बोलो भाई कौन-कौन तैयार है? चार महीने के लिए चालीस दिन के लिए।

﴿كنتم خير امة﴾ तुम सबसे बेहतर उम्मत हो। बेहतरीन होना किस वजह से है। यह हमारी अकेले की इबादत की वजह से नहीं है बल्कि अल्लाह तआला ने हमें यह दौलत दी है। दावत व तबलीग़ के काम की वजह से।

﴿خير امة﴾ बहुत अच्छी हो तुम घरों से निकलते हो। क्या करते हो?

﴿تامرون بالمعروف وتنهون عن المنكر تؤمنون بالله﴾

भलाई फैलाते हो बुराई से रोकते हो और इसका बदला अल्लाह तआला से लेते हो।

﴿تؤمنون بالله﴾ का मतलब अल्लाह पर ईमान लाते हो लेकिन इशारा यह है कि सारी मेहनत का सिला अल्लाह से ले। अल्लाह ने सदियों के बाद इस मेहनत को इज्तिमाई तौर पर ज़िन्दा किया है। यह नहीं कि तबलीग़ का काम हुआ नहीं। तबलीग़ का काम कभी नहीं मिटा वरना तो इस्लाम ही मिट जाता। अफ़राद करते रहे। बड़े ज़माने के बाद अल्लाह तआला ने इसको ज़िन्दा किया है कि अवाम भी कर रहे हैं, ख़्वास भी कर रहे हैं, उलमा भी कर रहे हैं और दुनियादार भी कर रहे हैं और अनपढ़ भी कर रहे हैं और अल्लाह हर एक से कोई न कोई भलाई फैला रहा है। औरों को अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से हिदायत दे रहा है। तो आप कितनी तकलीफ़ गवारा करेंगे? हर महीने तीन दिन तो लगा लिया करें। हर महीने तीन दिन लगाएं। आप किसी गाँव से आए हो, शहर से आए हो, क़स्बे से आए हो, वहाँ से जमात बने, वहाँ से न बने यहाँ मर्कज़ में बने, यहाँ तीन दिन की जमात में निकल गए। तीन दिन निकलना यह आपकी ज़िन्दगी को बदल देगा।

नमाज़ में सुस्ती न किया करो

आहिस्ता-आहिस्ता पूरी ज़िन्दगी का रुख़ बदल जाएगा। इसको मामूली न समझें। नमाज़ एक फ़र्ज़ है कि जिसकी किसी हाल में माफ़ी नहीं और मर्द की नमाज़ मस्जिद में है घर में नहीं। आज़ान के साथ ही दुनिया के काम छोड़ देने का हुक्म है और मस्जिद की तरफ़ क़दम बढ़ाने का हुक्म है। तो आप लोगों से गुज़ारिश है कि जब आज़ान हो तो अपनी-अपनी दुकानें बन्द कर दें, दफ़्तर बन्द कर दें।

﴿حي على الصلوة﴾ के बाद क़लम रुक जाएं, तराज़ू झुक जाएं और मस्जिद को क़दम उठें। शटर गिरा दो दुकानों के अल्लाह ख़ुश होगा कि मेरे लिए काम छोड़कर जा रहे हैं।

खेत में जहाँ है काम छोड़ दो। मस्जिद क़रीब नहीं है आज़ान दो, वज़ू करके ज़ोर से आज़ान दो, कोई आदमी मिले उसे मिलाकर जमात कराओ कोई नहीं मिलता तो इक़ामत कहो और अल्लाहु-अकबर कहकर नमाज़ शुरू करो ज़ोर से कह इस इलाके में जितने मुसलमान जिन्न हैं आपके साथ नमाज़ में शरीक हो जाएंगे। आज़ान दे और तकबीर पढ़े इसके साथ वहाँ के अहले ईमान जिन्नात भी शरीक हो जाएंगे। तो नमाज़ को ऐसे ज़िन्दा करो भाईयो! कि जब आज़ान हो तो पूरा ख़ानेवाल बन्द हो जाए, सारे दफ़्तर बन्द हो जाएं, दुकानें बन्द हो जाएं, घरों में चुल्हे बुझ जाएं, औरतें मुसल्लों को दौड़ें। यह मेरे और आपके महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आख़िरी वसियत थी।

﴿الصلوة، الصلوة﴾ नमाज़! नमाज़! नमाज़! कहते-कहते आप

दुनिया से चले गए तो कोशिश करेंगे। जिन भाईयों पर ज़कात फ़र्ज़ है उसका पूरा हिसाब लगाकर अदा करें। ज़मींदारों के लिए अश्र् अल्लाह ने रखा है कि उसको पूरा अदा करें। और गेहूँ कटकर आने को है अभी से नियत करके रखें कि इसका अश्र् अदा करना है। बीसवाँ हिस्सा अश्र् से मुराद यहाँ क्योंकि हमारी ज़मीने बारानी नहीं है इनको कुँए का नहर का पानी लगता है तो यहाँ बीस मन पर एक मन है।

ज़कात देने में कोताही न करो

बारानी इलाक़ों में दस मन पर एक मन और नहरी इलाक़ों में बीस मन पर एक मन है। बीस मन में से एक मन निकल जाए तो पता भी नहीं चलता लेकिन सारे दाने पाक हो जाते हैं। सौ मन में से पाँच मन बचाकर कोई काम न हो सकेगा। पूरा सौ का सौ नापाक हो जाएगा। लाख में ढाई हज़ार बच जाएं तो कोई बड़ा मस्अला हल नहीं होगा लेकिन लाख पूरा नापाक हो जाएगा। ज़कात दें अल्लाह रिज़्क़ बढ़ा देगा और रिज़्क को बढ़ाने के लिए सूद पर ना चलो। अपने बैंकों में से सेविंग एकाउन्ट ख़त्म कर दो।

मेरे भाईयो! अल्लाह से लड़ाई न लड़ो। अल्लाह से जंग न करो। भाईयो! दो आदमियों को दोज़ख़ में सबसे शदीद अज़ाब होगा एक सूद लेने वाला एक क़त्ल करने वाला। क़ातिल और सूदख़ोर दोज़ख़ में सबसे शदीद अज़ाब उठाएंगे और माँ-बाप का नाफ़रमान दुनिया में भी सज़ा भुगतकर मरेगा। यह वाहिद जुर्म है जिसकी सज़ा मरने से पहले मिलेगी।

क़यामत की निशानी! औलाद वालिदैन पर ज़ुल्म करेगी

माँ-बाप की नाफ़रमानी की सज़ा आगे भी मिलेगी यहाँ भी मिलेगी। सूद से बचो अगर रखना ही है तो करंट में रखो सेविंग में न रखो और अब तो लोग भी सूद पर पैसे देते हैं।

हमारे नबी ने मैराज में देखा किसी को साँप काट रहा है। किसी को बिच्छू, किसी को फ़रिश्ते मार रहे हैं, किसी को पत्थर मार रहे हैं, कोई ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ है। एक आदमी देखा जिसका पेट गेंद की तरह उसके पेट के अन्दर साँप घुसे हुए थे। उसे अन्दर से काट रहे थे और आपको पता है कि अन्दर का दर्द बड़ा शदीद होता है। आपने कहा यह क़ौन हैं? जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा यह सूदख़ोर हैं, सूद खाने वाले। तो अपने आपको भाईयो सूद से बचाओ। माँ-बाप ज़िन्दा हैं तो उनकी दुआएं ले लो। उनके लिए दर्द न बनो उनके लिए राहत बनो। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने पूछा या रसूलुल्लाह! क़यामत कब आएगी? आपने कहा पता नहीं अल्लाह ही जानता है कब आएगी? उन्होंने कहा कोई निशानी तो बताएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम देखो कि औलाद माँ के साथ नौकर जैसा सुलूक करती है तो समझना क़यामत आ रही है। नौकरों का सा सुलूक माँओं को मारते हैं।

क़ुरआन से मज़ाक क़ुरआन ख़्वानी के ज़रिए

तो इसलिए मेरे भाईयो! माँ-बाप ज़िन्दा हैं तो उनकी राहत

बनो। मर गए तो उनके लिए ईसाले सवाब करो। उनके लिए सदक़ा जारिया बनो। हमारे यहाँ क्या तरीक़ा है कि कोई मर जाए तो औरों को बुलाकर क़ुरआन ख़्वानी क्या करते हैं। मदरसों में जाते हैं। मदरसों में क़ारी साहब ख़त्म कर देंगे। कहते हैं हाँ लिख लो सौ ख़त्म।

यह क़ुरआन के साथ मज़ाक़ न करो। बेटे का एक दफ़ा मुँह से "क़ुलहुवल्लाह" पढ़कर बख़्श देना वह मदरसे के सौ क़ुरआन से ज़्यादा सवाब है। हमारे एक अज़ीज़ हैं उनके वालिद का इन्तिक़ाल हुआ तो उन्होंने मदरसे से बच्चे बुलाए थे क़ुरआन ख़्वानी के लिए। खुद सारे बैठे गप्पे मार रहे थे। उनको बुलाया क़ुरआन पढ़ने के लिए तो मैंने कहा चलो मैं भी बैठकर उनके साथ क़ुरआन पढ़ लेता हूँ तो मैं उसी कमरे में चला गया जहाँ वे बच्चे पढ़ रहे थे। उस वक़्त मैच लगा हुआ था क्रिकेट का तो लड़के कमेन्टरी सुन रहे थे। मैंने कहा बच्चे हैं उनको क्या कहूँ कि क्या हो रहा है तो बैठे रहे बैठे रहे कमेन्टरी सुनते रहे।

तो यह हमारी बड़ी जहालत की रस्म है। खुद अपने माँ-बाप के लिए सदक़ा जारिया बनो अगर चले गए हैं।

हम दुआ मांगते नहीं पढ़ते हैं

अल्लाह की किताब है। इसीलिए तो शरियत का हुक्म हुआ कि अगर बाप मर जाए तो जनाज़ा बेटा पढ़ाए। बेटा अगर किसी को कहे तो वह अलग बात है लेकिन पहला हुक्म बेटे को जो है वह जनाज़े की दुआ पढ़ेगा मांगेगा। पढ़ना और मांगना बड़ा फ़र्क़

है। हम लोग दुआएं मांगते नहीं पढ़ते हैं। इसलिए हमारी दुआएं क़ुबूल नहीं होती।

ग़ैरों से कहा तुम ने ग़ैरों से सुना तुम ने
कुछ हम से कहा होता कुछ हम से सुना होता

अरे कुछ अल्लाह को मनाओ तो सही हम तो दुआ मांगते नहीं हम दुआ पढ़ते हैं और दुआ तो मांगने की चीज़ है न कि पढ़ने की चीज़।

हमारी बदक़िस्मती जनाज़े की नमाज़ से महरूम औलाद

जब कोई मस्जिद का इमाम आकर या कोई आलिम आकर जनाज़े की नमाज़ पढ़ाता है तो वह दुआए जनाज़ा पढ़ता है मांगता नहीं है। मुझे इस बात का पता चला पहली दफ़ा जब मैंने अपने बाप का जनाज़ा खुद पढ़ाया। 14 अगस्त सन् 1988 ई० को मुझे उस दिन पता चला कि मैं जनाज़े की दुआ मांग रहा हूँ पढ़ नहीं रहा हूँ मांग रहा हूँ। हमारी बदक़िस्मती यह है कि आज की औलाद को पता नहीं कि जनाज़ा पढ़ाना कैसे है हालाँकि एक ही चीज़ है पढ़ना और पढ़ाना। ग़ुस्ल माँ-बाप को औलाद दे। माँ को बेटी दे बाप को बेटा दे तो फिर उसके साथ-साथ हाय हाय भी होगी। जिस मुहब्बत से वह बाप के पहलू बदलेगा दूसरा तो नहीं बदलेगा। तो नादार माँ-बाप हैं जो कहते हैं कि मेरा बेटा डाक्टर बन जाए, इन्जीनियर बन जाए, ताजिर बन जाए, ज़्यादा पैसे कमाए। अरे बाबा तेरे किस काम के। औलाद का मुक़द्दर

माँ-बाप नहीं बनाया करते।

तर्बियत औलाद का हक़ अदा करो

माँ-बाप के ज़िम्मे है औलाद को दीन सिखाना। उनको हलाल कमाई का तरीक़ा सिखाना भी और उनको मुसलमान बनाना भी। उनको ईमान वाला बना दें तो वे हमारे काम आएंगे।

अल्लाह से मांगा जाता है, अल्लाह के सामने कमज़ोरियाँ पेश की जाती हैं।

तो मेरे भाईयो! माँ-बाप के लिए हम ठंडक बनें। उनके मरने के बाद भी उनके लिए ईसाले सवाब हो। यह नहीं कि मदरसे से बच्चे बुलाकर पढ़वा दिया ख़ुद पढ़ो, ख़ुद करो। यह मैं इंकार नहीं कर रहा हूँ कि बच्चों ने पढ़ा तो सवाब नहीं होगा। उसमें भी सवाब होगा। उसके लिए ईसाले सवाब किया तो उसका भी अज्र होगा लेकिन जो तेरा एक बार "क़ुलहुवल्लाह" शरीफ़ पढ़ना इस पर भी भारी होगा। तो अगर माँ-बाप हम से पहले चले जाते हैं तो हक़ बन जाता है कि हम उनके लिए ईसाले सवाब करें। इनको दीन सिखाकर मरें।

माफ़ करना सीखो

तो मेरे भाईयो! छोटी छोटी बातों पर लोग मरते हैं। तो माफ़ करना सीखो, दरगुज़र करना सीखो। छोटी-छोटी बातों पर लोग अदालतों में जा पहुँचते हैं। बाएकाट कर देते हैं। पी जाओ पी

जाओ माफ़ करो। अल्लाह ऐसी इज़्ज़त देगा कि सारा जहाँ देखेगा।

अरे अल्लाह का नबी ज़ामिन खड़ा है। अल्लाह के नबी ने फ़रमाया मैं ज़ामिन हूँ तुम माफ़ करो अल्लाह तुम्हें इज़्ज़त देगा। इससे बड़ी ज़मानत कहाँ से लाएंगे? तो भाईयो हम इन बातों का ख़्याल करें तो आपस में मुहब्बतें बढ़ेंगी। दीन भी बढ़ेगा। आपस में इख़्तिलाफ़ तो होता ही है लेकिन मुहब्बत फिर भी करो। हमारे मसलक का जो इख़्तिलाफ़ है वह इख़्तिलाफ़ से बढ़कर नफ़रत में तब्दील हो चुका है और नफ़रत इस हद तक बढ़ चुकी है कि एक दूसरे को कुफ़्र तक पहुँचा दिया और एक दूसरे की शक्ल देखना भी गवारा नहीं और एक दूसरे को सलाम करना भी गवारा नहीं। तो मेरे भाईयो! हमारे नबी ने यह दुआ मांगी थी कि या अल्लाह इनमें इख़्तिलाफ़ न हो। तो अल्लाह तआला ने अपनी हिकमत के तहत कहा नहीं मेरे महबूब मैं तेरी यह दुआ क़ुबूल नहीं करता। इनमें इख़्तिलाफ़ रहेगा। यह इन्सानी फ़ितरत है लेकिन उसके बावजूद मुहब्बत फ़र्ज़ है। इख़्तिलाफ़ के बावजूद भी मुहब्बत करना सीखो अगर हम एक दूसरे से नफ़रत कर गए तो उसका आख़िरी फ़ायदा काफ़िर उठाएगा। मुसलमान कभी नहीं उठाएगा। यह सब हम पर पड़ेगी इज्तिमाई तौर पर। इसलिए भाई हर एक के बारे में खुशगुमान रहो, बदगुमान न रहो और पर्दा रखो, पर्दा दरी न करो। ज़ैद बिन हरमला रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे या रसूलुल्लाह मैं मुनाफ़िक़ हूँ मेरे लिए दुआ करें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ कर दी। वह पक्के मुसलमान हो गए। फिर उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! मैं और मुनाफ़िक़ों के नाम जानता हूँ। आपको

बता दूँ? आपने फ़रमाया नहीं नहीं मैं किसी के पर्दे खोलना नहीं चाहता। उसके लिए दुआ करूंगा जो नहीं आएगा उसका मामला अल्लाह पर छोड़ दूँगा।

ऐब तलाश न करो

तो एक दूसरे के ऐब तलाश न करो। नज़रें चुरा लो। छिपा लो। अल्लाह आपके ऐब छिपाए रखेगा। यहाँ भी वहाँ भी। अपने रिज़्क़ को हलाल तरीक़े से खाओ। हराम राहों में न जाओ। एक वज़ीफ़ा बताता हूँ बड़ा आसान वज़ीफ़ा है। एक सहाबी आए कि या रसूलुल्लाह! रिज़्क़ की तंगी है कोई वज़ीफ़ा बताएं? आपने फ़रमाया बावुज़ू रहा कर तेरा रिज़्क़ बढ़ जाएगा। कुछ नहीं करना पड़ेगा, कोई ज़िक्र न कोई तिलावत न तस्बीह। जब वुज़ू टूटे फ़ौरन वूज़ू कर लो। तुम्हारा रिज़्क़ बढ़ जाएगा। कहा नमाज़ पढ़ो, वुज़ू से रहो तुम्हारा रिज़्क़ बढ़ जाएगा। यह आपका मर्कज़ है।

अपनी मस्जिद से जमातों को मत धक्के दिया करो

मस्जिदों से निकालना अल्लाह के मेहमानों को मारना अगरचे बहुत कम हो गया है। फिर कुछ जगहें ऐसी हैं जहाँ मस्जिद से निकाल देते हैं। भाई इनको भी समझाओ और अगर कोई ऐसे भाई बैठे हों तो मैं उनके हाथ जोड़ता हूँ कि अल्लाह के मुसाफ़िरों को दर-ब-दर करना ठीक नहीं है।

हमारे नबी ने तो पक्के काफ़िरों को मस्जिद में बिठाकर खाना खिलाया है। यहाँ वह अनपढ़ क़िस्म के लोगों ने ज़हन बना लिया है कि नापाक होगी मगर मैं चश्मदीद गवाह हूँ मेरे साथ ख़ुद ऐसा हुआ है। मुक़ामी लोग (जोकि बिदअती थे कहने लगे) वहाबी आ गए, काफ़िर आ गए, गुस्ताख़े रसूल आ गए। हमारे नबी ने क़बीला बनू सक़ीफ़ के काफ़िरों को मस्जिद में बिठाया, नजरान के ईसाइयों को मस्जिद में बिठाया। यहाँ वहाँ के काफ़िर मस्जिद में आकर बैठे आपने तो मस्जिद को नहीं धोया था। कितनी बड़ी ज़्यादती है हमारा नबी काफ़िरों को मुसलमान बनाने आया था न कि मुसलमान को काफ़िर बनाने।

भाई दरगुज़र करो, दरगुज़र करो।

राय के इख़्तिलाफ़ के बावजूद भी मुहब्बत करो। अल्लाह आपकी ज़िन्दगी में बरकत देगा। नस्लों में बरकत देगा। किसी को समझाने का तरीक़ा यह नहीं है कि उस पर चढ़ाई कर दो। जुनैद जमशेद है छः साल ये उसके पीछे फिरे। एक दफ़ा भी नहीं कहा तू हराम खाता है और हराम करता है। अब अल्लाह ने उसको पक्का कर दिया है तो उसने मुझ से कहा कि अगर आप एक दफ़ा भी कह देते कि तुम हराम करते हो, हराम कमाते हो तो मैं कभी तुम्हारे करीब नहीं आता तो ऐन गुनाह करने वाले को अगर कह दो कि तूने गुनाह कर रहा है तो वह कहता है कि तो कोई मेरा ठेकेदार है। इन्सानी फितरत है कि वह तन्क़ीद पर बिख़रता है और प्यार मुहब्बत से कहो तो मान जाता है।

तो मुहब्बत से कहो तो मान जाएगा। तन्क़ीद करोगे तो

तुम्हारा दुश्मन बन जाएगा। तो हमारा जो दीनदार तब्क़ा है वह उन लोगों को नफ़रत से देखता है कि बहुत सी दीन से दूरी का सबब ये लोग हैं। यह कैसी हिमाक़त है। उसको लोग तंज़िया नज़रों से देखेंगे, तंज़िया हँसी हँसेगे तो उन लोगों को पहले ही शैतान उचका हुआ है। हम भी ऐसे बैठे रहेंगे तो कैसे मसूअला हल होगा।

जन्नत के हसीन ज़ेवर

मैं बार-बार रोज़ाना कहता हूँ कि ज़िन्दगी का यह एक बहुत बड़ा खुलासा है। ज़िन्दगी के पुरसकून होने का ज़रिया हैं न कि पैसे गाड़ी, कीमती लिबास, ज़ेवर पहनते हैं। हमारे नौजवान, मैं सुबह सैर के लिए निकला तो देखा कि एक नौजवान आ रहा था गले में सोने की चेन डाले हुए, सोने की अंगूठियाँ पहने हुए। तो जन्नत भूल गए हो। अल्लाह ने एक फ़रिश्ता पैदा किया है जो जन्नत वालों के लिए सोने के ज़ेवर बनाता है और कोई काम नहीं करता। जिन सांचों में वह ज़ेवर बनाता है अगर वह सांचा सूरज को दिखाएं तो सूरज नज़र नहीं आएगा तो ज़ेवर कैसा होगा? तो मेरे नबी ने फ़रमाया कि जन्नत की औरतें भी ज़ेवर पहनेंगी आदमी भी तो अल्लाह तआला मर्दों को जो ज़ेवर पहनाएगा वह उनके जिस्म पर औरतों से ज़्यादा हसीन नज़र आएगा। जिस चीज़ से अल्लाह रोकता है वह आगे देता है। शराब का दौर है और काफ़ूर की शराब लेकिन यह सब नीचा दर्जा है कि सुराहियाँ पड़ीं हैं, हमाम पड़े हैं। खुद उठाते हैं और भरकर लेते हैं।

﴿ان الابرار يشربون من كاس كان مزاجها كافورا.﴾

सुराही उठाई, जाम उठाया, उंडेला फिर मुँह को लगाया। क़ुरआन यह एक नक़्शा खींचता है कि देखो यह एक महफ़िल है बड़ी लोगों को पेश की जाती है। पिलाई जाती है। एक दर्जा उससे ऊपर आया:

﴿يسقون فيها كاسا كان مزاجها زنجبيلا.﴾

वहाँ सुराहियाँ फ़रिश्तों के हाथों में नौकरों, हूरों के हाथों में हैं, ग़ुलामों के हाथों में हैं और वे सुराहियाँ भरकर, जाम भरकर और थालियों में भरकर उनके आगे पेश कर रहे हैं आक़ा नोश फ़रमाइए:

﴿ان المتقين مفازا حدائق واعنابا وكواعب اترابا وكاسا دهاقا.﴾

वाह! वाह! क्या कमाल है ऐ मेरे नेक बन्दो! सब्र करो, तुम्हारे लिए कामयाबियाँ, हसीन बाग़ात, हरे भरे जाम, उभरे हुए सीने वाली हसीन बीवियाँ और हूरें जो तुम पर आशिक़ हैं:

﴿اترابا كانهن ياقوت ومرجان﴾

जैसे याक़ूत व मरजान हैं कि सूरज को उंगली दिखाएं तो सूरज नज़र न आए, समुंद्र में थूक डालें तो वह शहद बन जाए, दुपट्टा लहराएं तो काएनात मौअत्तर हो जाए, मुर्दों से बात करें तो उनमें ज़िन्दगी की लहर दौड़ जाए और ज़िन्दों को झलक दिखा दें तो उनके कलेजे फट जाएं, कलाईयों को अंधरे में दिखा दें तो अंधेरे रौशन हो जाएं।

दरूद शरीफ़ पढ़ो

दुआ

اللهم لك الحمد كما انت اهله وصل علىٰ سيدنا ومولانا محمد
كما انت اهله وخيرنا ما انت اهله انك اهل التقوىٰ واهل المغفرة.
ربنا اتنا في الدنيا حسنة وفي الاخرة حسنة وقنا عذاب النار.

ऐ ज़मीन, आसमान, अर्श, फ़र्श के तन्हे तन्हा मालिक! या अल्लाह! हम सबके सब ने तेरे दर पर बैठकर हाथ फैलाए हैं, फ़क़ीर बन कर आए हैं, साइल बनकर आए हैं, या अल्लाह! हम सबकी तौबा क़बूल फ़रमा ले, या अल्लाह! हम सबकी तौबा क़बूल फ़रमा ले, या अल्लाह! हमने बड़े जुर्म किए और बड़े गुनाह किए, या अल्लाह! धरती का कोई चप्पा ऐसा नहीं जो हमारी नाफ़रमानी से गंदा न हो चुका हो, मेहरबानी कर दे, हमें भी माफ़ कर दे, हमारी ख़ताएं भी माफ़ कर दे, हमसे भी दरगुज़र फ़रमा और हमारी ख़ताओं को भी माफ़ कर दे। यह जितना मजमा आकर बैठा है सबको क़बूल फ़रमा ले। इनमें अक्सर जवान हैं मेरे मौला, बूढ़े भी बैठे हुए हैं, सब के हाथ तेरे सामने उठते हैं, तेरा घर है, तेरा दर है, रात आधी होने के क़रीब हो चुकी है। या अल्लाह जुमा की रात है और तू पहले आसमान पर है, हमें मुहब्बत भरी नज़र से देख ले या अल्लाह हमारी तौबा की क़ुबूलियत का ऐलान कर दे, हमारी माफ़ी का ऐलान कर दे। अपने फ़रिश्तों को भी कह दे मैंने इन्हें माफ़ कर दिया है। हम सब से राज़ी हो जा।

या अल्लाह हमें अपनी मुहब्बत दे दे? दिल में उतार दे? सीने में उतार दे? अपने महबूब की मुहब्बत दे दे? दिल व दिमाग़ में

उतार दे? हमारे वजूद को या अल्लाह! नूरानी कर दे? हमें नमाज़ों वाला बना दे? हमें ज़िक्र व तिलावत वाला बना दे और जिनके माँ-बाप उठ गए है, माँ-बाप चले गए उनको माँ-बाप के लिए सदक़ा जारिया बना दे? जिनके बच्चे जवान हैं या अल्लाह! उनके नेक रिश्ते फ़रमा दे? औलादों को नेक सालेह कर दे? या अल्लाह! जो बेरोज़गार हैं उन्हें हलाल रोज़गार अता फ़रमा दे?

या अल्लाह! सूदी माशियत को हम से दूर कर दे? या अल्लाह! सूदी माशियत ने तेरे महबूब की उम्मत के चूल्हे ठंडे कर दिए और सारी दौलत दुनिया के क़ारूनों के हाथ में चली गई। मेरे मौला तूने मिस्र के क़ारून को जल्दी पकड़ लिया था, हमारे क़ारूनों ने सारा जहान लूटा है, या अल्लाह! तेरे महबूब की उम्मत के करोड़ों बच्चे रात को भूखे सो जाते हैं, उनके पेट या अल्लाह! कमर को लगे हुए हैं, माँओं की छातियाँ ख़ुश्क हो गयीं हैं, सुबह को उनके चूल्हे ठंडे और या अल्लाह! क़ारूनों की मसहरियाँ भी सोने की, ऐ मौला! बेशक हम से नाराज़गी की वजह से तेरी सज़ा है पर अब हमें माफ़ कर दे और क़ारूनों को पकड़ ले? या अल्लाह! जिन्होंने घर-घर में हमारे बच्चों के मुँह से निवाले छीन लिए, हमारी बेटियों के सिरों से आंचल उतार लिए, हमारे घरों के चिराग़ बुझा दिए हैं, अपने चिराग़ चला लिए हैं, हमारे घरों को वीरान करके उन्होंने अपने रक़्स-कदे, बुत-कदे तामीर किए ऐ मौलाए करीम हम तुझे न सुनाएं तो किसे सुनाएं? दुनिया के बादशाह तो वैसे ही कमज़ोर हैं, हमारी फ़िक्रें भी तेरे सामने हैं, हमारी फ़रियादें भी तेरे सामने हैं, हमारी पुकारें भी तेरे सामने हैं, मौला हम कमज़ोर हैं, हमें कोई कन्धा चाहिए जिस पर सिर रखकर रो सकें और आज कोई कन्धा

ही नहीं है जिस पर सिर रखकर रोया जाए, हमें कोई कान चाहिए जिसे ग़म सुना सकें और आज लोगों के कान ही बन्द हो गए किस को सुनाएं? तू तो सुन ले? या अल्लाह! न तू सुनने से थकता है न सहारा बनने से थकता है हमारा सहारा बन जा, हम तेरे आसरे पर खड़े होना चाहते हैं, तेरे पाँव पकड़कर रोना चाहते हैं, या अल्लाह! तू सामने होता तो तेरे पाँव पकड़ लेते, बच्चे की तरह लोट-पोट होकर तुझे मनाते, हम तो घरों में देखते हैं मेरे मौला बच्चे माँओं के आगे चीख़ चिल्लाकर उन्हें मना लेते हैं, लोट-पोट होकर उल्टी-सीधी ज़िदें मना लेते हैं मेरे मौला हमारी ज़िदें तो बड़ी अच्छी हैं या अल्लाह! हमारी ज़िद तो हमारी ज़रूरत है या अल्लाह! तू रूठा हुआ है हम तुझे मनाना चाहते हैं, हमारी ज़िद मान ले? तू आज राज़ी हो जा? तेरी तरफ़ से सख़्तियाँ आई हुई हैं, हम उनकी दूरी चाहते हैं। हमारी मान ले, आज मौला बड़ा मजमा है, इतनी बड़ी पंचायत को दुनिया के बादशाह भी रद्द नहीं करते, इतना बड़ा वफ़्द किसी भी बादशाह के दर पर चला जाए, मेरे मौला और माफ़ी की दरख़्वास्त करे तो मेरे मौला वह भी माफ़ कर देगा हालाँकि वह बशर है तू तो मौला है तू रब है तू तो करीम है तू रहमान है तू तो रब्बे मूसा कलीम है, तू तो रब्बे मुहम्मद है, तू तो रब्बे ख़लील है, तू तो रब्बे हारून है, तू तो रब्बे यूशा व दानियाल है, मुहब्बतें या अल्लाह! तेरी निशानी है, रहमत तेरी चादर है, तेरी रहमत या अल्लाह तेरे ग़ुस्से से आगे है, तेरी रहमत तेरे ग़ुस्से से आगे है।

हमारी ज़िद को मान ले या अल्लाह! रो-रो कर गले भी बैठ गए, आँसू भी ख़ुश्क हो गए, इबादत का दामन सिकुड़ गया,

सिकुड़ते-सिकुड़ते ख़त्म हो गया है, अब तो आहों के सिवा कुछ नहीं, हाय के सिवा कुछ नहीं, ठंडी साँसों के सिवा कुछ नहीं, या अल्लाह! काफ़िर तो काफ़िर था अब मुसलमान भी तेरे दीन का मज़ाक़ उड़ाते हैं जिनको मुसलमान माँओं ने जना है वह परचम उठाकर तेरे दीन के ख़िलाफ़ बग़ावत कर रहे हैं, तेरे दीन पर कदग़न लगा रहे हैं, तेरे महबूब की सुन्नतों का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं।

मेरे मालिक! तेरे दुश्मन के रूप में कोई आए तो अज़ाब का हक़दार हो जाता है मेरे मौला! गुनाह की वादियों में जाने वालों के लिए असबाब बहुत ज़्यादा बन गए हैं, तेरी तरफ़ आने वालों के लिए हिमालय पहाड़ जैसी रुकावटें खड़ी हो गयीं हैं, इन्हें हम कहाँ से दूर करें, टकरा-टकरा कर सिर फूट गए हैं। मेरे मौला चल-चल कर पाँव में छाले पड़ गए हैं, मेरे मौला दूर-दूर तक निशाने मंज़िल नहीं है, मौलाए करीम आज का बातिल खुदा बन चुका है, हमें कहता है जाओ अपने रब को बुलाकर लाओ, हम तुझे बुलाने आए हैं, मेरे आक़ा हम तुझे लेने आएं हैं, मेरे मौला बच्चा भी बाहर गली में पिटता रहता है, दौड़ा-दौड़ा जाता है, रोता-रोता जाता है, अब्बा-अब्बा कहता जाता है, अम्मा-अम्मा कहता जाता है उसके माँ-बाप कितने ही गए गुज़रे हों, ग़रीब क्यों न हों, एक दफ़ा तो वे भी मुहब्बत व शफ़क़त से बेक़रार होकर बाहर ज़रूर आते हैं, मेरे मालिक सारा बातिल हमारे ताआक़्क़ुब में है, करोड़ों हमारे मासूम कट चुके, मासूम फूल जैसे चेहरे या अल्लाह हँसना भूल गए इस तरह जलकर सोख़्ता हो गए कि हमें उनकी एक हड्डी भी न मिली जिसको हम चादर पहना कर दफ़ना सकते, हमारे बूढ़े माँ-बाप उनकी लाशें बे गोर व कफ़न सारी दुनिया में पड़ी फ़रियाद कर रही हैं, हमारी बेटियों की इज़्ज़तें नीलाम हो रही

हैं, भेड़-बकरियों की तरह उन्हें बेचा और ख़रीदा जा रहा है, अपने भी ज़ुल्म कर रहे है ग़ैर भी ज़ुल्म कर रहे हैं हम भाग कर तुझे बुलाने आए हैं, या अल्लाह! हम तुझे लेने आए हैं, या अल्लाह! तू चल हमारे साथ बड़ी देर हो गई, आक़ा बड़ी देर हो गई, जब भी बातिल ख़ुदा बना है तूने उसे पकड़ा फ़िरऔन ने भी कहा था मैं ख़ुदा हूँ तूने पकड़ा था उसे मौला तू आज के फ़िरऔनों को भी पकड़ ले।

जब भी नमरूदों ने कहा हम ख़ुदा हैं, जब भी शद्दाद बोले हम ख़ुदा हैं तूने उन्हें पकड़कर दिखाया कि ख़ुदाई तेरे हाथ में है, इन बुतों के हाथ में नहीं है। आजका बातिल बड़ा ज़ोर आवर हो चुका है, वह कहता है हम सब कुछ कर देंगे, तू आकर उन्हें बता दे सब कुछ तू करता है या अल्लाह! अब हम कोई अबूबक्र नहीं कि उसे पेश कर सकें उसके तुफ़ैल मदद चाहें ऐ मेरे मौला यही गंदे उठे हुए हाथ हैं, ऐ मेरे रब! वह बनी इसराईल में तीन आदमी ग़ार में गए थे ऊपर पत्थर आ गया था, दर बन्द हुआ था तीनों ने अपने अमल का तुझे वास्ता दिया था उनके अमल थे ही ऐसे तूने उनके तुफ़ैल पत्थर हटा दिया था, अब हम कौन सा अमल तुझे पेश करें हाय! हाय! मौला पीछे मुड़कर देखते हैं तो एक अमल भी ऐसा नहीं है जो तुझे पेश कर दें कि इसके तुफ़ैल कर दे। है ही कुछ नहीं, हम वह गली के फ़क़ीर हैं जो कहता है अल्लाह के नाम पर दे दो, बाबा जो कहता है अल्लाह के नाम पर दे दो, बाबा मेरे मालिक! हमारे पास कोई अमल नहीं जो तुझे पेश करें न नमाज़ न रोज़ा न जिहाद न तबलीग़ न दर्स-तदरीस न विलायत न नयाबत कुछ भी नहीं है हमारे पास ऐ मालिक!

हमारी ज़िल्लतें, पस्तियाँ, फ़क़्र, हमारी वीरानियाँ, हमारी ठोकरें, हमारी बेबसी के आँसू हैं या अल्लाह तुझे तेरे रहम का वास्ता तू उम्मत के दिन फेर दे या अल्लाह तुझे तेरी क़ुदरतों का वास्ता है हम भी तेरे दर पर ज़िद किए बैठे हैं हमारी ज़िद मान ले मेरे मौला तू सामने होता तो हम तेरे पाँव पकड़ते, तेरे क़दमों पर सिर रखते, तुझ से लिपट-लिपटकर रोते, तुझे अपने दुखड़े सुनाते, अब भी तुझे ही सुना रहे हैं तू सुन रहा है। ऐ मेरे मौला हमारी बस हो चुकी है इस उम्मत के दिन फेर दे मेरे मौला यह साल हमारा बना दे, पिछला साल बड़े दर्द देकर गया है, बड़े ग़म देकर गया है, बड़ी करबलाएं हमारे सिर पर तोड़ गया है, करबला तेरे हुसैन के लिए ठीक थी हमारे लिए तो ठीक नहीं है, हम इस क़ाबिल कहाँ हैं मेरे मौला, हम इस क़ाबिल नहीं हैं मेरे मौला।

मेरे अल्लाह! यह साल बदर वाला साल बना दे, यह साल हुनैन वाला साल बना दे, यह साल हमारी इज़्ज़तों का साल बना दे, यह साल हमारी बुलन्दियों का साल बना दे, मेरे मौला हमारी मदद को आ जा, सारा जग हमारी मज़ाक़ उड़ा रहा है तू आजा या अल्लाह आ जा मेरे मौला आजा, नहीं आना फिर भी आजा मेरे मौला, आ जा या अल्लाह किस का तुझे आँसू पसन्द आ जाए कोई हाय तो पसन्द कर ले या अल्लाह! कोई फ़रियाद तो पसन्द कर ले, या अल्लाह! किसी का आँसू तो पसन्द कर ले या अल्लाह! ऐ मस्जिद के फ़रिश्तों आओ हमारा साथ दो, हमारे रब को मनाओ, आज हम रो रहे हैं तुम भी रोओ, ऐ आज इस मर्कज़ के फ़रिश्तो! तुम भी हमारे साथ बैठे हो हमारी दुआओं में शरीक हो

० ० ०